

सुभाषचन्द्र

५५०



स्वयं धमागुः नांतिः कांति धमागुः ॥ पु नै न ना उ न नाः दा य का
 शुल विजल ॥

जहरवातया
 श्रीगंड १ पका १
 रत चंदना क प १
 पद्मकेरा म से १
 सम आग पा ल १
 र्मः घा ना रु यः १

जहरवातया
 कस हा तया क नील
 स घा यः सिल रोगः विषा ह रः

इरु व्यातिकथा
 ऊ नु मा हा
 क चि ह ल
 स्व ध र स नि ना
 पा य

आभा क काथे

550

दि
 कं मा ना ना
 क म च न ना
 ना म ल य न
 प ना म ना
 नी न य ना
 र र म ना
 वा र न ना
 ना म ना
 ना म ना

कं जा दि १ म स र्व पा या त
 र म ना ना
 वि र व ना ना

५॥५॥५॥

ॐ नमः श्रीगणेशाय ॥ ॐ नमः श्रीवज्रसूत्राय ॥ ॥ उवाच ॥ जगद्गुरुः हि हि संज्ञानकान्तं स्वर्गाय वज्रं यथा ॐ
दीनं ते लाकृष्ण नानां निदानानां नानामूर्तीनां वचने विदानीं समासुतः सहिषजा न्नियामातुं सा पश्यन्ति विद्वानिदानीं
लिप्ता निवध्वानलागविनिश्चयाश्च ॥ नानातनुविहीना तां हि मज्जामल्यमधसं सुखं विद्वान्मातृकमयमव
हविष्यति ॥ निदानपूर्वकानि नूयान्पुन्ययस्तथा ॥ सम्याक्स्तिविद्वानं प्राप्तानां पंचवधस्तथा ॥ निमित्त
हत्यायतन ॥ उवाच ॥ त्वानकावलो निदानमाहः पर्यायेः प्राग्व्यं यत्नलकृत ॥ उत्पित्तनाम्ना दाष
विगमिष्यन्ति निमित्तः लिप्तमयकमल्यत्वात् व्याधीना नश्यथायथं ॥ तदेव कृताया निवृत्तिमित्य
विधीयते ॥ संस्क्रान्तं व्यञ्जनं लिप्तं लक्षणं विक्रमाकृतिं ॥ हृद्यं विविच्य स्तुतिविचर्य स्तुतिविचर्य
उपधानं विद्वानां मय्यागं सुखावहं ॥ विद्याद्वयमयार्थाभिः सहि सा मयि ॐ निस्तुतः ॥ विपरी

तान्प्रगयावाधिसाम्यति संकितः ॥ यथा इह न दाययथा नानुविस्मयिता ॥ निर्वृद्धिनामयस्य ॥
म्याफिर्यातिनागतिः ॥ संख्याविकल्पयाधन्यवलाकालविभक्तः ॥ साहिद्यनयथयेववस्तुनः ॥
नाकृतिः ॥ दाधानां समवतां हि विकल्पानां सुकल्पता ॥ स्वातन्त्र्यपात्रतन्त्र्यालंकायाः प्राधान्यमादिगत्
हत्यादिकास्तुवयवेवलावलुविभक्तः ॥ न कं दिनकुतुहकात्पूर्वाधिकास्तथायथवेलां ॥ वृत्तिप्राकृतिदाना
र्थस्तुष्टासुनायदिन्यत ॥ सर्वेषां समवलागता न्नियानं कृपितामलाः ॥ तन्त्र्यकोपस्य कुप्राकं विविधिरित्त
वतं ॥ निदानार्थकत्रागत्रागस्याप्युपलक्ष्यत ॥ तथथ क्वचसुतापाडकपितृसूदीर्यत ॥ त्रकपितृकनाया
वन्धसुवाप्युपजायत ॥ पीहारिष्टद्याजं लज्जं नाशुं हं मवव ॥ अर्गुलाजं वन्दुः खंगुलां अाप्युपजाय
त ॥ उतिस्थाया दधकां कां कां संजायत क्रयः ॥ क्रयभागस्य हं हं लक्ष्यं अाप्युपजायत ॥ तत्पूर्वकं वला

कनकसुखिनिर्दिष्टः॥

भागः यथा ह्यनार्थका विवः। कश्चिदिना गमनागमस्य ह्युक्तं तत्ता पन्थमिति॥ न युक्तमिति वाप्यन्यो ह्युक्तं क
रुत पिय। एवं कुरुत नानुत्तमं दृष्ट्यन्तया धिसंकराः॥ पुयागमपनिष्ठं ह्युक्तं तत्ता पन्थमिति वाप्यन्यो ह्युक्तं क
लेन सद्धेये विच्छिदः सिद्धिमुक्तं॥ ह्यतया वञ्चनया यं कनादीनां विनिश्चयः॥ ॥ दकापमानं सद्धेये विच्छिदः
नूतनिश्चयसुसुक्तः। कनाः सद्धेये यथं दसं दयागाग कुजः स्मृतः॥ मिथ्यं ह्यतविहानं सद्धेये विच्छिदः
प्रयागयाः वहिनिस्तस्य काश्चाग्निर्कनदाः स्युनसानुगम॥ ॥ ननहुना कनसुसुक्तं ह्ययत॥ ॥ प्र
मानगितिवर्तुत्वेन स्य नयनं सद्धेये विच्छिदः। नूत्तादेषामूह्यन्तया पिनीतवा तातपा दिष्ट॥ जं हा जमर्धा गुनता नाम
हर्षा नूचितमः अय हर्षं नूतनं च हवत्स्य स्यति क्षत्र॥ स्यदा वत्राधः सन्तापः सवर्जिग्रहलक्षणा। युगप
यजना गमसु ह्यनार्थका विवः॥ सामान्यता विवः सद्धेये विच्छिदः समीनलान्। पिलान्नयनया द्यो ह

१२
॥ ॐ नमो भगवते ॥

॥ ॐ नमो भगवते ॥

करुणानामविर्हयम् ॥ ॥ ॐ तिक्तनयुर्वनूयः ॥ ॥ सुखान्नानसुनजानन ॥ ॥ श्रुताधेय्यायाम।
मानकद्रुतिककसायनूके विनावावायतयलंघन ॥ ॥ कलीनेवातपुकायसूयमाकिद्यानागभिव ॥ ॥
पात्रुकुसंकावनगादहंगमः ॥ ॥ तत्त्वमसत्त्वधरंगविद्याः ॥ ॥ सूक्तत्वगीतत्वखलुत्व ॥ ॥ शास्त्रमविवायाः पुंव
दन्तित्वाः ॥ ॥ सि ॥ ॥ अजीव्यतवलीनवनस्याद्वसुतेलातपेः स्नानायेअनवस्तिमानसमदिनासंवाह
नमदनेः ॥ ॥ सुहृदनिवृहन्समनस्रहायनाहादिकं ॥ ॥ यानाहावविहावहेषजमिदंवापुमन्तिनये ॥ ॥
॥ ॥ ॐ तिक्तनयुर्वनूयः ॥ ॥ कत्रस्यासुखसूलेजायाधमनीजीवसाकिणी ॥ ॥ तत्रष्टयासुखंदःखं
हृयंकायस्यपन्दिने ॥ ॥ नाडीधरुमनूत्कायजनीकासर्पशार्गति ॥ ॥ ॥ ॐ तिक्तनाडीलुज ॥ ॥ वाः
तिकसुफनाखनवनखनधेहिक ॥ ॥ त्रिष्टिकद्वादशहृनकत्रयाकोरविषयति ॥ ॥ ॥ ॐ तिक्तनयुर्वनूयः ॥

॥ ॐ तिक्तनयुर्वनूयः ॥

सिद्धि ॥ ३

पञ्चवाचस्पत्यस्तुति ॥

पञ्चवायुमस्तु ॥

॥ अहं योगवृद्धिद्वयम् ॥ ५॥

र्वांसुविमिसुव्यावपतिं तानवायुः पानक्षया ॥ ॥ ध्वजवायुयाधन ॥ ॥ नकं दिनकुहकाभे र्वाभि
 कालायथावलं ॥ ॥ बहनीसुवाक्रसुवलनागसां वातत्रसिय ॥ वातासुवाक्रिसुवागवत्सनागसां पि
 रुसिय ॥ तसुवासुसुधवलनागसां लस्यसिय ॥ नंयोंजीवं ॥ धूमिबलासिय ॥ ॥ वह्नितिलस्यकास्थानि
 कलदासुः तसानूग ॥ ॥ काथसुवांगुम्रिपिहावयावः कत्रनकनं ॥ अत्रयात्रसुसुविकानरुस्यं ॥ ॥
 कत्रकायेन धमतीसा क्रवगवतीहवन् ॥ ॥ कत्रयानादिष्ठाशवधगतमनिव ॥ ॥ स्यदावनाधसुका
 पः सुर्वांसुग्रहनक्षत्राः यूपययरागागुसुक्रवायवदन्त्यन ॥ ॥ वत्रमिसहावः तापनावः प्रस्यक
 थध्वजुनराजः सुसुनं कानपूयव ॥ ॥ सुमात्रनिविवर्णत्वं वेत्रसंनयनसुवः ॥ ॥ काधषामूरुस्थविः
 नीतवागनागपादिषू ॥ ॥ शाहकात्रतयुवाकालवयुमधूनायुः प्रयाउनिः तः महिनीवः सुपुमसायुः स्वा

नमो भगवते

विवयुः खविनं तापययुः खविनं विदुः यायुः ॥ ॥ हृन्नांगमर्धागुन्तात्रामहर्षावृविहसमअत्यहर्षव
नीतं वृहवन्कृत्यस्यनकन ॥ ॥ उभकालवयुः प्रकंलाधं स्यायुः प्रज्यायुः विमिकं कविवयुः मिखाखिउ
युः अत्रविहयुः विहीनवनिव ॥ ॥ धूमिहकउत्यहिरयनलजलसिय ॥ ॥ अथभागसुमच्चयः
क्षनातिसात्राग्रहणी अर्णजीर्णविहविका। सावसावविलंबीवजिमिदूकागुकासला। हनीमकंवकपि
लं राजयः ॥ काणहिकासहस्रसुखनहदत्वभावकः। कर्दिलकरवमूर्च्छायात्राग्नयाना
सुयादयः ॥ दाहाख्यसुपलात्मादापसावस्थानिलादयः। वातवकसूत्रस्तुक्रामवागाथगूलनूक् ॥
पकिजः गूलमानाहसूदावर्लाथगुलमेवक्। हृडाग्नसूयकुकुयैसूयायागस्तुथसुत्री ॥ प्रमहासधू
महथपिउकाथप्रमहजाः। मददाषादत्रग्नधृष्टिः सगलगुक् ॥ गगुमाताततागुक्तिवर्चदः

बभ्रुर्गोपाय॥

श्रीपदंतथा। विडधिः। वृक्षलभथश्चक्षोवर्णोत्तमनाडिका॥ हगन्दनापदंतययश्चयावस्तगमयः। जीत।
 पिरुसुदृष्टकाष्ठवेवास्तपिलिकः॥ विसर्पश्चसविस्तरसुत्राकिवमसुत्रिका। कडास्यकर्णनाम्नवृक्
 निवस्तीवालनागकः॥ विषंवततमवागुरुयंउन्दनसंग्रह॥ ॥ ॐ तिशागसमुच्चयः॥ ॥
 हसकनागनंपथं। निनिनपथं। पियली। वसकमधुपथं। वृगीभगुउहनीतकी॥ वर्षीयांस्थभवप
 थं। नवसिताहनीहेतकी। निरपकल्यंहनंवाधिः। षड्गुण्ययुगादिनः॥ आभाग्यश्चवलवृद्धिः। सर्वत्रा
 गंवनागयत्॥ ॥ हसकजुसु। नुंथिनय। निनिनजुसु। धीचीनय। वसकजुसु। ककिनय
 ग्रीभजुसु। वाकहवठनय। वषजिजुसु। स्थनूदिनय। सवतुजुसु। सावतनय। थनंजुसु। गुलंसुः
 वासननय। ननीनयुद्धिरयिव। आयुद्विरयु। निशगिरयु॥ ॥ ॥ धनं वदुजुसु। सुथनय। रिड

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ ॥ विद्यामनूषतं वृद्धिं प्रष्टुमनयपावनात् ॥ ॥ वाहउमसपाकयातायागुणवातसपिलसुप्रवृष
सुसुतनां जगिति ठ खव ॥ ॥ धनवाहउमसपाकयातागुण ॥ ॥ वासीकस्नानवमाग्नवत्रधम
दवालयेष्व। मन्मनवजलजीर्णनूच्यायाविवर्जित ॥ ॥ सपानियावाहसवृअलाक्षिसवृअगु
दवलसवृअगु। मसातसवृअगु। लंखसमीपसवृअगु। सिमायाकोसवृवगु। जीर्णरुमाववाउधायसः
वृवगु। धनधमयतवृवगु। अमसत्रकायमनवतावतमात्र ॥ ॥ धनउमसत्रकायगुधायगुण ॥ ॥
कृष्णखल्वेवलाशायं सनखल्वेवलकयं। पीनखल्वेविद्याः वजंनकखल्वेविद्यामनूष ॥ लाहखल्वेव्याः
धिमूकं कानिखल्वेविनामनः। स्नाटिकखल्वेहृदं वचदकानि सखावहं ॥ ॥ हाहखल्वेहं वल
नायू। आनाम्यशयू। खयू। हं वलकयशयिव। क्राहखल्वेहं यागुण। विधागुनामउत्पलिरुयिव

थ

हेमचन्द्रिणी ॥ ५५ ॥
उद्दिष्टाय ॥

काउलहं गाति धातुना गताया क न प्या कया ना म क र यिवा का किल हं या हि उरु ल रु किल
हं या ह उ र यि अ व द का नि या सु ख व ध य र यिव ॥ ॥ धन उ म स न च्छा य गु ल हं या गु व ॥ ॥
वा ल वृ ष्ट अ का पा व न नू ष वि रु दा नू णः । वृ ष्ट वा ना म हा धा नः गी उ ल्प ह यं क नः ॥ ॥ वा ल वृ ष्ट
अ का प र यिव न नू ण स वि रु का य र यिव वृ ष्ट का ल स वा न का प र यिव ह यान क वा यून पी द न पा व
म ल्प ह य क न ॥ ॥ धन उ म स न च्छा य गु ल हं या गु व ॥ ॥ सर्व उ व म्प सर्व हृ इ र्ग न गु क स्य हृ न ना । संहिता सि
द्धि सा शयं नू वि गु फ न सा ध न ॥ ॥ स प स स न न म ल्का न या उ उ न उ क इ र्ग न गु क या का य न
वि गु फ धा या वै श न ला क या न हि न या य नि मि लि त ना ग या ख नि दान द य का ॥ ॥ क रू स्य का
प व स न स न स वि न व न वि रु ह व वि का न । वा ना स के स्य रु म् दा रु न कि सं स र्ग या पि द्य नि मि श्र भे त नू

हेषः प्रथमः पत्रः ॥

कुरु कोपशब्दः वमनया केन सथनक ॥ पिरुकायशब्दः विनवनया यत्वातकायशब्दः काविकनः
थकैः स्वनाया इव नः स्वनायाय ॥ ॥ वातास्तेनेल्लवणमधूना नपाणेः पिरुतथमधूनातिक क
सायलीने नामपुण्यक मूपाजा ह्यपतर्प्यतेन ॥ ॥ पाउनस्यः विकनवास्यः विनस्यः कस्तिनस्यः थः
धिगुञ्जन्नयाननस्यः वातक वण्णकियाय ॥ साधनः स्वायवस्तुः स्वाकः थननस्यः पिरु कन्नमकियाय ॥ स्वा
यीवः पालुः रुटवस्तुः स्वाकः पलकासुदाननस्यः प्लव्णकन्नमकियिव ॥ उपवासया नानंशमकन्नमकि
रुयीव ॥ ॥ अथरेषः प्रथमः पत्रः ॥ ॥ विपश्चिद्वृत्तजननिहितेन च वल्लनवा विषहृत्तुपवायनकक
कन्दवल्लनवा कनकांकस्य हानेन च आवेकास्यपस्यव ॥ नमः सिंहस्य वीर्येण हवत्त्वमगमोषधं ॥ ॐ विक्री
सहस्रमूत्रं वनावनयनविहारा तवनाम सहस्रं वनामूर्त्तिं यथाहति ॥ अथूगानन्दः ॥ नमः विन्दनामाञ्जनवर्णे

[illegible]

४७ गायत्री॥

ह्ला नं हे वष मय नामयत् ॥ ॐ मां पा नित ल विद्यां तस्मिं काले उदा ह्वयत् ॥ ॥ अथ म त्तुं प ॥ ॐ खट
विषट खट विव ल विल म्ब वल वल व नि व रु व न (व) अ म न नि र्था ष स्वा हा ॥ ॥ वा न जा पि ठ जा ग म (म)
अ जाः स त्रि पा न जाः ॥ नि रु ताः स र्व बा ग म च स्व स्तु अ म क स्य स र्व बा (ग) स्यः स्वा हा ॥ ॥ ॐ मि त्र
ष ष (म) ध न म कुः ॥ ॥ बा ग मा दो प वि रु तं त ता न क न मो स धं । क ष क म्य ति ष क्त्वे व ह्ला न क र्वे स मा व न
क्रा पां बा ग मा प वि रु ता या य । लि प त स आ स न या य । वे ष बा क न थू गु क थं ह्ला न न प वि रु ता या य ॥ ॥ न क
आ आ क न या वि कि स्ता क्रा य ॥ ॥ मू रू प र्प ट का नी ल व न्द न दि वा ना ग नेः । नी न नी न ज लं द या ति पा स क नः
म क यत् ॥ ॥ क रू ख र व न (मं) मं हं उ म ल हा श्री ख तु वा न नु धि स म हा ग रू रू क्रा क दा य र वा ठ का थ
स्व न क ॥ स र्व क न या ॥ ॥ रू उं ग पा नि ॥ ॥ उ ला प र्प ट क न्या क व न्द न म धू क नि ना ॥ नी ता चू ना पि व न्

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

मोदस्याकया ॥ ॥ इतिहाः क्काउकलं हा खानः हा मलः ककलया हा नूपके मलः गम हां अम्वनः थ
 ननिनावपाय ॥ ॥ मोदस्याकनास ॥ ॥ अयनाजितहाः कर्णवीवखानः निनावपायः ॥ ॥ मोदस्याक
 या ॥ ॥ वाहायः मनवलंखसनिनावत्वनकेः कवननास ॥ ॥ अदलः इलावरः कालः कसुः समलगया
 उं क्का० दास्यं लवनके ॥ ॥ समस्तकवनया ॥ ॥ उल्लेहाः काधपलः लंखसनिनाउपायः ॥ ॥ कनः
 नमोऽस्याकया ॥ ॥ नमालहलः कइकः इलावरः इइका लुसियावातः धूतिसमलगयास्यः थनया
 दूगनक्षि साषनकसिनवावंमं १५५ ननस्यः सर्वकवनयायुसंस्तु ॥ ॥ नवाः जित्रिः नस्यं कवननाकि ॥ ॥
 ०० निनकववकवनयाउमसुल ॥ ॥ वातिके सुफनाखनवनाखनयेलिकेः ॥ ॥ श्विके द्वादनाहिनकवनयाका
 रविष्मनि ॥ ॥ कसवानः वागकवनपाकहयिवः गुवानः पिरुकवनपाकहयिवः जिनिदून ॥ ॥ श्विके

नैमीलकृष्ण॥

नपाकरायुवधूतिमलंसंउभसुनयायमतव॥ ॥ अथनाडीलक्षण॥ ॥ कनस्याहुस्समूलयाधमः
नीजीवसाकिनी। तश्चक्षयासुखंइःखंरुयंकायस्यपडितेः॥ ॥ लाहानयाः कानापविंयाहासवह
नपंशानगुनाडी जीवयासाकिरयावधानकनाडी जीवदनालनाडी वानिवध्वनाडी नवहनयूचयाव
ननीनयात्रागमगधिगुइःखनसनगधिगुसुखनसन जीनोयालकणस्यसंयागयायविभायायवेशस
न॥ ॥ नाडीधरुमनूकोपजलोकासूर्ययाःगतिः॥ ॥ नाडीनधननपंशानिवनातकाययासूर्या
वनध्वंसूर्यवनध्वंसूर्यमनसावातनाडिसुय॥ ॥ कनकापनधमनीसाक्रावगवनीरुवत॥ ॥
कानपूवयानाडिकागवगवकानसुनिव॥ ॥ कननाडिक्षय॥ ॥ कनपृष्ठत्ययापूर्वमंगुल्यपीठनाः
रुतः॥ ॥ ५ क्रावगवनीचक्षानाडीरुदंयनस्यत॥ वागपिरुकरुद्वन्द्वनसनकण्ठिदावजः साक्षासाधविंव

गंव सर्वनाडीं य रा विग ॥ मूला कुष्ठ स्त्रिं पिरुं मध्यव व हन क रं । ज न च व ह न वा यं वि षू स्त्रा निल क यं
क लिंगं ता क म धू कः गति पिरु य का यनः ॥ ला वा ति हि त्रि व ली व ग म नं सा त्रि पा ति कं । मू रूः सूर्य ग ना ना डीः
मू रू र्ध्व ग ग ति स्त्रु थ । वा त पिरु द द्या र्हा ता यु व द नि वि व क लेः ॥ ॥ क म धी ल का व वा न डा व थं टिः
टिं च स्यं ना डी स न सा पिरु ना डि स य ॥ ॥ ला पा ति त ल र्हा य मं वा व न थं व न सा स त्रि पा त सि
य ॥ ॥ ख वि नं सूर्य व ड थं ख वि तं व ग न व नि व थ थ ना डी स न सा वा त पिरु सि य ॥ ॥ र ज
जा दि ग ति स्त्रा न ना ज हं स ग ति य ता । वा त पिरु द द्या र्हा ता यु व द नि वि व क लेः ॥ ॥ ना ज ह स व ड थं
सूर्य व ड थं ना दि स न सा वा त पिरु सि य ॥ ॥ वा त पिरु द द्या र्हा ता यु व द नि वि व क लेः ॥ ॥ उ न म ला व का दी नां हं
सा दी ना के वि त्र ति ग म नं पिरु पिरु व ध म नी न क रं द द्या ॥ ॥ सूर्य व ड थं ला पा व ड थं हं स व ड

ध्यानादी सुनसा. पिरुल्लस्य सिय ॥ ॥ कदाचित् सन्दर्भमना कदाचिद्वगवाहिनी दियेयका विना हंसा
हकिं च स्थान विष्णुता ॥ ॥ वृत्तिरुवाय मंदा. तिनत्. र्वाय मंदा व उध्यां. वृत्तुल्लं रुसंता उसा. सुत्रि
तातना डि सुय. ध कना गिन ल्ळानगावता व निव. मन्वा क ॥ ॥ दया दया न्न नत्ताया लज्जलं दन्द
उवात. हित्या हित्या वन गिया. सा स्मृताया लनानिनी ॥ ॥ स्वविस्ववि सुमक वा गव. स्वविस्वव
ययायू धन निगाल लज्जलना डि रुसंति. पावभाव कियु सिय ॥ ॥ अतिजी लवणी तात जीवनं ह
कि संलयः ॥ ॥ तवमानन. ता डी र्वा उयू. हतिना डि सुनिव ॥ ध कना गि मन्वा क ॥ ॥
कामजा धद्वगवहा. जीलविक्ता रुय सुगा. मन्वा गि जीलध रुध ना डी मन्दत ना रुवत् ॥ ॥ कामजा प
सुयू या ना डी वगन सुनिव. भाक. इः ख रुव क्रया ना डि. नि रुया व सुनिव. रुवन रुके क्रया ना डि. गव पू

यावसनिव॥ ॥ अग्निवत्समदक्रया नाति निहयावसनिव॥ ॥ स्तुल गमी सुद ग्नकुडक नाती
विधीयत॥ ॥ धत्त सुव ड क्र थं नाति व ड सा न क नाति सिय॥ ॥ कनकापवधमनी सा क्राव ग व नी रुव नू॥
कनकाप रयाव नाती सा ड व व ग न स निव॥ ॥ स्तुला कृमि श्व कृमयः प्रसू फं वाग्नि म उ उ ॥ ॥ ना।
डिया नू प न व यू याव सन सा डि मि सिय॥ ॥ दाना वधान क्र थं नि कृ क नादि सन सा म न्याग्नि सिय॥
॥ ॥ अस्तु मूर्त्त हव को क्रा गु वी सा मा ग नी य सी॥ न द्यी व रु नि दी का ग्न त थ व ग व नी रु ता॥ ॥ १०
अथ उ क काना व सन सा॥ दिव ध य रु न सिय॥ ॥ अस्तु ड क सन सा अग्नि वत्स ना रु सिय॥ ॥
वप ना कृ धि न सा व रु क स्य व रु हि स्ति ता॥ वा ना व क ग ना ना ती व प ना यि रु वा हि धी॥ ॥ स्ति ना व तः
अथ रु या डि वि धं भ रु का रु ता॥ ॥ य ता क क या ना ति व व न स नि व ॥ य १ ५ ड ड क या ना ति

स्तिवनसन्निवत्ता वंकाश्या इनाति सुनसा वातनाति सिय ॥ तवधगावचं वनमनसा पिलनादिसिय ॥
स्तिवनतटविकिधनकं सुनसा ग्नानाति सिय ॥ ॥ स्वतायालज्जधं सुनसा भावनागसिय ॥ ॥
मन्दंमन्दं निधि न निधिनं व्याकूलं व्याकूलं वा ॥ स्तिवास्तिवावदुनिधमनी जातु नाजीव सुक्मी ॥ नित्यं कन्द
स्तिवनटिपूनन प्यकूली संयसिद्धा ॥ तावयिलवदु विधितत सुनिपागादसा ॥ ॥ वृद्धं रक्षा सुकरक्षा
धमाहाध्या नाजी सुनसा स्वविनं सुमकरक्षा नाव निद्रयावनाति सुनसा ॥ क्षिधं रत्ना हाती सुना थूलूर
नन्वयू नाजी यावृष ॥ भाहासिय मदयिव नाना उकावन सुनसा जहाध्या सिय ॥ ॥ धम निपागनातिः
सिय ॥ ॥ ताव उवाह सुक्मी तय ॥ भक प्रभाह कावना नाजी सुमूर्द्धि तापिगादं पूनवप्यजीविनल्लयन ॥
स्तिवा नाजी सुखेय्यं स्पविशू थागे वृद्धं कनदिने कं जीविनं तस्य द्वितीय मयनधुवं ॥ ॥ नाति स्तिवन सुनसा

साधनातिशयः॥ पत्रपत्रात्त्वथं व्यावापि त्रितः वलं वलं सुनसा ज्ञसाधधयः॥ तच्छ्रुतं रुवः निद्रुतं रुवः
 मृत्पुत्रयिवः॥ ॥ हीतावतुवसादेव्यानी व्यापिरु कनावहेतुः॥ नीखंस हानयस्य न मलाजीर्षु पुकीर्तिता॥ मध्य
 कत्रवहनाजी यदि संगकतधुवं॥ तदा नूनं सन्मस्य वृद्धि वृद्धिर्निर्गतेतनः॥ ॥ सोम्यासूमास्तिनामन्यानादीसुहज
 यागजासूलावकधितानी व्यास्यनगीवमागधः॥ ॥ निद्रुस्यवृत्तं रुतः स्थिलनः सुखनः नाजी सुनसाः
 सुहजवागधयः॥ ॥ तवपूयावकधितनश्यावः व्याकलं सुनसा तवनितावनकवधं तापशवन्तियः॥ ॥
 निलकृवं खलं नूकमनकायागिवागलः नूकवागलवैरुस्यनाजीसास्थिरुसन्निता॥ नाजीसुखसूमा मन्यानीन
 वासुखुदागजा॥ ॥ सूक्राणीनास्तिनानाजीपिरुः श्वससूहवाः सूनावचंचनतलाकधितनावातः श्वभर्ज
 निद्रुसः श्वससूनिवः पिरुः श्वससूहवाः पिरुः श्वससूयः॥ ॥ तवपूयावः चंचनतलाकधितनश्यावः

सुनसा वात (ग्ल) अशिया ॥ कर्कटगजगमिन्या विवूरः सहस्रमुकः (ग्ल) दिनं कृपितं वेवसुयवविकित्सुकः
ॐ हं सुदृष्टं दृष्टानन्दः स्या (ग्ल) अवागजा ॥ ॥ यागः (ग्ल) अगनिना तीसध्वं कवापि धेहिकं अपना कवा
तिकं ह्यं यूनः पिरुनिमार्चक ॥ ॥ सूथ (ग्ल) अया नाति। किनसु. पिरुनादि. वहनी. वागनाति. वाँक्षसः ॥ ३
पिरुनादि कयिव सिय ॥ ॥ निकस्य नाति सुनसा रवाउस्यं सनिव. थनाति जंगवागधाय ॥ कावस्यं सु
नसा. डिमिया दाषधाय ॥ ॥ निकस्यं द्वाकन मनसा अजीर्णनाति सिय ॥ ॥ ककुरस्यं. आजादि
स्यं सुनसा ग्रहणी वाव गुनाति सिय ॥ ॥ खविनं निक. स्वविनं कावु. थनाति. अधिनिवाव सिय ॥
॥ ॥ नाति निकस्यं. सगुथं सनिव. वलं वलवगन सनिव ॥ ॥ थनाति मनुष्य दाषधाय ॥ ॥
यापलया उं. लुहं रवा उं सुनसा. लुगनयून सिय ॥ ॥ नाति चावा वू उं वगन सुनसा रवाउय. थना

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१३

(वाग्वानविदिक्)

गमरवि कटा। ग्लाभान ह मूनं च तव त्वनिलज कने ॥ ॥ अथ यत्तव मानन कत्र दयिव क दू क
गुसिगनिव। कउमद हाँ काले वयू। फेद को हयू ख ह ना हयू। माउ नू (माउ) क स्या यू। धू उ म सा यू। मल
कठिन हयू। प्यं त स्या यू। यत जायू। अ कान वयिव। धात वात कत्र याल कण ॥ ॥ ध्या वि कि स्ता ॥ ॥
गुडू वी पि प ला मूलं ना ग वं च गित त्स मं। वात कत्र याव नीयं विल्लेन सु हल हयू ॥ ॥ गुं गु। पि प ला मूल
मुं धि। सम राग। का० दा स्यं त्वन कं वात कत्र या क या क ॥ ॥ गुडू वी सा नि वा डा का ग त पू ष्य पू न र्त्र वा। वा
त कत्र हनं सि ङ्ग क षायं गु उ सं यू तं ॥ ॥ गु उ गु। इ इ का ल सि। मि सि। वा ल। सा प सा। यू न न्य। स्म रा ग का थ दा
स्यं चा शू कू उं त्वन कं वात कत्र ना स ॥ ॥ सं क्ष न ल न ह न जा ग न। ल श्वे रा मे र्या या म या न क इ ति क क षा
य नू कूः वि ना व वा य ह य लं च न। ल क नी ते र्वा त प का ग म्प या नि य ना ग म व ॥ ॥ वा खि। पि ना वी ल। म

[illegible]

तनुयाः सानशकपिका संविकित्साया केन हनदगत्वं वयकेन सुधेयजनन उक्तुनियाना यागगतया पु
 वध्वविकित्सा ॥ ॥ भत्रीनतनुवुलनापनीति विषानित्सा वावैनेवालतनु । नसायनं पंचविधं वकर्म ॥
 अष्टांगमयुवैयकचितं वविद्वान् ॥ ॥ भत्रीनक्षयातनु वुलनापनतनु विषतनु हनविद्यातनु बालतनु
 नसायनतनु धर्मवकर्मयाग अष्टांगमयुवैयक चं नित्तलाकन ज्ञाना ॥ ॥ ॐ ह्येन विधिविहिताः पु
 सिद्धार्थविनिगदिता हिषन्नानां इक्षुत्तालक धंन विकित्साकः यत्पूनः त्रिहवज्जतुकिं वित् ॥ ॥ धर्मेः १४
 विधिययकं सुसिद्धकं ज्ञाना इक्षुजनपनिसु कस्यां प्रागदक्षयाग अमसुलमदनाना सु इक्षुजननागिया
 क्षाषगधमनियया धर्मेया निमिहितः अमसनकोकाव निर्माणया यधकं वैयजनन ज्ञाना ॥ ॥
 आसाहि नयन आका आसाहि देवाश्रयः स्मृता । आसासूषंगत्वा आसाहि सर्वकामया ॥ आसाहि सर्वदेवा

नां आसा जनुवपं किं भं। आसा मनुष्यी विद्या आसा हि सुखदः स्वया ॥ ॥ स्त्रिंशः क्रीनयुतवली न
वनस्या दसुते लागयेः स्त्रानात्यजनवस्त्रिमात्समदिना संवाहनामर्चनेः यानाहानविहात्रसे षजमिदं वात
उभक्तिनय ॥ ॥ चकनयदार्धनले आरुपदार्धनले छाकवस्तुनले छाकवस्तुनले इदधले आदिन
ले वन इष्टपदार्धनले वि. नदिकनले वाकू माकू पाउ. नदिकनले तव निरावतुवाले छाकले खनमाद
कुले कसचकननयाले विकननले नदिकननले धाले क्वल क्वसमर्दनयाले विकन. दाक. नले
कोकनजले खगविकन धलनले क्वासुथले अमन उवात्रयाले धविदिकन दायकं नन. नाशनत
इंनले धले छाकनले मलसुयकादयू ॥ धने वस्तुकनयान. वातकनभक्ति याक धने नागयाउ पदानथ
ध्यायानानवातकनभक्ति स्वव ॥ ॥ अथवातकनविकित्सा ॥ ॥ सर्वगमृत्युलं भन्यजगागी मस्तुनागनं

पिप्पली कटुकं पाचयता लं समचूर्णयत् ॥ गुठनमादकं यस्य वातघ्नं विनाशनं ॥ ॥ लवंगं उरुहोत्रं स्त्र्यं ॥
सा हं जी कस्तूरं हनं पिपी कटुकं वा हाय स्वायूया नया हा स्मृता गवृक्षं वाक् सवा नानकं वातघ्नः
न नासु शव ॥ ॥ दिग्गुलं पिपी मूलं कस्तूरं मयं पिपी गुं धि हनद धातं स्मृता गको द्या स्पं त्वं डा नं वा
त घ्नं नाशकं शव ॥ ॥ लवंगं धन्यं कं कृष्ण मजा जी समचूर्णयत् ॥ उक्रादकं न पात यं वातघ्नं न हनं पत्रं
॥ ॥ लवंगं ॥ गम सा हनं कटुकं जी स्मृता गवृक्षं का कलं ख सहा स्पं त्वं नकं वातघ्नं नाशकं ॥ ॥
लवंगं मदि ॥ ॥ ताली सविश कटुकं यवं नं जाना स पिप्पली मूलं गत्रि ता वि ताई कर्षं लवंगं क
न लं कृति न्य माष जा जी ॥ न चूर्णं गुला गु उ ला वि न मृ प्यि को डं ॥ कर्षाई हं क य नि वा त घ्नं ना नि मा न्द ॥ सर्वा
निला क कटु पत्रि ता पित स्य ॥ ॥ ताली सा दि ॥ ॥ वातघ्नं नया ॥ ॥ पिप्पली ना गत्रं मूक्त मजा जी

पोष्कनाद्यं गुठनमातकं वक्षवातकरहवंपनं ॥ ॥ पिपी. शंथिकसू. हजीपूष्कनामूल. धृतस्य
 लग. ग्लनडासू. वातावनकं वातकरनासुहव ॥ ॥ गुठमाद ॥ ॥ साजाजीपियलीमूलं गंधलकष
 मृता। अतयायनमृदिकालह लोडलयाजयन् ॥ कजिनागापवेवस्य जिना. गुनूगभाउका ॥ कस्यनः
 ह्यदनयेव. मनिलकरनागनं ॥ ॥ हफजी. पियलीमूल. कर्कडासि. कसू. शंथि. मिदिसि. सलगकस्ति
 नवानानकं समसुवातयाकनदवउपडवनाभ्याक ॥ ॥ वातकरया ॥ ॥ त्रवंगधनकं मूलयठालं स
 हसर्कना। मधूनाचूर्णलहायंवातकरनिकृपि ॥ ॥ लवड. ग्लसाह. कसू. यमाल. साषत्र. चूर्णकस्तिनवायन
 कं. वातकरनाग ॥ ॥ गुज्वीसानिवाडाका. गतपूष्पायनत्रवा। सगुठं वकषायः स्याद्वातकरविनासनं ॥ ॥
 गुठगु. इइकोकासि. मिडिसि. सापसा. यूनन्द. ग्ललडाव. वातावनकं. वातकरनाग ॥ ॥ तच्छा. कोलग. का

॥ विरुद्धा न विद्विषा ॥

[illegible]

٩٤

हृन्नानागदूष्यनसंयासं पावनं पेहिक कत्र ॥ ॥ उला. लवंतव. पातक. मीसि. साषल. नृपक. मल. धात
स्मृतागकस्तिनजात्रनकं दशप्रपाकयाकपिरु कत्र याहिं ॥ ॥ क दमममनवती क्रविदाहती केः जारा
नपातलुगुत्र. प्रमलुष्क भकेः ॥ जारादजीर्ण विषमासनराजनय. पिरुं उकापमपजातियन लयव ॥ ॥
पाउ. पात्र. वि. काकव तुनले. आयक शत्र. लउनमृगपाउनय. घनय दार्थनल. निराहल. मिसवाल. जाराद
मुनल. उमसंखाआदितल. जजीर्णयाठंनय. लिवाहवानल. क्षानल. जधानल. धूमिनपिरु कापलपयीव ॥
वर्षाउसु. सत्रदक्षसु. ग्रंथजउसु. धनजउसु. कूदाप्रशत्रमनं. पिरुकापशयव ॥ ॥ पूर्वनृपसिय ॥ ॥
पत्रिप्रमस्वद विदाहनागम दोर्गन्ध. हृदविपाकका ० ॥ ॥ यलापमूर्च्छा उमपिरुलावाः पिरुसक म्मावि
वदन्तिगहः ॥ ॥ कदयू. चववगुकाहूयू. पात्रवायू. वलनिहायू. नृ. म. उ. शत्र. शत्रूनकायिव

कुरु नवयू नयमसायानुगनस कया हानवानिव कुरु सु क्रास सु कुरु वयिव कुरु वा कनरवयू गा
 कुरु कनन्यायू नु (म) उम कि निव वरु कयू मिखा लु सिआ दिं क्रासूयू ॥ ध्वन पितुया लु कल ॥ ॥ नि
 कृत्वा इ कषायणीतपवन काया निभवीजनं आत्मा लु गुरुवा विज कुजलज मी गभस संसर्गनं। सूर्यि जीव
 विभक वं कनू धिव प्रवउद हादिकं। पाना हान विहान तेषज मिदं पितुयु न्न निनय ॥ ॥ खायू व लु क
 वा कुरु व लु। साधन ज्ञादिन। लु कुरु। खाउ व लु। रु सु रु यकं। निहान न कि व कं। ना जी सु वा जैर न जादिन गतः
 यकं। वन्दु कि न ल सु वा सं। लु मी सु ग लु कया व वा सं। सुपावन कि व का व वा सं। न ख क्ष ना नू ग न सु हाय
 कं। मी या कुरु सु वा सं। धल पूजन सं। इ इ त्वन कं। क का सं। कसि सं। हि पि का सं। पि रु व लु लो क या धात उ
 पका न या गव न्न क या य ॥ ॥ उरान सु कस्य ग मी न ता मुं। कां भदि पाउं पु नि क्षय ना लो। न ज्ञा मूक्ष

नावद्रुत्रं पत्य निहन्ति दाहं त्वनितं सुनीतं ॥ ॥ धसुत्रपायकथ्य नावका गपाय नाति सतयाव लंख्य क्ष
नाहायका दनया नना नंदा हुना गश्य ॥ ॥ जि काता लु मुख कठ ॥ ॥ धसुत्रि कुल पयत् कि गलं मा
उत्तुंगस्य मधुसे भव संयुतं ॥ ॥ रुम्य सुजा प्र संका ॥ ॥ गल गं क क न नी तल ॥ ॥ मलया दक सिक वा त्वस्य पिरु क
ननरः ॥ ॥ मः उता ल ॥ ॥ कू उ ॥ क ठु ग उ या ॥ ॥ त व सिया के गल ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥ ॥ सुधु वि ॥ ॥ धूति न क पा व स पा यः
तायू धाय सु वन्दु माया कि न ग स ॥ ॥ गी त ल धाय सु ॥ ॥ ग्री ख उ आ दि न त या व ॥ ॥ क स ॥ ॥ लं ख न हा स्यं ॥ ॥
पिरु क न ना ग या क ॥ ॥ ॥ धन पिरु क न या उ पा य ॥ ॥ ॥ न नि वा य म को नी ल म धू कं व न द न द यं ॥ ॥ का
स्य र्य म धू कं व नि न नि वा दि त्रियं ग लः ॥ ॥ ॥ न क पिरु नि ह न्या ग ठ क्रा व ति पु मा धि नी ॥ ॥ तं व पिरु क नं क
दि र्म हा दा ह वि ना ग का ॥ ॥ ॥ इ इ को का सि ॥ ॥ प लं के ग ल ॥ ॥ उ ग ल हां ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥ ॥ ग्री ख उ ॥ ॥ न क व न द न का

स्मृतीकलि॥ ॥ लभविवादिज्जङ्गम॥ ॥ पिरु कनया॥ ॥ डा का हया पय्यट का थयूकं मंचनि।
पीजं मर्त्यय विदध्मात्। पुलापमूर्काप्रमदा रुग्णपठक्रान्तिरपिरुहवेकनेउ॥ ॥ मीसि॥ हनउ॥ ख
खन॥ का० दा स्यंत्वगनपिरु कनयुग्मनि॥ ॥ उत्पलायेवडा आवनूक्कलात्ववगयकं। इलानरासमंचू
र्लुनकीनामधूनालिहत्॥ ॥ कक्रपिरु कनयेवदाहंयेवनियक्कनि॥ ॥ उहोत्र॥ मीसि॥ सुकृम्या न॥ ववउत्तव
पातक॥ इलानरा॥ स्मरागनूधूसाप्रल॥ कलिनवा नावनकं॥ पिरु कनयुग्मक॥ ॥ उत्पलादिषठंग॥ ॥ तिरुल
पिप्पलीवासा माधवीसमचूर्णयत्। मधूनालेहयत्तिरुविषमकननागनं॥ ॥ तिरुला॥ पिपी॥ जरादना॥ माधवी
स्मचूर्णकलिनवा नावनकं॥ पिरुविषमकननागनयाक॥ ॥ गुज्जीमूलकात्याकं मधूकदकनाहिणी॥ कक्रा
लान॥ नीकदि॥ पिरु कनरुनागन॥ ॥ ॥ गुउगु॥ कसू॥ गमशाहं॥ व्व॥ सुमी॥ कदूक॥ नाहिणी॥ ध्वनचूर्णनकं॥ पि

लुक्कननामि ॥ ॥ उलाघनलवंगं व प्रियंगुनामकनलं । उग्नकृष्णकालमज्ञावन्दनं । नकवन्दनं ॥ नर्कनामधूना
युक्तं कर्दिपिलुक्कनायहं ॥ ॥ उलाघि ॥ ॥ उलाकसूतवं प्रियंगुनूपकनलवं सनावन प्रियी । इइकाकासि
प्रीखगुनकवन्दन साधन कलिनवावावनकं थं व व पिलुक्कननाम ॥ ॥ किलाततिकुंकडाजाजीवेलामल
कीरुलं । कनघं तलिवत्पूर्वपावनं येहिककन ॥ ॥ खाइमीसिवाल अम्वर । सवूर्णपाक । दाषपाक । पिलुक्क
ननाम ॥ ॥ उलात्वक्ककागीनवासाकृष्णपलाईकं नितामधूचखरूत्रमृदिकावयलान्विना ॥ सवूर्णमधूनाय
कं गुटिकासंयकल्ययत् । अमकागकनं कर्दिमूर्ककननामसदं उमा ॥ नकनिखीवनं कृष्णपार्श्वमूलमनावक ॥
कस्त्रीहाशयसर्ववनकपिलुं उनामनं ॥ ॥ उलातेजपाग । नवउत्तव । उग्नरहा । आदग । प्रियी । साधन ॥ ०० ॥ इमी
खरूत्रसिमीसि । दूर्णकलिनवावावनकं । सर्वलक्षणपिलुयाकनववक्कननामयाक ॥ ॥ इलानह । खखनक

सुखाद्वाधुः पथगच्छाद्यासंत्वनं पितृकृतं नमस्किंशयुव ॥ ॥ लवम् कर्पूरं नमूनी नवन्दनैर्न जातीरुलः सत्य
 लवं सनावनं । मासीसुवालं गजकमलं वः । अति सलंग घन डाऊकं वः । सगन्धक जाजी समं वः वृं लिता छल गं मधूयू क
 लहेतु ॥ पलायमूर्च्छा वमिकस्य हि का सर्वक वं नूडवमादिनाम्ना ॥ ॥ लवं कर्पूरं उग्रनहा ग्रीखु जिह्वा
 उहो स्यां वं न नावन जटा मासि वालं गज पिपी अति हिं ना कसू मीसि पलं क गल जी समलाग दूध साधन
 दूगं कि कलिन दूनावन कं । ताक रुकन चाक कनहन चांगु नूद्धा थं ववः अशुद्ध हि कवत दयावचा कपिल कृतना
 मया क ॥ ॥ अति पितृ कृतस्य विविक्ता ॥ ॥ अथ शेष कृत यत्रिका निदानं ॥ ॥ हेमि त्यं ति मि
 तावः मजरा रसं मधूना स्यता । उक्तं मृग पूनी वल्य सु सु सु कि न था पिवा ॥ ॥ गे बवः गीत लो क्क द नाम हर्षा ति
 निडता । अति स्याथा रू विं का गः क रु ज र क्का थ गु क ता ॥ ॥ कृक वरक्षायू नायू कृत शयू अत्र सिवा

यू. कू. उवा. कू. य. खि. वा. मिखा. त्व. य. शय. क. स्या. य. प. त. रु. र. ध. य. क. य. वा. य. वि. कू. वा. य. ००. न. व. य. वि. मि.
कं. क. नि. व. य. कू. उ. उ. थं. र. व. य. न. य. म. ला. य. मा. ला. व. य. थ. थ. श. न. ग. व. (ह. य. य. ल. क. व. स. य. ॥ क. स. हि. उ. ध. य.
॥ ॥ त्व. घ. दि. वा. नी. ग. ल. मे. धू. न. म. स्या. मा. भे. गु. र्व. स. पि. कि. ल. ति. ल. कू. प. या. वि. का. ने. त्रि. म्. नि. ल. कि. न. व. (ह. म. द. क. पा.
न. ला. जे. (ह. य. य. का. प. मू. य. जा. नि. त. थ. व. स. ने. ॥ ॥ कि. न. स. द. ना. व. वा. कू. व. मु. न. या. व. (ह. उ. व. मु. न. या. व. अ. नि. पा. उ. न.
या. व. लाल. इ. व. मु. न. या. व. ना. ग. न. या. व. वा. कू. उ. न. या. व. इ. इ. न. या. व. वि. क. न. ना. क. व. मु. न. या. व. अ. य. वा. न. न. या. व. वि. लं.
ख. त्व. ना. व. थ. न. न. या. त्व. ना. वि. का. ने. न. (ह. य. य. ना. ग. व. ल. व. क. श. यि. व. ॥ व. स. कू. उ. व. स. ॥ ॥ (ह. व. न. त्व. नी. ग. ल. गु. न. त्व. क.
३. (ह. हा. म. द. ह. ति. मि. न. त्व. न. वा. उ. ल. क. सं. द्या. ग. वि. न. वि. या. व. क. रु. स्य. क. र्मा. नि. व. द. नि. त. ह. ॥ ॥ मि. ख. वा. खि.
वा. आ. दि. त्व. य. श. य. वि. कू. वा. य. कू. य. वा. य. वा. स. वा. य. ला. न. य. क. क. व. र. ध. य. कू. उ. स. ला. उ. न. ००. ला. थं. वा. नि.

[illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

कवेयः हानदूर्ध्वसमावन्तु ॥ ॥ कापां श्रवणापनि काया ठं लिपत सुउमसुलकर्मयायवे अलाक
न ॥ ॥ पिपलीनागत्रे मूरु नृत्त्या सुनदा नृवा कुरु कुरु सुदात वं नी घुं पावन मूलमं ॥ ॥ कृष्ण
धि नृत्ता ना नृत्ता ओउ सुमं लिहन् ॥ नृत्तिलवनं मूरुवां सर्वं श्रवणिका विवः ॥ ॥ पिपी. गुं धि. कसु
नलवन् ॥ देवदात्र धनस्य रागदूर्ध्वनकं श्रवणानां ॥ ॥ पिपी. गुं धि. नलवन् सजिरवात्र धनदूर्ध्व
कस्ति नवा नावनकं श्रवणानां ॥ धनका धनस्य ॥ ॥ उम इत्येव रागं गी क हलं मधुना सह। क
रु कुरु नृविच्छदिना मूर्ते श्रवणमूरुवाः ॥ ॥ वंसनां धन इत्येव रागं कर्कटासि कर्कटसि धनदूर्ध्व कस्ति
नवात्रं नकं श्रवणानां ॥ ॥ क हलं पृथ्वी नमूरु कृष्णमीयता धृष्टा श्रवणानां नृवीच्छदि श्रवणालाक
हानकुरु ॥ ॥ कर्कटसि पृथ्वी नाम कसु पिपी कर्कटासि धनदूर्ध्व कस्ति नवा नावनकं श्रवणानां

पडवदकां नाना ॥ ॥ अजाजी सुर्क जायूकं जादिमस्य नसुनवा । काग्न नूविमधूयूकं कर्तुं वां कवनग्रहः ॥ ॥
जी । साधन धानती सुखास्यं कस्मिच्छा इत्यस्यं (प्ल) धानाना ॥ कवनग्रहः ॥ ॥ कृष्ण ग्रीष्म ग्रीष्म जोडं नानयति
विष्णत धा । काग्न नूविमधूयूकं कर्तुं वां कवनग्रहः । नकपिलु पुमहं व । सस्मन मधूयिष्यली ॥ ॥ पिपी. क
कृष्ण सि. वंसनावं अग्नि ७ सु. कस्मिन्न वानातकं (प्ल) धानाना ॥ मधूयिष्यली नाम ॥ ॥ ताली संवंसजी
दा नूयिष्यली मूलमवव । मनिवं नाग कनं वनागनं जीवकापिच ॥ लवंग पण सुखला चूर्ण सुर्क नया गुडः ॥ ॥ २९
नाग्य रुद्रय डगी करु निष्ठा सुकाग्नः ॥ मन्दा नलं सुनागानि । अर्गनाग कथेवत । विषम कनना तं व स्वव रदन
धपिवा ॥ घृण कर्ण सुनागानि कर्दितावक कथेवत । उग चूर्ण हितं रुद्रमासा च वलवान् रुद्रवत् ॥ ॥ ताली सं
वंसनावन । देवदा नूयिष्यली मूलमनिव । नूयकं ग । उधि । जीवि । लवंग । नजपण । सुकमल । साधन । वाक सुखं

नसं ॥ अथ या उ प ड व द कां ना ग या क ॥ ॥ तालि सा दि द्या द ग म ॥ ॥ मू सु खि क रु कं पा न क दू का म ल
का रु या । उ क्रा म्बु ना । अथ पि रु पि वे । अथ क ना प हं ॥ ॥ क सु म त्रि व । पि यी । गुं थि । वा हा य । क रु कि । अ म्ब
न । ह न उ । अथ का क लं ख स रु स्यं त्व ग व । अथ क न ना ग ॥ ॥ ताली सु के ग ल र ग म द ल गुं थि जा जी । उ ला न व न
म त्रि वा न्य पि वा क क र्षी । ओ ड ण । रा व य ति ल ह मि दं न ना नां । अथ आ न्ना गु वि नि रु कि क ना म य धं ॥ ॥ तालि सा दि ॥
ता लि सां । नू य के ग ल । वं ग ना च न । गुं थि । जी त्रि । उ ला । ल वं । म त्रि व । मं ध रा ग । क र्ण क स्ति न वू ना व न स्यं । अथ क न ना ग
नं ना सु या क ॥ ॥ म त्री ना क त रु ॥ ॥ क सु । आ द ग । गुं थि । इ ला न ह । अथ कां द स्यं त्व ग न । अथ क न ना ग
॥ ॥ पि यी । पि य ला मू ल । सि पि । वि त क हा । गुं थि । अथ कां द स्यं त्व ग न । अथ क न ना ग ॥ ॥ त्रि क दू ल व रं
मू सु ना च नं स म चूर्ण थ ग । अथ क न ह नं कि यं नि न मू ल प म क थ ग ॥ ॥ म त्रि व । पि यी । गुं थि । ल वं । क सु वं

॥ वातपितृकान्तकृष्ण ॥ न स विदिकि
॥

सुत्रावंथतस्मिन्नागवूर्णनस्यं का० यास्यंतव ॥ अथ न माद स्या कता ॥ ॥ ६० ॥ ति ॥ अथ न स्य विदिकि ॥
॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥ ॥ तथैव सूक्ष्म उभावाहः स्वप्ननामः निदान ॥
कल्लोष्ठ ॥ अथ न स्य विदिकि ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥
नमस्किनिव ॥ ६० ॥ कृष्ण ॥ अथ न स्य विदिकि ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥
कंक निवयिव ॥ अथ न स्य विदिकि ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥
य ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥
रुजय निव ॥ अथ न स्य विदिकि ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥
नजय ॥ अथ न स्य विदिकि ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥ ॥ अथ वातपितृकान्तकृष्ण निदान माह ॥

न. पाद दाह. नाना पुकात्र व्याधि उन्मत्ति याक. श्रीसूनुनाथयावचन. पिहाववगुअमल ॥ ॥ कइकं
सात्रिवाडा कामधूकं वन्दनात्तलं। कास्मीरसधूकं लाधं शिरुला पद्मकेमलं ॥ वालताग्य सृगैरुचन्दनामी
नमस्सिद्धेः उपकुर्यान्नजीवनः कषायं वपिवरुतः पर्वरुदः लिवः कस्यावागपिरु कनं जयतु ॥ ॥ खात्र
इइकारसि. मीसि. ॐ ह्रीं श्रीं खड्ग. उरुहोस्वां. गितियात्र. कृमिवं. गुत्वाज. शिरुला. पल्लकेमल. वशावा.
हामिहा. गुत्तमु. अत्रद. नकवन्दन. उमलहा. ध्रुव. पिपी. वाल. धातस्स ताग काकया संत्वनकं. अथिजाथि
स्याक. माउस्याक. वागपिरु कननागयाक ॥ ॥ कइकादि ॥ ॥ वासकं शिरुला नास्ना दीर्घवृत्त पू
नर्तुवा। वनामधूनिगापुलं वागपिरु कनं जयतु ॥ ॥ अत्र. शिरुला. इगुक्काहा. वानाचिन्त. पूनन्दम
वशावा. धातस्स ताग वूर्णुवा सुनवच्छि साधनवच्छि. कलिनअनावनसं वागपिरु कननागयाक ॥ ॥

[illegible]

॥ विरुद्विभक्त कला ॥ तस्य विकिरण ॥

सा ॥ अथ पितृ (श्राद्ध) सल्लक्षणानि दत्तमाह ॥ ॥ लिफनिका स्यता तन्नामाह का (श्राद्ध) अविस्मृताम्
 इष्टाहा मरुः नीतः पितृ (श्राद्ध) कृत्वा कृतिः ॥ ॥ श्रुत्वा सल्लक्षणानि तान् ध्यात्वा उनिवृत्तान् हनन्तानि विसृज्य
 स्वायिवा मासावयू नयमययू व्यासवायू स्वविनां तापचयू स्ववितं विद्ववायू ध्वजे स्यताव शनः शवपि
 लु (श्राद्ध) कृत्वा नया लक्षणसिद्धिः ॥ ॥ गुडूची विन्धना कपयकं चन्दना चितः ॥ ॥ क्राया हाव विच्छिदिः
 पितृ (श्राद्ध) कृत्वा न कृत्वा ॥ ॥ गुडगुग्गुलि (श्राद्ध) साहं च लक्ष्मण लक्ष्मी स्वधुति स्मृता गयान् न कं न क्रा
 दाह वसन अवि पितृ (श्राद्ध) कृत्वा ध्यात्वा नया क ॥ ॥ जाक्रा हलिका मूला (श्राद्ध) माकृश्रवै लव
 जिका ॥ सूक्ष्मलापक संयुक्तान् कर्तुं न मधूना लिहन् ॥ पितृ (श्राद्ध) कृत्वा विकाने वृक्षरादा हाव विच्छिमे ॥ ॥ जिदाष व
 मिहला संजयश्चा मुनिशूदनं ॥ ॥ मीसि जिहला कसू प्रियंगु पिपी न्वं च व सूक म्या पाग क सा

॥ वा न दे सं भ ल क र्ण ॥

[illegible]

दाग (दाग्म) वि किं ॥

[illegible]

नाचके। निनगूलं सुत्रियात दाहृत् क्राविनातनं॥ ॥ नवंगमदि॥ ॥ लवं हृत् अवं वि हृत् मत्र गिपीः
पुंथि जिह्वा पृष्ठमही विनक अतिविष सिपि इगुक्का तातमूल जया पियला मू ०० लिमू नवंत्य
व सुक म्पा तेजयात जायपति सायनरागं क किनवू नावन स्यं सुधरनस्यं वात (सु) आधिक दासः
मद सु अ म नयमयव माद सा क सुत्रियात दाहृत् व्या सुवाव धननालया क ॥ ॥ नवंगमदि ॥ ॥
०० निवात (सु) अ वि कि त्सा ॥ ॥ नंरव वति दयक धूति ॥ नंरव कूया गु राग ९ ति क दू ३ ति जीत्र ३ न ९
मृज मं ९ व्या ल ९ सिमनस ९ राहि ९ ग ९ जि ९ हिं ९ वदति ९ सधू वि ९ धन ९ म लतानत्तना ४ रागनदयकू
माहिं व हिं व शका त्ना ९ रागनय ॥ धन दू लू या ना आ पा लू ती सव लाव गु ति विन वयल सिपमा ९ शयी ॥
९ धन स्या गु ल सुर्व नि सान ९ मय शयी निजा मइ म्पा निजा द येव नया जीर्ण मजं कया जीर्ण शय नयत्र
विशय वल दय तिदा प्रनालया क ॥

२६



वध्वा। स्विद मूज मूनीयानां विना दग्निमत्यतः। कृतं त्वं नानि गजानां पतनं क ४ कूजनं। काथानां न्धववका
नां मधुलानां च दर्शनं। मूकत्वं। अगसां पाका गुनूत्वं मूदवस्यव। विना त्याक न्धवासां सन्निपात कर्ना दग्निः
शम विवर्धनं। एते सर्वसंयुक्तं कृताः सन्निपात कर्ना साधु कृता साधु कृता न्यथा ॥ ॥ खविनं तापः
वा। अरत विनं विकृताः। क्रया कागज अथि आथ माद ध्यत स्या क दयि अः। खा विहायि अः। मिखा नाय क
नि अः। मिखा का उयि अः। मिखा वूलूः। मिखा धक ना अ स्वयि अः। क्र सनः। कूतूतूतू मिगुल दतायि अः। स्या
क दयि अः। क्र सया न सः। क ४ सः। स्वय स्वय धा यि अः। यू अ इ ध उ अ थ उ डि अः। कल ह न वा डि अः। स्त स्तः
हा यि अः। ना क रु क न न्वा यि अः। म स्त अ यि अः। ध सा वे ह न य यि अः। न य म य अः। ०० कू ना यि अः। कू रु का
क। कू रु का वू वा अः। म म नि अः। थ म ला नि मा यि अः। स य। लि हा य म इ ॥ ॥ ०० ल हा यि अः। हि अ मं
रु अः। का स स्य अ यं रु अः। लाल हा यं रु अः। थ गि ल द न यं अ ल ग अः। मा दः। रू ग स म दि कः। प्या स रु वा अः

कृत्तमद्. नू. ग. उ. स्या. क. व. त. ति. हा. यि. उ. । क्रा. स. र. वा. उ. । क्रा. ता. य. द. यि. उ. । क. ल. सु. ह. दि. र. मि. नि. उ. । मं. रु. :
उ. व. । क्रा. उ. वा. क. ले. वा. क. ले. उ. यि. उ. । जं. द. थं. उ. नि. उ. । क्रा. स. कृ. उ. क्रा. स. स. के. कृ. व. यी. उ. । अ. मा. गु. यि. व.
थं. त. सु. नि. ध. य. न. ता. उ. ती. नं. ति. नि. क. कृ. ख. ने. द. यि. उ. । ना. ग. या. क. व. या. जा. का. न. थ. थ. अ. थ. ध. क. थ. नि. उ.
का. व. न. रु. यि. उ. । सि. य. वे. य. न. ॥ ना. य. ने. य. द. न. यं. वा. न. कृं. म. न. ले. अ. मि. कृ. त. श. ने. स. म. स. ल. सु. कृ. ण. ग. क.
थ. स. नि. पा. ग. अ. सा. ध. मं. य. कृ. उ. म. स. ल. या. त. सा. नं. उ. य. के. मं. जि. उ. ॥ ॥ स. नि. पा. त. क. न. स्या. के. क. र्ण. मू. ले. २८
सू. दा. नू. गं. सा. ध. सं. जा. य. ने. त. न. क. वि. दे. व. उ. मू. च. ने. ॥ ॥ थ. स. नि. पा. त. या. अ. न. स. लि. प. त. स. क्रा. स. प. न. य.
हा. स. । त. उ. मा. न. नं. स्या. यि. उ. । क्रा. स. प. न. लि. उ. नं. मं. उं. उ. यि. उ. । गु. लि. क्ति. नं. थ. थ. अ. स. नं. उं. उ. द. व. । गु. नि.
ष्टि. नं. थ. थ. श. न. हा. रा. । ना. द. ने. मा. न. । क्रा. स्या. त. या. इ. ॥ ॥ ॐ. ति. क. र्ण. मू. ले. स. नि. पा. त. : ॥ ॥ कृ. क्रा. उ.
सा. य. क. र्ण. स. सा. नू. ग. म. ष. क. ना. नू. वि. : । अ. ना. हा. ग. म. उ. स. न्दे. हा. का. न. त. या. प्र. म. प्र. मा. ॥ वि. क्ष. र्ण. स. नि. पा. त. मं.

लिंगपिरुनिस्तुलन ॥ ॥ व्यासवायुमिरवाकलहनमित्रिअः सा लसपनिअः थं कगनिअः कवन
उमानः अत्रुविः प्यंत गयुः कसाकः मासावयुः आउठेकः थविध्याव्य सन्निपातया थनेलजग
हयुः वागनवा २ पिरुक्किवा ११ अकवा १॥ वागपिरुाधिके सैत्रिपात विध्याव्य निदानं ॥ ॥

मूकपिपलासुतः मर्याकदूलाहिनीः वागुहडमितिख्यातं वागपिरुहवनं नृणां ॥ ॥ मूलादिवरु
वंगः ॥ ॥ त्रवसककालमणीलवन्दनं गुप्तवगुर्जातकमूकमृत्युतः। जिजीवकक्रागुनूपककगलं
नतंसविल्वननदंसुतावना ॥ ॥ केयूरजातीरुलहंगनाजकं निताष्टरागंसमदू। धूमं वः सवावनपा
वनमग्निवेईकं बलयदंवद्या जिदाप्रनृत्यनं ॥ ॥ आविबन्धदयगलग्रहं सकागहिक्का कवनयक्यी
नसां ग्रहपतीसावगलगुर्वदं निहकिगुसंजगजं सकागिनं ॥ ॥ घनेन हजनगुटिकां वक्रवन्तुलेहं वक्र

नडांः ककलाः कूगहाः सिद्धिखंदः वसनावनः नृयकसः उलाः सक्रम्याः नजयाः कसूः उहीसांः जिः हजि
०० मः यिपिः अगसिः यलकंसः नगुजः द्याः ऊगमासः बालः कयूः जिहाः हिलाजः चिनिः कहिदूतानक

यस्मिन्नाययाजिनं सर्वान्गदाहृन्निचदेवमुत्तं नृकिषदंषुष्यप्रविशदहं ॥ ॥ अष्टनवमादि ॥ ॥

संगाददंजिषः पाएषीं रुदिगीर्षनेलग्रहः दाहाकः भीनतावाश्च निष्ठीवकरुपिरुथाः हिक्कापमीन
कः ग्वासनिडाकः यतायकः रुक्मायूनीषसम्भदावदनमिकगाद्युगा॥ करुपिरात्मकः जेतल्लकंरुल्ल
संरुके॥ ॥ चारनसूयाथं म्याकजडावाकाभादग्वादस्याकः इहिमः पिरवाउः जलहिरवजः हिक्काउरसा

लंलपडः कंउडारकणू जावरभाडाः प्यासवाडाः वाहिलिमइः शूरुखायूः यविवायायूः पिरुनिवारः प्याने
 वाश्वागकिवा १२५ गेलकणशत्रडाडाहलुसुनिपागभय ॥ ॥ ०० निपिरुः प्याधिकसुनिपागनिदानविः
 किस्सा ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ इन्नाः जठनदाहः कटिवस्यस्यधूगनं । निवाः नेववमानस्यनिडागीतकनानूजः ॥ मः

नाहं सुखं वागिध्वं नृश्रमाः विनिग्रहः सन्निपातमकर्म्याख्यं कुरुवागालेनाहवेत् ॥ ॥ लक्ष्मणः ॥ यैः नैहियूः ॥
प्राथ

[illegible]

यू. क्रि. क्र. सु. क्र. उ. व. व. ता. क्र. सु. क्र. उ. म. इ. अ. धि. य. गिं. स्या. क. गा. क. उ. क. न. न्वा. क. बा. हि. लि. मू. य. का. उ. च्छं. र. स. न. वी.
क. क्र. नि. उ. ता. यि. उ. म. नी. न. द. कां. स्या. क. मि. र. वा. हि. यू. वि. लू. न. क. सु. नि. या. ग. या. ल. क. व. थ. ग. वा. ग. नि. वा. र. पि.
ह. छि. वा. १. (म. म. छि. वा. १. थ. ग. वा. ग. धि. क. वि. लू. न. क. सु. नि. या. ग. नि. या. न. वि. दि. ति. सा. ॥ ॥ गि. रु. ला. या. य. मा. न. ॥
अ. ए. इ. वी. सा. धि. गं. ज. लं. वा. ग. क. ल. सु. नि. या. ग. क. षा. य. थ. य. ग. स्य. ग. ॥ ॥ जा. य. मा. ना. दि. यं. वा. सः ॥ ॥ व. हि. न. क. क. ३०
या. दा. हः. नी. त. या. ग. म. क. रु. नि. ले. इ. नू. तः. कृ. पि. तः. म. स. हि. क्का. का. ग. य. मी. न. कः. प. र्व. ह. द. वि. दू. बी. व. उ. ला. य. ग्नी. व. व. क.
मा. नू. ॥ ॥ ना. रि. या. र्ध. नू. जा. वृ. छि. लू. य. स. द. य. व. रु. ग. (अ. या. र्धं. म. धि. त. वृ. छि. नू. त. म. स. रु. या. रु. गं. अ. हा. ना. थ. व. जी.
व. म्भं. पि. रु. शः. नी. य. का. लि. नः ॥ ॥ इ. पिं. हि. यू. क. न. गी. वृ. श. व. स. नी. त. व. य. ल. ल. या. उ. वा. ग. उ. (म. म. उ. त. नि. व.
का. ग. म. न. त. न. डा. उ. सा. ले. ले. य. नी. व. हि. क. म्भ. स. व. यी. व. मि. र. वा. म. क. नी. व. अ. धि. जा. थ. स्या. यि. उ. क. द. यि. उ. गा.

कलु कन न्वा यिडा। हा ह्वा को स्या यिडा। चतुर्गि हा यिडा। का स। मिखा। झूयु। लिंग। मार्ग। धर्म मार्ग न पिहा
यिडा। सा ललप निडा। या सवायू उध्वा उध्वा ध्वा ल कुल गभत डाडा जहा ना कुक्कि म्हा सग योडा सि यिडा॥ ध्वा
या पिह निवोर वाग। ध्वा यिडा वा १ भा २ ध्वा नीय का विधी सन्निपात भाय॥ पिहा धि क सन्निपात निदानं॥॥
उला प उलवाणी ल। वा सा क क्राप लाई कः। निता सधू क रव हूँ न सदि का चपलानिगा। सचूर्ण सधू ना य
कं गुटिका सम्य क ल्यय न॥ अ स का ग क व क्क दि मूर्च्छा द न्या स दश मान्। व क्क निष्ठी वनं न क्रा वा र्थ गू व स
वाचकं कन्धी हाय। ग का श्व व क्क पिहं वना गनं॥ ॥ उलादि माद क॥ ॥ उला वडां लव। उला लहा। पात क
आ दल। पिप। लि उला व। नूय के गल। सू क भल। सिग सा भव। छू छमी। ख हूँ न। मिठि सि। ध्वा वूर्ण या उं क।
स्तिन उललं गुटिका दय कं नय॥ ॥ पिहा क्क व सन्निपात या॥ ॥ डा का क क्रा गु वृ ग्नी क्क शा ल ल क क्षमि

का कस्तुनसुत्रियातधाय ॥ श्रीगणेशधिकाः कुर्युर्वागपिरुकरुजमाग। मध्यदाहकानातिहं स्वस्य मू
लविसंक्षितः हिक्काद (सो न वा ग्लानिवा संहः ह कि संघति। समीनक कटिगादेः कागं वा संवययतः ॥ उत्थाय
कर्णमूलं गुल्मं भक्तिगतामपि। कुर्वन्नि कर्णमूलाखाः पिठिकाः कर्णमूलमः ॥ व्यालाकृतिः सुविहं यस्त्युहादे
षाविनस्यति। मध्यजीमधिकपिरुकरुर्वातादिकाजमाग ॥ स्वस्य नूपं स्वगं स्वावजिजागुकावक कर्म ॥ ॥

वागकिवापिरुनिवारः प्लव्वास्ववा रुजमधाय त्रियागधनपीडा। कनसा मान्यः धनगता मानं त्यायु चतनामदः ख
क्कायमदः वाहनसु नूगनसु कर्णसु मादसु कर्णसु स्याकदयु हिक्कावयु नूगताउरु सु मनससु खमदः मि
खाहिनकमकः कसु स्याथं स्याकः मधसाउता थसा नूलेयठः कसपागलिजाने कथाकं स्यायु कसपागकव
नककु यातलया उंअयिव थविकानिका सुत्रियागभं कनं थगलकगहनताउ। स्वकुरियथाकः गुविचिने

[illegible]

सर्वनामसूयायां स्यात्कारवत्तुल्यिकायथा कू नू (ग) उ स क लू स ल न क न यू डं ला उ न म ता रु स्यं वा नि व व
 का स हा ग ख ठा थं तव मान न स्या य थ क कू ट क म नि वि पा न अ गि ल यान क ध क वे य न ज्ञा ना ॥ ॥ ०० ॥
 ति छिं दा म सं नि पा न नि दा नं ॥ ॥ या म क हू ल कान ना धो य ना म ल काल वी । जि हू ग भि क ता ली ग गूं गी
 मू सु क ना व नाः पं व द ग्ग भि क ना म म धू ना सु ह ल ह य न् वा त (ग) म ह नः का नं हि क्का म्भ स म ना व कं । छि दा म
 स नि पा न श्रे पा श्व नं स्या नू वं ॥ ॥ या या दि पं व द ग्ग भि ॥ ॥ वृ ड् म (ध) स ही ना लु कू र्थ वी ता द य कू मा
 र् । उ क प का रि या ग ध य ण लिं गं स्व कं स्व कं । कं य मू क्छि म्भ स वि ला य य नि मा ह नं । सं मा ह क ०० नि र्वा
 तः स नि पा न सू दा नू वं ॥ ॥ (ग) म्भ क्ति वा १ पि ल भ वा श वा न स्व वा ३ क म प नि पा न न ह यि ड । थ या वा हा न
 स्या य । गु लि क्ति नं थ अ २ लू क व य व हा न थं व मि व कू ट क नू (ग) उ स किं ०० कू अ ला स वा या यू थ स

बहुत्रययुगाकारु कनन्यायुगातामार्गनः सलरहायुः ध्वनिदावनडाशुः सन्निपातः संभादकधाय ॥ ॥
ककुलंपूष्यनंष्ट्रौ धाषानकावकाववी। मूमगालीमत्वकपुनः अलागजकेगलं। उता निसुक्रवू-
र्धनिमधुनालेहयः हिषक ॥ डिदाषसन्निपातषुपाध्वद्वह्निः लिनः ॥ अस्कोगद्वनाधोनादि
क्षाकृदिनिवावनः ॥ वलुदुर्गंगमिदंयागंवागहनविनिर्मितं ॥ ॥ होनपवृद्धिमधुस्कायण
वातादयः क्रमात् पुकर्वकिगतानिकं गदंस्वस्वस्वगकिगः ॥ कुरुपिरासुजः कित्यावक्ष्यात्स्काटसंलवः
सर्वगायः पुपाकधसंग्रामाख्यहनः स्मृतः ॥ ॥ वागकिवा १ ॥ हाभनवा २ ॥ पिरुस्ववा ३ ॥ जनपविपातः ४ ॥ थडा
थडालुकाववहानवाधनपीव। वागनानाप्रविमाननः स्वावुलहीनः अस्ववयुः मिरवाः कासुर्यंरुवः का
उयंरुवः ७ ॥ लरगसंथय २ ॥ सककुवयुः क्रसकासमिरवाः क्रुः लिंगसुः ककुडायुः ॥ ॥ ॥ धनलेकगक

३३

मोक्षि विहग कस्तु श्रवणं स्वयं ह्यस्य सूर्यमा पिपी कर्कटासि शो

वडाज संग्रह मास्वा सुनि पात भय ॥

जी'काल'व्यता ॥ गालीन पञ्चत्वे क'ध'ना क'ना ग'के ग'ला ॥ वा'सा मे धू'क'सा वा'ध'उ'नी ल'न'क'व'न्द'ना ॥ न'क'ना मे धू'ना ल'ह'ह'रु य'यात नू'क्ति तः डा'का दिक मिदं नाम सुनि पात क'रा प'हः ॥ वात पिरु क'रु दा'ध'न'क'पिरु वि'ग'षतः हि क्का'म्भ'स'स्त'ध'क'दि'स्त'श्र'मू'र्का नू'वि'ज'मः रु'गा'मा'द'वि'षा'रु'कि'ज'रि'न्या'स'ह'न'म'नं ॥ डा'का

दि'ज'क'वि'न'ति'न'जः ॥ पु'वृ'व'ही'न'म'ध'स्त्र'य'ज'वा'गा'द'यः उ'मा'तू'स्व'स्व'ना'गं'पु'क'व'कि'नै'झों'गों'विला पा'य'स'क'प'नः म'न्या'स'क'न'न'स'स्व'म'र'का'भा'ह'न'ति'ज'मः सु'नि'पा'तः स'वि'रु'यः न'हूः उ'क'व'स'हू'कः ॥

नू'ध'म'कि'वा'न'वा'ग'नि'वा'र'पिरु'स्त्र'वा'र'प'वि'पा'त'ध'ध'ध'अ'र'ल'क'ग'र'यू'गा'क'यु'क'न'न्या'यू'क'त्य'यू'उ'म'क'प'जि'यू'नू'गा'उ'म'कि'नि'व'स'ल'र'हू'यू'ग'व'मा'र्ग'न'लू'क'ध'त'र'न'ना'स'उ'क'व'स'नि'पा'त'भ'य ॥ उ'म'क'प'जि'ना'व'

सियू ॥ ॥ मध्याय वृद्ध संहीता यथा वा तादयः जमात् । स्वं स्वं नृपं य कूर्वन्ति तद्वाज्ञाज्ञातज्ञादृष्टिकः ॥ जृक्तः पाकः यकृ
 लीहृददासाकादयः पूव । मयः प्रावगुज्जुगः गीर्णदन्तगतिनृत्तं । मर्माहतनतस्वेवलयनतविभषतः ॥ पाकनाख्या
 सविह्वयसन्निपातसूदावृणः ॥ ॥ ध्यापिरुक्चिवा १ ग्लान्ननवा २ वातस्यवा ३ ध्यातयापनिपातध ४ ध्याखडा ५
 क्का २ यानाथ्य स्यायु । मिखातादकनिउ । इवन् । स्य । स्व । जृक्त । जृनयि स । ध्यातसककुआयिव । मार्गन । क्कृणहि
 वयिव । उभकपजियिउ । ध्याकम्यावकमजिउ । हतवूननासुनू । गतउ स्याक । स्याकनधधिउं हयिउ ॥ ॥
 ध्यातहननासु पाकलाव्यसन्निपातधय ॥ ॥ वृद्धवातादयाययस्वेस्वेति । नेः समन्विताः उज्ञाज्ञं पत्रगः कुर्युर्न
 कतागप्रगाहगं । आस्यन्दते श्रुतेस्त्रीहृत्तुष्टाज्ञं विस्ंहिताः ॥ जीविगंयत्युर्हृद्वि संह्वयकूटपानकः कूटपानकिनं
 दृष्ट्वा व्याहानं सत्यवृद्धयः गदादेवपि न्मवापि निषादवायुधर्षति ॥ ॥ वातस्यवा ३ पिरुस्यवा ३ ग्लान्नस्यवा ३ धावर

३४

लकुटा दक्षतं गतः वाक् सनकः सद्वाधसलगायः नानासुतः कः पितृवाल्मेयः कनिडाः सननसद्वाधवतिहायिव
वगतामद्वाधतलकुटागतः डाडाः स्वकृतं प्रामः स्फुरयिताः धनकृतपात्रकयालज्जवा ॥ दवनकः उपनिः पिणव
नपूठयनिः धनकृतपात्रकयाशकलकुटाशयिताः ॥ ॥ धनिकृतपात्रकसन्निपातः ॥ ॥ शिवाधवसूखं
स्निग्धं निडावेकल्यनखवान्। निधनमनिः धनसमन्धानिर्वल्लहानिकः मत्पुत्रस्य महिन्यासः सन्निपात
स्यलकुटा ॥ ॥ शिवाधकापलपुः रद्यालविकनेलाकथाः कृतकानहनशकववः वगतामद्वाधसंमद्
धनसन्धानिनः वलमावकाडाः सीकथंगलं ॥ ॥ धनलकुटाशनडाडाः अहिं न्याससन्निपातधयः ॥ ॥
॥ ॥ ॐ तिरल्लुकवेशग्रन्थः श्यादगसन्निपातलकुटाः ॥ १३ ॥ अथनलाकग्रन्थसमगज्यादगसन्नि
पातलकुटाः ॥ ॥ सन्निगतादिकः एवसाधयेविरुविधमः कृष्णः कर्णिकायंजिकगसन्निपातिकः

कष्टास्तुष्टनगहयात्रादाहाहनिमानवः॥ अत्रकालग्ननेत्रचक्रकक्षीविद्यलायकः॥ गीताग(यस्य)तिन्यासः
 षडसाध्याश्चमानकाः॥ ह्यगवाः सर्वध्वेयः सन्निपातकुयादनः॥ १३ ॥ क(४) (१) सदायुर्धुः मूलका
 मदिदेदनाः॥ (१) सध्वलकक्षमभिनः सन्निपातिकः॥ ॥ सन्निगसन्निपातः॥ ॥ अतितडा
 कनः॥ सः कुमालायातिसात्रिकः॥ कृत्तक(४)यूताधमाजि काक(४)वकधुनाः॥ अतिः करुधेगिस्तुडि
 कसन्निपातिक॥ ॥ ताडिकसन्निपातः॥ ॥ मदमाह्रमसापाहासंगीतयुलायकाः मफवेक
 स्मिगापीजविषयकपवीकलोः लकलोः सन्निपातायं ह्यगयं विक्रविधमः॥ ॥ विहविधमसन्नि
 पातः॥ ॥ क(४)ग्रहाकनामर्कादाहकम्यविलायकः॥ मोहसायः निनावर्हिर्वातातियुलयं नृस्य
 पन्॥ क(४)कूजसन्निपातः कष्टसाध्याः विनिर्दिष्टम्॥ ॥ क(४)कूजसन्निपातः॥ ॥ कनकधुनि

॥ मरुथम्भसक मयलायकाः ॥ ग्रहसाधाम्भुह्लासः कर्णिकसन्निपातिकः ॥ ॥ कर्णिकसन्निपातः ॥ ॥
निकटाकधिनाजि काकागम्भसातिविकलः मरुः वधिवतावापिदलहीनादिलजलेः जिन्नगसन्निपाता
यं कष्टसाध्यावलजयः ॥ ॥ जिन्नगसन्निपातः ॥ ॥ माहसापयुताययवधकष्टः उमः ग्रमः ॥ वेद
नातिट्टाजाष्टाभसध्वलजलेध्वनेः ह्यं कष्टमसाध्यावृद्धाहसन्निपातिकः ॥ ॥ वृद्धाहसन्निपातः
॥ ॥ दाहामाहः गिनस्कम्पाहिकाभसङ्गकम्यनः ॥ सतापशानकाह्यं सन्निपातातिमानकः ॥ ॥ मानक
सन्निपातः ॥ ॥ स्वनेववावनेरुमेस्मतिगूयाकनाधिकः ॥ माहः यलायकः कम्पः उमानिजावलजलेः हा
तथाहम्रनजायंसन्निपातः जयंकरी ॥ ॥ तपनेजसन्निपातः ॥ ॥ वक्रनिष्ठीवनं मरुकाकनमाहसुपा
उमः ॥ वांतिहिकातिमानधसंहाना ॥ वायधप्रमः ॥ मउलंभववकंवदहसालजलंमर्गः ॥ हातयः सन्निपातायः

न कश्चिद्व्यतिद्यातकः॥ ॥ न कश्चिद्विमुनिपातः॥ ॥ सुतामः कस्य विहार्कः उहाना लभिता यवान्। पाद। ग
धमपीजव विकत्। उ निघादनः॥ रुयं उलायक चिकेः सुनिपातानि कृत्तकः॥ ॥ उलायक सुनिपातः॥ ॥ गत्री
वं हिमवच्छीतं च द्यति सा न कस्य नं। रुनिदादागतः सायं हि कात्तसः उमं वमन्॥ सर्वमि निधिला ह किं नीता मस
निपातिकः॥ ॥ नीता मस सुनिपातः॥ ॥ जिदाषं वमस्वं हि म्नि जावे कस्य न खवान्। निधेत न मनिः॥ कसी म
उमि वल्लहानिकः॥ मृदुल्य करि न्यासः सुनिपात स्य लज्जः॥ ॥ अरि न्यास सुनिपातः॥ ॥ मूखन उध स ३५
र्वा। जे द्यते गयी न वरुणाः॥ रुनिजायं विका न उ सुनिपात वृवा क विरु॥ रुनिड वरुं न्युत्वं कू न रू न ख वृत्त। उ
रुनिडिकं नाम क वरुदाधिक स्तः॥ ॥ रुनिडिक सुनिपातः॥ ॥ वृति वला क न वे य ग्रन्थ कथा दग सुनिपा
तः॥ ॥ १३ ॥ ती उ वरुं न स्य दः वा क्यं न स्य न मूखन। सुनिपात दान नाम अरु ह म न वं ध्रुवं॥ ॥ दान सुनि

पातः॥ ॥ रुसुतिनादतिथारसोऽत्रकस्मादरुहात्यतः। रुयंच द्वादशमहानसन्निपातातिमानकः॥ ॥ मानकस
न्निपातः॥ ॥ जीर्षकस्यं मुखरुनंगभुक्कस्यं हवन्नः॥ दशमहानरुवमृत्फः कस्यकः सन्निपातिकः॥ ॥ कस्यक
सन्निपातः॥ ॥ निम्ननशोसूटाजिक्ताक्षत्रमूळकिशानिवा। नत्रीत्रवहवयसिंसिंहाख्यसन्निपातिके॥ ॥
सिंहाख्यासन्निपातः॥ ॥ स्यत्र। मधुसंगल। मरुं विगुडिर्वृवनं हवत्। लकवंगयजानीया ह्यासाख्यसन्निपा
तिकः॥ ॥ ह्यासाख्यसन्निपातः॥ ॥ स्यत्र। मधुसंगल। मरुं विगुडिर्वृवनं हवत्। लकवंगयजानीया ह्यासाख्यसन्निपा
त्यारिख्यसन्निपातिकः॥ ॥ सूर्यारिख्यसन्निपातः॥ ॥ दक्षिणमंचमूळकशत्रुगुल्मकथेवव। हवत्। ल
विजानीयासुसमाख्यसन्निपातिक॥ ॥ गुल्माख्यसन्निपातः॥ ॥ सन्निपातस्यगुल्मस्य हकस्येवउमान
कं। दिनंषादन। श्रेव। सत्यं सत्यं वदाम्यहं॥ ॥ गुल्माख्यसन्निपातमाश्रयः कृ०५५॥ ॥ ॥ निवः कस्यं

खरुनेन उ हं गं ह व रु दा । द म ह न ह व रु दा । क म्पा ख्य स त्रि पा तिक ॥ ॥ क म्पा ख्य स त्रि पा तः ॥ ॥ हा
 स्य त ना दि त ती वं न नी न स्हा ट नं ह व रु ॥ द्वा द श ह न ह व रु दा । हा सा ख्य स त्रि पा तिक ॥ ॥ हा सा ख्य स त्रि पा तः ॥
 ॥ ॥ उ स्वे द नी त लं वे व वा वं न स्य न म्वा न । अ द्वा ह न ह व रु दा । म द्या ख्य स त्रि पा तिक ॥ ॥ म द्या ख्य स त्रि पा
 तः ॥ ॥ या ह स्य ना भा न का को रु दि सं घा त लु ल वा न् । व कु न वे वा क्क सि तं तं क रा ह कि मा न वः ॥ ॥ न क्का ख्य
 स त्रि पा तः ॥ ॥ हि क्का ख्य स रू मा यू को म्वा वि श्रा क ना व नः । स न ता क्क सि नः की ल न वं न य य नि क नः ॥ ॥ वि
 श्रा क ना व न स त्रि पा तः ॥ ॥ ह नः पु र डि यं का म म ना व क नि पी डि तं । ग म्ही वं ती कू व ग म् हं क लि नं प नि व रु य रु
 ॥ ॥ हा सा ख्य स त्रि पा तः ॥ ॥ दा रु स्वे द उ म रु क्का क म्प वि ह द सं ह्रितः ॥ कू ज न श्वा ति वे ग न्धे कू व म् क पि मा
 न कः ॥ ॥ क म्प स त्रि पा तः ॥ ॥ सु द ल ला ट हि म व न्न व स्य जी ता र्हित स्या ति सृ पि क्क ल स्य । क ष्टि ता य स्य

३१

नया निवर्तते। नूनं यमस्येति गृहं समर्प्यः ॥ ॥ श्रीगणेशसन्निधात ॥ ॥ श्रीदशभुजानि नूतनं च गम्भीराह नि मा
नवः ॥ ॥ नूतनं सन्निधात ॥ ॥ विसंरुता मयत्तु। भगिनि पतिता पिता। श्रीगणेशिनाः रुद्रं क्रुत्य कनन मयत्तु
नवः ॥ ॥ अरुणं सन्निधातः ॥ ॥ वलवान् स्यत्यं दामं च कननं सा। ध्वं नूतनं दवंः ध्वं सां म् ॥ ॥ मजिज्ञातु वेह
यस्य सव्यं वाजिभिर्मरुति। मुखं च जायत पृष्ठं यस्यानं च निवर्तयत् ॥ ॥ पंक मत्स्यवसाते लघुगगः
ध्वं यननाः विष्ठागन्धं यवादिगता सुयममन्दितं ॥ ॥ युकालसादाया नि। वलिना मन्त्राय सा।
यथां वा नवनिना सिगता सुयममन्दितं ॥ ॥ कत्राति सावः ॥ ॥ राह्यूर्यस्य वा नान्यवादिनः। यजीदां च व
लं यस्या मगच्छयममन्दितं ॥ ॥ वलवान् दूर्ध्वलावापि सुसाहं याः विगच्छति। उत्क्रायमाना वक्रगः सगच्छ
यममन्दितं ॥ ॥ निजानच्छिद्यत यस्यास्य जागर्हि सर्वदा। सूक्ष्मं वा वक्रु कामं च पुष्पाख्यायाम जानता।

वाताहिलाहृदययस्याईमनूपायिनी। नूजान्नविद्वेषकत्रीसुगच्छयममन्दितं॥ ॥ न्यामजिह्वाहृदयस्य
 ल्यंवापिनिमज्जति। मूर्खं वजायत दृष्टिं सुगच्छयममन्दितं॥ ॥ विद्याकठिनतायस्य अग्निश्चमन्दतां बुज्जत्। सुः
 काहाजायत तस्य पंचत्वंचनसंगयः॥ ॥ विन्दुच्छिकं यदा उक्तं पतन्क्रियदमेधूनं। नूहावागहृदयस्यः कालना
 (थनहासितं॥ ॥ ॥ उर्ध्वस्थसंयदा पृथग्ध्यायमानापि यागवत्। यमलाकंदिने कनसुगच्छनाय संगयः॥ ॥
 युवाहिकागिनः मूलं कीदृशं मूलं च दानूषं। पिपासंवलहीनं वमस्फुल्लस्यदिनेदला॥ ॥ विवर्णदन्तवदन्तं प्रक्षान्तं
 नष्टवतना। यस्वदसुधनूः स्फुल्लेदिगाउषसुगंम्यत॥ ॥ (गम्य) नूवदन्तं यस्य स्यदातीव युजायत। अन्तर्द्वय
 तफस्य इल्लेखं सजीवनं॥ ॥ छिंकषाविद्यायस्य उक्तं यदा पतन्तयदा। त्रिनाशयमपूर्वया किं कालना (थन
 हासितं॥ ॥ गद्याहितं हृदयस्य र्गन्धवहितं तथेव। रुनवहितं यदा तस्य सुकाहा नूयत नवः॥ ॥

३८

वक्रमाधूयत ग्रीतिस्त्रियत वत्र (लोतथा) चक्रन्वनिम्रतायाति तंगकेशममन्दितं ॥ ॥ समस्तमशक्त
त्वे मत्पत्नेकाहिकाहवत् ॥ ॥ ललाटस्थ चित्खातां नाभस्तत्पत्ररुक्रयात् ॥ ॥ चन्द्रस्याधस्त (धर्म)
वकर्षना (मपक) ४थाः तेष्व्यानिषिष्टपरः स्यात्स्वच्छिन्नयन्दुमासतः ॥ ॥ सूर्ययिमदिवन्द्यस्य कुमनः
स्यात्सर्ववक्तृधैयादिग्वानगुणनयन्दुदिनभूमवर्गसुवत् ॥ ॥ नद्यानग्रयणदहाद्वक्तायामपमाङ्गि
तात् ॥ सर्वमिणीतलत्वेवदशहानवर्गहवत् ॥ ॥ अकस्मात्कृत्स्नखास्याजिह्वायायदिमध्यके ॥ दृष्टावादन
सन्देहस्तदासुखदिनायतः ॥ ॥ अकस्माद्दयंनिम्रः स्याच्चैत्यकाहदामतिः ॥ ॥ ग्रीवापार्श्वरुशान्नाया
विष्कृदादपिपकृतः ॥ ॥ अकस्मान्नानिकावजंक (धर्म) दृष्टोत्थदेनतः ॥ नयववर्तुनीरुतसफाहास्तत्पदग
नात् ॥ ॥ ॐ निमन्निघातनिदानं ॥ ॥ ॥ अथसन्निघातविकित्सा ॥ ॥ विरुलाजायमानं

लोगो रुत सन्निपात विविक्तः ॥

वगुह्वी साधितं जलं वाताधिकं सन्निपातकं प्रायं वयं गच्छते ॥ ॥ गच्छिष्यन् वस्तुलं च वायुं गच्छी इत्यालला ॥
गुह्वी विना गलं वा अकेला गं कद्रुनाहिणी ॥ उषणं च दिका वर्गं सन्निपातानिलाय हं ॥ कागच्छ संवदं रुह्या गर्वत
न्यां यग स्यते ॥ ॥ गच्छादिदम्भः ॥ ॥ ॐ निवाता रुत सन्निपात विविक्तः ॥ ॥ गलात् वक्ष्यकोः
नील वासा रुक्मनीलायलं नागके गलं गच्छता पलाई च उयाजयत् ॥ निता मधूकरवर्गं वस्तुदिका ग्य
यला चिता ॥ गच्छना मधूनायुक्तं गुटिकां च युक्तं लयत् ॥ नकपिरु विद्या सव संनिपात मूपडवं ॥ ॥
॥ वृहत् गुलादि ॥ ॥ उनीलं धन्यं कं मस्तु सा विद्या पर्यतयत् ॥ मधूकं च नंदनं यं गलाधका मय्य वासकं
कपूरं न मृदि काया सनीलायलं सकं गलं ॥ प्रियंगु गुति पटालं पञ्चके गलं नाहिणी ॥ समस्तं गुल्य गो ॥
लग्नं गच्छना मधूना लिहत् ॥ यलापञ्च ममूकं विच्छदिहिका नृषाय हा ॥ पिला रुत सन्निपात हितं

३२

॥ विष्णु रुद्र सन्निपात विष्णु ॥

साय डव वूच ॥ ॥ इह कउली लादि ॥ ॥ उह हा ॥ गम साहन कस इह कोल सि ॥ य खं ॥ ००
खमी ॥ ग्री ख उ का थ प लो गु चो उ गं ला नि सि आद ग क प र्ण मी सि इला लं र उहा ल स्या
नू प के ग ल प मं गु सू क म्या य नो उ व ति प ल के ग ल क द क थ ग दू र्ण सा स ल क सि न उ म लो
न कं पि हा रु न स त्रि या त न ग या क ॥ ॥ ७ लो त्व क य को गी ल वा सा क श्र प ला ड क सि ता व
म धू र व र्ण न म द्धि का व प ला नि ग ॥ स चूर्ण म धू ना मू कं गु टि का व पु क ल्य थ त ॥ ग म स का ग द न
क दि म र्छा द न्मा म द उ मा त न क नि षी व नं ट क्रा पा र्ग ग न म नो च कं ह न्प्रो हा य ग्व सा षा न्त्र
न क पि हं व ना स नं ॥ ॥ ७ लो दि मा द क ॥ ॥ ७ लो ज व ड ल व उ हा हा आ द ग नं उ या त क
वि धी ॥ थ ग वा रु ल छि सा ष न ॥ ०० खमी ॥ ख र्ण न मि दि सि थ ग उ १ ध न ग य चूर्ण या डं क सि

प्र १ यो ४ रिला

॥ एतेषां रुद्रसंनिपातविक्रिस्ता ॥

नवानावनकं पितृकृतं सन्निपातनामया क ॥ ॥ साधवक नूषनकने जयां रजनका वयन । वा रु
ली सानसंवेवक स्रनसह या जयन ॥ ॥ सन्निपातमिखा सबड्या जजन ॥ ॥ ॐ ति पितृकृतं
नसन्निपातया विक्रिस्ता ॥ ॥ आ डक स्रनसाधनं सैन्धवं कद्रक जयं । आ क ॥ ॐ धनय द्या वि
निष्ठीवं वपूनः पूनः । तेनास्य रुदया ॥ ॐ ध्या मन्त्रा यागुर्वनि लाग लान् ॥ षर्वं रं दाना नृकानि
डा का म ग लो मया न् । सकृदि विवशुः कुर्यात्तु दक्षदा षवलावलः ॥ ॐ द्वि यत्र संघा दः । ऐष जं सन्निपा
निक ॥ ॥ कवलग्रह ॥ ॥ सधू मन्त्रव । पिपी । गुं धि । ध्यन दूर्गु या वृणीत रुद्र विय । ध्रुव सधुं तं
य । नूगन स्याक । उम कपजीक । ॐ ध्या वा को स्याक । कपात्र स्याक । ॐ धि आ धि स्याक । एवय मरु । ॐ उ मरु
म्वसवव । कण्डू या लाग । ध्यन ना मया क ॥ ॥ क हलं पूष्क वं नृ सी द्या षया संव का ववी । स्रम्वर्ण कर्गं वे

॥ वागपिप्लोधिकपुनिपात्रिदि
॥

वमधूनासहलहयत्। हिक्काभसंवकागंवकण्ठगनिमकति। हकथदतदद्वान्त्राडकस्रनस्रनवा। उमा
हादावृणंनद्रागन्दीकागसमन्वितं॥ ॥ अष्टांगलह॥ ॥ कर्वसिक्कूयूष्कनामूलककटासि। जिफटू। इ
लालं। हजी। धतवू। कस्तुरिनालं। नकं। ॥ अष्टांगलहसन्निपातनाममाक॥ ॥ ६० ति। ॥ अष्टांगलहसन्निपा
तयाविकिसा॥ ॥ ७लासूक्तकलडाकात्वचनागविहीनकी। गुंथीयूष्कनालीगविदिमधन्वयासकं॥ ॥
कनामधूनायूकंवागपिलाधिककन। सन्निपातनिहत्यागुकागहिक्कागवायहं॥ ॥ ७लादि॥ ॥ ७ला
कसू। पिपी। मिदिसि। नृपकगल। विह्व। गुंथी। यूष्कनामूल। तालिस्यां। विदिसि। इलालह। विनि। कस्तिसवूनाव
नय॥ ॥ अष्टा। हिक्का। व्यासनाव। तकाप्रतंसन्निपातनाममाक॥ ॥ धतवागपिलाधिकसन्निपातया॥ ॥ ७ला
विहीनकीसूक्त। क्षणीयव्यटकंनिवा। गूँक्षलामागधी। गुंगी। जूजाजी। कालवायूना॥ ॥ तालीगपुल्लव्यक्षयकंनाग

नागश्रीभाषिकसन्निपातविधिः॥

केशलं वा सांमधुर्कसौ नोति नीलकण्ठं च द्विवन्दनं ॥ नर्कनामधूनासहस्रकथन्यातवृत्तिः डाकादिः
कमिदनाम्नासन्निपातकनायहं ॥ वागपिलकहृदाधनकपिलविशेषनः हिक्काश्वसनथाकदिष्टश्रः
मूर्च्छनितितया ॥ हरीनायविमरुकिमरिन्नासहनंयनं ॥ ॥ नृगीयडाकादि ॥ ॥ श्रीसि. विहव. कसू
अम्वन. खखन. हनद. सूकम्या. पीपी. ककीटासि. जीन. हकजीन. वाग. गालीग. लव. नजयात. गमसा
हन. नृपकगल. आदग. ००४मी. उग्रहा. कव्यन. श्रीखगु. नकनन्दन. धनेद्वर्णकस्मिनवाग. सामनत
मंनय ॥ हिक्काश्वस. कदि. नृश्र. मूर्च्छ. अन्वि. लगनपूउगु. विष. वाकपजीक. धनेनागयाक ॥ ॥
॥ ०००तिवाग. श्रीभाषिकसन्निपातयाविकिसा ॥ ॥ याषकहृलकानकायूष्कनमूलकालवी. वयुर्जागक
गालीग. गीमूक्तसनातनाः ॥ पंचदशभिः कं नाममधूनासहस्रहयत् ॥ वाग. श्वकनकाग. हिक्काश्वस

शत्रुकं ॥ त्रिदशसन्निपातं च पार्श्वमूलसूक्तानुगं ॥ ॥ यं वदन्मंगः ॥ ॥ मन्त्रिवः पिपीः पुंथिः कर्वसिक्कः
इलालतः पुष्कनामूलः पुलाः वतुजगिकः तालिस्त्रां कर्कतासिः कसूः यं न वावनः धनवर्कः कस्तिनवलावनयः ॥
वातः ॥ श्वभक्षनः स्वसाः हिक्कः थसाः अरविः त्रिदशसन्निपातः द्यकास्याकः धननामयाकः ॥ ॥ ग्टंगीकः हुर
तालीसः कृकामन्त्रिवनाग्नः कृकजाजीः इलालतः गठिसूक्तः हनीतकीः वातुजगिकः तालीवः सधनासः ह
सुहयः ॥ ॥ षष्ठादशमंगिकं नाम वातः ॥ श्वभक्षनाय हं ॥ त्रिदशसन्निपातं च कागन्धः सगन्धः ॥ हिक्का न
द्याउवाद्यानपुगिस्त्रायनिवर्तनं ॥ ॥ षष्ठादशमंगः ॥ ॥ कर्कतासिः कर्वसिक्कः तालिस्त्रां पिपीः म
नवः पुंथिः हजीः इलालतः गलपिः कसूः हनउः सूकस्याः तजपातः नवंत्ववः नृपकेमलः तालिहाः धनक
स्तिनवावनकः ॥ श्वभक्षनः त्रिदशसन्निपातः स्वसाः थसाः सासलपडः गलवागः हिक्कः कनहनवाउगुः

नृगनस्याकपीनालनागधननागयाक ॥ ॥ त्वक्षणीनीलसूक्ष्मला नागत्रयसंविभववापिप्यलीमनि
 वंशुंथिकालवीसइलालराः ॥ कइलंषूक्ष्मंभंगीसमरागमनिचूभूयत् ॥ सन्निपातत्रिदाधवकागंभ
 सुगलग्रह ॥ क०नागवहिकार्यामधूनासहसुहयत् ॥ ॥ द्वादशमेः ॥ ॥ नअंत्ववतगयात ॥ ५५
 हासुक्ष्मा नृपकेगलपिपीमनिवउंथिकाववीइलालराकर्वसिक्पूक्ष्मामूलककटासिधनसम
 रागवूर्धुकस्तिनवानेनकंत्रिदाधसन्निपातकासधसागलपतस्याकहिक्धननागयाक ॥ ॥ कइलं
 पूक्ष्मंभंगीधाषानकावकाववीसुसुगलीगत्वक्षसूक्ष्मलागजकेगलं ॥ ७॥ नानिस्त्रसदूर्ध्वनिमधूनालहय
 हिषक्त्रिदाधसन्निपातगर्वावहिकार्यामधूनासहसुहयत् ॥ ॥ नानिस्त्रसदूर्ध्वनिमधूनालहय
 कंनामवाग्भनननिथाजिगा ॥ ॥ वरुदशमेः ॥ ॥ कर्वसिक्पूक्ष्मामूलककटासित्रिकटजन

का. उला. क. सु. तालि. स्वां. न. उं. त. व. त. ज. प. य. सु. क. म्या. वृ. प. क. म. ल. ध. त. वृ. क. स्मि. न. वा. व. न. क. त्रि. दा. ष. स. त्रि.
पा. त. वा. की. म्या. क. नृ. ग. व. म्या. क. व. स. म्या. क. ध. सा. म्ब. म्ब. क. व. हि. क. उ. २. अ. दि. कं. ध. उ. २. ध. त. न. ग. या. क. ॥ ॥
व. यु. र्द. म. म. ॥ ॥ क. ह. लं. पृ. क्ष. न. गं. गी. वा. यु. जी. न. त्रि. जी. व. कं. जा. नी. ह. ल. व. उं. गं. व. ता. ली. नं. धा. ष. या. सु. क.
मृ. क. क. स. म. वृ. ध. नि. मृ. कं. ना. म. धू. ना. लि. ह. त्. ॥ मृ. नि. पा. त. कृ. त. धा. त्र. अ. रि. न्या. स. स. दा. वृ. धं. य. ला. य. क. म्य. मृ. क.
अ. रि. को. म्ब. स. दा. वा. य. ह. ॥ उ. ना. धा. त. क. नृ. ना. ग. मृ. व. म्ब. ध. व. मी. ह. त्. ॥ ॥ अ. द्या. द. म. म. ॥ ॥
क. र्त्त. सि. क्क. पृ. क्ष. ना. मृ. ल. क. र्त्त. ता. सि. वा. यु. जा. त. क. त्रि. जी. वि. जि. ह. वा. व. ता. लि. स्वां. त्रि. क. द. इ. ला. ल. त. क. सु.
स. म. ला. ग. वृ. ध. सा. ध. व. क. स्मि. न. वृ. वा. व. न. क. ॥ धा. व. स. त्रि. पा. त. अ. रि. न्या. स. ता. क. यु. क. न. न्वा. क. ना. नी. व. कं. य. ला. व. ध.
म. ह. हि. क. ध. सा. क. व. नृ. ग. व. म्या. क. क. धू. म्या. क. मृ. तु. ग. उ. ध. व. व. ॥ धा. त. न. ग. या. क. ॥ ॥ न. वं. ग. क. की. ल.

द्युतसुवृत्ताववलिनिदयकं नय ॥ १ ॥

मूलीवचनं नृगमचतुर्जातकवापमस्यलं। विजीवकक्रागुन्ययकगलं ननं सवित्वं मवदं सुदन्वना ॥ क
पूरिजातीरुल्लंगनाजिका। नितावृष्टगं कृगहृमचूर्णिनं। उसायदं वृष्यति दाषनस्यना अयाकपाकं व
लूअग्निवर्धनं। उनाविवधं वृद्धयंगमूलं। साकसहि काक्षत्रयमपीनसं ग्रहवपी सावगलग्रहावृद्धं
निहनिगुल्माकनजग्यकागिना। द्युतनल्लजरीगुठिकां युक्तीयल्लहक्यास्मधूपयावृत्ते ॥ ॥ **श्रव**

वंगमदि ॥ ॥ **वज्रं ककाला उग्रहा श्रीखण्ड वंगनावं चतुर्जातकः मत्रिवपिपी गुं धि उहानस्यान**
जी हजी ०० मं विपी अंगुलि पलकग नकि व्याल - - - - कपूरजिह्वा हिमराज विनिमा
ष व्यालगत धत हृमचूर्ण कलिनेवृत्तावनकं विदाषमत्रियातना सयाक अयाक पाकवनिव अग्निवृद्धि
हयिव नूगनयात्राग धसा म्वस्य यम्रात्राग पीनस ग्रहपी अगीसाव अर्वद गुल्मा कननाय ना सयाक

॥ अथ एतद्वाक्यं ॥ अथ एतद्वाक्यं ॥ अथ एतद्वाक्यं ॥ अथ एतद्वाक्यं ॥

वेतर

॥ ॥ तिवात (अथ) अधिक मन्त्रिणां विदित्वा ॥ ॥ सागलाहीमला लांगी हिमजा मानगी सुतः हस्तिरुत्त
स्ववावा नावावनी (अथ) सुनीत थ ॥ मान्सी किं जल्क भावा लमू संव समल कर्ना । वक पितृ हनं नृ क्रो दाह सम
त्रिता ॥ हस्त स पार्थिवं व विषम क व ना गनं ॥ ॥ वगुर्द म ॥ न वं ॥ दि ॥ ॥ न व ड क र्प्य न ॥ अगु
वसि । तालि स्वां । जिह्वा । सूक म न । न वं स्व व । उ म्हा । वं ग रा व न । मी सि । ज ता मा सि । य ल कं ग ल । वा ल । क सु । थ
न सम हा ग । सा म न न वा वा व न क ॥ व क पितृ । नृ क्रो । दाह । नृ ग व म्हा क । वा को म्हा क । विषम क व । थ न ना ल या क
॥ ॥ सम सू क व वृ ॥ ॥ उ ला म ल य जं य जं त्व क्क ला य क्क ल लं । य छिः काल म क्क क्क क्क र व र्क व र्क ल
नं य नं ॥ न वं ग मि दि कं ना ज । वु खि नी ग क्क ना म धूः उ म्हा ल हि का । प्र वृं पा न नं क्क व नं दि न ॥ म द मू क्क थि म
क दि का ग म्हा स विषम क व । जी हा उ (अथ) हि का च सन्निपात ग ल ग्रह ॥ नृ क्रो क व पार्थिवं ल । स्व व र्क द

कृतकृत्यः। दन्तुलं पर्वतं दन्तकण्ठना। गमनावकं॥ तृतीयादमहिनासहस्रासन्नितुल्यं॥ नकुपि
रुक्कुरुवागतिदोषविधि। क्षयमः यजुनाजसहस्रं ग्रहणीजनिवाचनं॥ ॥ अक्षुलादि॥ ॥

[illegible]

॥ सन्निपातसमूहत्रयक्रियाश्लेषप्रकाशयन् । प्रथमं द्वादशं । तत्र द्वितीयं पूर्ववदुद्धतः ॥ तृतीयं च न

उदाष्टसन्निपातविक्रिस्ता ॥

वंशदिश्रुदिमधुकसावक।उतद्येयापवात्राकं हनिवन्दुनयाजिता॥ ॥ सन्निपातयावासत्रकम्प
 थथयादूनं॥ क्रापांदादगांगनके हनं वतुर्दगांगनके हनं यश्च वंगदिनके थगुकथं यायमानध
 क हनिवन्दुनाजानयाजनपाकगया॥ ॥ लेख्येयै सुखलानागकेगलभवव। पिप्पली सन्निव
 गुंथिकालवीवइलालह॥ क हूलं पूष्कवंगं। समतागं निवृत्तयत्। सन्निपातयिदाभवकाग
 सगलग्रह॥ कृशागवहि कायां मधूनादादगांगनिकः॥ ॥ दादगांगी॥ ॥ लवडत्ववतेज
 पागक। सूकम्पा। नृपकेगल। पिप्पली। सन्निव। गुंथि। हकजी। इलालह। कर्वसिक्कू। पूष्कनामूल। कर्कटा
 सिध्दगं समतागं वृष्ककस्तिनवानावनके शिदाष सन्निपातनाग॥ ॥ क हूलं पूष्कवंगं। योषनकावका
 नवी। मूक्तगालीगलत्वक्कृष्णलगागजकेगनी। उगानि लक्ष्मवृष्णिमधूनालहयहिषक॥ शिदाष सन्निपा

तं मूपावर्द्धद्विभूतिनाम्सकागकनं धावंहिकाकृदिनिवावरां॥ वरुर्दभंगिकं नामवा गृह्णनयाजिता
 ॥ ॥ वरुर्दभंगः॥ ॥ कर्वसिक्कपूकनामूलककृतासि। त्रिकद्वि^{रु}क्री^{रु}ला^{रु}कसु^{रु}नालिस्थं नवंत्वव।
 तजयउ। सूकस्या। वृषकमल। धनवृ^{रु}कसि वनाय वनावनके। त्रिदावसुनिपातना स्याक। व्यका स्याक। नृगवपा
 वस्याक। वसुस्याक। धसा। स्वत्व। नवकाव। द्वि^{रु}धं वव। धननागयाक॥ ॥ ॥ नवंगमलात्ववपिप्यलीनां
 ला। मयकल्याकसमानमिस्थः पनाईमकं मत्रिवस्यदशात्॥ यलानिवत्ता निमक्षोषधस्य। गितासमवूर्धमि
 दं उरुम्भः॥ समस्तनागधकना विरुकि॥ कागस्तथा नावकपाधुनागः कृत्वा हमाह कनकासलार्ग। कनक
 यंसर्वगदाय हकिवक्रि^{रु}दी^{रु}कि विदया लमयः॥ ॥ द्विगीयलवंगमदि॥ ॥ नवं। सूकस्या। नवंत्ववपि
 पी। धनत्वनागलाग। त्वरमनिव। त्व^{रु}धं^{रु}धि। आसुवव। विनिववभावन। समस्तनागनागयाक। कन। स्वसुजव

४५

१८

अहिंसासंनिपात
विक्रिया

विष्णुनागः नृगनयानागः नृलपिनागः अथतनाः कामलनागः अर्जनागः कृतकयाः अग्निवृद्धिनागः ॥ ॥
॥ सधूकसानसिन्धुत्ववचामकक्षसमाः सुभ्रयिष्टानुसानसंकर्याः सुहः पुवाधनं ॥ ॥ ॐ ॥
मीः सुधूवहाः मन्त्रवधिपीः धृतलंखसनिस्संक्राससः चानः चतनामइयाः चतनादयिवः ॥ ॥ नधू
कसान ॥ ॥ उच्छृकारुटिकाताजिजाजवमधूयद्विकाः पलपास्यनायस्यः सन्निपातात्मककृतः
॥ ॥ ॐ तिष्ठिदासंनिपातविक्रिया ॥ ॥ ॐ ॥ कर्पून्सुभ्रललवंगवृकं सुकंक्रमवता
कृतस्यपयः। द्विकेगलसूर्यविषयकृतानिहनिगीधुंमुखपाकसर्वं ॥ ॥ कर्पून्सुभ्रलल
वंकंक्रमवलसिन्धुवतेजपातकः नृपकेगलः पलकेगलः धृतवृद्धिलसुखंनस्यः मुखपाकनाग
याक ॥ ॥ कर्पून्नादिद्यत ॥ ॥ हनउतिनककावकावः वसुपावसः सुपययायः अहिंसासुहृन्नया

मलीतिका गटा व्याप्य। वास्त्रा विषय वासका। दान्तरागी कक्ष वेव। जयन्ती पृष्ठा वा मृतं॥ सन्निपात
क्षेत्रं हन्ति। निता हिं गु मधूर्युतं। तद्विहिक्का न संकाश। नृक्का नृ विनिवा वधं॥ ॥ सत्र पि। स्वा नृ। जटा
मासि। दा क ४। इ गु ४। गुं धि। आद न। मी क सि। अहिं हा। तानि हा। पिपी। त मा न। पृष्ठा वा मृ। गुं गु। ५।
त स म ता ग वृद्ध्या उं क्ता थ दा स्पं। हिं क्ता व। त्वन कं। त न्या क व ना म या क॥ ॥ हिं क्ता वृद्ध्या उं क्ता थ दा स्पं।
तं पिप्पली वृद्ध्या संयुतं। सन्निपात क वं धा वं अहि न्या संसूदा वृद्ध्या॥ हत्या र्ध मूल माना हं। सयः पिरुपे ना
मयत्॥ ॥ हिं गु। पिपी। वृद्ध्या ना व। पा नृ ती न क्ता स्पं न क॥ अहि न्या स क व सन्निपात ना म या क॥ ।
पूत नृ वा गु पूवी व। जयन्ती वं गु वा स कं। पंच मूल क त म्भ ५। ग म मूल ५। गं गु ५॥ न स्प न क न अहि न्या सं सं
क्ता वा म्भ ५। प जा य त॥ ॥ पूत नृ। त माल। गुं गु। अल गु। आद न। क्ता ल हा आदि न पंच मूल। ग म मूल ५

४५

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नितीव पा० जं मुं धिव वा क हल का जि केः कर्ण ॥ म ध ह ना ले पा त्स नि पा न क ना प हं
॥ ॥ धा लि वा सि या कू वा हा य मुं धि व हा क न व सि कू ध ग स्व धि सु नि ना व पा य क र्ण मूल ॥ म
॥ ना न या क ॥ ॥ ॐ ति स नि पा न म् स क ल विलं वि का न क र्ण मूल नां वि कि त्सा ॥ ॐ ॥
॥ ॥ स्व दाल चू त्वं गि न सि क चू या का म् स्व र व न् । ऊ व धू य न नां क्का व क न मू क स ल क णः ॥ ॥ नां ग मा य निः
ऊ त लु ना न क न मो ष धं । ग नः क र्म रि ष क्क षा ह्ना न पू र्व स मा व न् ॥ ॥ य लु ना ग म वि ह्ना य क र्मा य न र न
रि ष क । अ यो ष ध रि ष न ह्ना न स्य सि धि र्य द क्क या ॥ ॥ य लु ना ग वि ण म ह्नाः स र्व ले ष क्का वि दः दि न का ल वि
॥ म ह्नाः त स्य सि धि र्न स न यः ॥ ॥ आ दा व ना नू जं ह्ना न प्र य त्त न वि कि त्सा कः सा ध्मा सा ध्म वि गं ह्ना नः क र्मा
वि कि ति र्गं ॥ ॥ ना लि ना ॥ म वि ना दा ष य त्सा ह्ना वि कि त्सा कः अ नू क म वि दा ष नां लि ण्वा धि म् वा व न्

वे ४
४१

त ॥ ॥ व्याधि तावपि विज्ञानवेदनायान्वनिग्रहः ॥ नृनद्वेयनवयत्वं न वेयः ॥ पुत्रनायूषः ॥ ॥ यथ
विषं यथा गन्तुं यथाग्निं न निर्यथा ॥ तथेष्टधर्मविज्ञानं विज्ञानमस्य तं यथा ॥ ॥ याहिः क्रियाहिर्या
यन्ते ॥ ज्ञात्री प्रभातवः सुमा ॥ साविकित्साविका नानां कर्म तत्तिष्ठ ज्ञां मगा ॥ ॥ उत्पद्यते हि सावत्कादमका
लवत्तं प्रति ॥ यस्याकार्यमकार्यस्या कर्म कार्यं तव जिता ॥ ॥ यथा मनु विनिर्नीता यथा व्याधि नि
कित्तिताः ॥ न समं यात्रिया व्याधिः स ह्येक कर्म यावद्वैः ॥ ॥ अल्पदोषगनीयानयः स ह्येक कर्म दोषजः ॥ ॥
कर्म कथा कर्म कृता दोषजः स ह्येक कर्म दोषजः ॥ ॥ अमात्रयत्वा ह्येक कर्म सामान्येन विद्याय न विदधामि
कत्र दोषं तस्मात्तद्वचनमावने ॥ ॥ लंघनेन कयत्री न दोषं सन्धुक्ति न सः ॥ विक्रनत्वं लघुत्वं च कश्चेवास्या
पजायते ॥ ॥ सयत्कस्य वा जाते कत्र सा मय विज्ञानेन ॥ कृणुत्वं म नार्हस्य न कृमि त्या हता कृतः ॥ ॥

अनूपस्थित दौघातां वसनं नू (लक्ष्म) । दृडागं असमाना ह मा हं व कू नू न कू न ॥ ॥ ज्ञात मा उ वि कि त्स
 य नाय को न्य य थ ग दः । व क्रि नू वि स उ ल्यः स्व ल्य वि वि कि त्स कू न ॥ ॥ दर्शन स्प र्शन पु स्त्रे र्वा धि हान
 शिक्षा मताः । आ नू प द र्ग ना त्स र्म की ता दि उ क्ता य न ॥ ॥ कृ कृ पा यः सू खा पा या द्वि वि धः सा ध उ च्य त
 भ सा धा द्वि वि धा रू मः ॥ ॥ व मि तं लं घ नं प्रा हः लं घि तं नु न वा म थ नू । व स न कू
 न वा हू ला वि धा लं घ न क र्चि तं ॥ ॥ क र्म जा ओ ष धः क वि द्या म जा ४ सु भि वा य न । क र्म दा धा ह वा य स क
 र्म जा ल स्य उ च्य त ॥ ॥ स उ व कू यि ता दा मः स मू क्ता न वि (ग म ग) ॥ स्ना ना क न ग न अ पि वि का ना कू नू न व
 कू नू ॥ ॥ का र्य न वा स वृ ड् न ग र्हि न्या न व दू र्व ता । त थ पि नू ल का द व (ग क का म ल जे क थ) ॥ ॥
 व स न स्य ॥ ॥ ॥ अं ग स्वे दः नि व स्ना यः नी त ता ह कृ पा द यः उ ता नि य स्य वि क्रा नि स का ल

कालकृतकृत्य॥ कालकृत्य॥

कनकन॥ ॥ कनकापंचत्रतिहायुःमाजसमापतवः॥ लाहाशकखाउयुःथानविक्रयतडावथ
कननमानूषमावकनं॥ ॥ थकात्कनकय॥ ॥ निम्नदाहालवयस्यदिवानीगंवजायने। करु
द्वनितक०स्यतस्यमृत्फर्तविष्यति॥ ॥ नातिस्त्रयूदाहनवःदिनसुविद्वरखाउताव। ॥ थका
नक०सुप्यापलदंडंवाड॥ थगलजगशत्रडावःमृत्फरुयिव॥ ॥ अलिनितायानिपितुंवपि
हंयातिकरुगुरु। करुषक०मासुतदल्लरंनसजीवितं॥ ॥ पिरुयाच्छुवातवनिवःवात
याच्छुपितवनिवःक०सु०रुयूर्लुशयिवःथकनागीम्यायइल्लर॥ ॥ रुदयवगथनागगा
निपादोवनीतलं। निवसापाएवयस्यतस्यमृत्फर्तविष्यति॥ ॥ नूगनःक्रास०लाहाखाउनिन
रुक्काक॥ थकनागीमृत्फरुयु॥ ॥ रुकानगीतलोयस्यरुकात्रमग्निमनिहं। महादापाएवयस्य

तस्य मृत्पुत्रविषयिनि ॥ ॥ ग्वं कृत्रागीया थ श न ग्वं स ह का न र वा उ ॥ ॥ कृत्वा न क्वा क थ म हा दा ष ॥ ॥ थ कृ
त्रागी मृत्पुत्र रयू ॥ ॥ अंग कं यो गति तं ग व र्ण पु व र्ण नं व व ॥ ग न्ध स्या द न जा ना ति स ग र्हे य म म न्दि नं
कृत्वा क का र्य गति तं ग ॥ र व तो क म जी क ॥ न ॥ स्वा द म सि व ॥ थ कृत्रागी मृत्पुत्र रयिव ॥ ॥ कृत्र स्य द
ह व य स्य मृत्पुत्र स्य स प व र्ण न ॥ अ कृत्रागी अ न वा रु सा वि का ला वि ला कि तः ॥ ॥ कृत्र च व र्ण ति ना
पं व यिव ॥ कृत्वा न ग्वं स व र्ण न प य ॥ अ कृत्रागी नृ न र यिव ॥ थ कृत्रागी म म्वा क ॥ ॥ नी त लं पा
लि पा दो व नी त लं ना हि म उ लं ॥ नि त स्ता मा ह व य स्य न स्य मृत्पुत्र विषयिनि ॥ ॥ ० ला हा र वा उ ॥ ना
हि म उ ल र वा उ ॥ नि त र कृ क्वा क ॥ थ कृत्रागी मृत्पुत्र रयिव ॥ ॥ अ नृ न्ध ति कृ वं चै व वि श्रु यी विष द
नि च ॥ आ यू ही ना न प न्ध कि च उ र्ध मा नृ म उ लं ॥ ॥ म न्वा ॥ क्रा स वा ॥ वि श्रु प द क्षाय ॥ मि खा रू सि ॥ नृ

४२

गत्राज्यमद्वक्तृत्वं न सखन ॥ ॥ अत्र नृत्तिरुवर्जि काधुर्यं नासाग्रमूचते । अत्रार्म (ध) पदं ह्यं हृदयं
मा नृम उलं ॥ ॥ अत्र नृत्ति धायः मया काः कृतवक्षयः ज्ञासया काः विष्णुपदक्षयः ज्ञातिकाः मा नृम उल
क्षयः नृ (म) उ ॥ ॥ जिह्वा कृष्णरुवयस्य मुखवक्त्रं कं मं पुरं । पंचन्द्रियं स नृजं वा तस्य नृत्तिरु विष्णुनि ॥
॥ ॥ महाकूपः खानवव्यूः पंचन्द्रिहृदमवृत्तानं नृत्तिरु ॥ ॥ कृत्वा लीयीत ययस्य वाग आहानवव
नं । आहानादकृतयस्य सुवर्षेण विनत्यति ॥ ॥ नारीसुवातनयीत ययं तयः वातन आहानववध्यासं त
यूः थ कृत्वा गि मृत्तिरु शयिव ॥ ॥ क्षत्रा विन्दुसंवेवपतितावमहीतलः सुका हाजायते मृत्तिरुः कालहानी
उत्तावते ॥ निकानतसुलंखक्षत्रथं अरूटि थं कृत्वा नववखनिवः थ कृत्वा मन्त्र कृत्वा नृत्तिरु शयिव ॥
॥ ॥ नृत्तिरुतापनीयू कान कृत्वा स विवर्जणं । बहिर्मासे नृत्तिरुतापीः जायते वयमात्तयं ॥ ॥ नितान

सः मिहः नायमदसः तापदवः पुतावः मिहः नितावः साः जानं विहः मवावः केथे पुनूषः पुनान क्र्या मृत्फः रुम् ॥
 कननमपूलनूजया उंवन ताव थः कृषूना न क्र्या मृत्फः रुयिव ॥ ॥ अगका वरुपा सुस्यवरू निम्बः ससंयुग ४
 वलं वपति तं निहं सा सुमं यः जीवति ॥ ॥ पापुनाग नायक मजिवः ता कालं न्मः सनन तावः किने उयडव
 नतन तावः थः कृषूना मिवा किने क्र्या मृत्फः रुयिव ॥ ॥ साम्यद्विहवयस्यः प्रागावः जानथे ववः गुः उम्बः किने
 वयस्य सापिसाः न संलयः ॥ ॥ मिखाग जहिः कः सनमतावः खः जायत्यकः रुवः अया मन्मदिः थः कृमन
 मसीक ॥ ॥ पातिपा दोरुवयस्य दाया स्वत्यतलः सुगाः जिः काको मत्तगा यागि सुनागी वननयति ॥ ॥
 लाहाः रुनिः रकायः मशकः कामलः थः कृषूना मिमसीक ॥ ॥ निडा सोरुवयस्य नत्री वं उरुमंन थाः रुडि
 यानिपुः सुनानि सुनागी न विनयति ॥ ॥ सुखन के उइः उयडव मइः पंचादि रुदमवूत ॥ थः कृषूना मिम

५०

(आगनुककननेकध॥

सीक॥ ॥ स्वदहीना कनयस्य नासां सप्त उवर्तत। क॥ ७४०॥ कुरुहीनस्य न जीवन्नाय संनयः॥ ॥ कनसुचन
निहीन। क्रासुन॥ सवहनयू॥ क॥ ७४१॥ कुरुहीन। ध॥ कनमिसीक॥ ॥ वेगनय सकलं यस्य गन्धसां स्फुटं रवत्
कलापुत्रिगक॥ ७४२॥ सजीवन्नाय संनयः॥ ॥ समस्तुवर्तन॥ ७४३॥ ससिवा नया स्वादसिवा क॥ ७४४॥ सपीजमद॥
ध॥ कनमनूषमसीक॥ ॥ ध॥ कालल्लानस क्राका खयापत्रिजाया शव॥ नागिनवकननकयाव॥ पदत्रयं वा उग
सं॥ सियू॥ स्वायूगु॥ सियकयाग क्रास्यं नया॥ ॥ ॥ ७४५॥ कालल्लाननिदानं समाप्तं॥ ॥ ७४६॥
अथ॥ कनल्लाननिदानं माह॥ ॥ आगनुकादि कनयत्रिजा॥ ॥ अरिषागा रिया नात्या मरिषंग
रि सापतः॥ आगनुजायग दाषेयध॥ स्वंगद्विहावयैः॥ ॥ अत् ॥ अरिषाग कन॥ अरिषावकन॥ अरि
षंगकन॥ अरि सापकन॥ ध॥ न आगनुककन॥ ध॥ या ध॥ ७४७॥ वागन॥ ल॥ क॥ सिय॥ ॥

तत्राहिया तैयो वायुः प्रायात्र कः प ह्रसकः। सव्य धम (म धवेव र्गु कनाति सवृजं कने॥ ॥ अहिया त
 नजायल वू वातव हिव कोयल पाव स्या क नव वा क मंगु दयिव हने नव वा कं जायल वू॥ ॥ ध अहिया
 त ह नक्षय॥ ॥ अवास्या विष कने (म धती सा न मे व व। ह कान् विवि पा न्म व गो द थ स ह मूर्च्छ यात्॥ ॥
 स्वात अ वू विष सं वा न र श थ प्य क च्छ लू छा लान क द यू न य म य व प्या स वा यू प्य क स सु या थं स्ता यिव नू (म
 उ म च्छि निव॥ ॥ ध विष सं वा न क नक्षय॥ ॥ अषधी ग न्ध ज मूर्च्छ निरा नू क व म धू र्छ ध॥ ॥ अ स न न का
 व या नू ग न म च्छि न नू ग न स्या यू ध न व व थं उ नि अ प रा हि वा न या ध न ल ज ल॥ ॥ ध अहि वा न क नक्ष
 य॥ ॥ काम ज विरु विं स सु ल्या ल स्य म रोज नं॥ ॥ विरु आ कि र यिव ह न ह न वा निव अ न सि र यिव
 न य म य व॥ ॥ ध न काम क न या ल ज ल सिय॥ ॥ र या न्य लायः (म का च्छ र व लो पा च्छ व प धूः॥ ॥

हयनववक्षत्रयाः नाकशुकनन्वायुः रवयुः तमवायुः क्षुद्रयुः धृतरक्षत्रक्षयः ॥ नाकशुकनन्वायुः रवयुः ॥
 ॥ १५ सोमक्षत्रक्षयः ॥ ॥ क्षुद्रयुः नाकशुकनन्वायुः ॥ ॥ १६ कोधक्षत्रयाः ॥ ॥ १७ अहिषंगक्षत्र
 क्षयः ॥ ॥ अहिवा नाहिसा पार्श्वो कुरु कुरु प्रजायते ॥ ॥ अहिवा नयां अहिसा पयां मय न ह्यक ॥ १८ निगुयां
 ॥ १९ अश्वपुवनरुयिवः प्यासवायुः ॥ ॥ २० तिआगशुकक्षत्रया निदानं ॥ ॥ अथ आगशुकक्षत्रस्य विकित्सा ॥
 ॥ ॥ गजायो सर्पिकः पानं कुरु पितृगत्रमवः निम्बदात्रुक्षायं वाहितं साननसम्भवेत् ॥ ॥ ॥ २१ आयां आगशुकः
 कया धलषुडावत्यनकः ॥ १९ अश्वपितृगत्रमवाहितं कनः निम्बः सीकृसिः काथदासं च न कं आगशुकक्षत्रमां ॥ ॥
 ॥ २२ अहिषंगे इष्टं ग्राह्यं न दनकम्यनं ॥ ॥ २३ अतः कडयाः तव वंगक्षत्ररुयिवः कुत्रिवः रवायिवः क्षुद्रयुः ॥ ॥
 ॥ २४ कामग्राह्याः कयाः काक्षितिरुयामला ॥ ॥ २५ अहिषंगक्षत्रं किं हतं सामान्यलक्षणं ॥ ॥ काम

लम्बकः लयः ध्वस्वनायां वातं दधु रुयिवः मलनतंगुः। काधकः त्रयाः पिरु दधु रुयिवः मलनतंगुः॥ हृत्तनकः उयाः छि
 दाघनतनिवः॥ मलनगनिवः॥ ॥ सिद्धार्थः छि रुता निलीषकटरीः (ध्वगावलाभगतकी। मंजि ह्या नजनीद्वय छि
 कतु कंथमाववाहिगुवः। मलकागलमूयपिष्टमधूनासिद्धग्रहात्मादनः। हृत्तात्मादविषकनयममनंभाना
 दिहिर्याष्टिगं॥ ॥ व्रीकाः हनः ज्वनः विहनः निलिः (मलसिः ज्ञापामार्गः (ध्वतज्वनाजितः कनंजसिः गु
 जगुः मनुः हनुः मीकसिः मत्रपिपीः गुंथिः प्रियंगुः दहाः हिं ध्वतज्ञानसंघाननिसं कस्मिनदूलावंगवः सर्वग्रहन
 कडगुः हृतयुगः। अकिनीदाघः हृत्तात्मादहनः विषमहनः ध्वतनागयाकः॥ ॥ कर्पीसाष्टिमयूलपञ्चदहतीः
 निर्मालापिः प्रीतकं। स्वगमास्ति वृषदं विचवता केनहि निर्मातकेः (मगं न द्विपदकहिंगुमनिव सुल्य
 धूपकतः। स्कन्धमादपिः मवनाजसासूनावनग्रहं स्रुतः॥ ॥ कपास्यायूः श्वास्वायाः दाकः ४ निवि

॥ कणासूयायुः श्रीसखायाः दत्तक ४ निवि

निवनिर्मात्रिः मदनरुलः लवः लवः जगामान्तिः तटिरिवः तच्छाः वेहाः विष्णुलिः साऽऽदन्तः हिंः मन्त्रः ध्यातस्म
रागः धूपकृत्तकः नानादेवः ग्रहः कृत्तामादः विष्णुः नाकः सः ध्यातस्मस्तदाष्टनानायाकः ॥ ॥ त्रिकद्वकदलः
ग्रन्थी कृत्त माकात्रकं वः सूनरुलववकनीनीलिका कृत्तकं वः रुलत्रिक कदका नियुग्मसिद्धार्थकं वः मधुक
गुगुत्रवात्रवन्तनागीत्रकं वः ॥ मनानिनाहनीतकीयमाकेतुयवानिवः स्त्रीपुत्रियंगुवयं वदानर्मधुकसा
त्रकं ॥ लूलापस्यदधिवेवच्छागदधिवः मधदधिं वतसूत्रं समरागमनिवृत्तयत् ॥ द्युतवृषाचनं क
त्वा स्त्रीनासिकायां वयाजयत् ॥ सर्वं गमयन्तं कुर्याद्भस्मादनागनागनं ॥ ग्रहदाष्टमपेत्मात्रं नानादाष्टं
॥ ध्यातस्म ॥ दयकं ॥ ॥ मन्त्रः पिपीः पुंथितेजपागः पिपलासूलः कृत्तमः उमसखाः स्वाखिस्रानयः त्रिकुला

कऽकालिः विहाः निलाधूतिः कृत्तः स्वात्रः रघुखं कृत्तुकिः ॐ काः यकाः ॐ श्रीः गुंगुः वयावाः त्रिकवन्दः ॥

नववचिद्रुनायः सततकृत्तयः ॥ लासवउगुविद्रुनायः जून्त्ययः ॥ ॥ दाकस
 अउगुविद्रुनायः रुगीयकः ॥ यनिद्रुननववगु ॥ ॥ कागसः दीकसः सनसः वउगुविद्रुनायः वरुथ
 ककनयः ॥ स्वकृजकनववगु ॥ ॥ थवउथकिद्रुनजसाध ॥ ॥ यमनाजायाधयधनसिय ॥ ॥
 पठालादृष्टानि कान्धनिवाहिः सतजलं । सतगाखाकनदयं वातादीनां निवृत्तयः ॥ ॥ खायुषानयाहाक
 सुः आनः कुशकिः इद्रककसिः ॥ थनकाथदासं तानकं क्रिधं ववविद्रुनायनामयाक ॥ ॥ थसतनकनया
 पठालाविष्टमृहीकान्धमाकंतिरुलाष्टवं । काथः उकाहिकं हकिमर्कनामधूयाजिनं ॥ ॥ यालेदवतिनिम्य
 मीसिष्ठियंगुः ॥ तिरुलाः आनः ॥ थनकाथदासं तानकं कसिमाषनकसं ॥ ॥ कृजकनववविद्रुनाम ॥ ॥
 उकाहिककनया ॥ ॥ वन्दः नानीसुधनासैद्यगुपूवीपद्ययपरं मर्कनामधूनायूकं ॥ ॥ क्रीदाहनिवातनं

नृतीयक कनकदं नक पितृ पु मूयत ॥ ॥ श्री खलु उल लहा म सा हं क सु गुड गु का थ य ल र व र वं
का थ दा स्य त्व न कं सा ष न क लि छु श व ह य म्पा सु वा व नृतीयक कनक या हि पि रु मा च कू ॥ ॥ च न्द ना दि
॥ नृतीयक कनक या ॥ ॥ स्ति ना सा म ल की दा नू नि वा द म म हो ष धा नृती न ज लं द या छि ना म धू वि मिः
श्रितं ॥ वा तु र्थ क कनक ती वं म न्दा मि वा पि या च कः ॥ ॥ सा न य न्नी ज म्ब न द व दा नू ह न उ आ न गुं थि का
थ दा स्य त्व उ कं क लि छु उं त्व न कं वा तु र्थ क ती व क न अग्नि म गु मा च कू ॥ ॥ वा तु र्थ क कनक या ॥ ॥
वा सा शि क दू का जा जी ल वं ग का ल वी नि वा न क ना म धू ना ल हं नी ग क रा नि ला य हं ॥ ॥ आ द न शि क
दू जी ल वं ह जी ह न उ सा ष न धन क लि न वा लं न कं वा न वि कू क न ना न ॥ ॥ वा सा दि नृ सां ग ॥ ॥
प नं द द न कं वा सा गू जा जी प ल कं ग थ ल व न म नि सें गुं थि न द वा य ल म छ कं ॥ सु र्ग ला व स्य स ये व गु टि

काकालमिखान। जोडनविलिहृद्यापिवातविषयकनापहं॥ ॥आनेह। पुवरजीपुवति कद्रु
सूकम्पायुध्वनचूर्णकस्तिनवृत्तावकाकालसिपुमानगुनिविनावनकंवागविषमकननागयाक
॥वासादिगुटिका। वागविषमकननाया॥ ॥॥रुलात्रिरुलामूलपिप्यतीवासकंसधूःगर्कना
सुहसंयुक्तंपेलिकविषमकन॥ ॥तिलवं। त्रिरुलाकसू। पिपी। आने॥००॥रुमी। असनवच्छिन्ना
षनवच्छि। अनावनकं पिरुविषमकननाग॥ ॥रुलशिकाककागृमीनीलात्यलपियंगुका। वा
सुकानि समायुक्तंविषमकनरुनंतिव॥ ॥त्रिरुला। पिपी। हिमनाज। उरुलास्वा। पियंगु। आदग। १५
नस्रतागचूर्णकस्तिनवृत्तावनकंविषमकननाग॥ ॥वासादि। पिरुविषमकननाग॥ ॥त्रि
कद्रुकदनभाजीवंगजाकगलंच। रुलगयसविठंगंजातिवासासमगं। मधूयुगसमसीरं। अस्मजातवि

[illegible]

[illegible]

लूमिदं दगमं। नितासुतागममपिमाकि कं वः। युकोपयस्यिरुकरु निलाहा। सर्वगसुभिः निवसुपुका
 पः। नृयं हि न किमिति मलापुहारी। तजनि सुहाहिषजः। युयागमत्॥ ॥ अतिवसु। जिह्वा। नवं। गिरुला।
 जी। हजी। सुकम्पा। वलति। आदम। स्मराग। चूर्ण। वासुयाचादेमाषन। कस्तिनवावावनकं विषमकात्रकस्य
 क। माउस्याक। मलसुद्धियाक॥ ॥ दमंगं वासादि। वातपिरुविषमकात्रया॥ ॥ पटोलमूलम
 त्रिवं नीतासुसि वपि वितां। नर्कनामधूसंयुक्तं वमनं यत्र मोषधं॥ ॥ पालुर्जतिहा। मत्रव। खाउलंखस
 नीस्यं साषनकस्तिर्कनावन्वनकं थंनकायउलम॥ ॥ गिरुलाजाजिद्वकृश्रापिपलीमूक्तकगलं। ल
 वंगजातिकं न्धमापातकं वतालीसकं॥ वंगजावासकं युक्तं स्मरागमनिकात्रयात्। पिरु। हवाधिके कषसदा
 हं यत्र मोषधं॥ कर्दिमूच्छिमात्रेव वातपिरु जिद्वषज। विष्णु कनधूसर्वधूनास्तिनस्यामक्षयमं॥ ॥

जध

11

जिह्वा जी दा कु जी पिपी क सु नृपक ना ल वं जिह्वा प्रियगु तालि स्वां त ज पात क सुक म्पा ल वं
त्वच वं ग प्रा वं आल स्म हाग वूर्ण क स्ति न वा ना कं न । पिरु (श्र) विष म क न ह्य थ न व व नृ (ग) उ म स्ति
नि व ०० क्यु जि दा ष विष म क ना दि सर्व दा ष मा त क थ वि ना न भ व गु म इ ॥ ॥ म ध्वा सा दि ॥
पिरु (श्र) विषा धि क विषा क न या ॥ ॥ दे व दा नृ स्ति ना मू क प थ्म पि य्प लि वा स कं । क षायः स म य । न्याः
उ वा न (श्र) विषा क नं ज य न् ॥ ॥ दे व दा कू सा न य श्री पि पी आ ल थ त स म हा ग का थ दा स्यं त्ये स्यं (श्र)
विषा क न ना न ॥ ॥ वा षा जा जी द यं गा नि सू र्ज ला जि ह्वा ल व । इ ला न रा सिं ह मू लं ग क्ती ना म धू ना
सु हः वा न (श्र) विषा क न का (ग) श्री ह मू ल क थ व सी । उ ना धा न य ति स्या य विषा क न वि ना ग य न् ॥ ॥ जि क पुः
जी ह जी जि ह्वा सु क म्पा जि ह्वा ल वं ल वं त्व च । इ ना ल ह सि ह मू ख धा य आ न थ त स म हा ग सा ष क स्ति

ममकमुगनकरनरुता॥

नवानावनकं वात (म) विषमकननाता॥ अलपजवमूल वाकीलिवव नू (म) उ स्याक क्रासहिदिहिदि
मिन (ध) माक वात (म) विषमकननाता॥ धातु (म) सावनकस्तिनवानावनकं वात (म) विषमकननाता
॥ अं लपजवमूल वाकीलिवव नू (म) उ स्याकं ॥ ॥ गुनगा रुदया रुता सुदनं रुथिनावकी नस रु
उदात्रं लिगं देनं वा स्यापजायत ॥ ॥ अज्या उयू नू (म) उ हि उ हिया थं धवूयू उला हा लानूयू थन्नवयू
नयमययू ॥ ॥ जत्रयात्रसुसवउगु कनया लज्जता ॥ ॥ नरु निशीवनं दा हा मा रु कर्दिन विजम यलापदि
गक रु क्रात्रक (ग) उ कनेनृगं ॥ ॥ अं ज्यो रं यं ॥ अउ सउल हा यिव तापन्वयूव जव द्या हा यिव थन्नव
यिव रु कयू ताक रु कनत्वा यूव क रु वयूव प्या सवा यूव हि स व उ गु कनया लज्जता ॥ ॥ नरु गन कनन
ज्जता ॥ ॥ पिलुका थ वनं रु क्रा सु वमूय पूलीषता उभा रु दा रु विकृपा स्मनिः स्यात्मा सग कने ॥ ॥

५०

जुमगयुकावतः ॐ ॐ सनयियु नयमयवः प्यासवायुः क्तदयुः उकं गुदिखि इवनेगायवावः ॐ लाहाः अगाः
रितीनसनिवः ॐ ॐ कुरुनवातिवः धुगुत्रिकनलासवः उगुः ॥ धर्मलः उगः रुननासमान्मगनकनधायः ॥
हगस्वदठक्रामूर्च्छाउलायकृदिउवतः योगभवावकं ग्लानिमदस्त्ववासहिः कृताः ॥ तवमाननः चनमिहा
यिवः प्यासवायिवः नूः ॐ ॐ सकिनिवः न्वधंन्यायिवः धनवयुवः नयमययुः कनरुनवातिवः सहलपमरुः ॥
धर्ममेदगतकनयालः उगः ॥ रुषाक्राकुरुनंभसातिलकः कृदिभववः विकपधंवगः गलमनदस्तिगनक
नः ॥ कागसः स्याकवायुः उरुनरुनहातिवः कुरुसुधसावहनययिवः धनं कनं वयिवः ॐ लाहाः अगाः जिमि
नसनिवः धनिषयनं कागसवः उगुः कनसियः ॥ ॥ अस्तिगनकनधायः ॥ तमः उवगनं हिक्काकागः
लोपं वसिस्तुः ॥ अकृद्वाहामहाः वासासमर्मकृदधमरुः ॥ ॥ खिउगायुः कापाहिक्कवयुः स्वसवयुः ॐ

मनुका लाका सिसे नरु नरु नरु ॥

क्यू वाकी वयू व्या सुतायू इवन तापना यिव गत मान न थ सा वयू व नती वरु का ३ थं ३ थं सा यिव ॥ ॥
थन लंकु हन ना सु ॥ ॥ मऊ गत ह व क्षय ॥ ॥ मत्र गं जा मूया रुण गु क स्वागत हनः ॥ सरु संग द्य
ता भाऊ ॥ गु क स्व वि ल भनः ॥ ॥ लिंग न द्रु र यिव वीज यापनं पि हा व यिव थ द्र म म्या क थ वीज
सुव ड गु व ड गु क न ॥ ॥ छऊ गत ह व क्षय ॥ ॥ थन सु फ धा रु गत ह न या ल ऊ ग ॥ ॥ वरु गिन व सु क
पू वा ता ये ला क रं क मा न् वे क ता न्यः सु दः सा धः पा क र वी नि ला ह वः ॥ ॥ वि प नी त जा य ल पं व ल सा अः
सा ध ख व नि य य नं वा त र क अ सा धा दी ला गुं ला की ला का य ला च गु ला व क ला थ न स वा त आ दि त जा य न
पी व क मा क थ न भ व पि रु हा भ थ मी स काल स जा य न पं व ल सा अ सा ध ख व थ व काल स जा य न पं व व ना य
सा ध धा य ॥ ॥ व र्मा सु मा न् र ता इ क पि रु हा भ आ चि ता ह नं क र्प्या लि रु ध र ग न दं त स्य चा नू व ल क रुः ॥

५८

वात झा पा को पल पाव लिपत सु वर्षा सु पितु (श्रु) अ क न श यिव सु न द का त सु पितु को पा रु न लिपत सु वा
न (श्रु) अ न त निव ॥ ॥ त नु कृ प्या वि सु र्ना च त नु ना म सु ना ह यं क रू वा व सु के त म पि वा त वि रु ह य द नू ॥ ॥
ध या स्व हा व गुं ला यं ला को ला का य ला धिं स ला पा स ला धा त सं न य म य ल ना स ह्वा य मा न ख व वा त ध
उ स सी त लां नि स्यं दी त ला ती या ना गि त न सा म न स्य श व सा म्वा त के धा कू नि श्र य न ॥ व स क का ल सु वा
त नू क न स व यिव लिपत सु पितु श यिव ॥ ॥ का ल य धा स्व सर्व षां उ वृ लि वृ द्धि न व व नि दा ना का नू प न
या वि प त्री ना प मा यि ता ॥ ॥ ध व र का ल सु ध व र ना य का ल या दा न ग्व न वू जि या व द कां जा य न य
य ध नि दा न सु ज्ञा ना धं ध व का ल सु ज्ञा य न पू सा ध ना ग ना य के जि व उ प स म धा य सा ध ल ऊ व ॥ ॥
वि प त्री त या ई ना य जा य ल पं व न सा ध ना य ना य के धा कू ध ल ऊ व म हिं ध वू नू प स म धा य ॥ ॥
ॐ

अनर्कद्विहृत्तन॥ वहिर्द्विहृत्तनः॥

धनञ्जयकीर्तिनाय॥ ॥ अनर्कद्विहृत्तनः धिक्कृत्तनाय स्वसुतं प्रमः सन्ध्यास्तिगुलमस्वदाः दाषवर्ध
विनिग्रहः अनर्कद्विहृत्तनः लिङ्गनिहृत्तनस्य निलज्जवः॥ ॥ इहियुः अनर्कद्विहृत्तनः ताकृत्तनः नान्धायिवः तान्ध
तिः लिङ्गः अनर्कद्विहृत्तनः ताकृत्तनः नान्धायिवः तान्ध
लैकैः भयः अनर्कद्विहृत्तनः ताकृत्तनः नान्धायिवः तान्ध
नां च माद्विहृत्तनः लिङ्गनिहृत्तनस्य सख्यसाधनमववः॥ ॥ वहिर्द्विहृत्तनः ताकृत्तनः नान्धायिवः तान्ध
वान्धनः उयकैः अनर्कद्विहृत्तनः ताकृत्तनः नान्धायिवः तान्ध
भयः॥ ॥ लालाप्रभकीर्तिनायः हृदयागुह्यनायकाः तन्ध्यास्तिगुलमस्वदाः दाषवर्ध
नाम्नः तन्ध्यास्तिगुलमस्वदाः दाषवर्ध
॥ लालहायिव

५२

लंखकाथशकातेव ४

आमकनलकुल॥ पाककनलकुल॥

नृगमउमच्छिनिवामनसूद्विमशव। नृविमइउमकीलिववजलसिवाव। नृउसंककृच्छिनमरू।
उमसाक। कृच्छयाउ। उकंगुदिउथंरमासीव। कवललाक। नृपाककनयानेयोलकुल॥ थकनसुअ
सुनयायमनव। उवाहृग। आदिनमनव। नृउवाहृगतेव। आमकनकंचियाउंयोनगुथ। आमकन
शताल। लंखदायकंस्थंदेविंकाया॥ ॐ ॥ कनवंगमधिककृच्छयाउलायः स्वसनंअमः मलवार्यविनूः
कंदपचमानसुलकुल॥ ॥ कननव। प्यासतव। ताककुंत्याक। स्वासतव। यिकुवाहिलिचंर
सुचंकदयूव। धन्रवयिथ। उनिव। आमकनपाकउ। उगुयालकुल। थनलकुलसुअसुनयायनआ॥
॥ ॥ थनआमकनया॥ ॥ कृच्छामतालसूत्यंवगमजलं कनमादिवः। दाप्रउवृहिनस्थाहानि।
लामकनलकुलः॥ ॥ लुषदव। कृच्छयाउ। कननवमशव। थ। आगचाकनपाकवउगु॥ ॥ निना

निनामकनलेऊ॥ दमउपउव॥
(कनहउलेऊ॥

मकनभय॥ ॥वलवत्सर्वदाषषूकनसा॥नूपडवः॥वललाकनायउना॥कनसाधरुनाउपड
वनमंत॥थलऊवलिं॥नायउनासिया॥ ॥थसाधकनभय॥ ॥असूकनविंऊदिठ
अरतीसानविमुहा॥हिकाकागभतेदावकनसायउवादगः॥ ॥सातववंग॥नू॥मदमकिं॥नू
विसद॥थनवव॥यासदव॥वाहिलिथपउ॥हिकवव॥म्यसावव॥माउसाक॥थमजिनानागयाउपडव
हयीव॥ ॥थतेदमउपडवभय॥ ॥रुउतिर्वरुहिर्यागावलींति॥वरुलऊवंहिउयानि॥
मिलिन॥तवमाननायजायनपन॥वलालान॥लऊवदकांवलवकयाउंजायीव॥थनायजावस्ररुने॥ ॥
॥ ॥रूतिऊवह॥लऊवनिदानः॥ ॥कनजीगंव॥मरुंनगम्हीनादीर्यनातिकः॥असाध
वलवानूयम्यकेगगीअकककनः॥ ॥जीगकनवं॥अमउंवल॥गम्हीनकनगव॥दीर्यनातिककन

दीर्घाग्निकदात्रलुक्छ॥

भाय। धनं कत्रजु साभा। धनो यवतुला यिव। निःशयनं कननी धया कत्रथ। धनं नपावजुन हनिव। ॥
गम्भीर सुहृन्नाहं या कुरु द्य हा लुषाहयात्। भानदह्यनवापथं म्भसकागांगरदतः॥ भानस्का विषमा
यश्च। यस्या द्वादेर्धना शिकः॥ ॥ गम्भीर धया कत्रभुङ्क्ते। इतापनायू। प्यासुवायू। धानं दू दू न जास्यं
जयिव। शिवकमदसंजुत्यर्थन। धसाम्भसावयिव। कस्यायुव। नकनाग हस्यं निःसंगवमानं क्रि क्रि संवा क्र
संतव क्काशयू। धनं लज्ज हनना स। दीर्घाग्निक कत्रधाय॥ ॥ जाभी वासक जायमान शिहला ना
लीसकं पित्तकं। केलातं सपटाल निचकद्रकं वदियं वापर्यटं। तव्या वा निविषावग्रन्धि चनच्छिन्ना हवा का
नवी। साजागी सविजंग गदादि कटुतं यक्षी सधु दीप्यकं॥ सादिव्य स्रवमादयं वनवनं दैकावहिंगु समं पा
थेला सुलवंग दकिनि वूलं वषाह व्याषा नि कं। वृत्तग ददनी उमान गुटिकां पूर्वा क्रिये र्ह कि नं। काला का

॥ ५ ॥

सविदनजकुगमनादाप्रयंकापजिह् ॥ गुल्ममूलकनाष्टकाप्रमप्रमाकाश्वासमापहाआनाहादनुपा
 प्रमहमन्रवियक्ताजिमीनागनं। कृत्वाकैविवधनकनीनानावृजानासिनी। कृक्कादाहमहासुपिरुसकला
 नृयस्कासलान्नामथर् ॥ ॥ लामिहाआदगनमात्र। त्रिहला। गालिस्त्रो। संहलसि। खालु। खासूयलहा
 नीह। कट्टक। ॐ उजव। खखं। सिपि। जमि० ह। पियलामं। कसू। गुंगुउ। हकजी। जी। विमिसि। मीकसि। मिल
 वं। ॐ हमी। ॐ मूं। वान। मजमं। सुधूवि। सुलाकवि। ववि। सुहविवि। पागवि। माहजं। खान। मसुखान। हिं
 वाहाय। पुकम्याज। लवं। दकि। यूनेद। वि कट्ट। विगकहा। थनसुहागदूर्ध्वयलसिउमानगुटिकाविठश
 कलिनवालं सुधरगमदशनसं कालाकालनववहन। निंगु। मनींगुनयादाधनववहन। विदाधकापलयू। गुल्म
 मूल। व्याताप्रकावहन। ॐ कृ। कोष्ठाग्निगुहियाक। आहौह। उदवनाग। पापुनाग। मिहिं। नृविमइ। धनन्याव। डि
 ना

६९

ॐ नमो भगवते विष्णवे नमः ॥

मिव च नाना नागः प्रासवावः हि यथा जम्बुपि रुः कामलादिः सर्वभागनागयाकः ॥ **॥ थनं गुह्यं**
दिगुटिका ॥ सर्वं कन्या ॥ ॥ तालीनं नाचनं नागत्वकं तिलावकं धिनाः पुरुषां च विक्रीणी ल म
जा जीवपनाईकं ॥ सर्कनां तु लोहाने च रुजययु लोहचनः ॥ विष्मकन रुनं कानं ॥ श्रीहमूला नूचिकुथ ॥
हृत्पार्श्वग्रहलोपायुपीनसंजिमितागनं ॥ चर्चती सान रुह्या गुवन मग्नि कनं पनं ॥ **॥ तालि स्यादि**
तालि स्यां ॥ मनावन नृपकालः तिस्रगभिः थन कर्षवधनः त्रिकदूमीसिः उगलहाः जीः थन कर्षवधनः
अमलवद्धि साधन बद्धिः थन क्रिथं नकं विषम कन नाग ॥ **॥ अलया संगुः नूतः नूचि मरु नूतः**
कपायु नागः प्रासमवाव ग्रहणीः जिमिः कोदतः थन वतः वलः अग्निदयकः ॥ **॥ तालीनं दिविषम**
कन्या ॥ ॥ नागवधिका जानः पिपली मूल विषकं ॥ कृष्णवपलिकान् लोमन् द्युतप ह्व विषा

यथं ॥ १० गवेल सत्रय स्तं मस्तु य स्तं गये वव । ७ काहिकं व द्वाहिकं त्वाहिकं व चतुर्थकं ७ तासर्विक ना
हिकि स्तुलं वक्र नृग ए गं । इन्नामन्व स का ग च्चं वल व र्ण विव इतं ॥ ॥ अमृत मृत्यु न द्युत ॥ ॥

॥ अमृतमृत्युनमृत ॥ ॥

ॐ धिः सि धिः स जि खान वि ष ला मूल वि न क हा वि धी ७१ सा ध स रं १ धू न गा वृ ति रं १ ध वि ति रं १ ध
 त स धू ना व न य क्रि थं व व कृ कृ ज क न व व नि कृ ज क न व व स्व कृ ज क न व व प्य कृ ज क न व व वि कृ ना ग
 ॥ ॥ ग नी न ह्य उ कृ म्हा स का ग सा च कृ व ल वृ धि या क ॥ ॥ ज स न ष त्स न द्य न ॥ ॥

॥ अस्तु नमस्तु नमस्तु ॥

[illegible]

॥ विष्णवे नमः ॥

अमृतममृतम् ॥

ॐ वासादिगुटिका ॥ विषमस्तन ॥

मृत्नीह ॥ गमथगुजमयः कान ॥ अस्मिन् विपाडु गुल्म मूल जया वहं ॥ अग्निवक्र नूनदी किं बल वृद्धि कला
निवे ॥ ॥ आदमः गु ॥ धि ॥ विधी ॥ मनिन ॥ पुषध ॥ नय ॥ विपला ॥ मूल ॥ सिपि ॥ गुजगु ॥ गजपिपी ॥ धनवाड
१ गय ॥ कालीन ॥ पागक ॥ उमसुहा ॥ लवड ॥ उरुला ॥ नूपक ॥ मल ॥ रुकजी ॥ गोधाहन ॥ धनक ॥ विनय ॥ धन
पूर्ण ॥ मृत्नानवा ॥ नूनावनकं ॥ विष्म ॥ कन ॥ नामयाक ॥ ॥ वासादिगुटिका ॥ ॥ विष्म ॥ विषमस्तनः
झीह ॥ गमथ ॥ गुजमय ॥ मयसा ॥ धसा ॥ अत्रवि ॥ पाडुनाम ॥ गुल्ममूल ॥ जयप्राग ॥ धननागयाक ॥ अग्नि वृद्धी
वस्तुवृद्धि ॥ वृद्धिवृद्धि ॥ धनवधययाक ॥ ॥ विष्म ॥ विषमस्तनया ॥ वासादिगुटिका ॥ ॥ रुल ॥ य
यंव ॥ धाषंव ॥ उरुगभि ॥ जिजीवकं ॥ विनवनं ॥ जिजागकं ॥ गिक ॥ यंव ॥ नानि ॥ सुसुक ॥ काहिधानकं ॥ उकाहिकं
वध्याहिकं ॥ प्राहिकं ॥ वव ॥ यथकं ॥ कालाका ॥ स ॥ व ॥ व ॥ वा ॥ नि ॥ दा ॥ व ॥ वा ॥ पा ॥ ह ॥ ति ॥ ॥ विष्म ॥ सुक ॥ वृद्ध ॥ ॥

हृन्तु विहृन्तु अंवेन मनिव पिपी गुंथि सवेंतव सूकम्या तज पातक जी हजी ॐ सं वद वि सधू वि सूता
 छवि ७ ला लवं जिह्वा आदश खा लू का लता स ॥ थन स्मरण गवूर्धू कस्मिन् नवा लं नकं विक्रम नासया क ॥ ॥
 त्रिहृला दिविषम कनया ॥ ॥ नागत्रय यव जात्र समवूर्धू नि का नयत् ॥ ३ प्रद केन पातयं विष्म कनना
 ननं ॥ विदनागम नयेव वा विदा वं विमूयन ॥ ॥ गुंथि ७ म सखा स्मरणे का कलं खसु ह्वा सं त्यन कं मन
 दन वने वल सलं खया दा ख वि कनाय थन नाग या क ॥ ॥ कोल वास निवा र जा ने छवा ९ म न व छवा थ
 न कस्मिन् नि स्यं गन व विठं नकं विक्रम नाग ॥ ॥ सूवर्चि कानाग व कूष्ठ सूवा ला जा नि गम ना हि गय
 छिका रि ने लं क नेषू गुण ग ज सि ठ म लं जना छी न क न य नू त्या न् ॥ ॥ म जि खा न गुंथि कठ कल ल
 हा हृन्तु मन्त्रि वि कन वृं वृ स्यं ॥ विषम कनया ॥ ॥ त्रिहृला म न व य लं के ग ल लू प के न

श्रीगणेशाय नमः ॥

प्रातःकालं उग्रलला कालसिया मं तायवजि सावन धर्म समता गचूर्ध्व मंडकलिन वा नूनं कं दिन १ वि
षम कर नाग ॥ ॥ ॥ तिजि दा प्रविषम कर स्प वि कि सा धि का नः ॥ ॥ ॥ ॥
अथ जीव कर स्प वि कि सा ॥ ॥ क ल म धू क म दी का व च व द न ल लि वा स का थः प य सि पी ना जी
ल कर न नि वा न लं ॥ ॥ मि पी ॥ ॥ मी सि वि हा ॥ श्री ख उ इ इ का का सि ध र्म का थ दा स्यं इ इ च उ
स्व न कं जी व कर ना ग ॥ ॥ वि दि गं सो व च व व य पा थ वा वा मि सि भू र व या व गू केः प ना सि केः जी
न स सं य न स्य उ स्वं प च जी र्धू क रु कर चं ॥ ॥ वि नि सि सा ला क सि पि वा हा व म नि व पि पी ॥ ॥ धि वि
न क हा ना यू व उ सि ध र्म उ १ धा न रा ग इ इ रं १ ध ल रं १ खू डा व न कं जी र्धू का न ॥ ॥ ॥
वि दि गं दि य न ॥ ॥ पि प ली पि प ला मूल व य वि ण क ना ग रेः प न केः स य व जा ने र्द न प स्वं वि या व य

॥ ॥ पृथक् पृथक् कृतं सूर्यं विष्णुं कृतं विना नानां । ग्रहणी वा पुत्रा गच्छं श्रीरुत्तमनि रुदनं ॥

विषी । पिपलासं । सिद्धि । वितक । पुष्टि । अतः पुत्रमसुखा पुत्रं धनं १ इहं १ स्वर्गं १ धनं १ नृपं १ विष्णुं कृतं

ग्रहणी । अलम्बनं १ पुत्रं १ पुत्रं १ जीर्णं कृतं १ अतः नाना मायक ॥ ॥ जीर्णं कृतं १ अतः ॥ ॥ लाजासूर्याहनि

जावमजिष्ठासिन्धुवावृणी । दृष्टिं संश्रवाकृष्टनास्त्रा मासीसगावरी ॥ जालना नाना चूना देवते लघुविपात्र

धनं । तेलमंगल लंकं नाम सर्वकृतं विभावनं ॥ ॥ अंगलक नाम तेल ॥ ॥ लाहा । कलवत । कंच हन

मी कृत्स्निक । मन्त्रं वास्यं ध्यात्रि । कण्ठकात्रि । स्यधु । कृष्ट । इगु स्यात् न हा । जटामासि । अतिहा । अतः कर्ष १ मं ४

स्वधि रू १ तय । विकन रू १ तय । स्व उं वस्यं । जीर्णं कृतं नाना ॥ ॥ ॐ ति जीर्णं कृतं स्प वि कित्सा ॥ ॥

लाजावससमं । तेलं । पुष्क मन्त्रं वदुर्गं । अंगवर्गं । निगमदात्र । कान्ति कृष्टा दवन्दनः । समूर्वात्रा दिगी नास्त्रा

५४

[illegible]

पुनः ख ३॥

कीनं १

मधुं॥ दनपंचनिगाचेवाः॥ विंशत्यधिकं लंतं॥ मोंयुं नैयूगख अखं मधुनिता सुपावयन॥ त्रिग्वेला उ
वलनिक्षयविधिना प्रागस्तु नाहः सदा॥ एक एक न सायने वेदगुणं कामाग्रि सुदीपने॥ मूलम्वे सप्तमी त्रि
हवगदा त्रिहृत्वा गुर्वसर्वान॥ न क कलिजन कदापमहा माद निहृत्वा गुणान॥ कीलस्या संविद्वे न वन
कत्रं गवृषु दया विता॥ नो भोजि मृगि वकु नाग हननं सीह वृष उवंपदं॥ धर्तयो एन रूपमन दधिनं॥ सा
मीति कामा मयि॥

॥ मृगख पुनाम॥

॥ लव उलव॥ सुक म्या॥ पात क॥ नृपक म॥ क सु॥ गुं चि॥ पि

पी॥ जिह्वा॥ त्रिहृत्वा॥ जाति को॥ ज॥ ज॥ ज॥ कर्चसिक्क॥ सिघात॥ वाहाय॥ चितक हा॥ विहा॥ गीख उ॥ हीमभन क
प्य॥ म॥ न॥ व॥ पलासवी जहा॥ उ॥ हान स्व॥ ज॥ म॥ न॥ ह॥ ह॥ सि हा॥ पिया सा न॥ वयन सि सं॥ लवं॥ ग॥ सा ह॥ पिय ला
मूल॥ जी॥ हजी॥ ४३ स्वां॥ पु॥ ह॥ कं क॥ र्च॥ १॥ सि॥ त॥ सा॥ घ॥ न॥ ७॥ १०॥ सा॥ इ॥ इ॥ ११॥ २८॥ ग्व॥ व॥ द॥ र्च॥ १३॥ सा॥ ध॥ ल॥ १४॥ क॥ लि॥ १५॥

५५

वानर

८ ध्वन वृत्त रुनपाकयाय. पूगखउसिद्धः॥ सकननागजीर्णकनधननाग॥ ॥ ग्यययुना ॥

हेमाधनवन्दनं शिकु कं जागीरुलं वन्दु कं. क्षणीवीजभावसहितं पञ्चवा नायू म्पकं। ७ लोसिन्धूरयं
कलिप्रवनकजीवपिप्यलीनगी। मान्सी। ८ रुनवीजन्मलिरुवं मूलमूल ल्यातथ॥ वूर्ण पूगक (६) ह
वं वनजसागु छासितासर्वतः अर्द्धजीववर्णुवं मृदुगलं कालाग्निनायावितं। वूर्ण वाद्यतसंयुगा म
धूतताप्यर्द्धसूनीति क्रियत। हन्यात्सर्वगदं निहन्ति वमदं मूर्च्छावतामथ। कूर्यादृष्टमगीवसा सुखगनाः
निवजाजीसमं वन्ध्या युगवेगीरुवेदायगथ। वालामयं ध्वनिनीकनायां हनमूरुमं मगिनिहं गुशाखवः
न्यं हन्यावनागपक्रितागुलगवतानासुसंवर्द्धयन्॥ ॥ ७ र्वारखउ॥ वृषकेन। कसू. नकव

न्दन. शिकु. जिह्वा. कर्पू. न. भ्रमन. सुसुमिहा. लुवंलव. पागक. वव्व. नायू. वशावा. लहा. ७ ला. सु

सूक्त ४३

सू ५२

(सुवसिनीवर्णः)

(उत्तकृष्णात्तुपाकः)

मं. ६०४सी. स्पष्टवि. आदरा. मदागिनि. उतानि समहा मनि सुम्वूर्धनिका वयन. लकनं जागवृत्ता
यहकयसधूस. र्मिषां सुकनाजी हवमधदरा नाजी हवदनि को किं लोनी ध्वं हवती. न० कविं गमिना
जालिनिवमधसूधी हवन्. अन्यसामसुनगुक्त निर्याग्रक्त महुमुधा. मयूलानां हवदेमिका किलानां
ध्वनं तथा॥ एवं सुवसिनीवर्णः॥

॥ प्रानरुनसिपु १०० धलपु १५ हामलविकं पु १५ लवठल्य

व. नजपातक. (मसाहं. त्रिकदू. जी. उला. हजी. सूकम्यान. विगकहा. विपलाम्. सिपि. गजपिपी. गुंथि
सिद्यात. वृद्धकसू. गालमूल. पुथकं पु १ वाक्य ५० कस्मि. पु ४ खूडनकं काग. म. क. व. हि. का. छ. दि. ज.
नावक. नाशयाक॥ ॥ गुत्तकृष्णात्तुपाकनाम॥ ॥ लवंगकास्मीवकलाधुयष्टिकं. सुवन्दनं प.

धक नागक. लं. समा. उ. नंगनसुसंविमिश्रितं. निहकिदाषानि मुखपाकसुवनि॥ ॥ कर्ष्यं न. ख.

कुरु सुकुरु उरुगामा ॥ ऊरु यरुगामा ॥

यत्तु उला कर्कटासि त्वं कस्मिन् वृत्ताववनकं मुखया कनाश ॥ ॥ कुरु कुरु ॥
हमनेनांगनं पथं निलिपयथ पियली वसुके मधूपथं वग्रीष्मगुह हनीतकी ॥ वषायां सन्धवः पथं
सुनस्तिता हनीतकी ॥ निलिपय कल्प हनं व्याधिं सर्वभाग्युत्पन्नय ॥ आनाय वलपूष्ठिः स्यादुरुगुह हनी
तकी ॥ ॥ ऊरुगामा ॥ ॥ हमनेनांगनं पथं निलिपयथ पियली वसुके मधूपथं वग्रीष्मगुह हनीतकी ॥
ग्रीष्मसंवाकृ नय वषासंवाकृ नय ॥ सुनदसंवाकृ नय ॥ हनउतय ऊरुगुह ॥ ॥ व्यायामं व ५१
व्यायामं वलातं व ऊ मगनिव ॥ कुरु मूकन सुवगं या वच्चवलवा हवेत् ॥ ॥ ॐ नित् कुरु स्य विकित्सा क
र्मा ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ अथ ऊरुगामा वसु पूर्ववृत्त कुरु निदानः ॥ ॥ हनीति
वसु मवकृतिनाद गमजावसादानिलसन्निवा ॥ विहंगमाध्या नमथाविपा काह विष्णु कुरु स्य पूनस्तु

श्रीगणेशाय नमः पूर्वपत्रे ॥

नानि ॥ ॥ नृगुहदत्तदूतसु जयामस्यायुः दिग्विजयमश्नुते सुवन्द्यं त्रिकाम्बु सुवन्द्यं सुवन्द्यं नयनं यथा क
शवः कदम्बपाकमवतु ॥ पूर्वपत्रे ॥ ॥ गुणानि सिद्धिं नृगुह कृदवस्कुलातिनीतलं विवृष्टाधसनाजी
र्षिसाम्यश्चतिहाजनेः स्वरायेवगियुक्तेष्वमिथ्ययुक्तेष्वेववत्तकइष्टाभ्युपगमात्तेनसास्यविनय
यत्तु जगतिवमलेर्वलेर्विद्योतेः कृमिदाघतः नृत्तमं हवत्पतीसावन्नकुलं तस्यवकन ॥ ॥ ज्यादुपमा
र्थनयासु तवमानं वाक्यनार्थनयासु रूढयनार्थनयासु लूमूपनार्थनयासु निदवयनार्थनयासु रुतसिजा
दिननयासु अतिनीतलपनार्थनयासु धिधिमजाकपनार्थनयासु जजीर्णरुयकंनयासु अतिकंनयासु ध
लदाकनयूउनानयासु महिंशयसु रयासु मखूपनार्थसुवलयासु धिसुसंयुक्तयाहंनयासु तागसु दा
षणः प्ययासु त्मकसु महिंमुलं खल्यगसु तवमाननविकृतशयासु लंखसु क्कनावक्षिणान तवमानंखि

वा। पिठं चानस। जिमिया दा मल रुन सां धत युका नल मनूय या जती सा नल जल सिय॥ ॥७ के क
 सः पर्वसु वापि दोषे न त्वर्थ मूर्च्छि गद द्वाव रुतः सा जक साम मव विम्वति। इना हि वाया दन कृजिना
 द गम ग्राव सा दतिल संनिशक्ष॥ ॥ ॥ क गार सन्निपात जामया के न प्रायया रुत न वमान न जा
 यल प् मनिगु पनार्थ जदिकं नया स जीर्ण वन मरु सं नया थं को द सं वायि व न गम उ ल दू ॥ ॥
 पाम प्यं ग बसं चं नायं धत सा य वात न थ प गव वि थ प उं वा नाव वा थ दू दू जा या व व न का
 पां ज जी र्ण विव ध्या ली व ना ना यु का न न जती सा नल जल रु यिव धत पूर्व नू य ख व ॥ ॥
 अ नू रं रु नि लं नू रु म ल्य म ल्यं मरु र्मरुः सक दामं स नू कृ दं सा नू न ना नि सा यति ॥ ॥ का उ स्य
 पियान जा यिव वे क न ला क वि ला य र नि का न उ का उं के द य प्य क सौ क न व र य न धत वा ग न रु व य
 ना

५८

२७०॥ सातवा विविक्ति ॥

रुद्रागसिद्धि ॥

य ॥

॥ पंचमूली वना विष्णुभा न्य काल्य ल विल्वजा । वाताति सात्रि । वेदया न कुतान्य न दव
॥ व्याल । नि नि यात्र । पातुली सि । ग म्हा व सि । वा ना वि ग । व दि या न । ध्व न या हा । गुं धि । (म सा हं । उ
हा ल स्यां । क वि व्या ल । ध्व न ध वि गी । स हा स्यं त्व न कं वा ना ति सा त्र ना न ॥ ॥ वा ता ति सा त्र या ॥ ॥ वि रु
सि लं ह नि तं ना हि तं वा । रु र्धा मूर्धा दा ह पा का प प त्रः ॥ ॥ वि रु न श व या क्रा स्यु । उ म उ य् । हि क द य्
वा स वा य् । नू । ग म्हा म । ध्व नि व । ह य् । आ पा म स क क्क व यि व ॥ ॥ वि रु ति सा त्र या ॥ ॥ म धू कं क ह
लं ना ध्रं दा ति म स्य त्व व क था । वि रु ति सा त्र म धू कं या प य ल न्द्र ला न्द्र ना ॥ ॥ ॐ ह्रीं । क र्वा सि क्क । गु
ल्य उ । वा क्क भा न र वा ना । ध्व न जा कि ती स हा स्यं त्व न कं वि रु ति सा त्र ना न ॥ ॥ म धू का दि ॥ ॥ ॐ ह्रीं ।
सां दं स क रं । ल । अ ना तु वि प्रं गी नं क क्क ना मा म नू षाः ॥ ॥ ल य् । क्क । ल । अ ना नं द यि व । खा व गु र ल

॥ पंचमूली वना विष्णुभा न्य काल्य ल विल्वजा । वाताति सात्रि । वेदया न कुतान्य न दव ॥
॥ व्याल । नि नि यात्र । पातुली सि । ग म्हा व सि । वा ना वि ग । व दि या न । ध्व न या हा । गुं धि । (म सा हं । उ
हा ल स्यां । क वि व्या ल । ध्व न ध वि गी । स हा स्यं त्व न कं वा ना ति सा त्र ना न ॥ ॥ वा ता ति सा त्र या ॥ ॥ वि रु
सि लं ह नि तं ना हि तं वा । रु र्धा मूर्धा दा ह पा का प प त्रः ॥ ॥ वि रु न श व या क्रा स्यु । उ म उ य् । हि क द य्
वा स वा य् । नू । ग म्हा म । ध्व नि व । ह य् । आ पा म स क क्क व यि व ॥ ॥ वि रु ति सा त्र या ॥ ॥ म धू कं क ह
लं ना ध्रं दा ति म स्य त्व व क था । वि रु ति सा त्र म धू कं या प य ल न्द्र ला न्द्र ना ॥ ॥ ॐ ह्रीं । क र्वा सि क्क । गु
ल्य उ । वा क्क भा न र वा ना । ध्व न जा कि ती स हा स्यं त्व न कं वि रु ति सा त्र ना न ॥ ॥ म धू का दि ॥ ॥ ॐ ह्रीं ।
सां दं स क रं । ल । अ ना तु वि प्रं गी नं क क्क ना मा म नू षाः ॥ ॥ ल य् । क्क । ल । अ ना नं द यि व । खा व गु र ल

शिवकलादि
अथ भाति घातः

[illegible]

人

विज्ञादिपिज्ञातिप्रश्नः॥

निव. जग्निमउरुयिव. पुरुस्याय. कृष्णाय. नयमयय. लाउथं खि क दयिव. धनलकल. प्रषयाय
कनाययाधधरुयिव॥ ॥ धन. प्रषा. तिसात्रया॥ ॥ सगदंरुनितं नूकं कषायादकसुनिहं. पका
प्रवसुवधूरं हनिजालसमंघनं॥ वि. सू. ग. ह. ज. नि. क. क. स. ग. न. वा. रु. पा. क. वा. न. वि. या. न. ला. न. वा. रु. पा. क. वा. न. वि. या. न. ला. न. वा. रु. पा. क. वा. न.
तिसात्रिधं॥ ॥ न. द. न. सं. य. त. प. क. ज. व. प्रि. या. न. जा. व. ला. य. का. क. दा. या. ति. थं. लं. ख. धां. न. य. सं. खि. वा. हा. क.
पुरुस्याय. धनलकल. ह. व. ना. स. वा. न. पि. ला. ति. सा. त्र. या. ल. क. ल. सं. य. ॥ ॥ वि. स्वा. द. ध. न. की. पा. थ. नुं. थि. सो. व. र.
नं. स. मा. वा. न. पि. ला. ति. सा. त्र. पुं. गु. उ. न. क. ल. या. ज. य. न. ॥ ॥ वा. ल. क. स. धे. स्वां. वा. हा. य. नुं. थि. सि. म. न. स. ध. न. स.
ला. ग. वृ. र्ध. भ. नि. गी. स. न. सं. वा. क. न. सं. ल. न. कं. वा. न. पि. ला. ति. सा. त्र. ना. ल. या. क. ॥ ॥ वि. स्वा. दि. वा. न. पि. ला. ति. सा. त्र. या.
॥ ॥ क. षा. या. रु. ड. व. हि. न्धं. म. उं. न. द. व. ग. स. व. द. ना. ॥ ध. न. ल. ल. सि. पि. का. रं. प. द. य. प. न. नि. हं. क. यि. त्. ॥ पि. छि. लं. गं. ख. व.

कृदजातिपिरुषातिमान्

महं न क विन्दु विवा विगं ॥ इलुक्त्वाति वहनं पिरु (पुष्पाति सा विगं) ॥ ॥ अतलुजलवलनासु पिरु (पुष्पा
अनायका कस्य ॥ ॥ कृदजाति विषामुक्ता ह विजायति नीदयं। स जोडन क न स र्पिः पिरु (पुष्पाति सा विगं)
कृदवीज अति न स कसु ह न उ सा न य धी य ध य धी कलि सा न व धल न वानं न कं पिरु (पुष्पाति सा न ना स
॥ ॥ कृदजाति ॥ पिरु (पुष्पाति सा न या ॥ ॥ न स स्वा इ क रुं पायः कृदि वा न क रु न वं। कृद न सा वः
गी सा न कृद व कि नि रु न्य सो ॥ इवः सु रु न प न व न रु स न्या मि सु रु वः पु न कि न क ही ना नू जा नू य वा स्ति गू लि
नः ॥ ॥ अत वि कृद न ना स वा न व (पुष्पा अनायका कलुजल सिय ॥ ॥ विउ काति विषामुक्ता ल विल्व।
स ना ग नं। वत्स कं क रु सं य थ वा न (पुष्पाति सा न नू ॥ ॥ विग हा अति न स कसु वा न वाल गुं धि कृद वी
ज न वं ल व म धं रु ह न उ अत वू र्ण ध नि ती स रु स्यं ल व न कं वा न (पुष्पाति सा न ना स ॥ ॥ विउ कादि ॥

१०
(विउकादि वात (पुष्पाति सा न ना स ॥

विष्णुदिशंसातिशयः॥

वानः श्रुत्वा तिसात्रया॥

॥ वलाहमदमात्साम्यसदनं सर्ववृषिगंकुक्षुसाधमतीसात्रं विशाखाषण्

थाहवं॥

॥ रुयादाकथं लासिलातिथं॥ उनगु॥ सर्ववृषिदिशचनजायत्रयगु॥ लायकेष्वहू॥ वि

त्वावंधातकीलाधुनागपिप्यलिवासकं॥ कृष्णमाकिकसंयुक्तं लहसर्वतिसात्रनृत्॥ ॥ बालः॥ श्लेष्ठां

गुल्लोत्त॥ गजपिपी॥ वानः कृ॥ द॥ धनवृक्षकस्मिन्नवनावनकं जिदावातिसात्रनाग॥ ॥ वित्वादि॥ सुनिपा

तातिसात्रया॥ ॥ भ्रन्नाजीर्णपङ्कगः॥ गौरयकः॥ काष्ठदावाधुसंस्त्रामलाश्व॥ नानावर्धनकसः॥ मलयकि

मलायनं वक्षमनवदन्ति॥ ॥ भ्रन्नाजीर्णमृत्तं॥ संकदल॥ यकस्याकदव॥ आमातिसात्रननं गु॥ वृणायुकावला

य॥ अतिशु॥ नयाख॥ ॥ संहृष्टमतिदाधेमुन्यस्तुमप्यवसीदति॥ पूर्वीषं हनदुर्गन्धं विच्छिन्नं चामसं हि

तं॥ ॥ धनदाघसु॥ आसनवलसिय॥ लंखव॥ मलव॥ विक्रथ॥ लंखत्यदूनकं नवच्छान॥ ध्यागुयू॥ ध्यामाति

वर्षादिपक्षादिनाम
वर्षादिपक्षादिनाम
वर्षादिपक्षादिनाम

नृवतुल्लिङ्गनिविषयीतानियस्यवे। नान्यवंचवि। न घनतस्यपंचंविनिर्दि। नत॥ ॥ धनलकुदविष
नीतशयसिय। मलसंखसुलहंनयूनजवपाषटंगुक्षय। यकातिसात्रयालकभसिय॥ ॥ धनयका
तिसात्रक्षय॥ ॥ सलाधुंक्षतकीविल्वमूलास्रास्त्रिकलिंगकःपिवत्साहिषतकुदयकातिसात्रना
मनं॥ ॥ गुल्लोउ॥ धोस्वां॥ बालकसू॥ नयू॥ धूतिवूर्धुध्रितीसुहास्यंत्वनकंयकातिसात्रनाम॥ ॥
लाधुदियकातिसात्रया॥ ॥ वर्षातुनामनं॥ नक्षत्राग्निकं॥ कठकात्रिका। सुनदानयूतंयानं॥ धनध
तिसात्रनामनं॥ ॥ पूनद॥ सुंधि॥ इगुद्धा॥ विपलामू॥ कठकात्रिकवदानु॥ धनवूर्धुत्वनकं॥ धनध
सात्रनाम॥ ॥ नागनातिविषामूलागुडूवीविल्ववत्सकं॥ कषायंपावयसीतं॥ कनातिसात्रनामनं॥ ॥
गुंधि॥ अतिवस॥ कसू॥ गुडगु॥ बालकूदवीज॥ धनकाधदास्यत्वनकं॥ कनातिसात्रनाम॥ ॥ कनातिसात्र

लागनादिहनातिसात्र॥

या॥ ॥ पिताकृति यदास्यर्थ उवाच सानिधेहि के। तता यजायने ती कं न का तिसा व मूल्य नं॥ ॥
 चित्ता तिसा व स॥ मनिगु व सुनया व॥ हीन जायू व॥ च न का तिसा व सिय॥ ॥ कूट जाति विषा मूला वाल के सो
 धु व न्द नं॥ क्षत की दा उ मं गा थ क्षा थ जो ड यू तं विवत्॥ ॥ दाह न क व गूलं य आम न के व दू ख ने॥ कूट जा
 ति मि ति स्वा तं सर्वा तिसा व ना ग नं॥ ॥ कूट जी ज॥ जति न स॥ क स॥ वाल॥ गु लो उ॥ श्री ख उ॥ धो स्वा॥ क्ष न वी
 वा हा य॥ थ न क्षा थ दा स्यं क सि धू उं त्व न कं॥ ह मू॥ ही न जा व॥ गूल॥ आम क द व॥ दू ख या उं वा ल॥ थ न मा क॥
 ॥ ॥ कूट जा ति न का ति सा व या॥ ॥ ते स्ते हा व थ व गो र ल्या ज स न स्य वा स॥ सा क्षा व द्धि सा वि स्य ज को
 का धुं ग त्या को र य न॥ त स्या व कं त थ दू गा त् का क न नि पु स कं॥ नि ग कि द व र्दि मि मु॥ अ वि ज्ञा नि ग न्धं वा
 ग न्धं व व द्धा तिसा व॥ सा को त्प न्ना इ थि कि स्या॥ इ ति मा यं ना ग न्धे य क दू उ म॥ ॥ थ थ ज थ थ ध क हा व

॥ ध ध न ध ध क ल व

लपावरवाययला। विहाय रक्षत्र नस्य मनस्य नवी व क्रीडया स्यं हलं। थखा विद्वनः जग्नि इवाडावः थ
नर सुवडावः कायनपावः थखा विन हि हनः लिपात सु थहिका दनः खादयनका थं कदवः। बाहिनि सुवाना
वः मवानस्यं हि मूकं कदयं रुवः नमदस्यं नदस्यं कदयं रुवः खाल जायन पूया साधा माय थ कः थ थिं गु मा
याया केन जायन पूया ग माय के थ क ध क वे य ला क न ज्ञाना। खा वि मिखा ता थ न गुः नवी व सुद वि डाव जाय
न पूल कृण॥ ॥ थ न हा का ति सा न धाय॥ ॥ वायुं उ वृक्षा निविनं वला सं नू द ल ध स्ता द हि ता न
नस्य। युवा ह स्य स्यं व रु सा मला कं युवा हि का तां युव द कि त ह॥ ॥ रु स न वा ध क यं व लः ॥ थ थ को य न
पं क द नः मनिं गु म दा र्थ न लः व ह न थं वि हा य र क्षत्र क द नः अदि क क्षत्र क द वं द वः मल न वा लः ॥ ॥
थ युवा हि का ति सा न धाय॥ ॥ वा न या ध क स्था कः। वि रु या ध क ह यः ॥ थ थ ला ल न धा कः। वि दा

कंवकादिप्रवाहिकायां॥

घनहनसा नूतन्या उंकादयू दिकनथा वंदव ध्रुवाहिकायाहृद॥ ॥ उवाहिकावागिहतामृत्तलं
पिलासदा हासक हाक रुध्र। सन्निता सन्निता सन्निता वाः स्रुतू उरुवामता सुतासा मपि सा नूव
हादि (गव) लिंगं जमं चाम विपाकता च॥ ॥ क्षीयूषं समन्त्रिं नीत्वा बालस्य दापयत् ॥ उवाहिकायम
मनं नकात्पुगं दापहं॥ ॥ (क्षी) स्वां मन्त्रं वा न बाल कमल उ जम्बू सि धातं लं रय सन स्यं स्वन कं यत्
कदव॥ ॥ कसा हानव उगुहिकादव जीक॥ ॥ उवाहिकाया॥ ॥ कंवकी जम्बू दाति मन्त्र गत वषं
जीविल जल धन नाग व सहितं। त उल जल मपि संयुत विवति गंग वगवती उवाहिकाय नूच्या॥ ॥
कृद्रव गुजं रम सि क्षत्रं वा ना सिद्या न हल वा न केसु उं धि धातं स्मृता गवू रू पूवा कि जा कि सि ना
ती सु हा स्यं स्वन कं गंग विग धं कदव जे क॥ ॥ कंवकादि॥ उवाहिकाया॥ ॥ शार्दक स्य न

१३

वत वात्र न वा नाथं इह ध्यं भविष्यं नासनातिथ्यं हाक उमउ हह भाव हाक उ निभाक सखायायाथं
मलन भाव भविष्यं गीकथं पासदव हिपू मिखाहिय न्धै हातववग हि कूवव काका स्याक नू (मउ मः
किं सन हाव आपान स क कूवव क्रिव मल पिय मजिव ताक पुकन चायि व थान उप ड व न संयुक्त हव ना गिये
यन ना वत मान ॥ ॥ (मथ गूल कन न आ न्ध स कान म ना व कं । छदि हि काव न डा व दृष्टा नि सान त्या ज

यत ॥ ॥ ॐ हा म उ पाक स्याक कोन क व पासदव थ हा व व मासव व नय मय व थ ने व व हि कूव व क
हन वा उ थान ल क व नाय स्या व थ पाक नाय स्या जल ये मान ॥ ॥ यस्याचा व विना मूलं सम्यग्वायु च गच्छे

नि। दीका (मल यू का वृ स्या स्या दना मयः ॥ ॥ यक्रया श नं मूल श क का दयु स्थि का मय थ धम
हस्य का कू स श का का दयं रुव अग्नि दयिव पाक स्या उयु सिय म दूत ॥ थान ल क व नाय स्या व व सिय

१४

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथ सर्वानि सावयवा हि कास्य कलाति सावयविकेति दान ॥ ॥ कृदजक हलं लाधुं कृश्रादाही महोषधं कदूः
कावतिनेः सिद्धं च तं सर्वानि सावयव ॥ ॥ कृदवीज कर्वसिक्क गुल्वाउ पिपी मीकृसि गुंथि कदूक धनं
लसुमनावनकं सर्वानि सावयवानां ॥ ॥ कृदजाति ॥ सर्वानि सावयवा ॥ ॥ कलिधनयाखावा गुष्टमसिष् कं
विद्याव सिमलस अन्धवयु प्रियंगु अतिस्त्रलागय वाकिसिला तीसतस्य त्वनकं वकाति सावयवानां ॥ हीनजावय
कनायनास ॥ ॥ वकाति सावयवा ॥ ॥ वद्यावालयहा मंसरवसां जनयाति मंस्य पूर्वकितीसुहास्यं
त्वनकं वकाति सावयवानां ॥ ॥ वकाति सावयवा ॥ ॥ त्रिरुला मंते ॐ ह्रीं मी मन्त्रि ७ ला निम वंदे मूं
अथ मं१ अत्र असिलं स्व सुति स्य त्वनकं वकाति सावयवानां ॥ ॥ त्रिरुल मं१ सिमवसु मं१ कसू मं१ अन्धवयु मं१
अत्रखात्रा मं१ ॐ मं१ मं१ गसाहं मं१ जीव मं१ स्यधुचि मं१ पिपी मं१ अतर्वृक्षाकलं वसुतस्य त्वनकं पानकल

लं वडया। वकन निधं वव गुः अनी सान नानयाक ॥ ॥ लवं जिह्वा गजि सिया गुड गं छि वूर्णया डं कलि सुवस्यं
नकं नानया ययाहि ड ॥ ॥ हिं पिपी वेल वि ०० मं मनव रुन ड ॥ गमवान जी कूट वितक धात समलाग वूर्
र्णया डं जी यथ संतव ला सिमी संतव ध विनि संतव काक लं ख संतव हास्यं नकं व्याक कल लं वडया आमयां हा
कल क मित्र पनी डयां न ॥ गं उ स्याक धात नानयाक ॥ ॥ जिह्वा सम ड रु ल सध वद वि वहा सान व साक म
नव पिपी धात वूर्ण काक लं ख सन संतव नकं या नू स्य ही न गाव या ला यूव ॥ ॥ ला हं मि स कू या व उ या
द व न ग जि ला सं रु क रु क या नू स्य पि धा वाने मान या ॥ ॥ जिह्वा गा १ ध रू न गा १ वद वि गा १ पिपी गा १
का वि गुं धि गा १ मन व गा १ धात वूर्ण रु नकं सचीति सान नाग ॥ ॥ धूति सुतीति सान या वा सन ॥ ॥
आमुवी जं प घवी जं उ स लं दा डि मं ल वान भू ना द क संयूकं मधू ना सह या जितं ॥ ॥ रु दि नू का ति सान व क न चा वि

गुरुणीनागपालकृष्ण॥

नियच्छति॥ ॥ थंकांताड्यालायूव॥ ॥ ॐतिज्जितिसावस्य सकलविकित्साधिकारः॥ ॥
अथगुरुणीनागस्यलज्जनिदानः॥ ॥ ज्जितिसावनिवृत्तमिमन्नाग्निवह्नितासनात्तयः संदः खितावक्रिग्र
हणीमहिद्वययत्॥ मासादृमगीसावसर्ववज्रनिलावहं॥ यथक्दाखेः समस्तैष्यतस्यस्यागुरुणीगदः॥ ॥
पक्ववायड्यावज्जितिमन्दश्यावमतिगुप्यार्थनयावसिलावकवलज्जितिसदः खनलाडावज्जितिसग्रहणीनाय
जायलपनं॥ नक्किनथममडसापक्ववायहनडावनयाखनाया निमितीनवागवललाडाववागविरुत्तवाग
सन्निपातनथगुलिग्रहणीनायक्षय॥ ॥ ॐकेकगः सर्वगन्थायाधेनत्यर्थमूक्तिनेः॥ सादृष्टावक्रसातकसाम
मवंविम्वति॥ गुरुणीनागमादृक्तमायूर्वेद्यविदाजना॥ ॥ वागविरुत्तवागप्रियासववअदृष्टानंतलदृष्ट
दिकंनयासज्जयाकयाडंकादवथग्रहणीनागधकक्षयावेमलोकन॥ ॥ पक्ववासनजं पूटिर्मूर्ध्वदमूर्ध्व

वः॥ ॥ **आध्यामावकुदयू** ॥ **अनगीकनदसंखविनंछाल** ॥ **खविनंताक** ॥ **खविनंलंखथं** ॥ **थथकादनजवग्र**
हलीनागधकधय ॥ ॥ पूर्वतूपकुनस्यदंठकालसंवत्तकयं ॥ विराहानस्यपाकस्यविनालानस्यगोत्रवं ॥ ॥
 नकसःप्यासयायू ॥ जलासवायू ॥ वलमइ ॥ हियू ॥ अत्रपाकमवडगाकालंअज्याकु ॥ किंगुअंययातालथंकोदयू ॥ यन
 मूसूदनस्यायू ॥ ताडतीनकुजीधूवडगु ॥ ॥ **थनग्रहलीनागयापूर्वतूपधय** ॥ ॥ **मानूताकुपितावकि**
 संछायकूनुनगदाना ॥ तस्यात्रपस्यनदः ॥ खंकपाकखनागगा ॥ कइतिककषायातिनूजयतात्यराजनं ॥ प्रमितानं
 प्रसाधवनिग्रहमेथेने ॥ सह ॥ स्वातगुल्महडागसीहासंगीतमानव ॥ विनाइः ॥ खडवंगुसंगतवांसंगयदुरुववगु ॥
 ॥ ॥ **वातकापनयूनास** ॥ **पूनः** ॥ **अग्निताकपूस्पंरायेशयकनं** ॥ **थयाअत्रपाकयायक** ॥ **स्वधेदायकातिथं** ॥ **कदल**
ककाचूयू ॥ **पालूपदार्थ** ॥ **खायूपदार्थ** ॥ **खाकूपदार्थ** ॥ **तवमानंरूठपदार्थ** ॥ **नीतलपदार्थ** ॥ **थथिगुअयानन** ॥ **जाविता**

१६

गुरुणीया विष्णुः

यत्तु नया सा वल काल सुनया मरुया सा ता यिन डया सा खि वा पि ना व चा ड सा अदि क का म स व न या सा थ ग स
ग्रहणी नाग ड ल हि रु यिव ॥ सुवा न गु ल्म रु डा ग ध न अ ल्प ज व ध न ग्रहणी म सि स्यं प्रा गिया के न न क
जाय ल प स ना का लं तु नि म हा क रु न वा हि न इ नि रु न सु नं गं गु रु न सु नं आ म रु न म र्थ व यिव को रु स प्रिया
न गा स्यं व यिव ॥ पुनः पुनः रु ज व र्च का न ल्म सा दि ना नि ला न् ॥ लि प न सु रु ड थं र को द य मा
स्व व य थ सा ल ल प डं व यिव वा धि वा न व ल ला क थ थ पी उ न पू रु सु न वा न ग्र हणी सि य ॥ वि ष्य सी रु
रु ति धा धी म व रु न क लिं ग कः वि उ कं ल नि वा या थ न थ ल व न पं च कं ॥ न दू र्नु या य य द ध्रु म न या सा क्र वा नि
ध ॥ मा नू ग ग्र हणी दा षा ना ग य न्म न मं स नः ॥ वि पी दा क रु मि नि उ म स र ता ०० नु य व वि उ कः
इ इ का ल सि वा हा य ० थि ० स ध र्ति ० रु ल रु वि ० वं द ति ० पा ग म वि ० र वा न वि ० थ न व र्नु या डं धे नि ती सं न व का

कलंखसंतवः स्वसंखनकं वातग्रहणीनाम ॥ वातग्रहणीया ॥ कल्पाजीर्णविदाकस्त्रः

ज्ञात्रो यपिरुमूत्यत्र । आम्ना वय हर्कनत्रं जलतक यितानत्रं ॥ साजीर्णनीलपीताहं । पिरुनसायनडवं ॥ ॥

॥ ॥ गालूपदार्थनलं अजीर्णशत्रुसः पाउपदार्थः विद्रुपदार्थः थथिं गुपदार्थनयावः पिरुवल्ललाजवः

पिरुथवावदायाव अग्निभावकं । लंखदायकावः मिस्मानाथं अजीर्णशयावः आवसं । उयसं । कंनप

उयसं । तिस्रकं कदवः ॥ ॥ पूरस्त्रसाज्ञावदुत्कृष्टदाहावृत्तीति पिरुग्रहणीविधेयात् ॥ ॥

धनगीकनदसं पाउसं । धकाववयुः नूगः ॥ कः ॥ हियूरयुः नयमसा । यासुदयुः थथपीउवपूनासु

पिरुग्रहणीसिधियः ॥ ॥ नागनाक्षत्रकीवेवसुजीडं तन्दूनामूना । पिरुग्रहणीदागार्जनकपिरुनिसान

नून् ॥ ॥ उंथिः । धीस्त्रां । यूअकि सिनाति सहासं कस्तिनसं खनकं । पिरुग्रहणी । अर्णः । नकपिरुः । अ

नाथयं (नृकं गृहीतं गद॥ ॥ सत्रवि. त्रिकु. हनउ. यवजात्र. विमलाम्. तवसिपू. स्पधू. वि. धनवृ. नृया
डाव का कलं रतसु र्हासं त्यनकं. (नृष्यग्रहनिर्माणयाक॥ ॥ धूमि. पृथग्वागादि निर्दिष्टा हुतुलिंगस
मागम. जिदाषनिर्दि. (नृदेवंत वां वक्रा मिरे सजं॥ ॥ वाग (नृष्य थ स्यागायं स्वय. हुतुने लज्जानं॥
(गमनसूडं जास्यं वनसा. जिदाषक्षय॥ ॥ विहृतिनमिष्यन दाति संव. यमानि कासे भव क्षतकीनां क
दूजयं विल्व रुला सुवीजं. हनीतकी क्षना कलाधुयाथ. नकुटापीनं मन्त्राति सात्रं. निहृतिचामा सुक
रुं विवन्धन. ग्लादना नाह मजीर्ण (गम थं जन्विषु कानं गुजामयद्यं॥ ॥ गजि विउ क. कसू. धन
की. ०० मं. साधू वि. (मि. स्त्रं. त्रिकु. व्याल. मधं र्हा. अं. हुनउ. (गम साहं गुलाज. वा हा य. धनवृ. नृधनि
ती सु र्हासं त्यनकं. वागाति सात्र. आमगल. (नृष्य विवन्ध. उदन. धन. धन डाव. अजीर्ण. (गम थ॥

कामा. अर्ज. अत्रि. धामना. याक.

॥ अरु कजनमानस्य दोर्वस्यं कुर्य (मथ कान्। डवघनसिगसि

धं सुकरीवदनसुकुन्॥

॥ अलास इव नवव. लंर्या थं कदव. अधिक कदय. गोत्री वस्याक. यकस्या

क.॥

॥ पञ्चासासो दग्ध द्यविनित्यवाप्यम्वति। दिवसिपुकापाना जी सत्यमकिपुजायत॥

मक्तिगा. वाच्छिगा. जिङ्गा. उथं वानिव. कानधमलिहावयीवा. क्रिनस. तवयाक. वाकस. लुति कलायू॥

द्विविधं वदनिर्वानवित्तकालानूवन्धिनी। सा एव दामवातेन संग्रहग्रहणी हि सा॥

॥ नामवा. वागवा

नितानधग्रहणी नायशयू॥ थायानाम संग्रहणी प्राय॥

॥ मसूत्रयूष संका. थ कल्कनागववित्त्व

जः॥ संग्रहग्रहणी हन्ति त्रिदोषग्रहणी यथा॥ विष्णुमाजी. विल्वधनी कल्कसिद्धं घनं हनन्॥ मसूत्रसकः

वायन. संग्रहणी पुनामनं॥

॥ गुंथि. जी बाल. धामकल्कया इमसूत्रिका थदायाती स. धलखुग

नकं उदायग्रहीनाम ॥

॥ नागत्रयिष्णुलीमूलविणकं हस्तिविष्णुली। सोडखा विष्णुली धनविल्वपा
थमयमानिका ॥ वा (जलीयनससर्पिकलेन द्विपावयत्। वगुर्गु (जनदध्वा विष्णुनकरुवा ननूत्
ग्रन्थिगुरुणीदायमूयककुपवाहिका। गुउग्रन्थिमानो ह्यतमेतत्वापाहति ॥ ॥ गुं धि. पि

पला मूल विनकहा गजविपी। (मषा विपी। (मसाहं बाल वा हाय ॥ ॥ मूं वा (मलीयानस व्यत ॥ थ
न पा कयाय थमाप्यदे इह तस्य पाकयाय थ व्यतनकं करुवात ग्रन्थिगुरुणीदाय मूयककु ग्रन्थि
दव व्यकनाय वधे ननाय थ ननाय क ॥ ॥ वा (जलीयन ॥ ॥ वातगुरुणीया ॥ ॥

विणका मृगवाजलीवयगृच्छिकनागत्रं। विल्वं वधनकीपाथ जीवलं वपूनर्त्तवा ॥ कृदजत्यकुला ॥
लाभं प्रत्येकयनकादसं। जतगुरुकाथपाकमाहुकनसमस्तुव ॥ भाजीनसवकाजिक प्रत्येकं कृद

नरे

वर्कैधै। दयं। गुडयनं वद्यादं तिरुलामुक्तया षकं॥ यमान्यजाजिह्वयं वपुष्यकंदयकर्षकं॥ मन्दा
निवान। मृष्यं वगृहीतुं लक्ष्मधनूत्। पाषुनामर्गिणी हंवगुल्मादनक्षत्रकथा॥ बलप्रसिद्धिप्रवृद्धि
अदीर्घाग्नयनाग्ननं॥

॥ विष्णुकहा। गुं गुं वा। गली। सिपि। पिपलामू। गुं थि। ब्याल। धो
स्यां। वाहाय। जीवल। गूत्रन्द। कृद्वीज। लवंलव। हल। गुल्माज। पुष्यकं पु१२ लं खरुं पि४ का थ। पात्र
ति। अम्बयावसु जाकिति। पुष्यकं कू३ रवाक पु१२ मंत्र। पिपी। गुं थि। हन। अम्ब। विहन। कसु। ०० मंजी।
पुष्यकं कर्ष२ थत पाकयानावनकं॥ अग्निमन्द। वात। मृष्यं वगृहीतुं लक्ष्मधनूत्। पाषुनामर्गिणी ह॥
गुल्म उद्वेगनाग। कृत्रदीर्घाग्न। थतनागयाक। बलवधययाक। मूष्ययाक॥ ॥ गुदकल्याण॥
॥ ॥ तिदाषग्रहीयाउपडवन्मक्रियाक॥ ॥ विसृजिकाग्रहीया॥ ॥ तिरुवन

विजया कृष्णायमानिविल्वपेक्षवं। आम्नास्ति नागत्रयं चूर्णं निकृष्टं नाहितं पिवन् ॥ वाग (शुभ्राति सात्रं च ग्रहणी
मा मत्रागिनां। अग्निं वक्रवृत्तं दीप्तिं गूलाति सात्रं नागनं ॥ ॥ गजि। लुं। धि। पिपी। ॐ मं। व्याल। स्य ध्रुवि
अं ययु। ध्वत चूर्णं त्वनकं ग्रहणी नाग ॥ ॥ गजि चूर्ण ॥ ॥ त्रि हवन विजया गुं धि। निर्यासदा डिम
त्वव। समं गभाग की पूषायमानिविल्वपणिका ॥ आम्नास्ति स्य भव कृष्ण समरागम निचूर्णयन्। अग्निदी
पिकत्रं स्वातं सर्वगूले व्यापा हति ॥ स। ल। वितं मती सात्रं ग्रहणी मा मत्रागिनां ॥ त्रि हवन विजया चूर्णं सर्व
ति सात्रनागनं ॥ ॥ गजि। लुं। धि। सिमवस। धनखना। कलं। ध्रुवि स्वात्र ॐ मं। कं। वि व्याल। ज
म्ययु। स्य ध्रुवि। पिपी। ध्रुति चूर्णं ध्रुविनी सहो स्य त्वनकं सर्वग्रहणी नाग ॥ ॥ त्रि हवनः
विजया चूर्ण ॥ ॥ वितृति मग्नि यनदा डिमं व. यमानि सुभ्रवक्ष कीं वा। क दृजयं विल्व रु

लालवीजं। हरीनकीभन्यकशायुपाथ। तऊवपीलामनूगानिसात्रनिहकिजामसुकदुविवम् ॥ गूलादला
 नाहजजीर्ण। गमथनूविपयंकानकदासययं ॥ ॥ गजि। वनक। कसु। भनयना। हूंमूं। सधुवि। ध्रिस्त्रि
 मत्रव। विपी। धुंथि। ब्याल। जम्यय। हनउ। गसाहं। गुलाउ। वाहाय। थनस। लग। वूर्ण। ध्रिनी। सुहासं। त्रनकंग
 हनीनाग ॥ ॥ वृहगंजिदूर्ण ॥ ॥ विष्वाजाजीवित्वपंगीकल्सिद्धंयंतलिरुत्। सगूलासकखायंव
 संग्रहणीउभननं ॥ ॥ निदिदीकंसमासास्त्रियमानीकइकउयं। ककुलावाहयावित्वंविजयासम्भ व
 समं ॥ विजयाचूर्णमाख्यातंरुजयंगुउसंयुतं। जग्निंश्चक्रनूदीकिमामवातातिसात्रनूत ॥ ॥ ध्रुगंजि
 दूर्ण ॥ ॥ पिपलीपिपलामूलंसुभवंकक्रजीवकं। चयकिउकतानीस पउकंनोगकगलं ॥ ७ ॥ धांदिप
 लिकाहागनूयंवशोवर्चनसुव। गुणीमनिवाजाजीनागकनपलंपलं। दाउिमः कउवैवैवद्वपलंवास्त

आमयागहं वागमूलानि हस्या गुवागमूलनिवात्रं ॥ त कुमकुसुनावेव शुक्लकांजिकयाजितं ॥ आगला
निवसाभननसुविविधवृव ॥ मन्मन्निनग्रतः सका हवत्कासं वपाचकः ॥ जर्मनिग्रहणी दावकुक्षामयतन
यनान् ॥ हृद्योगमासदासा चविवन्धमदवस्तितः श्रीहानं अस्मन्नीवेवम् सका ॥ अदवजिमिः विनयः गार्कन
दिप्रनागनां वविनासिता ॥ पाशुनाग चविविधन्नानयनिगतिर्यथा ॥ ॥ लासुनवन ॥ ॥ पिपी

पिपलामूल ॥ गमशाहन ॥ हकजी ॥ स्पधुवि ॥ वदयित ॥ जपागक ॥ तासिस्वा ॥ नूपके ॥ मवव ॥ गुंथि ॥ अतमंस ॥ सु
वाचन मंसुजतय ॥ ववंत्यव ॥ सुकम्पा ॥ अतदा मंसतय ॥ संतवि विमं ॥ क्षत्रवी मं ॥ सुसि मं ॥ रतय ॥ अतवर्ह
काकलं ॥ विसुहासं ॥ त्यनकं ॥ नानागुका ॥ नग्रहणी ॥ नाग ॥ ॥ हनीतकी ॥ नांकु ॥ उवं ॥ ऊषण ॥ स्प ॥ पत्र ॥ गयं ॥

वपुनं पिपली मूलं ॥ तथैवाप्सुवतसं ॥ वचाचया निध ॥ न्याक ॥ मजाजी ॥ हवृषा ॥ नथा ॥ जवा ॥ नीवा ॥ जमा ॥ दावति

निजी कस दाउमं। सो वरुनं च कात्र व्या पलिका निउ कर्म थन॥ त्वगुलापण कं कर्म सम लग्न निकार थ
न॥ गुजस्यु पुनालस्य द्वि गुधनि पला निव॥ अहयागुटिका भेष मन्द स्यान्नि पुदीपकः॥ वात (म) गितमा
ना हं गुल्म पं व विधं त थ॥ च स्वात्राग्र हली दाषा द्विविधा पाय की लकान्। मूत्र कृक्कु पुम हाथ दू डा ग न र वः
दन्त कः॥ आम वात हने चैव उदर सह गं द्रं। हा विगानां सूप रुषां युवे मशाव पायिनां त्र सम दना ल हाय
कानि य रुना गुला॥

॥ अहयादिगुटिका ॥

॥ नागनायिष्यली मूलं विउ कं हस्ति पिष्यली। ग्वदं

६२

शयिष्यली भन विवपा थ यमानिका। चां (ग) नी स्त्र स सविः कल्के ने त द्वि व्याव थन। वरुगु (व) ना द ध्रं व द्य
तं व करु वात नूत॥ अर्ध सिग्र हली दाष मूत्र कृक्कु पु वाहिका। गुज्जं सारि माना रु घृत म न अ पा हति॥

॥ चां (ग) नी घृत ॥

॥ गुं धि। पिष्यला मूलं विन हा गज पिषी। (म) सा। पिषी। (म) सा हं व्या वा हा

१

लाग १ लाग ४ म त्रिति लाग ४

ॐ मं पणु घा व या से नै च तं धा त व र्ण च त स पा क या ना व न के गृ ह सी ना स ॥ ॥ ७ ला प उ क ना
ग के न ल त्व वा जा ती रु ल दी प्य कं । जा ती का ग क वं न वा व न तु ग म न उ य न मा उ क । जा ती पि प्य लि गुं थि के
व म त्रि वं त उ तु व द प लं । ७ त चूर्ण मि दं स म रु नि य ने र्मि र्दः गृ ह ला ज न ॥ ख उ रू व सू पा चि तं गृ ह कं तं म न
य न जा क मं । वा ल क री गु त उ क नू नेः पू र्वा क्र या गे गृ हः । मा ण का ल व ला व लं स्र प म द क्षा कु व या ग क मं
द क्षा क र्म क रा ति वे द नि यूनः । हे म य या गे ल मं । जू प क य क य को षं प कं तु य त्रि ल म ध नं ॥ व क्रि सं दी प य
ल प गृ ह ह री स र्व ना ग य नू ॥ का ग म्वा सा दि तं कृ दि रू क्रा र स्य क ना य हं ॥ क ण प्रा ग नि र ग्म न ह्री ह गृ ह
न दा य हं । ७ क दा ष ए वा ना ग य च ना ग दि दा ष जा ॥ ति दा ष ए वा ना ग य दा ग रू ड सं ए वा ॥ ता स वं
थ वि न स्य नि वृ क्ता ना म न नि र्य थ ॥ ख उ ना ग त मि ल कं जू ग्नि व स्य म हा ल म ख उ ना ग त ला वि तं ॥ ॥

॥ ॥ खलु नागत्र ॥

॥ पिपली पिपली मूलं विणकं रुद्रिपिपली हिंगु वयां जभाज वं

व वल वलानि वज्रा दु क स्य न सायुं मन्दाग्नि ना वि पा व य न । उत्तम मि च न ना म ल हा यं व उ न स्य
न । अग्नि सि ना न य । अ व वा त ग र्मो द ना य हं ॥ गृन्थ व द पे य न्म स का न क र्वा नि ला न पि । ना ग य
गु रु ली दा व ल्म ध न्म स र्ग न द ना न् ॥ य व व हिं ग ना ग म य व कृ किं स मा ग्नि ना । सर्वा ना ग य न्म
७ लू य ग त म हा दि तः ॥

॥ अग्नि च न ॥

॥ पिपी पिपली मूल विणक गज पिपी सि ८३

सि पि अज मा द । स्य धू वि । व उ वि । सु वा कृ ल वि । म म्भु वि वि । पा ग म वि । य म स र्वा अ उ स्वा न । ध न
क र्म १ न य । ध त्रि ति रुं १ म्भु धि रुं १ पा लू ति रुं १ ध ल रुं १ ध न पा क या उं त्य न कं । सर्व गु रु ली ना न
॥ ॥ विणका म न वा म्भु ली व य ग्रन्थि क ना ग लं । वि ला व ध न की पा थ डी व ला व य न र्वा ॥

कृदजलकृत् संतापुं यथ क्वं व पलानि च । जलवतु गुणं सिद्धं यावत्प्रादाव (ग) विनं । आर्द्रक स्य न समस्तु
असन्नं वा स्रु कांजिकं । उलाङ्गं व यथ कृद या गुठ स्याद्भगं पयः न म्मु मस द गंगा यं पुक्ति कं न वि सूर्य नि

॥ गुठकल्याण ॥ ॥ विनक गुठगु यथ घाव सिधि विपला मूल मुं धि काल धि विस्वान

घात य वा न पुन न्द न कृद वी ज (६०) तु ज व गुला उ धन पु ज न य लं ख पा लू नि स्व धि धि त्रि नि धन रं
प न य ॥ धन पा क या सं त्व न कं गृ ह्णी ना न ॥ ॥ प्र ष ष वि रु ला मू ल य मा नि जी व कं द यं । चूर्ण म ष प ने

न त ति द्ध नी न य दा य य न् । मा ग पि रु व ला ण जि उ य यं जी न वृ द्धि मा न । म न्दा म्न प ह ना क वि न य व वा ना क
रु म यं । गृ ह्णी दा ष मू ल यं । म थ पा तु म या प हं ॥ स का ग क्ष त दा ह र्ने श्री ह गु लो द ना प हं । दी र्घ का ना त्किः
न चै व किं पु न न्ध वि ना त्कि नं ॥ गु ठ क ल्या ण कं ना म वृ ङ्ग य् यं व ल उ दं । मि लि ना नि ह चूर्णं व प न म ष न गृ ष

॥ १॥ ॥ गुडकल्याणक ॥ ॥ त्रिकटु त्रिहृत्वा कसू ॐ सं जी हजी धनवर्धुपुत्रय
 लंख ॥ गत्रउ सषु उ न कं गृहणी रायनाम ॥ ॥ धूतिगृहणी याविकित्सा ॥ ॥ ॐ ॥
 ॥ अथार्धभागपवित्रानिदानं ॥ ॥ यथार्याखेः समस्तैश्च ॥ गणितानां सहजानिव ॥ अर्धसिष्यकानां नि
 विशा हुतवलिजयः ॥ ॥ यातपिरु ॥ स्यात्सन्निपातना दिन ॥ जयत अर्धराय ॥ घृतायुका नदी ॥ जायत
 यूसिय ॥ ॥ आं यामसस्य न कि नूय ॥ धस्य न कि या स्वता नाम ॥ पुवाहिणी ॥ विसर्जनी ॥ सम्यग्वाणी ॥ धनस्यता नाम
 वा अंगुलि न ध ॥ पुवाहिणी धाय ॥ अंगुलि म ॥ धा स ॥ विसर्जनी धाय ॥ अंगुलि न सि ॥ न ध ॥ संवत्वा धाय ॥ ॥ आं पाया
 इव न लंखा वरुन वा निव ॥ कच्छ वयं रुव ॥ पिव न न व व गान अम संवत्वा य जिव ॥ ॥ दायात्त ग्मा नम मया वि
 संदृष्य विविधकृतां मांसां कृत्वा नयानां दो कूर्वन्त्यर्धगणितान् जगुः ॥ विष्टुक्ता न्नस्य दोर्वल्यं कृत्वा न ग्रय मवत्

कार्थसूत्रानवाहृत्यंनकि साक्षापविक्रता॥

॥ पृथुलाक्षायः भूत्रा मा प्रयनक महावदलमलोकः ॥

[illegible]

न। आं पाम स न द दयिव वा न व ल ला क या गं गु वि म र क्ष यू लि प त स स्या यू हो यू र यिव ॥ ॥ धू नि वा न ॥

॥ लघुषट्पिपलीमूलपाथुहिंगुसचिणकं। सोवर्चनयूष्कनो कसजाजीविल्लयनिका॥ यमानि

हृषागुत विठि स्रष्टे च ववां ति किं कं व मं य न म न्द को क्रा द क न वा ॥ वा ना गि गु ह वी दा क्ष म्प लाना ह वि म्प

॥ शिकुद्दः प्रियलामं वाहायः हिं विष्कः सुहायः पूषः वामं जीः कविबालः वाक् ०० मं अउ

स्वान विविसि स्या पूं निरुसि धन चूर्ण या उं धा सं ते व क्का क सं ख सं ग व द्वा स्यं त्य न कं वा त नृ गं ग ह

गीष्पकडावधनं माक ॥ ॥ कुषलदिवागर्न्यां ॥ ॥ पिकारुनानीलमूखानकपिरुनिगाउ
 रा ॥ ॥ पिरुवल्ललाकयावीसववृकाउउयूहाकउनिशयिवयवमध्याह्नित्यीनाहनिउत्तंनखा
 दयः ॥ ॥ **उयय २ धासतकृ (म ७ थं)** दधूससिसदकृहवृथंकासुसउंनंलूसिनं ॥ **धववल्ललाकया**
 स्याकतवमइककृयाहागवधंनुकावतं ॥ **म ७ थिअ ॥ धवया ॥** ॥ **ज्वजस्यवनागस्यफगलं वसगक**
 नात् ॥ सजीउंनवनीतंययकंपिकारनिगनं ॥ ॥ **ज्वपुंथि ॥ धलंकेगल ॥ धववृथंयासंसाधनवकिन** ८५
 संकेस्तिवमसधनियानउनिनवातंनसं ॥ **धवजर्गन्धसकागपिकारनिग ॥** ॥ **तिलरुहोतकंयधमगु**
 उवनिममान्मिकेः इनीमन्धसकागपुंयाधुवा ॥ **म ७ थं दवाघहं ॥** ॥ **हामवालाउ ॥ हवउ ॥ अनवाशनं**
 सं ॥ **धवजर्गन्धसकागपाधुनागमाक ॥** ॥ **धवगर्न्या ॥** ॥ **नकाखनागुठकीला ॥ पिरुकुनिस**

मन्त्रिणा हि वल्लभा कया अंगामसुकी ललानाथं जनैव लाघावपि लया लज्जया दयीव ॥ वदसुवाहसुदनीं
गुंजा विक्रमसंयुता ॥ ॥ वनसि (म) उथं स्वयम्गथं शिंघुथं काउयू ॥ ॥ धनकार्णिकय ॥ ॥
वसांजनं नानि विष्ठा कृदजलवमववा तपुनादक कोडं वगु उत्र कार्णिकानागनं ॥ ॥ वसांजनं जतिनसु कृद
वीजं वदं लव योजन किं ती सुहास्यं कलिच्छुं तं न कं व कार्णिकानाग ॥ ॥ वकार्णिकया ॥ ॥ सर्वैः सर्वात्मः
कान्याद्रुल्लेखः सह जानिव ॥ ॥ धनलज्जया नति दाषजर्णिया सर्वात्मकधाय ॥ धनसर्वात्मकसुल्लाकसु
लज्जर्णिया लज्जया शन ॥ ॥ धति दाषजर्णिया ॥ ॥ सह जानि ति दाषा निया निवा लनगा वलि जायक्य
नीति संसृता न्यभिधमनी दिनेत ॥ ॥ धति दाषजर्णिया वागपि ललाय धनगाया लज्जया दयिव
इव न कच्छुदयू ॥ ॥ धजसा धति दाषा नक्षय ॥ ॥ हलादकार्णिकदिवनं विज कस्य पत्र द्वयं वाउ

जितयेकं सर्वबुद्धिगुणं गुणं। वक्रिसं दीपनं मतदन्तं त्रिविविधं। पातु स्ववधूनां भयः। प्रसन्नं गतिं वा
नलं॥ ॥ वाला उच्यते विजयक यत्र गुणस्य। पुनः पातक यत्र लवंत्वव पुनः नृपेकं। पुनः धादक यादृगं किं वा क
तस्य। गतं विना वनं कं अग्निं कावः। पातु प्रागमं गुणादिं सह जातं विद्या धार्मनालया क॥ ॥ विद्या धार्मना ॥
दवकाष्ठिका साधु कांजिक न पुष्ययेत्॥ लपयित्वा ययनेन निरुक्तिगुणं जा मयं॥ ॥ दवदा नू खानू
गुला उच्यते सति सं पाय॥ ॥ हस्तपोद मुखनाल्यां गुणं वृषणया कृत्वा। गतं धादक्या गतं लवं वयस्य सा
धार्मसां विदुः॥ ॥ लाहान पातु खानू नाति। ज्ञापान कासि धार्ममनिव नू गतं वक्र स्यायिवा धार्म
साधु अर्जुनाय॥ ॥ हस्तार्धगूलं संभारुं कूर्दि वजस्य नू कूलः कृष्ण नावक पाक स्य निरुत्पू गुणं गुणं
॥ ॥ नू गतं वक्रा स्यायुव अवेष्टा रुम् थ नू वयि कृष्णाय कान पूयिक प्या सुवायू न यमयव ॥

[illegible]

एक संयुक्तं हस्त्यागुर्जनागिनां ॥ ॥ **सूत्रविधिः** ॥ ॥ ताली स पठ वविका मनि चानां पलं पलं
 कृष्णतत्सूनया दद पलं गुणी पलं यं ॥ वा उजीत क मूनीनं क र्वा म सु स्रवृर्नितं । गुठन वटिकां कृत्वा ॥
 विगु (वन सुदा हवेत् ॥ मय यूष न सा त्रिष्टं म म्रुय या पया नूपां । वा न (ह्यभा सना कृदि ग्रहणीया दं ऊ
 जाः ॥ ॥ कन स्र पथू पा उलं गुल्म पा ना ल्यया र्जसा । उ स्र ष पी न स म्भ स का म नां व निव र्त्तय न ॥ अ ह या न
 गत्र स्का न दशा रुते व विग्रह । कृ र्वा दि षू व पि रु षू व रु र्नु हा नि ता त्रि नं ॥ प के न वटिकां का ये र्गि गु ठ न ।
 नित या पि वा अ म्र पि रु दि मा दि च पु या य गु ठ जा गु ल ॥ ॥ ताली सा दि वट क ॥ ॥ ताली ॥
 स्र सि पि म त्रि व ॥ १९ लग पि पी पि प ला मू ल ॥ २० लि ह न उ १३ सू क म्पा पा न क ल व न ल व नू प के
 म ल ॥ ३ म ल हा ॥ ४० क र्वा १९ लग वा क १३ पा क या ना व वटिका द य के न स्ये र्वा र्ज ना ग ॥ ॥

३
 ८१

पिप्ली मधुकं विल्वनामामदनवं वा। कृष्णमथी पूष्पनाम्ना विजकं देवदानुव॥ विष्णुनेलं विषकवां
द्विगुणं जीनसंयुतं। अर्णसि मूरवागादिनच्छेष्टमन्वा सनं॥ गुणनननं मूलमूतकुकुपुवाहि का॥
अष्टत्रयश्च दोर्वल्यमानाहं मा कृष्णप्रयं॥ विष्णुप्रवगुतनामवागवर्वा विनिग्रहं। उत्थानं वदुः।
यश्च जयतः। तान्वा सनात्॥

॥ विष्णुप्रवगुतनाम्॥ ॥ पिपी। कृष्णमी। बाल। अहिहा। मदनरुः
विहा। कृष्ण। सनपि। पूष्पनामूल। विजक। देवदानु। थानमंसठनय। विकन। कृष्ण। साइइ। कृष्ण। गस्यं
पाकयास्यं वृयं। अर्णककुनाम॥ ॥ अर्णककुया विकन॥ ॥ सामल। तवकनसमलगनि

नावपाय। अर्णककुनाम॥ ॥ वान। गुंथि। वृष्ण्याउं पूअ। कि। सि। मागी। स। हास्यं। त्वनकं। अर्णककुनाम
॥ गुणीक। म। मनिवनामदत्तत्वे। गला। वृष्णीकतं। कर्मविदं। धिन। मूष्मि। म। ए। त्। खादेदिमं। समनिनं। गुउजा

गौरी नमः ॥

प्रिमांशं। गुल्माद्रुविस्वसुनक ४ रुदामयवू॥ ॥ समसर्कनादिवूर्ण॥ ॥ गुठनगुलीमथवा
पदुल्यामथमृगीयामथदातिमंवा। आमायजीर्णेषु गुजामयवू। वच्चविव। भववनिहमसं॥ ॥
पुनानवाकू। गुंथि। पिपी। रुत्रउ। क्षत्रवी। धतिवूर्णयागवनकं। विष्ठाकमदले। आमाजीर्णसु-अर्जना
यसुरिं॥ ॥ ॐतिनिदानाकपत्रिकमर्जस्यविकिसाधिकावः॥ ॥ मन्दागिक्रीलभ
उषनात्रीमन्दनवारवैतू। लप्पीवरुमिदीफा। ग्नतदावगवतीरुवैतू॥ ॥ अजीर्णयानात्रि-क्षत्र
किन्नयानाति-निद्रयावबूलरूनसनिव। अग्निगवमानंवतलाकंकोवेयायाउस्यंवेगननातिस
निव॥ ॥ सुखितस्यस्तिग्राह्यातदावगवतीनिना। रुत्रकोपेवधमणीसाक्रावेगवतीरु
वैतू॥ ॥ सुखिगत्रीनयानातिस्त्रिलनसनिव। वेमनंसनिव। रुलकोपलेपूयानातिष्ठा

८८

शिवदेवनसुनिव॥ ॥ कामकाधदेवनकीजीलविनाहयसूता। असुगुर्गुहवत्काक्रागुवी
सामागनीयसी॥ ॥ कामयानाति। काधयानाति। योंयेंलेंदंडेंहेंनिकोंडोंवेंसंनिवें। देवनसुनि
व। जीलयानाति। निकसुंसुनिव। हयनहाकयानाति। दावयाडंसुनिव। हिवावयानाति। व्यापलदगवह
निकाशवसुनिव। तवय्याडंसुनिव। आमयांधथंखव॥ ॥ वयलाकृधिनस्यापि। नृकस्यवरु
निसिना। प्यत्ताकनपीउनयूनाति। वंचनसुनिव। सुकाषश्यकनवक्ष्यानाती। स्त्रिनसुनिव॥ ॥
वातावेकुगतानाती। वयलापिरुवाहिणी। स्त्रिनाच। श्रमसंहंयाति। विधंन। तिकास्मना॥ ॥ वा न
यानाति। वज्रयाडंसुनिव। पिरुयानाति। वंचनसुनिव॥ ॥ श्रमयानाति। स्वनाहनसुनिव। दन्दयानाति
निताश्लकलसंयूकयाडंसुनिव। त्रिदोषयास्वगासंयूकयाडंसुनिव। द्वागश्वसानंथननाती।

अजीर्णुलक्षणः॥

अजीर्णुमात्रमिति॥

बालकवसिय॥ ॥अथजीर्णवर्णः॥ ॥मन्दीकृथविसमःसमः(धनिवसुर्विधःकरुविला
निलाधिकारुत्तामाऊ०नायतः॥ ॥मन्दीप्रियःतीक्ष्णप्रियःविषमाप्रियःसमाप्रियःथः
यता ४अग्निमानामसिय॥ ॥आभिकःपिलाधिकःवाताधिकःसमस्तुप्यननाययाअग्निऊमपविषाग
सिय॥ ॥ग्लानिजेरवविलुप्तममात्रमसूतता।विवा(भक्तिपुवृत्तिविसामान्याजीर्णुलक्षणं॥
अथप्राशःप्यनहालाभवःयिकःकरुसनमदडःनिकासमदःकादव॥थसामान्यअजीर्णुप्रियः॥ ॥
पथप्रियलिसेयुक्तंरुर्णुसोवर्धनंविषत।मस्तुवाश्रितकेनेवजानीयात्कृणुताहिवक॥वसुविधमजीः
वृद्धमन्दानलमथप्रवि।आध्यानंवागुल्लंघनंलंघननियच्छति॥ ॥हन्विधिःसूतकःथनव
वृद्धप्रितिसंतवकाकलंखसंतव।त्वनकंयतापुकात्रअजीर्णुअग्निमन्दःवृद्धिमदःप्यननावःवागुल्लंघनः
मन्दीप्रियःथननागयाक॥ ॥अजीर्णुया॥ ॥गजामगुर्णास्तेदः(मध्यागुजिह्ववर्णः॥५॥

८२

अथैतद्विदुःसुवर्तुः॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

मिह मनिव च्छुन न सनेध कान वयिव ॥ माक सव संछेयिव ॥ ॥ अमाजी शुभिय ॥ ॥ ठिक दू

कमजमादंसेध्वंजीत्रिकेद्वयं। समधनवधुगानामष्टमाहिंगुलागः। यथमकवत्रहकसृष्टिषांवृष्टमनन॥

जनयति ज० लाग्निवान् गुल्मनिहन्ति ॥ ॥ हिंश्रुश्च कूर्ध्व ॥ ॥ त्रिकटु जूजभाद स्यधूवि जी ह जी ॥

समस्तगण उभयनया व्यावाहृच्छ्रवाहिष्ठवानाव नवद्यत्नेव उभयानवनकं जृम्भिमउस्रिउं वातगुल्मेना

॥ स्यात् ॥ ५॥ जायते लवने ॥ ॥ स्यात् ॥ न गत्स्वयं विषयं यावत् कालं स्यात् सामं लघुवापि लघु कं अन्

त्रयाकं लज्जनस्य ॥ ॐ व्याहय जाध पत्री जितन नृप नयन निषाडितन मङ्गल्यमानेन वसुधामानेन ॥

नन्वेपाकं लज्जनं न स्य ॥ जठ नाग्निबाणं गुल्मं बहकि ॥ ॥ अथ उभसत्रिकुकादि ॥ वासज उगु ॥ ॥

विष्णुश्च लमा ध्यानं विविधा वागवेदना। मलवागा उ वृहिसि सुक्ता माहा मयी उ नं॥ वागन शव विष्णु
 या केन यन्त हाहा भव। यक स्यायू। यक स्यायू। वागना गया थं लेया रे स्याक। वाहि त्रिनं रु सनं व ह न यू॥
 मलहन हाव। क स्यायू॥ ॥ **धविष्णु म्हाजी भूधिया॥** ॥ **हिं गु सो व च्च त्रं गुं धि दा डि म वा स्र व ग स वू**
 भूमि क्का न्च नाथ य वाग म न्दाग्नि नाग नं॥ ॥ **हिं सो हा क्क गुं धि। धा न च्च ना। स सि। धा न च्च भू का क ले ख**
 स हा स्यं त्र न कं वाग शव जग्नि म न्दा नाग॥ ॥ **सो व च्च त्र स्य व प तं द्वि गुं वा स्र व ग स। व उ र्गुं ध म जा जी व**
 म त्रि वा स्र गुं ध व त्॥ मा उ लू ग व स ने व गु ठि का का न य हि ष क्क। जन य ऊ० नाग्निं व वाग मूल वि नाग य
 त्॥ ॥ **हा हा क्क ल। ७५ स सि ७२ जी ७४ म त्रि व ७८ त व सि पा ड या न स स नि स्यं गु ठि का द य कं न स्यं**
 ऊ० नाग्नि जय न य नं वाग मूल नाग यागं॥ ॥ **विष्णु म्हाजी भूधिया॥** ॥ **गू चि हि त्रि व ग ग नि गु द सः**

२०

निष्ठानिलः यस्याजीर्णनसावेयविशुचीतिनिगद्यन॥ ॥ मूत्रनसूयाथं स्याक। रुसया अजीर्ण-
या अक्षत्रसूया क क द व। धनल क द शत्रना सवेयन विगुविकाधाय॥ ॥ उष्ठी व द कानवदमहया वूर्
संयुतं। हिंगुयवा मूनापीनं सर्वगूल विनाशनं॥ ॥ उं धि। पिपी। स्थूवि। ह न उ। धन वूर्णसुहिं तस्यं न क
यागी सुहा स्यं तन कं अजीर्णदि सर्वगूलनाग॥ ॥ उं धी कना मत्रिवना गत्रत्व। गला। वूर्णी कनं कुम विवद्वित
मूर्द्धमानं। स्वादयि दं समसिगं गुठ जाग्रिमायं। गुल्मा नूवि त्वसन कठ दय मय व॥ ॥ उं धि। पिपी। मत्रि
व। लूपक गल। ल वं त्व व। उला। धन वूर्ण वक्त्रि साधन वक्त्रि स्यं न कं अजीर्ण गुल्म। अत्र वि। धन। कठ स पी उत्र
यू नूगु उ स्या क। धन नाग याक॥ ॥ अजीर्ण विगुविकाया॥ ॥ मूर्च्छा यलापवमथः पुस्कः सदने उ
मः॥ उप ड वा र व स्यं न मत्रं वाप्यजीर्णः॥ ॥ नू। ग। उ मक्त्रि निव। ता क रु क न न्याय। धन वयिव। उल हा

कस्यायुः ॐ कृष्ण उषः वन नन गवज्जीर्णानि सियुः॥

॥ कुरु कीर्त्य दायित्वं स्वस्त्वन्मा नूता

नूतः॥ नीतु पुष्टय दग्निस्तदा तं हस्मकं वदेत्॥

॥ (सप्तविंशति धनं हस्तपितृना जीसु धनं धनं सवालं वा

तपितु याकेन मीलनं पावनं व २ अग्निवाधने पंचवगु थ हस्माग्निधाय॥

॥ विजनीस्वनसुजीयपदेदसु

गुणं चतः॥ महिषं जीवनीयन कल्केनात्यग्निनाशनं॥

॥ जीवविजत्रियात्रसु आद खिलतली कगु उगु थ

ते कर्णुयुलसख गवनं कं ह स्माग्निना सयाक॥

॥ मूर्च्छाति सात्रवमथु पिपासा गूलसमः दृष्टनं

हदाहावः वेवर्णु कम्पादगुजः॥ हवकिनस्या नित्रसु चगादः॥

॥ अवेगना हयुः कदयुः धनवयुः॥

प्या सजायुः प्य कस्यायुः ॐ कृष्ण मादस्यायुः धनं धनं कनं ववगु विगु वि काधाय॥

॥ धनं लज्ज

संयुक्तं हव विगु वि का नायकं धादु॥

॥ यः स्यावदका उा कनखा नृ संहावमथु र्गता जत्य कनगता

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

नमो। कामध्वनसर्वविमुक्तिमन्त्रि जायान्नः सायननागमायुः॥ ॥ अम। ब्रह्मसि। लसि। आवयू। च
गतामदयू। धनवयू। मिखाइहावनिव। सलधमथन। अथिअथ। तीउहायकाथं स्यायू। थअमनूष
माज्रायूषलिहामउल। जमनाजायाकेथन। ननय॥ ॥ थनउपडवज्जीर्णधाय॥ ॥ ५५
नधुद्विउत्साहावे। मस। ग्नीय। थवितः। लयूगाइसिपासाथजीर्णहानसलकृदं॥ ॥ तिगुधका
वयिव। मनससुखदवताल। खिनंवातेउद्वियाउं कदयिव। कंतापंयाउतायिव। नयत्वनं स। मनवनिव।
प्यासमदयिव॥ ॥ थज्जीर्णपाकवंगुयालकृदधाय॥ ॥ कदुकी। धयदापिरुं स्वस्कोनं मा
वृतातृगं। तीउं पुवृद्वयदनिंरुदासुसुस्मकंवदत्॥ ७ ॥ ॥ लभाविद्वतिरुलेस। पिरुनाहिस। थवथा
नसु। चाले। वागपिरुमिललपाव। नव२ज्मिवाधनपनंमनूषयाक॥ ॥ थनरुसकागिधाय॥ ॥

अजीर्णविषयिकायाः

॥ ॐ ति। अजीर्णविषयिकायाः सकलविलेविकालनियानविकित्सा ॥ ॥ ६० ॥ अथ अजीर्णवि
उविकायाः विकित्सा ॥ ॥ राजना। ग्रसदापथं जिक्काकष्टविषयधनं। अग्निसंदीपनं नूयं लवणं उ
वहकृत् ॥ ॥ जाजन्ननयते लनावक्रापां विवपावूनयमाल। अग्निसाचक। अग्निदयक ॥ ॥
हिग्वस्तवतसकदकविउकेत्यः सजानपूष्यनामूल। तिरुलदातिमत्यः कर्षाद्यधकगुठयलानिचू
र्णमंतन। कालामूखायं मनस्यकनोतिदीकां ॥ ॥ कालामूखचूर्ण ॥ ॥ हिं। मसि। त्रिकटु ॥ २२
विगक। स्पधू। पूष्यनामूल। तिरुला। अत्रवी। चूर्णका। कलंखसहस्यत्वेनकं अग्निदयकव ॥ ॥
कंचनजम्बूदातिमसियातक। विन्वजीवेल। जलधननागलसूतं। पीवतिसुगधूलजलमधूयूतं।
ॐ वगंगमपिवगवाहिनी नूयं ॥ ॥ कंचनादि ॥ ॥ कृकलवू। गुरुमसि। अत्रखना।

उत्तरपत्र
३ विपत्र ७५ अमर ॥ ५७

सिध्या न बाल बाल कसुं ७५ थि थत वृद्ध पूअ किती स र्हा स्पे त्व न कं गंगया वग थं प्रषा न रु
वशु नाग या क ॥ ॥ ७५ थि सा ग ध व क्रि प्रान्य क यू तं हि गु द्य न दी प न वा यी (म श्र न क द्वि जी
न क वि उं। सो व र्व न स न्ध व गु र्वा हा न म जी लू जि ड्र वि क नं। वृद्ध कृतं रा ग या ॥ ७५ थि व उ वा न न पु ति स म
स्या प्य मि सुं दी य न उ श्रा द क न या न वं ॥ ॥ ७५ थि व उ वा न न वृद्ध ॥ ॥ ७५ थि क ल म नि व ना ग न
त्वे ग ला वृद्धी कृतं कु म वि न स्मि त मूर्ध मा य नं। खा द दि दं स म नि तं गु उ जा मि मा यं। गु ल्मा वृ चि स्य स न।
क ७ रु द म य ७ ॥ ॥ स म ल क र्क ना दि ॥ ॥ ७५ थि पि पि म नि व नृ प के ल त्र वं त्व व सू क म ल
स म ल ग नृ र्ध सा ष न व क्रि अ म ल व च्छि त स्पे न कं अ मि वृ द्वि या क ॥ ॥ हिं गु ला ग रु वे द को व वा च
द्वि गु षं रु वे न्। पि प्य ली जि गु ष दे या नृ ग वं ल व रु गु ष ॥ य मा नि का यं व गु ष ॥ ७५ थि व रु ह नी न की

न। ७५ थि व रु ह नी न की

विष्कं सफगुलिनं कृष्टं तासु गुणं हवेत् । नृणां हनं चूर्णं पिवेत्कोष्कनवाविष्णु ॥ ॥ जग्निमुख
चूर्णं ॥ ॥ हिंउमं १ वेहामं २ पिप्पलिमं ३ कर्कटसिमं ४ ००० मं ५ जह्नमं ६ विष्कमं ७ कूटमं ८

धूमिर्बलं कलंखसं ह्यसंखनकं वागवशवज्जमिमं उनास ॥ ॥ यमानीति तिङी कंच नागनेका

सुवर्णसं। दाडिमं सुन्धवं तापिका र्षिका निप्रकल्पयत्॥ क्षम्यसे वच्छला जाजी वलांग चार्द्ध कार्षिकं पिप्पली
नागत्रं चैव दृग्गन्तमनिवस्यत्। शर्करायां नवत्वा निपलान्य कनकवर्णयत्। जिह्वा संलभ्य नंदयत् तच्चूर्णं हज
नाचनं॥ रुस्यीह पार्श्वमूलघ्नं विवन्धनाहनाशनं। काशश्च सहत्रं ग्रहिग्रहेष्वर्णविकाचनूत॥

यमान्यादिबूधं ॥ ७७ ॥ श्रीचन्द्रवदमहेश्वरमहाराजबूधसंयुतं । यवानाम्युनापीतं सर्वभूलविनाशनं ॥

॥ ॐ विष्णवे नमः ॥

॥ ३३ ॥ पिपी. स्पष्ट. हनत. चूटत. को. हा. या. ति. सहि. उ. चू. उ. त्य. न. क. ज. ग्न. म. भु. ध्या. ध. स्था. वि. ना. न.

विउन्वकाजभादहिगुवयाद्विजीनदूतदजठिकठुकवेमस्तवतसमन्तिकं।सममपिचनगानांजठि
 मक्षन्यमनत्।जलजलितजग्निहाजनविमसमयम्॥ ॥**वज्रदिबूर्धु॥** ॥**हिंडमंरत्रिकदुसं१५**
मं।जीत्रि।अजभाउ।स्यधू।वज्रवि।विठुक।धनत्व२वृत्तिनरूटवियगुठिकादयकंनकंअजीर्ण्याहि
उ॥ ॥**हिंडमंरसुहाकुलमं३** ॥**धिमं८वूर्धुकाकलंरवसुहास्यंत्वनकंअग्निमन्दगुलनाग॥** ॥
 हिंगुवगन्धविउंथिजाजीहनीनकीपूष्कनमूलकृष्टं।ताम्रहृन्वूर्धुकनंतद्विष्ठागुल्मादनाजीर्ण
 विगुविकानां॥ ॥**हिंडवहा।वज्रवि।गुंथि।जीत्रि।हनउ।पूष्कनामूल।कृट।धनवूर्धुनकं**
वाथस्याकविगुविकानाग॥ ॥**तालीसत्त्वामनिचसदसंमूलागुममगधजाविगुवचगुठिक**
त्यागुउठिगुठिगांगुठिकासुगन्ध।कागमिगुउजाहृन्नूजदशात्॥ ॥**तालीग।सिपि।मनि**

व। पिपला मूल। वंश आतन। पिपलि। ॐ धि ३५। मया स्य दे। वा द्रु। ति जातक। धन वूर्धु गुटिका द
य कं न कं। अग्नि मन्त्र या हि उ ॥

॥ सधू वि। वेद वि। सा ला छ वि। हन उ। धन मं १५ न। पुष्प ना
मूल। हिं उ। धन ता मं स x ५ न धन वूर्धु का कलं ख सहा सं त्व न कं रु क द य द्रु। द्या ध स्या क। रु स न
प्रा ध थं थं ५ व गु ना न या क ॥

॥ ७ सक र्ष १० म सखा। हिं। म न व। पि पि। क र्ष १७ स उ। म न व उ।
ना प नियो। लि प त स स क तां मि ल ल पा उ नि ना व का य ल ५ न वा व अ म सि नी न रु ग वि स्यं नियो गु २४
जे पु मा न गु टि का द य कं न कं रु स। अ म द्रु ल अग्नि म गु या हि उ ॥

॥ आ न द अ व ल य ॥
वेत क हा। पिप ला मूल। ७ म सखा। स जि र वा। स धू। ति क द्रु ०० मं। सि पि। हिं। अ ज मं। सहा म वूर्धु ५
न वूर्धु क न रु ट वि स्यं पा य। ह नं क लू सि या नी न वा ना व गु टि का द य कं चाल स खि पा य ध न कं अग्निः

मन्द. रु. स. ध. तेना. ॥ ॥ पिपासायां मनु. क्लेशं लवंग. स्नायु. सस्प. ॥ अग्निमधु. पा. सुवा. ने. लव
डलं ख. दा. यकं. त्य. ने. कं. ॥ ॥ कृ. स. स. व. या. कल्कः. वृ. ज. ने. ल. स. म. चि. तः. ॥ वि. पु. च्या. म. द्य. ते. न. वा. कृ. ख. ली. म.
ल. नि. वा. ने. कं. ॥ वृ. जा. रा. ये. कां. जि. कं. ॥ ॥ ॐ. ति. अ. जी. धू. वि. कि. त्सा. ॥ ॥ ॐ. ॥ जि. म. य. नु. दि.
॥ ॥ आ. का. वा. का. ल. क. न. र. द. तः. ॥ व. हि. र्म. ल. क. हा. त. हि. ज. न. म. र. द. न. व. कु. र्वि. भः. ॥ ॥ चि. व. न. या. खि. टि. न. ९
॥ ॥ अ. ध. ॥ अ. न. र. ही. न. ३. म. ल. न. ४. ध. ने. प. ता. न. जा. य. ल. पू. जि. मि. ॥ नि. का. उ. का. न. जि. मि. पि. व. न. न. र. द. न. प. य.
॥ व. द. पा. दा. न. व. १. स. वा. य. क. लि. खा. व. ना. म. तः. ॥ ल. ला. टा. छि. वि. का. यू. का. मा. सी. ली. का. म. सि. दि. ॥ ॥
॥ दि. ध. ने. को. ०. पि. उ. का. क. पु. ग. ०. अ. नु. कृ. र्वा. नि. ॥ ॥ अ. नि. ता. न. क. च्छू. हा. हा. न. ग. म. यू. क. च्छू. ना. स. यू. यू. का. धा. य.
॥ मा. सि. लि. खा. धा. य. म. सि. ॥ अ. सि. या. अ. य. धा. न. न. क. च्छू. व. यू. ॥ ॥ अ. र. न. धा. व. ॥ ॥ अ. ध. जि. मि. ल. कृ. टा. नि. दा. न. ॥

॥ पिपासायां मनूक्लं लवंगं स्पाम्बु सस्पण । अग्निमधुसूपा सुवातेः सुव

॥ कृष्णसंभवयाः कल्कः चूकते लसंस चितः ॥ विष्णुव्यामद्यतेषां ब्रह्मखलीम् ॥

॥ वृत्तिज्जीव विदित्सा ॥

二 卯

॥ कि मय नु द्वि

॥ चिं वनेया खि टिन १

॥ वदूपादाश्चैश्वर्यावयूकालिख्यावनामतः ॥ ललाटाक्षिविकायूकामाश्रीलीकामसिद्धिः ॥

द्विषते को० पिउं का कणुं ग० उं अकूवेति ॥

॥ अतिगानकच्छुहोहानगमयुः कच्छुनासुयुः युकाधाय

मासि लिखाक्षयसि ॥ १५ ॥ सियाश्रयघातनकच्यवयु ॥ १६ ॥ २० नक्षेत्रे ॥

॥ अथ त्रिमित्कृष्णनिदान ॥

हस्तादमहागुदचनवदहृकसुमसुगन्धधनसुनवधयातं॥ ॥ हस्तासमासुप्रवणमवि
पाकमनावकं। मूर्च्छाकदिहनाहकानन्वपधुवीनसा॥ ॥ नृगमदधवृतापनावपाकमउग
नृविमद्नृगमउमच्छिधनववकानपूयपकडावहाच्छकालवयिवकासहेदरधव॥ ॥
पक्षाप्रयपूनीषात्काजायगधविस्पर्षिणः। वृद्धस्तस्यः रवेयूचनपदमासयाभूवाः॥ नयास्याज्ञान॥
निष्कसविस्मन्नुविक्षपिनः॥ ॥ त्यहनकुनिकाससजायनपूकहांवयिववृद्धाधयउकतन
जायनपूजिमिवृद्धाधय। आमाग्रयनधहासंवयिव। ध्याधकानग्रविनधवसालसनपनिववृथ
वृतायाहंदभवताजातिडागानामजिमियाकानादवनिधकदवजिमिनयातं॥ ॥ विहृदभूल
विष्णुकानपात्रुपाधुता। नामहर्षामिस्दनंगुदकधुविमार्गमः॥ ॥ निष्कसमालपकस्या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

क. यत्कलाशिवः । गवः वक्रनमलाकः । त्वयूवः । अग्निमन्दः । विमिकं कलितवयिवः । कस्याकः । अया मच्चा
सूयः । मार्गनडाडगु ॥ ॥ कनाविवर्णगात्तुलः । दृडागसुदनं उमः । ए उदयानिसानस्य संजागात्तुमिलः ।
कलः ॥ ॥ कान चयीवः । विवर्णशयूः । यत्कस्यायूः । नः । गम उमस्किं । ॐ लाहात्यानूता यिवः । ॐ क्यूः । नयम
यवः । उथं २ उ विहा यिवः । जिमियाकन धन उय उव जाय नयीवः । धन जिमिया ल कलः ॥ ॥
ॐ तिनिदाना कयत्रिजम जिमिविकित्सा भिकावः ॥ ॥ नसुदहासमायूकं नसाधुनयउ कं । गां वूलप
जुयार्वापिलेपायूका विना ननं ॥ ॥ गाधानः । धुनयानसः । ग्यालहः । धन निनावमादसपायः । कस
सिदानसाधुसपायः ॥ ॥ सिदावया ॥ ॥ मनजिला जिमिधुं च कल्कः । गम मूज संयूतः । नेलहु
सर्वयं सिद्धयूकालिख्या विना ननं ॥ ॥ मंनं निला जिमिधुं च । मनजिलः । साधोः । पकाविकं । ससिः । मासि
दायकं द्य ॥ १ ॥

३ सिः ससिदावया ॥ ३

नागयाक ॥

॥ निवाविडिंग (मसूत्रेः कद्रुनेलविवावयत्। लुपात्तलिरिकायूका माजन्मनपुनिक्रयं।

॥ ॥ यूकाहनेल ॥

॥ हुनउ विलिसि (मसूत्रे सुनितावपीयलका विकनसदायकं माउसवाय

माउयासिष्ठाकनागयाक ॥

॥ विडि मवावसंयूकं मन्दमन्दयिवन्नः। दीपनीयकिमिष्टमिवकिंच

कद्रुनेल ॥

॥ विलिसि मनिवापिपी। गुंथि दूर्ध्व इतु संखसुद्धास्यं नकं किमिनाग ॥ ॥ विनि

सिमं ४ हिं मं १ ०० मं २ ०० नुयवमं ३ यलासुतीजमं ४ थति दूर्ध्व कस्तिनवा नावनकं किमिनाग ॥ ॥

विदिंमदि ॥

॥ विडि मविल्वमूलानिमूलकं कुम्भानिवायवज्ञानयिवरुं किमिनागनमूलमं ॥ ॥

विडिमादि ॥

॥ विलिसि बालहा कसु लु ७ मसुखा थति दूर्ध्व निती सुद्धास्यं नकं ममलुकिमि

नागयाक ॥

॥ विडि मस्यभवज्ञानकं पिल्यकं हुनीगकी। यिवरुं उगसंपष्य सर्वकिमिनिवरुं यत् ॥ ॥

विडिभं न कयव विडु कं व यमानि सो व क्ल ल वी ज यू नी । क क्रा स प ला सी म ह या पु ल हा ह म्या नि मि सर्व वृ जं
 नि ह कि ॥ ॥ विडिभं मय हिं गु ध विडु स भ व रुं व नः । सो व क्ल ल म जा जी व त्त्त वृ धू क नं गु हं ॥ ॥
 आ म ना न वृ गु ल्म वृ डि मि ना न नं ॥ ॥ कृ ष हिं गु व वा र व सि न्धु वा क स से भ वः । गुं व न्म द न ले व स म
 रा ग न नि का ल य न् ॥ ॥ न त्कां जि क पि ष न ना हि मू ल च ले य य न् ॥ अ जी र्धू व वि ना नं व डि मि ना नं नि स द नं ॥
 वि डिं ग स भ व कृ क्रा य मा नी वी ज क क्क थ । वृ धू उ क्रां व ना प यं सर्व डि मि नि वा न वं ॥ ॥ **विलि सि स्य धृ वि**
पि यी ॐ मं प ला स वी ज । थ न वृ धू का क लं ख स हा स्यं च न कं डि मि ना य ना न या क ॥ ॥ प थ्म वी ष वि
 डिं ग न नि जि जी व व क्रि प्र न्दि कं । प ला स वी ज विल्वा नि । डि जा न स क्क ना म धूः ॥ ॥ अ स कां ना नि सा वं व न्म व वि डि मि
 ना न नं ॥ ॥ **प थ्म दि ॥ ॥** विडिभं अ ज मा जा नि वी ज किं गु क स भ वः । डि जी नि कु ष णं व य विडु कं ड व

वानिवा। मातुनंग स्यवीजानिवनांग समकावयत् ॥ गुठसुपिसिता कोडं यथा यथा यमवव। ज्जामूठयुनेपा
यं सर्वत्रिनिकावयत् ॥ जामवातादि सावंबद्धिद्दिष्टी हादनानिवा। वातगुला सन रुयं नका निसाननामनं ॥
॥ विडिगमदिवा कथाग ॥ ॥ ॐ नुयव। पलागवीज। चूर्णलंखसुहास्यं लवनकं त्रिमिश्रगनाम
विलिसिपू। पिपी। स्वहा ॐ हिं ॥ ॐ नुयव। समरागचूर्णकस्तिनवा नावनकं त्रिमिकथय ॥ ॥ वास्यं
प्यानि। मधं ॐ। स्यन्। हिं। कृद। वहा। सादननिनावपाय। बालखया त्रिमियाहिउ ॥ ॥ ॐ नुयव। ननव
लंखसुहाया वलवनकं प्यकनागयां त्रिमियां हिउ ॥ ॥ लवन। जिहासु। स्मलग। गजिसियावरागर च
धूयाडं कस्तिस्वनावनकं प्यकयां उडा। त्रिमिकदव ॥ ॥ जीनि। नला चूर्णयाडं नकं धनववक्रिय ॥
पिपी। जी। विडिसि। स्त्रा पूमं। चूर्णयाडं नकं धनवव। त्रिमिनाम ॥ ॥ हिं। पलासवीज निनाव। पुनानवाक

तस्य दविनावन कं डिमिगल कथय ॥ ॥ पिपी हन विहन कृद्वीज विसिसि कृविना धनस्महाग
 बूर्धन कं डिमि कथय ॥ ॥ सपिगुड्वी वषक ४ काली। का (धनक क्लेन व सिद्धिभन १५ यं वृना
 वं हल का ग गूल स्वा सा मि माया नृ ग्रहणी गदषू ॥ ॥ धल गुड गु आदग लि क ४ गि वि धलष
 उं न स्यां ता काली उ न य क न का ग स्वा सु ग्रहणी डि मि धन ना ग या क ॥ ॥ अथ डि मि मनु ॥ ॥
 उं डि मि कृ २ उं डि मि ना गि २ उं डि मि पूर्व दिग जा हा हूं रुट् स्वा हा ॥ कृ क्ल न का गु ग धि कि ना व मनु य
 द पा व धू प स कृ रु य कं क स्वा य क ॥ गु नृ आ हा डि मि की ट डि मि मा मि न हूं रुट् स्वा हा ॥ वा क मनु या ना व न
 कं डि मि ना ग ॥ ॥ ॐ नि नि दाना क प त्रि क म डि मि वि कि त्सा धि का नः ॥ ॥ अथ पा उ ना ग ल
 कृ ल नि दानः ॥ ॥ पा उ ना गः स्म ता पं व ता न पि रु क रु मु यः। व उ र्थः स त्रि पा न न प के मा ह उ क

२८

स्मदः॥ ॥ पापुनागक्षयडागापुकात्र॥ वातपचिह्नरुग्णध्वस्त्रियातठवानयावश्वगुः
 नापंडागाजपापुनायक्षय॥ ॥ त्वक्लूटनिष्ठीवनगजसादमृहृजक्षन्तुजलकूटल्लभःवि
 मृजयीतगामथाविपाकहविष्यनरुस्यपूतःसनावि॥ ॥ केंगुतवक्षायुः७लव्यूः॥ क्षमाकवान
 यथयीवमिखामकनिव॥ ७कंगुत्रिदाकंगुलिययीवमिहासनीव॥ नयागुजीर्णमवड॥ पापुनागया
 पूर्वतूपथथसिय॥ ॥ त्वमूतनयनादीनांनूजक्षक्रानूवयहं॥ वातपाश्चासयंकम्यस्तोदानाह
 उमादयः॥ ॥ केंगुदिमिखाज्जादिनखकनमलाक॥ हाक्यूः॥ हृहनधायुः॥ वातनजायत्रपूपापुना
 गया॥ क्लव्यूः॥ उति॥ वनरहायाथंस्यायुः॥ यनन्यायुः॥ ००क्यूः॥ थनवातपापुनागया॥ ॥ पीतने
 उषकृस्मृदाहृक्षकनाचिनः॥ हिन्नविकोटिपिलाहंपिलुपापुमयीननः॥ ॥ ७कंगुलिदाकं

गुलि मिखाका सुयू. प्या सुवायू. क ननत उगु. बाहिलि कालू. नव मार्ग न का सुयू. थन ल जव पिरु
या ॥ ॥ **धूनि विरुपा पुत्रागया ॥** ॥ करु पसक सुव धूत नान स्यानि. गोत्रवाः पा पुत्रा जी गी
: कला कूके सिम्पुन यनाने नैः ॥ ॥ उल हायिव. धन वय धा २ उ निव. आन स्यायू. मिखा
अनि ज्वा पुयू. क नहन वा निव. मिखा खाल ल्वयू. उन शयूव. ॥ ध्या पा पुत्रागया ल जव धन सु इ
नि ॥ ॥ कनात्राव क हला स कदिट क्राज मानिगः ॥ पा पुत्रा गि मिहिरि दधि स्या यती. ॥ धन
नियः ॥ ॥ **काद्ययू. नू विमइ. नू. गम धवू. क्राक. प्या सुदव. सुखमइ. जिदा सदा शव पाः**
पुत्राग विवर्ण शयू. पंचवर्णे निवल मला क धन ले जव गत ना स. थ पा पुत्रा गी वि यन ना नग माल
उपवान याय मगज ॥ ॥ **धन विदाय पा पुत्राग क्षया ॥** ॥ मलिकादन नीत स कूप्य न्य

नमो भगवते ॥ कथायासावृते पिलं मुखनामधूनाकरुः ॥ ॥ वाहनतडावभवतामलनायंकाप
लपु। हाकवान। वाक। छाकवानपिलं माकवान। अथ कापवपु ॥ ॥ पाउदकनरतोयस्यपाउने
उक्तुयाहवतु। पाउसंयागदगीवपाउनागीविनस्यति ॥ ॥ उम। लुसि। मिखा। थसुना। नायूलना
उ। कुवसु। नायुवखनडाव। थकपाउनागीमरुशयू ॥ ॥ थमरुपाउनागधाय ॥ ॥
विवादासुलवनायासमयं। मरुदंदिवास्वप्रेमगीवगीकं। निषवमानस्यविद्वानकंदोषासुलवपाउनानय
नि ॥ ॥ तवविवाद्यालं। पाउनलं। विपनाधनलं। अयाकशकं। थलं। वानलं। किनसुलं। तव
मान। काकपदार्थनलं। थनपदार्थनयाव। हीसविनाडाववप्रायन। कंगुलिनंमिखां। नायुशयू ॥ ॥
पाउनाययानकसंथथनागउत्पलिशयूव ॥ ॥ त्वकसूजनिखीवनगजसाद। मरुऊठापाऊठाक

टल्लुआविन्मूयपीतमथविद्याक. रक्तितागस्ययूनसनाति॥ ॥ संव. वा. उलहाय. कस्याक
ताय. वानयमनसासुयीव. मिहामनिव. खिवा. उल. अजीर्णशय. ध्यानकस. थथश्वनाह. ध्या
लीवखकाय॥ ॥ जायकेकामलाहिलालिहनेनगममूयता. कालाकनखलीहनाकृष्णस्याकृष्णका
मला॥ ॥ नकसजायलपूकामलपिलया. मिखा. चंनपं. धानं. खिनां. कासूर्य. नादतनास. महाकाय
खसुदनि॥ ॥ धूमिकृष्णकामलभय॥ ॥ हानिउवर्धसदनं हानिउत्तकखाननं. नकपिलस
कृष्णं रेकव. धूमिहनेदियं॥ दाहाविद्याकदोर्वल्यंसदनां वृविकार्धगः कामलावर्धपिलयां काष्ठभाषा
यामना॥ ७ ॥ मिखा. लूसि. खाल. कासूर्य. मलमूयकासूर्य. कयाउनिद्यानथंउनिव. पंचदि
हीनशय. हिय. नयायाकमडाड. बलमइ. कस्याक. नविमइ. क. गव. कामलगवपिलपगयाभाः

खा ० ला हा मा उ थं आ प्र य या उं वा उ ॥ ॥ धा ति कृ कृ का म ल या ॥ ॥ कृ ब्र पी ग स कृ मू ण
ह गं मू ल स्य मा न व ॥ ॥ हा कृ सं क्रा सु सं म ल मू ण क द यिव म नि व ॥ ॥ धा न का म ल भ य ॥ ॥
स न का क्रि मू रं कृ दि वि मू णे य च ग म्य ति । या हा नू वि ह व ल क्रा ना य ह का स म चि नः । न द्या मि य हि ॥
सं हृ कि का म ला वा वि प य न ॥ ७ ॥ मि खा । खा ल । खा उ । ध न व व । नि का स नं । कं गु लि खा उ ह टि
र व । हि यू । नू वि म द् । णा स वा व । वा हि नि मू ण य उं कृ कृ । म ल ह न क्रा व । अ मि म न्द । सं ह्रा म द् ॥ ॥
धा न म ल कृ का म ल भ य ॥ ॥ य दा उ पा णु व र्ण स्या द्ध नि त पी त मि ग्र कं । व ला सा ह कृ य लु आ म न्दा
मि त्वं म द् कृ नं । मू । कृ हृ षी न म र्द न्द सा द लु क्रा नू वि ञ मा । ह नी म कं त पा ल स्य वि या दानी ल यि रु नः ॥
॥ ॥ ग म न मू या । हा यू उ नि रु या व नि व । क्रा सु यू । हा वू यू । मी व या उ नि रु यू । व ल कृ य । सु ख कृ

पाशुनागजमसुते॥

यः प्रगा कः मि साव संयाग मरुः कच्छा २ या ना थं म्या कः प्या सवावः नू वि म इः यि क्युः थ ह नी म क
ना ग धा य ॥ थ धी गु ल ऊ ण वा ग पि रु न व व सं य ॥ ॥ थ ह नी म क धा य ॥ ॥ ॐ ति पा शु श
ग पा शु का म न ह नी म क नि दानं ॥ ॥ ॐ ॥ अ थ पा शु ना ग वि कि त्सा ॥ ॥ वि डि म डि रु ला
धा ष दा वि क्क क्रा ह्या न ज ॥ का म ला पा शु ना ग प्र लि का न् को ड द्यु त हू तं ॥ ॥ विलि सिः डि रु लाः वि
क दुः मि क्क सिः पि धीः ह नः क वि ह न् थ गे वूर्ध् क स्ति न वा ना व न कं पा शु ना ग ना ग ॥ ॥ वि डिं म दि ॥ १०९
शिः ष ण डि रु ला दा नू ह नि डा नी लि का रु ला ॥ डा का ॐ द्य य वा म्भं म जि ह्वा क द्वा हि धी ॥ म मा व ली सि
ग्र वी जं वि ष कं ग ज पि ष ली ॥ म ल य धी दृ ष य धी दृ ह नी क ष का वि का ॥ पा थ रु ला ग क द की वि ष ना स इ ला
न ला ॥ म वी म धू न सा ना ला वि डि म न स मा सि कं ॥ ज गे वूर्ध् म म वा पि ना हि धी दि गु णे रु वे ह् ॥ या वं म्भं कं न स
क रु ग वा म्भं कं पा व य न् ॥ ग ना ज मा ज गु टि का पा व य रु शु ना द के ॥ पा शु ना ग ज य ला म्भं कं द्यु वी स

ना। किमिदं कृष्णमहाप्रहरीदासः ॥ अथ नृप ॥ एगं तुला ॥ सप्तहरी हनुमान् दनयनाशनं ॥ ॥ बुध
नादिलह ॥ ॥ ठिकट्ट ॥ ठिकला ॥ देवदात्र ॥ कंचनहनुदि ॥ मित्रकिसि ॥ लटापू ॥ मिठिसि ॥ ॐ नुयव ॥ क
स ॥ मनुधि ॥ कट्टक ॥ अतिहा ॥ साहाजनय ॥ विठ्ठकहा ॥ विधि ॥ सात्रय ॥ ह्री ॥ कृष्णप ॥ ह्री ॥ लिक ॥ ४ ॥ दाक ॥ ४ ॥ वा
हाय ॥ पालोदति ॥ दकि ॥ कोष ॥ सुसिहा ॥ इलात्र ॥ ल ॥ नयि ॥ ॐ ॥ ह्री ॥ इगु ॥ स्त्रानहा ॥ विनिसि ॥ धातव ॥ ह्री ॥ य
अकिती ॥ सकसि ॥ क्का ॥ उंचनकं ॥ पा ॥ उराग ॥ कम्क ॥ कामल ॥ हनी ॥ मक ॥ किमि ॥ कृष्ण ॥ उमह ॥ ग्रहणी ॥ ॥ अथ ॥
हगंदन ॥ ॥ स ॥ अलपिमंगु ॥ गुल्म ॥ उदत्राग ॥ धातनाशयाक ॥ सा ॥ लो ॥ सदायकं ॥ ३ ॥ जाकिती ॥ सदायकं ॥ ३
हृ ॥ ग्यनकं ॥ गुटिका ॥ दयकं ॥ नके ॥ ॥ पुनर्वा ॥ निवप ॥ टाल ॥ गुंथि ॥ निक्काम ॥ गादा ॥ र्याक ॥ पाय ॥ स
वीज ॥ ॥ अथ ॥ दनका ॥ मूल ॥ ॥ स ॥ सावि ॥ ग ॥ पा ॥ गु ॥ गद ॥ निहकि ॥ ॥ पुनर्वा ॥ दि ॥ ॥ पुनर्द ॥ न ॥ नि

न्यः पात्ता उति मुं धिः कट्कः गुडगुः मित्र कि सिः हत्र उः धन चूर्ण का कलं खस हा सं त्य न कं पा पु भाग
मा मंगु या स्या क ना न ॥

भाग पु ले ह य न ॥ ॥ पा पु भाग या ॥

यू कं जी ग लं का म ला य हं ॥

क ग ल य य कं ॥ म ल न व न द ना गी व नी ला त ल रु नू ष कः ॥ रु का हि र्म म्वा द्रा ॥ जा दि जा ति कू स म वा सि तः ॥

यू का म धू नि ग ली क्रा ऊ य त निल पि रु ज ॥ कू रा म हा त य य कू दि मू क्ती दा ह प्र म उ मा ॥ उ र्द्व गं व कू वि लं

व पि पा सा का म ला म पि ॥

दी या का ष व स न्धे व ॥ कि मि धं वि रु ला भ न्य का ला जा य ज मा डि का ॥ प लि का नि रु व चूर्ण मि ला या य

॥ डा डा दि ॥

॥ धू नि का म ल या ॥

॥ रु कू दे गु नि कं व डिः

पलायकः न स पुस्तक्ययक्षनः गुड स्याद्विगतं पवेत् । उ क क स्यात्तकं पापु कामला सागनायमं । महकृष्टकनः
मधसग्रहणी जीर्णसायनं ॥ **॥ कल्याणकगुड ॥** **॥** रुतिकपेजगजविहितवयवक्रिष्णायक
सक्तत्रिवितलवर्णयक्षनं । दग्धविबूहिदधिमस्तुयूकं पुथायंगुत्मा दनायपथुपापुगुडा हवम् ॥ ७ ॥
कनकैरुलकायुहलसिपि । वितकहलतिकद्रुधनस्मरागच्छाश्यानावपायगणकावहं अस
धानकमुदिनकपूयासीसवानयिल । विक्रयमालसखीनयानावमीसदाहलप । हस्मयाडावध
हस्मधत्रिवनायेन स्पं पापुनाय । कामलनाय । हनीमकनायनागयाक ॥ **॥** पुनर्ववादाहृयागुड
वीपिव । मासूयमहिषाजयूकं । त्वग्दाह । मरुदाह । दनपापुनागस्तोत्यपसकडिकहामयम् ॥ ७ ॥ पुन
दनमिवकिस्ति । हनउगुडगु । धूनिस्मराग । मसूयसकाशदायागीस । गुडगुवूर्ध्वस्यत्वनकं पापुनागना

नक्षत्रिकुलकथा॥

ग॥ ॥ जयसिन्हात्सुप्रवकास्तलागः स्वर्गस्यमात्रिययुक्तेष्ववृष्टेः संमादकं इडयुक्तानुगतं । पाञ्च
 मथहनगनापिसक्तं ॥ ७ ॥ असक्तिवर्णुः प्रिकटः सुवर्णमात्रिः धनवर्णुः क्षेतिस्सुहास्यं कस्तिक्काठं
 त्वनकं पाञ्चनागयाति ॥ कामलनागयाक ॥ ॥ छूतिनिदानाकपत्रिकमपाञ्चनाग कामलहनीम
 कृत्रागविकित्साधिकानः ॥ ॥ जूथनकपिलुनिदानलज्जलं ॥ ॥ द्यम्यव्यायामः काधवा
 वायैवगिप्तविगेशतीक्ष्णकामनवलोचनस्यैः कद्रुतिनवव ॥ ॥ तापसशत्रुः तायीनडालः स्वयावशले ॥
 आयकशत्रुः मिथूनजृगिप्तवपनः खनवकुः काकवकुः विनूवकुः पानूपादः जृगिनः नकपिलुकापनय
 नं ॥ ॥ पिलुविदग्धं स्वगुणेर्विदहस्यासूः विगंतगः पुवरुननकं मूर्ध्निवाः क्षदिक्षयिव ॥ ७ ॥
 पिलुसः मगववकुनयावः धवरगुणनः कापलपूवननानेहिसः विकानरुस्यं ॥ ॥ उर्ध्वनासाजिक

॥ सुसमदुयानिगुदेवधः ॥ कृपिगं त्रामकूयनसमस्तं वयवर्तन ॥ ॥ क्रासमिखा कसपात सुकुलिः
 क्रायानि मार्गः ॥ धातधयस कापनपाव विमिस्रया नगतिः सकलहितं हितयीव ॥ कृगुलिधयनं अर
 तलसाधधय ॥ ॥ तत्र हितनं तत्र नास ॥ धातधयस ॥ क्रासमिखा कसपात सुकु ॥ धातधयनववगुः
 हि ॥ उर्ध्वनक्रधय ॥ ॥ यानि मार्गः ॥ लिङ्ग धातधयनववहि ॥ अक्षनक्रधय ॥ ॥ सदनं गीतकामित्यं क
 लधुमायनं वमिं ॥ ॥ कस्यायुः रवाउयुः सनतवशवः कश्च सकूनका उधं इतिव ॥ धनवयिव ॥ धन
 लक्षनक्रधय ॥ ॥ मस्यगन्धिधनिः ॥ धातधयस अकस्मात्तु विषयि ॥ ॥ अकस्मात्तु अकृया
 नवयीव ॥ धातधयस तवगुः साधनं निव ॥ धातधयस अकस्मात्तु विषयि ॥ ॥ साधनं सपातु सन्निहं
 पिच्छिलं वक्राविति ॥ ॥ ताकस्यं ववहि ॥ लायुः उनि ॥ विकननाक ॥ धातधयस ॥ धातधयनत उगुया ॥ ॥

॥ अथान्नं वं सुरुगंतन नू नू जं व वा निक ॥ ॥ ववुडनि हहन क्षव विद्या
 न जाव वं कन मला क वात न तं गु वात न क विरुया ॥ ॥ गतावली वना नास्त्रा का मनी य स वा स
 कं । कषायं न क विष्णं स य मूल हनं य नं ॥ ॥ अरिहा वदिया न इ गुच्छा हा नि निमा न आ द न थ
 न वूर्ध्वा थ दा स्यं च न कं न क विरु स य मूल ना न ॥ ॥ चन्दनं नु य वा पा थ का न मूल इ लाल ता
 गुडूवी वा स क ल धे विष्णु ली को ड संयुगं ॥ अथ धिक जय ड क ल क्रा का न क ना य हं ॥ ॥ श्री ख पु ॥ ९०४
 नु य व वा हा य का य व सि ग्या व हा इ लाल ह गु उ गु आ द न गु ल्हा उ वि पी धू नि वूर्ध्वा क सि स वा न
 व न कं ॥ अथ धिक न क विरु व्या स वा व म्व स ह न ना न ॥ ॥ क ह्वा धिक न क विरु या ॥ ॥
 धा उ म स ल ज दि स वा न ॥ अथ क या वि वा न या ना का व ॥ ॥ न क विरु कषा या रं क कं ॥ म मू य स

त्रिहोमवकागमनधूमाहमजरनातंचविलिकं॥ ॥आउ.कासू.काधदायाध्यांउंगु.हाक।ग
मूत्रथंउनगु.गमधधं.कथं.जंजनंथंउनगु.पिलाधिकया.हीस।लक।स्यय॥ ॥हस्ति
नीलोत्पलसितामधूकंपद्मकेतनं।पानंवनजलनेवविकाशत्रकपिरुजा॥ ॥गजदिवी.उरुं
लस्वान.साधन.ॐ ह्रीं.पद्मकेतन.धनचूर्णुलंखसहस्रस्यनेकंत्रकपिलंमाक॥ ॥पिला
धिकत्रकपिरुया॥ ॥संस्त्रलिंगसंस्त्रलिंगंसंनिपातिकं॥ ॥धदकनेसूयक
याउंविद्रुनसास्यगालकलंदतसा.संनिपातनववहियायसिय॥ ॥धसंनिपातनकपिरु
या॥ ॥चन्दनंमधूकागीलंशैलानागकेतनं।वानरगलकसुवमंजिष्ठाद्विगुलसूके।चूर्णमधू
चूर्णलहंकहनकामपावनं॥ ॥ग्रीखउ.ॐ ह्रीं.कमहा.सूकम्या.नूपकेतन.वान.गंकनाज.कदः

मनु नवातस्यं चूर्णया उं कलि नवा नवनकं (ह्रस्वाधिकवकपिरुया॥ आसः पाकयाक॥ ॥
वंदनादि॥ ॥ कर्पूरवन्दनाती वमधूकं लाधुसा विवा। जीवलाक्षतकी मूकं भामा मूलकं गलं॥ गक
नामधूनायूकं वकपिरुवमी हनत। कर्पूनादि ॐ दंल हं सन्निपात कनाय हं॥ ॥ श्रीखण्ड कर्पूर उगन
हा ॐ श्री गुल्लोउ इइ काका सि वात्र (धौ स्वां कसू प्रियंगु उरुनात्र स्वां वृषक गल साधन धनवूर्ण कलि
नवा नवनकं धनववन कपिरु सन्निपात कत्र धन भाक॥ ॥ कर्पूनादि॥ ॥ उर्ध्वगं करु स हृष्ट
म (क्षगं मा नूना चितं। द्वि मार्ग के ह वाता र्या मूला र्या मनुवरुनं॥ ॥ कुरुन धन हिवन सा (ह्रस्वा नवल
सिया। कोदस्यं वन सा वागन वल सिया॥ द्वि मार्ग नवन सा वाग (ह्रस्वा नवन सिया॥ ॥ वा नवन चन्दनाती
न पर्वट मूक साधितं। उर्ध्वगत पर्वट नकपिरु विका निष्पं॥ ॥ वात्र श्री खण्ड कृग हा स्वाखं कसू

१०५

धनवर्ग धनवर्ग रवा उलंख सनि स्पेत्वन कं उर्द्धग नत्र क्रमाक ॥ ॥ उर्द्धग नत्र क्रया ॥ ॥ डा का म
धूक सा धी कं च न्दने पद्य के गलं । आ मु जं वू यु वा ना नि वि वे ल्की न व सं यु गं ॥ न का गि सा व ना ॥ अ यं न क पि रु यु ग
क य ॥ मी ति ॥ ॐ हू मी ॥ कृ ति व न ॥ श्री ख पु ॥ प ल क ग ल ॥ अ पे य ॥ गु अ म सि ॥ वा न ॥ ध न व र्ग ॥ इ इ स र ॥ स प्त्वन कं न
का ति सा न ॥ न क पि रु म नि ॥ ॥ अ ॥ अ ग न न क्र या ॥ ॥ ॥ मा न्म प जाल ना तं क थि त मि व व य त्क र्द मा हा नि रं
वा ॥ म द यू या मु क ल्पं य द्दि व य दि वा ॥ य क जं व रू ला तं ॥ य त्क रं य च नी लं ॥ र ग म पि कृ ण पं य न यो का वि का ना
त द र्श न क पि रुं सू त्र प ति ध नू षा य च न्द्र स्य वि रा नि ॥ दो र्ब लं ग्म स का ग क य व म धू स द्या पा उ ता दा ह सू क्ती त
क याना वि दा ह स्त्र ध नि व पि स दा ह य गु ल्या व यी ज ॥ न क्का का क स्य ह दा नि न सि व ग य नं मू टि नि वी व न त्वा ॥ त
क द धा कि पा को वि क नि व पि रु व ड क पि रु य स ग्नी त् ॥ ॥ व ल म इ ॥ सा ल ल प ड ॥ का न यू य ॥ का क ॥ ॥

न कावथं उ निव। मा लु प्रा गया हा व थं उ निव। हियू नू। म उ म किं न न डा व वि। म म इ उ थं हियू द र म
 व। नू। म उ स्यायू प्या स वायू। म उ का क सल ग क नं हियू न य म य व स हा व हि निव। थ न ल क व न क पि रुः
 या उ य ड व ॥ ॥ ला हि तं दर्न य य सु व दू। म ला हि तं क व। ला हि ता श्रा व द गी व मि य न न क पि रु कः ॥ ॥
 हि क्का क ता उ ति मि खा क्का उ ध का व लि स्यं हि ध न्न व यी व थ धि गु ख न ना स थ क्का गी म ल्फ रू य ॥ ॥
 कृ ग का ग न रा द र्क ०० इ व नि ति। म ड वः। पि रु क्क कृ द नं यं व म ल व हि वि। म ध नः ॥ ७ ग ति इ य यं पी त्वा म ध
 ग क्क नि। म ध नः ॥ न का नि सा नि कं क र्म न क रू ल्या यू म मि नी ॥ पि रु पु ना दि कं क रू स म ध ग व वि या ज य ॥ ७ ॥
 कृ म हा का य व हा न स प ग हा द व ल हा ति गु हा थू नि क्का थ दा या गी ख्वा उ कं त्व न कं व क पि रु ना ग या क ॥ ॥
 मिं तिं मिं ००। डा का म धू क उ त्य लः व द नं य य क ग लं। ज म उ ज म्बू पु वा ला नि पे व रु उं ल सं य नं ॥ न का नि सा न ना

संवयिराहृकंपनाजयन्त ॥ ॥ डाकादि ॥ ॥ मिठिसिद्धिदुमीखरूत्रसिः श्रीखलुचलकेगन
अंवलगुजमसिः धनवैर्गुपुमकितीसहस्यंनकंनकपिरामिसावनान ॥ ॥ यागिगतनकपिरुः
विकिसा ॥ ॥ कृष्णाउस्यवमूलानिकूटस्नानपुलपयन्तनामानकजयन्त्याउकरुव्यमितिनिन्धय
न्त ॥ ॥ हायूरुनसियाहालंखसंतास्यंमिहासयायनोभनकनाग ॥ ॥ आमुस्यवीजमधवा
हृत्रिडासूर्यजिकागीगजलनपिष्टनस्यंउदयासूनिनकनासाः निहन्निगीपुंतिप्रगुनयागन्त ॥ ॥
धूमिन्नकप्रवयाविकिसा ॥ ॥ चन्दनंपर्षटागीलगालीगजिरुलाहृदुग्रीवलासूक्तकंधानां
प्रियंगुनागकगलं ॥ उत्पलंयमकंयष्टिन्नकचन्दनवासकः ॥ जिजागकपुमजीवीजानिजागीवर्गकना ॥ म
धूनासहलहायंनकपिरुकायहं ॥ कर्दिमूर्च्छावृविदाहाविषमकनकामला ॥ ॥ मध्वचन्दनादि ॥

श्रीखडुखारखं कलहातालीन नसांजन तिरुला तेलवतवान कस साहन प्रियंगु नृपकग उद्धा
 स्वां काथपल ००० मी नकुवचन आदग सूकम्याव वाकुर्जातक वंसत्रावन जी जिह्वा थनचूर्ण साष
 नकस्त्रिवर्जलावनकं नकपिरुका ननाग ॥ ॥ वचनं नलदं लाधुमगीनं पद्मकगलं नागयुष्यं च विल्वं च
 तजमुक्तासुगर्कना जीवला विषया धवकूटजस्य रुतत्वव ॥ ०० गवेल सा निविषंधन कीनव साजीनः ओ सु
 स्त्रित धमावा नीलायला समंगव ह्रस्वला जाडिमत्ववा या गमप्रादिन पिरुनां नागय कू लितं त थ ॥ सूका १००
 दाषं वल्लुनां लक्रानां वयुदाययत् अगी सावत थ कर्दि मुी वक्त्रज साग्रहा ॥ ०० फगनां वगे हृषिं स्वायेनं
 पत्रसूचत ॥ अविष्टानि मिहहृष नकपिरुनिलापहं ॥ ॥ तृतीयवन्दनादि ॥ ॥ थननक
 पिरुया ॥ ॥ उड्डीगन अक्षगन नकया ॥ ॥ ०० नि निदा नाक पत्रिजम नकपिरु वि कित्ताः

धिकानः॥ ॥ न कः प्रावयं धातुः ॥ ॥ अथ राजयस्त्राया कीर्तना न्निदान लक्षणं ॥ ॥
 वग्नः नो धातुः याज्ञेव साहसा विस्मासनात् । विद्यामजायत यस्मादावहन्तु वदुर्विधः ॥ ॥ वग्नः जायान
 वग्नः नो धातुः मया लल्लु धातुः कान्तमानः । विद्यामजायत यस्मादावहन्तु जायत यस्मादावहन्तु
 राजयस्त्राया पूर्ववृत्तस्य ॥ ॥ स्वासा सदादकरु सं प्रवता लुः । णः कृद्यन्नि साद म दपीन
 सफागनिडाः । णः धरु विष्यतु व किं सुवा पियस्त्रात ॥ ७ ॥ स्वासः कः स्या कः । उल्लावः धकगः । उः धनवय
 अग्निमउलावः पीनसलावः स्वसवयीवः केऽवयीवे । धनकाऽथाऽनिव । कासनः किं थाः खः ००० ल थावय
 जंगणाऽर्ध हितापः स कापकः त्रपा दयाः कनः सर्वगः । एतिल लक्षणं राजयस्त्रायाः ॥ ॥ यः कः स्या कः
 कः स्या कः कान्तपूयः ० लाहा हियः । धनलक्षणं राजयस्त्राया पूर्ववृत्तस्य ॥ ॥ कनोदाहागिमानः यपि

लाडकस्य वागमः॥ ॥ तव मानं को न पूय्य कुरुति क्व दवः पिरुया कनहीन जाव॥ ॥ स्वनरदा नि
 ला स्कुला संकोपः संपाद्यः॥ ॥ स्वनरदा उः स्वनं व कनं स्याक॥ ॥ निवसः पुनि पूर्वतं मरु क
 कन्द सवेव॥ काग क ४ स्यादा द गम विहयः कुरु कायनः॥ ॥ माउ स वें वं धायः कुरु मरु स्यावयुः क
 थु स ग व वं गं स्यायुः थु ग (५) आधिक्या ल ऊदा॥ ॥ उकाद (५) रित्र रि सुष हि वि वि सु म विगः॥ ॥
 वागया स्यागा ३ ल ऊदा पिरुया स्यागा ३ ल ऊदा (५) स्यागा ३ गाल ऊदा थु ग मू उं ता ११ षु ता ५ लि व न व य॥ ॥
 ऊं धा (५) विगं ज मुर्वल मा स प नि ऊयः जिं ऊ गानं थ श न वृ गानं थ श न स्या गानं थ श न वि क द न ग व व न
 नं रु न य श यिव सिय॥ ॥ स्वनया गा विगं जी लं द ड्डा ज श्विन मू सृ ग (५) नानू स्या विगं ऊ दिः का
 म वि (५) विगः ऊय॥ जी (५) स न क मू ल तं पा (५) वृ दृ दः क टी ग्रहः॥ ॥ स्वनथ म थं स्र जी ल श य

नूगउसायू. हिहोयू. साधरयू. म्बसावयू. वि. ल. वं. क. ड. स. नूगनस. घा. व. द. यू. वा. च. उ. यू. व्य. क.
ज. ल. स्व. धो. त. स्या. यू. ॥ ध. न. ल. क. ल. द. व. स. ना. ज. य. स्या. ना. गी. तो. न. ते. मा. न. ज. सा. ध. ध. य. सि. य. व. ॥ ॥
उपाचयदाभवकंदीकाग्निसुकुमन्ननः॥ ॥ कोनपूवहावंसद्. वलदव. अमसुलंमनू. धवजा
दीनमहव. जग्निवललाक. स. म. उ. व. ध. न. ल. क. ल. हि. उ. क. य. स्या. ना. य. स. अ. म. स. ल. या. य. न. व. ॥ ॥
उक्ताकमन्नद्वनस्यमूर्ध्वसनिपीडितं। ककुंलवदुमहकंयस्त्रीहकीहमानवं॥ ॥ मिखाः
त्वयूवश्यू. न. य. म. य. व. ध. सा. न. पी. उ. न. पू. वा. हा. य. ध. क. हा. न. उ. व. न. व. सा. कं. म. ह. न. न. नि. व. ध. न.
ल. क. ल. र. व. य. स्या. ना. य. न. मा. नू. ष. मा. व. की. व. सि. इ. नि. ॥ ॥ ॐ. ति. नि. दा. ना. क. य. नि. क. म. ना. ज.
य. स्या. क. न. की. ल. ल. क. ल. नि. दा. नं. ॥ ॥ ज. ध. ना. ज. य. स्या. ना. ग. स्या. चि. कि. त्सा. ॥ ॥

नाश्वक्रायाङ्गसुखे॥

वासकस्य वसुधैव कुटुम्बकम् । विष्णोर्द्विपदं चैव गन्धर्वैर्दृष्टम् । लहीकृतं ततः पञ्चक्रि-
तं क्रीडपत्राक्षकं । इन्द्रावावाच यद्वै शंभो गच्छासुं ह मूढमं ॥ निरुक्तिराजयन्मार्गः । कामः संचयदायकः । पार्श्व-
मूलं वदन्मूलं वदन्पितृकृतं वदन् ॥ ॥ अदमतिष्ठतायुः स विष्णोर्द्विपदं चैव गन्धर्वैर्दृष्टम् ॥

जाकयास्यत्वं न कं राजय आकाशं धसं यं कृत्वा कं नृणां उभयं कं नृकृत्वा कं नृकृत्वा कं नृकृत्वा कं ॥ वासाः
दिलुहं राजय आया ॥ ॥ मिनास्यलायुगं जीवी विष्यती वदुलायवः ॥ अन्त्या दूर्ध्वं द्विगुणिनं सहयस्म

दिसुह। राजयक्राया ॥ ॥ मिनासुलायुगमजीनी विष्यली वदुलासुवः ॥ जन्मा दूर्ध्व द्विगुणिनं सुहयस्म
धूसर्षिमा ॥ दू। र्भुनं युगयदन कृगकागक रुगुले। गार्धभूलिनमस्यामि सूकिजिक्तामनावकं ॥ हस्तया दामः
दाहषूकननकनथार्द्धक ॥ ॥ नायसावन ७७० वंशमावन ७५ विधी ७४ जला ७२ वडा ७७९ धर्मव

दाहेषू वनके गंधर्वक ॥ ॥ नायसावन ७९० वंशनावन ७५ पिपीठ ४७ ला ७२ नडा ८७ १५ मर
वृक्षलक स्तिनवालावन के अमकाग ॥ लघु शंकु स्या क व्यक्त स्या क अग्निमन्द न्विमर हियू धन हि व व ठि

दासराजयन्त्रा नामानां नतमान ॥ ॥ पर्यन्तका इत्यादिना पियंगुवृद्धदान्वासासकं कटुकं चैव समलग्न
 निकानयन् ॥ उक्तादकेन सह यं शोडशसहस्रं यन् ॥ यश्चाद्युक्ता कनोदाहा उद्भिगवकनाशनं ॥
 स्वरं इत्यादिना पियंगुवृद्धदान्वासासकं कटुकं चैव समलग्नकाकलं खसुखासं साधनं न के य
 आनागहिक्काकटुक्राकनोदाहाद्यन्तनाशनायक ॥ ॥ कठकालीगुडगुडिसमलग्ननिकानयन्
 वाकायं पिप्पलीदूर्ध्वपिवजीर्णकनायकं ॥ कामान्विद्यन् नवम्भसं वल्लभनाशनं ॥ ॥ लिफ ४ वा
 दूगुंथि समलग्नदूर्ध्वकाथदासं पिपिनिदूर्ध्वकं सन्तनके जीर्णकन अन्विमासाववगुनेभ्यस्त
 कासहृदयभवल्लभनाशनं ॥ ॥ ॐ निनिदानाकपविजमनाजयम्माया विफित्साधिकानः ॥ ॥
 अथकागलकणनिदानं ॥ ॥ प्राणमृदानानूगणः पुद्गलः संतिन्नकागलस्य ननु लघुधाषः निस्तितिव

कामसूत्रम् ॥

असहसासूयाः मलीषिणिः काममिनिषदिष्टः ॥

॥ पादवायुवः उदानवायुवः नायनवायुवः

मशयकत्रं । तत्रातवश्चाकगद्यथं कथं सुनिव ॥

॥ धूमापद्याताडजसक्तैव व्यायामनृजाननि

भवताव । निलतिवकुसुहसासूयाः मलीषिणिः कामः छिनिषदिष्टः ॥

॥ कूनकालः धूतनहाकपूलः

अतिआयकश्च । रूढवस्तुनः कामवायश्च । धूतवस्तु । धूतनका । नो गश्च । यवधक । पन्दि । तजन । पनि । सुन ।
ज्ञाना ॥ ॥ संवकाशः स्मृतावातापिरु । श्रुतकृतकृत्यः । चिन्तुर्वात्साधयत्साध्याकृतकृत्यरुजायग ॥ ॥

११०

कामजगतापुकात्रज्ञाना । वारका । यादूढभासावयीव । पिरुकाशया । कृतदयिव । श्रुतकाशया । लाउथं । या ।
संवयिव । कृतकाशया । लोलसहीनका । स्पंवयिव । कृतकाशया । कृतलिव । हिव । कृतवयिव । त्रिदावकाशया ।
उपवात्रयानानं । उयकेजिव । कृत । कृतकाश । उयकेमजिव । असाधः ॥ धूतिकाश । नो गश्च । यात्र । कृत । कामधायः

नासाभागा ॥ ॥ पूर्वतूपं हव रुषां लूक पूर्वगला स्य गा । क ८४ क ८५ च हा काना मव नाध धजायन ॥ ॥
थमा पूर्वतूपक ८५ स ८६ रु स ८७ आ न वि ना थं ना नि व ज सा धा सिय ॥ क ८८ वा स्यु न य म य व न न सा ध न
वयी व ॥ ॥ रु कं ख मूर्द्धा दन पा र्व गूलः कामाननः कील वल स्व नीजाः पुन क व ग सु समीन लान संति
न का नः स्व न ८९ क म व ॥ ॥ नू १०३ उ वा क क्रा गिका मो उ वा क थ न स्या य स्वा ल ह्यु उ नि स्व न जीः
ह हयिव । न व व ग वा न न श व या स्य सा न द्या क स्व न श यिव ॥ ॥ हा गी डा का न वी णं गी पि यती वि श्व
ले ष जं गु उ ने ल य गाल हः हि ना मा नू त का गि नां ॥ ॥ हा गि हा मी सि न पि क र्क टा सि पि यी गुं थि थ
त वूर्ध्या उं वा कू न वा लं वि क न कू सं न स्यं वा न का न ना स ॥ ॥ वा न का न या ॥ ॥ उ वा वि दा ह
क व व कू १०४ धे न एा दि ग लि क मू ख रु धा रुः पि रु न पी ना न्य ना न भ व व का १०५ स पा ९० प रि द ग्धे मानः

लखलखववाकंवयीव॥ अग्निनिमउरयिव॥ लखकागया॥ ॥ देवदात्रुगरीनास्त्राष्टंगीधन
 चयवासकंगिलकीडयुगंहन्याकुम्भकागसूदानु॥ ॥ देवदात्रुगवधिदुगुक्काहाकक्काहासिद
 लालल॥ अगवृष्ट्याठंयकनकस्तिनवालावनकं॥ लखकागनाग॥ ॥ अग्निवावायलानाधगजाधन
 धविग्रह॥ नूकस्थानः॥ अगवायुर्गहीत्याकागमीलयु॥ ॥ अग्निनिधूनयाल॥ गवरुद्रवृल॥ गायिन
 गल॥ किनि॥ गउगयावशल॥ नथसदनावहल॥ नूऊरुएनकयकाव॥ नूगवसुद्यानहयाव॥ म्यसावयिव
 ॥ ॥ लागाहविडाभंजिष्टापिप्यलीदेवदात्रु॥ अगवृष्ट्युक्तंसुर्विऊगकागविनाशनं॥ ॥
 लाहा॥ रु॥ मनु॥ पिपी॥ देवदात्रु॥ धलनवालंनकंऊगकागनाग॥ ॥ नवंगककालसजानिपउंस
 कगलंपयकनागपूष्य॥ लखमलाकडकडिकंवकसिहयूकागुववावकात्यानिगायलाहसहसंउयू

कंगकल्पलंवेवहिषकुक्ष्यात् ॥

॥ अंगुलं सिं वा ॥

॥ अयं वकाष्म नू विधीन सायव दत्तौ ह ॥

षट्पन्नकासलं ॥

॥ लवंगं कंकाला जाति काग पलकं गल काथयल नू यकं गल लवंगं च पातक ॥

क म्या जि क तु धन मं १ अंगुल वाल धन मं १ सायव मं २ वं स वावन मं ४ धन सायव वृत्तं ३ ॥

॥ मध्य

मल्लवंगमदि ॥

॥ अयं कागया ॥

॥ अयं द्विनिक्षी वति इर्वल लु पुत्री गमा सा नू विनं सयू

यं तत्सर्वलिङ्गं टण्डुलिकित्स्वं विकित्स्निगहः अयं जं वदकि ॥

॥ गंगुखयिलवयू इर्वल रयू ला

११२

जी व शयू हिव कि व ल्वा क व क ल या ठं व यिव कू सु धन ल ऊ व संयू क श न डा व त व मानं अमल या

य धा कू वं य न संकृ नि धा अय काग जाय न मू सिय ॥

॥ यथा विष्णु ली मूल मूल कल नः गुणी न

धा विष्णु लिव व्या त व लु धा सु म नि वं दू र्ध्वं कं लु क्क म गवा इ ग्ध म्द मि ना व वि व य दू र्ध्वं स्य जि मं गु

उकागम्भसविनासनाकरुहनेवातकयस्याउलं॥

॥ हनउयियलासूलकसूवेनकहागुछिपिपी

सिपिआदगमनिवधनवूर्धुअसलेदकयास्येदेवाकृतस्यसाइइसबूउंनस्यंसर्वकागम्भस॥
नकुयनाहा॥ ॥ अखोगगुउकयकागया॥

॥ नमोकदाविसिद्धितामपिपादगुधनिगःसु

विनानांजलाकागःसुर्वापायःउकीर्हिगा॥

॥ नकववकागपायादसुक्कपादयाहिगनसुउयकेः

जिवकदाविगुछाधवलसुगलभासावयिवस्वानलंउयकेमजिव॥

॥ गालीनतविकंवक्रि

दीप्यकवासुवेनसं॥ उिकद्रजिसूगभिवगुउनगुटिकाकृतं॥ कागम्भसंगहलीवावावकंमीनसायहं॥

॥ ॥ गालीस्यादिगुउ॥

॥ गालीगलिपिबिउकठेम्सुसिउिकद्रगुकम्यावगागकः

लवंत्ववधनवूर्धुगालुसूषुउंनकंपंवकागतागयाक॥

॥ गालिभिकद्रकंवयविउकंगं

॥ तालिस्यादिदूर्ध्व ॥ ॥ तालिस्यां. त्रिकट्ट. सिपि. विजक. प्रियला मूल. मुकम्या ल. पा

तक. लव. व. नृप. के. ल. वं. न. व. न. अ. व. न. न. न. यि. ल. ग. मि. हा. मृ. छ. न. म. वि. लि. सि. इ. न. ल. ल. अ. ज.
भा. द. जी. रु. जी. क. र्क. ना. सि. ध. न. स. म. ल. ग. च. र्च. क. सि. मृ. न. कं. न. सा. य. व. धं. व. ल. लो. व. क. मं. व. का. म. दि.

॥ शृङ्गनालिन्यादि ॥ ॥ यतनास्त्रावलापधमस्य डंडुका कल्पा विना । क० काली

॥ धत्त इगु स्या नया हा हवउ (मममान) कठिका लियान ससुक्ष

71121112

यकं त्वनकं पंचकाशनाग ॥ ॥ कलकासी घृण ॥ ॥ कलकलुक्कनामूल ॥ ॥ (येववीजयावि
का। यथविंनगिपलागमं जलडां विगावयन् ॥ पादगमनसुनसिनगुजुसुं यवत्सुधीया
षादिकेनलं सुसुभ्रजाजीनं चभवत् ॥ कहुलं विजेकं गंगीयमानिपूष्पनोकया। जातीहलं लवं गंध
नजागकसमं हवं ॥ पलमकयथगुणं गुजपाकसमाजिके। कागं यमविषहक्रियं चवेवज्यासु
था ॥ ॥ मथपाधुमयेत्री हं पीनसं विषमक्षान् ॥ वलवर्धकं वं वृक्षं नृचित्रे निविबद्धनं ॥ ॥

कलकासी दिग्गुपाक ॥ ॥ कालागपलेजलिउगुधिपलजलागिहायलजथगकाथदा
यावनसकासायुनानवाककुरखुं ॥ विकदल्पकनलकसुनिजीनि। सिमि। कजवसिक्क। विउ
कहा। कर्कण। सि। यिमूं। यस्का। मूल। जिह्वा। लवं। सुकम्पा। पागक। लवउत्तव। समतागनूधूप

नानदसखनावनसंकाशनाम ॥

॥ समूलवज्रस्तोत्रां कष्टकार्यानि साधैधकं। यत्तु सुखं
लाघाव विजिगृह्य विविधैः ॥ सो वच्चनयवजानवित्तामलकपुष्पैः ॥ कृष्टिवदहगीपथ्यायाथ
यमानिकादिभिः। डाजापुनर्नवातयाइलालगसुवतसा। रुमीनोमलकीरानीनाम्ना। गुरुनकः पथं
॥ तत्कृष्टसर्वका। गवृहिका। ससुसस्यतः कष्टकालिद्युतः सिद्धिं कुरुयाधिनिस्तदनं ॥

कष्टकालिद्युतः ॥

॥ कष्टकालियापंजांगः कष्टकालियावसरुं१द्युतं१तलो। चिकद्विनि
सिः। जतिः। वितकः। सूरकः। यवजानः। बालः। ज्वनः। पुष्कनामूलः। आदतः। गभाः। हनदः। वाहायः। ॐ
मूं। मीसिः। पुनन्दः। सिमिः। इलालगः। सासिः। कर्कटासिः। तामलकीः। रानीहाः। इगुकाः। याकयायः। थानसं
दककाशनागयाकहिकुववः। ग्वासववनागयाकः ॥ कुरुयाधिनागयाकः ॥ ॥ कष्टकालीद्युतः

तालीनपत्रमत्रिवर्गलं विष्णुलीलायाश्चर्यं हागं कृत्या त्वगलावाह्यगमिकं। विष्णुत्वाच्च
गुणवाच्यं प्रदयंति तल्लक्षणा। कागत्वासाविविह्वं तच्चूर्णं दीपनं पत्रं। कृत्याश्च ग्रहीनागं श्रीरु
द्रमथ वरापदं॥ कर्षति सावर्ण्यलानां मूढवागानुभेनाननं। कुर्याच्च गुटिकां चैव चूर्णं गत्कासिना
त्यला। गुटिकासमि संयागं चूर्णं लेयुतथा स्मृता॥

॥ तालि स्यादिगुटिका ॥

लंकाविषयत्वे जतिः द्विगुणं वलाति अकार्ष माशु दमनं कक्षं विष्णुलीनां कर्षयमानं मत्रिव स
हवा विविद्या। तं अकभकं गुटिकां खलु रुक्यामि। सर्वाप्रधी निवि निरुक्तिव द्रव्यं सकागः आर्त्त
मपि उमूनामरुडागजामाग्रयगूलासुपिरुहात्वा वृद्धेः सुवला रुसमपि वृद्धिः॥ ॥ संत
नसायसगुटिका॥ ॥ मत्रिव विपी कूलं अगकर्त्ता खला सा निजवो लवड त्वत्त्व लव

द्वितीयांशः

ॐ धूम्रिस्मरागवूर्णया ॐ ग्मलयाती सवालं कयगुदिहोयावह (ग) उ वि ॐ न कं काग स्वाग नान
॥ ॥ गुलि पल १ पी पी त्व १ नालि स्वां त्व ३ पि पला मूल त्व २ सि पि त्व २ धि क क हा मं ५ सू क म्मा
त्व १ कृ ग हा त्व २ ह उ उ मं ४ ल व उ मं ४ धा न हा ग न वूर्णया ॐ वा कृ कृ १ त्व १ पा क उ ३ वं त्व सु था
अ स ल कृ य गु उ वि ॐ न कं मा सा उ उ या रि ३ ॥ ॥ ॐ नि नि दाना कृ य नि कु म का ग वि कि
सा धि का वः ॥ ॥ ॐ ॥ ॥ अ ध हि का ल कृ ग नि दानं ॥ ॥ मृ दू मृ दू र्वा यू नू द नि स
त्व ना य कृ स्त्री हा उ वि मृ खा दि वा क्रियं । म धा ष का नां गु हि न स्त्रिय स्मा कृ त स्तु हि के री हि धी य न व
थेः ॥ ॥ उ थं २ रु स न्ध हा व वि व ग य द य कं स स्व अ त पि अ क कृ यु न पि सा ना थं ३
नि व रु स न ग क द य कं व वि व व ल नं मा व कं रु व गु ग या का व ग न सा ध्य श यं रु व थ न न हि कृ या

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निकृत्तनाटा पञ्चवच ॥ यानात्रेनपि संयुक्तेः सहस्राविषीना निलः ॥ नीधुष पवनेर्व (नेर्हिक्काना मयता निल
हिक्कायाः स्फूर्द्ध (महत्वा तां विद्या दत्तजा हिषक ॥ विप्रलय मयैर्व (नेर्था हिक्का संपुवर्तन ॥ कम्पयन्ति ॥
मिना ग्रीवं यमला का विनिर्दि (नत् ॥ विना द्विद्वेका सेन्ध मयेः समहि वर्तन ॥ रुद्रिका नाम या हिक्का ज
ऊ मूलं उक्षवति ॥ नाहिः पुटला या हिक्का धारा गम्भीर नादिनी ॥ अत्र का पडववती गम्भीराना मसा स्मृताः
मर्म ह्वायी उय नीह सुगन्ध्या पुवर्तन ॥ महा हिक्का तिसा ह्वा सर्वम जयु क स्थिणी ॥ ॥ १४८ ॥
कजादि (म कया क संज्ञान गृ. पंचका गया (म क हत्र विवा याना स्तव ॥ ॥ १४९ ॥ तिपंच हिक्काया लक
नानिदानं ॥ ॥ अथ पंच हिक्काया विदित्ता ॥ ॥ कर्पूत्र डा का मूला मधूना मधूना सलहयत् ॥ क
नृश्रानिहत्या गु हिक्का म सगल ग्रह ॥ ॥ कर्पूत्र मी सि. गु कम्पा ल. थ ग वूर्ण कलिन वात्रं न कं ॥

॥२४॥ ११५

हि कूववनाग ॥ ॥ हागीं गीं व मू ख ताली गु वि गु म हया । कू क्रा म वि व पू क्क वं ॥ य न मा कि क सं यू
कं ल हा यं सर्व का ग यं हि का म स वि ना स नं ॥ ॥ ल ग्ग र्ध दि द मं ग ॥ ॥ ल गि हा । क क्क टा सि ॥
क म्पा ल । म न पि ॥ गु वि । वं न ना व न । ह न उ । पि यी । पू क्क ना मू ल । म वि व । ध न वू र्ण ध ल क लि न वा ना व न कं हि
कू व व ना ग ॥ ॥ म्दि का या ल या हा ग म क हा ग व ना ग वं ॥ म धू ना स ह ल हा यं हि का ह कि सू दा वू र्ण ॥ ॥
मी सि ॥ गुं थि । वू र्ण क लि न वा ना व न स ग क क्क ना व व हि कू ना ग ॥ ॥ म धू कं म धू सं यू कं पि य ली ना ग ना त्रि गं
गु डू वी ह नी त की । के व य मा नी स ह य ह य हि व कू ॥ ॥ छू छ मी । पि यी ॥ गु वि ॥ गु ड गु । ह न उ । ध न वू र्ण क
लि न वा नं न कं जि दा व न व व हि कू ना ग ॥ ॥ इ र्वा न सा दा ति म पू ष या र्वा द्या ण उ वृ क्ता स । जि न स्य यू कं । क्क ना
न वा ला कू व स न या पि वि शा कि का नां व नि ह कि हि का ॥ ॥ गुं गु या न स सं न व । ध न वू या न स सं न व ॥
नं नं

三九四

कासुसथं कासिववलाव ॥ हाजिनि याखि अलवूनंतव इदं नंतव कासुसथं नं हि कववना ॥ ॥
 वृत्ति हि का वि कि सा ॥ ॥ अथ अथ सल कानि दानं ॥ ॥ महा ईष्टि नत सकः इड ह दे सु यं
 वक्ष ॥ हि यत स महा वाधिं स स न का वि लो घनः ॥ ॥ महा अथ स ३ ईष्टि स न सक अथ स ३ ईष्टि न अथ
 स ४ इ इ अथ स १ अथ डागा अथ स माना म ह द र या डं व ह न पू ॥ अथ महा वाधिं स न न नानं मा वक्ष ॥ ॥
 पाग्र पंत स ह सी ज गू ल मा भ्या न य व य ॥ ज्ञा ना हा व कु वे न स गै र व नि स्का द न व व ॥ ॥ न क स न ग र य १११
 नू (म) उ स्या य् प्रात हां र क्षा य् कू उ म सा कः का ति का हा न र व डा थं स्या य् ॥ ॥ य दा सं नू अ (म) ना सि मा
 नूतः करु पूर्वकः विष्य प्र जे ति सं कू इ स दा अ सं क ना ति सः ॥ ॥ ग्व स्या र स न व ह न प् थ य स (म)
 अ न ह य नि ना व वि वं थ न अ स न ग या नं वा क न ॥ ॥ दि नः प्र स्य नि तं अ सा दू ना वि हा य न ह नं महा

असापलुक्कु क्रियुमवविपयते ॥ ॥ भवतं स रुग्णहास्यं वव रुक्कोप रयाव धनम् अस्यान थहा
स्यं वलं रुसन गद्यदस्यं महाकष्टरुग्ण ता यिन शयास महाभ्रमनपीउत्रय कृता नापेधननपमरुअस
थ क्रधक मिखानेधननपमरु क्रुउमहानखायिव थ क्रया मिखाता नकनिव खिना क्रमदयिव सा
हासारनगयिव जनीन किन्नरयिव महाभ्रमनसंयुक्तरयाव विपयीन रयिव ॥ ॥ थन महाभ्रम
भय ॥ ॥ उर्ध्वस्वसिति याः त्वर्थनवपुलाहनस्यधः ॥ अथाव रुग्णमुख ॥ अनाकूडगन्धवहादिगः ॥ ॥

गद्यक्रयासाधनस्यं वन इव न यासाव ॥ अथाव क्रुयालं सव रुग्णकापनगाव थ रुसन उर्ध्वभ्रमन
॥ ॥ उर्ध्वदृष्टिर्विषयचविजाकाकृते रुग्णः ॥ उमृद्वेदना रुग्णः ॥ कास्यानगिपीति नः ॥ उर्ध्वभ्रमन
कृपितमध्रमसानिब्रधते ॥ मृकतस्मात्पत ॥ अर्धभ्रमसहयेवह रुग्णः ॥ ॥ मिखाथकनिव वाकन

विकलनस्वयययिव मिखागान्किरुयिवान् (ग) उ स्यात् स्त्रुगडः थ सा को यनपाव कुरुस्वयमरु ॥ सत्र
 हाय् क नरुनवानिव थ उ उ उ उ सनभावकीव ॥ ॥ थ न उ उ उ सधया ॥ ॥ यलुस्वसिति वि
 छिन्न सर्वपा (ष) पीतिनः नवाभ्यसिति इः स्वात्ममर्मी कंदनूगदितः ॥ ॥ य न्या सात न गव वव
 दूत सर्वगस्य पी उ न पू या वन पी उ न पू नू (ग) उ हा या थं सा क ॥ ॥ नानाहृदयदसूक्तो हृदयमा
 ननवस्तिना विज्ञातः पत्रिजिन्नं स सा उ के क शवनः ॥ विवतापनिगु का स्या विवर्णुपलापननः छिन्न ११८
 सनविच्छिन्नः सगी सुं विजहस्यगुन ॥ ॥ य न हा हा भव तव वग न दा ह व न ति व व अ व दान पी
 उ न पू व स हियू मिखा सध वि द्या यन द उ सात न गव की व ह व मिखा क्का उ अ ये त ना रु यिव स्त्रुग
 उ उ न व वू लिलंगु सन व न रु ग थं न नानं पा व भावकीव ॥ ॥ यतिनामयदावायः (प्रे) ना
 छिन्न सल क वं १

स्त्रियुति पयतः लंनवहनपूमदतजवः लंसवहनपूनाडिच्छिकययाठंवा न। वायून॥ ॥ ग्रीवागि वयसं
गच्छेत्तन्मानं समुदीर्यति॥ गलसः मादसः नूगवसः वहनयंवाठरुसथरुसनः स्त्रियुति विधिं हयिव॥ ७॥
कशागिपीनसंगस्येडुर्झिघूर्धूलककथा। अतीवतीयुवगं वक्षसः प्रा। वेषपीदनं॥ ॥ धानपीनासुयात
कथसुयुयिरनमिनिवः अतिगववगनः सातयिवः नू। गजसदहनपूथवायून॥ ॥ पुतास्यनसव। गन
तस्यनसंनिबूधन। पुमाहं कागमानं वसगच्छेत्तिमूहूर्मूहूः॥ ॥ अथ कालसुवडाथं वगनग। सुअथः
स्यायातं। हनहनवानिव। तवमानमासावयिव॥ ॥ स्त्रियुतिनासुयमाननरुजंवेवनिदुःखितः। तस्येव
विमूयाथंमूहूर्लंलरुगसुखं॥ ॥ खयिनवि कायनवकदृशयिवः खयिलवत्रगव खचिुतशकसुख
शयिवः लिपतसदः खकुशयिव॥ ॥ गथार्धसुगकः कृकृकृक्रीनिलापितं॥ ॥ अथानीवः कथ

स्वतः तव कष्टननुज्ञाय जीव ॥ न वापि निडा लहते सुकनम्भस्य पीठितः ॥ प्रार्थितस्यावगच्छाति स यान
 स्पसमीव ॥ ॥ इति मद्रुदने वक्ष्यते न पीठितम् ॥ व्यक्तस्यायुः दनेव रुसुयाविकानने ॥ ॥ श्रीगीता
 लेहने सोरवमूर्च्छयेवाहितनन्दति ॥ ॥ दहं धानसा सुखदव लु मूर्च्छयेवाहितनन्दति ॥ ॥ उक्तिगा कालला
 तनस्त्रिशनेरु नमार्कवान् ॥ विगुष्ठा स्यामूर्च्छयेवाहितनन्दति ॥ ॥ प्रसन्ना कष्टयाथं उनिव
 च लतिहायिव ॥ तव मानस्या कनपीठितम् ॥ उथं २ मूर्च्छयेवाहितनन्दति ॥ ॥ तव कष्टनाथं वानं वानकनाथं ठनगु ॥ ॥
 मया म्वगीत प्राग्वातेः ॥ प्रसन्नेय विवर्द्धित ॥ मया यत्कृतमकः ॥ मसः साधवा स्यान्नवान्नितः ॥ ॥ स्यावन्
 कुरुं वव स्वाउलं खत्व जव ॥ रुसन दायक रुयाव ॥ प्रसन्ना वानपूव सुकनयाव ॥ तमक म्भसुवहनयन ॥ ॥ म
 कम्भसुत्रायक जिडा ॥ ॥ म्भस्या सुववत्तु लायक जिव ॥ लिधे लायक म्भसुय ॥ ॥ ॥ धर्मे नमक म्भसुयान्

कृष्णनिदान॥

॥ नूजायासा लवः काष्ठ रुडा वाग उदीनयन् । रुडम्भसनसा लवर्धः खनांग युवाधकः

॥

॥ नूक शत्रय नमः जायत्रय विक्रिहृ सुविहास्यं वयिवे । थ रुडम्भ सधाय । नवमान नक्षत्र्याः

कनयी उत्रयू॥

॥ हिनस्तिन सगुण निनचद्रः खायथ रुत्र । मसाध उको वलिनः सर्ववाय कलेः

कृष्णः॥

॥ भसन गत्री नसदः खमविव । थ मावल दता सलायकजिवः सकलयां लज्जना कसव्यागी

लेलायकजिव॥

॥ थ रुडम्भ सया लज्जना॥

॥ रुडसाध नमस्तु वां नमकः कृच्छु उत्रयै । ज्याः

भसान लिङ्गानि नमका इर्वलस्यव॥

॥ रुडम्भ सलायकजिवः नमकम्भ स इर्वल सस्यं लि लायकम

जिवः॥ महाभस उर्ध्वम्भसः चिन्नम्भसः थ खनां लायकमजिव॥

॥ भसः प्रावहना नागः वेदुवा

नगन रुथा । यथा भस च हि क्काव हनन प्राव मागुव॥

॥ प्रावमावकीव थ नागनः थ न जायः

तया वः थिं गुमि वः मः दः ग्यः कः याः थः साः हिः कुः वः स्यं माः च कीः वः नः नानं ॥ ॥ वृत्ति निदाना कः पः त्रिः जः
 मुग्धः सलः जलः निदानं ॥ ॥ अथः ग्यः सः विः किः त्सा ॥ ॥ गृंगीः महोः वधः कः लः वः नः पृष्कः नानां च
 धीः गणीः मः त्रिः वः गः कः नः थः विः दिंगः काः (थः नः गः मः सः गः वः सः पंचः मूल्याः । सः कः हः नः विः निः हः किः नृः तिः धाः वः उः ग्रं ।
 ॥ ॥ कर्कः गासिः गुं धिः पिपीः कः सः पृष्कः नामूलः सिधिः मः त्रिः वः विः तिः साः सः विः तिः सिः थः नः वः र्णः ॥ गुः उः
 गुः आदः गः सानः पः धीः पृष्कः पः धीः लिः कः ४ः दाः कः ४ः (गः मः घाः नः थः द्रुः सः गः काः थः दाः याः तिः सः र्हाः स्यं स्यं नेः कं ग्यः
 सनागः ॥ ॥ दाः ज्ञाः हः नीतः कीः कः कः कः कः दाः र्वाः इः लाः लः हाः । सः पिः मिः धः र्णां विः लिः हः नृः ग्यः साः हः किः सः दाः नृः धः
 ॥ ॥ मीः सिः हः नः उः पिपीः कर्कः गासिः इः लाः लः हाः सः मः वः र्णः धः लः कः किः नः वाः लं नः स्यं नः वः क्काः नः वः वः ग्यः सना
 मः ॥ ॥ वृत्ति निदाना कः पः त्रिः जः मः ग्यः सः विः किः त्साः धिः काः नः ॥ ॥ अथः स्यः नः हः दः नृः जलः निदानं ॥

॥ अतः सुखं स्वयं वयं गता पुनः स्थां हन्युः स्वयं न हवति । वापि हि सन्निधः वा गेषु वापि हत वा कुनीनां तावितं तथ
 स्वयं न हनयं वा उगुनाति सः रु सव गवः हद न वा व वा उवः ॥ रु सन स्वयं भाव कने ॥ युता युका न स्वयं न
 ददव ॥ ना न वा गता सः सन धम मथ्य नः लूक जि पि ला क स्ये ज्ञा ना ॥ ॥ रु सन हन सोऽस्मा न हने सांः
 यी उ न पं क थू या स्वयं भाव कने ॥ ॥ नृत्त च रा षट विषा ध्य य ल रि घा नः सं ह स लोऽपु क पि ता प व ना द
 य लु । ॥ अतः सुखं स्वयं वयं गता पुनः स्थां हन्युः स्वयं न हवति वापि हि सन्निधः सः ॥ ॥ न व स न न ता ग
 सः न व स न न ता ० या ता सः न व स न न म हा ना सः का प न पू रु स ज्ञा दि नः स्वयं भाव की वः स्वयं न हन य स रु स
 वां ता व स्वयं भाव की वः युता विधिः ॥ ॥ वा ग न रु क्त न य ना न न मू ष व र्चा रि ने न ने र्व द ति ग र्द ह व स्वः
 न व । पि रु न पी न न य ना न न मू ष व र्चा कुर्या म ल न स व दा ह स म चि त न ॥ ॥ वा ग न रु व या मि त्वा वाः

न लुसिमलमूयकासूयुखल्लायगलन (धमक) हियुगा (धमक) न शवया खल्लायसक धून (धमक) हाकु
 न शाय मधुयास्यन धास्यन शयु ॥ पिरुन शवया मिखा खाल लुसि कासूयुखल्लायसगलन (धमक) हि
 य ॥ ॥ कयाकुरुन सगनं कुरु नूदक ४ ॥ स्वल्पगनेर्वद नितापि दिवा वि (ग) भागु। सर्वस्मिन्ने रवनि सर्व
 विकालसम्पक। तंवाप्यसाध मधयः स्यन ह दमाहुः ॥ ॥ (धमक) न शवया खल्लायस क धून (धमक) न
 वस्यन खल्लायक्रिन सुच्छिड ॥ त्रिदाव शन सा सगल लुगंदयु थ स्यन ह दम साध मधय ॥ ॥ धूप १२९
 त वा क कय कुरु कय मा प्रयाच वा (ग) पूवा पिरुन वा (धमक) निव ऊनी य ४ म कर्नतं स्यन मन कय दं विन व। म द्यो
 न्चया देद नि सिग्ध गल लुषालुः ॥ ॥ कयन शवया गनी न क्रिन शयु खल्लायना स स्यन कीन शयु थ क
 सियु ॥ स्यन इहा न ग वन नाने सियु दकानं वाधन पन शव वचन गलन थ हा म वन शव प्यास दयिव ॥

[illegible]

उगुयाः क्रासुया नमवावयाः (सुषुयाः नृविमदया ॥ ॥ ठिकदः सनपिः कुलजं वा हायाः स्पधुवि स
महागवूर्धुपालू तीनरुतवि स्यं (गमउचि नंन स्यं थसाववः मासाववः सनथमथं थतनाज ॥ ॥
ग्रीखे ३ त्व१ कुग हा त्व१ नृपकेनल त्व१ ला गुलित्व१ ककोला त्व१ नगमृध त्व१ लवड त्वच त्व१ सूक
म्याले त्व१ पातक त्व१ नउं त्व१ जिहा त्व१ कपाविनित्व१ नकिमं ५ कटमं ५ कस्तुनित्व ४ ०० सूमीच
धु त्व१ खयले त्व१ २ थनवूर्धुयाडं खयले वूर्धु रुकलं खे सदाय कंठम सलत स्यं (गमउचि डंन
यः सनथमथं याः उरुमः खयगुदिपाक ॥ ॥ पाकाधुची यावः जहादमः लउन्धयावः लान
याहि पू वृसायाधः लवड त्वचः लवड जाययति रुकजीः पिपीः पिपली मूले थतं समहागवूर्धु
पुनानवाकसवालं वायारं दास इथडावः सीसदा हनपावः (गमउचि डंन कं स्यनस्यनयाहि ड ॥ धिसिर

१२२

[illegible]

आल्लवत्तवकुं स्वाहाविकस्य नथवा नृविन्द त्रिदायजाता कन संतवकु ॥

॥ कुरुवाक्यमसु ॥

आहूय। व्याकथय निव। (श्रम) व्याकथन ॥ वातन शनसा। कुरुमसाक। उम। उनिव। कुरुकोक्यु। पिरुयाः
कन। आल्लवत्तवकुं। पाउयनार्थ। काकयनार्थ। नयास। मसा कयनार्थ। नमसा कयनार्थ। नयास। वि
रुका यनपुसिय। कुरुवत्तु ॥ त्रिदायनजायनय्या कुरुसुनाना उकाय। सुवानरुयु। नृवावकभाय
नयमसाक्युनाय ॥ ॥ कुरुनिनिदाना कयत्रिकुम नृवावकनिदानं ॥ ॥ अथ नृवावकसावि

किसा ॥ ॥ अथ नृवावकसावि
दीपनं नावकं स्वयं पीतसंकाशनाशनं ॥ ॥ क्षत्रवी। पुरसावनपु८ त्रिकदुपु३ त्रिसूगभिपु३ धने
वृष्टं नस्यं नृमि वृद्धियाक नृविदयिव। स्वत्रहिनिव। क्रासहउ२ भाव। कागमदिमाक ॥ ॥ अदि

नृवावकया असल ॥

१२३

मादिचूर्णज्जावकया॥ ॥१॥ अनाकेनलंत्वचपुंतालीसकंरथा। पृथीकाजीनकंभान्यंदाति
मंदाईकाविकं॥ पिपलीपिपलासूलंवाविशकनागनं। मनिवंदीप्यकंवेवदृशासुमथवेनसं॥ अ
जमाजनाजगन्धदधितुक्कैठिकाविकं। पुदयंसगिलुद्वियंरगकंरंखवदुष्यलं॥ दूर्धमप्रिपुसादन
पनमंरुविवर्द्धनं। श्रीहानंकागमर्भसिग्ललक्षसुवमीकनंनिहकिदीपयत्यमिदलवर्धुषसादनः॥
वातानूलाभेहंरुयंकजिकाविभधनं॥ ॥१॥ अलादिज्जावकया॥ ॥वित्वयाषाजमाज
वपिपलीसूलकंत्वव। निभायवानिभान्यंजीनकंसेधवंविदं॥ अतकीसूतपाधवचूर्धुतिहवनंस
मं। दाडिमस्यनसनेवगुटिकांकानयलिहन्॥ ॥वाल। त्रिकटु। अजमाउ। पिपलासूल। लव
त्यव। हन्तु। ॐमं। एतत्तुहं। जीनसुधुवि। वदवि। धोत्यां। कसूनि। वाहाया। गजि। समलानचूर्धुभा

कृष्ण
शुद्ध

नचूकसवूलावगुटिकादयकंनस्पंभ्रनाचकनाग॥

विकिसाधिकारः॥

॥अथकृदिलज्जनिदानं॥

॥००॥तिनिदानाकपनिजमभ्रनाचक

॥दृष्टेर्दोषःपृथक्सर्वेर्दीहसासाकना

दिहिः॥कृदयःपंचविहयासासांलज्जमयान॥

॥दाघदृष्टसंविनागरुयिववातपित्त

प्लव्णनरनसांसन्निपातनरनसांठगापुकावकृदियालज्जकायसिद्धिनिधोवायापुपनाथखठा

वपुथमसंधन्नवयिव॥

॥हृत्सासासात्रलाधिवयसकालवधंमुखं॥द्विधात्रगाविवहगंवमी

नांयूवर्लज्जं॥

॥अतिउवेनगितिनिधेनहृथेल्लवलेनपि॥अकालवातिमाउच्यतथसास्येयरा

जनेः॥

॥नृगुणउधवृधकात्रवथमरू॥००॥लहावगावमार्गननयेत्यनमयत॥साकनागयापूव

नूप॥

॥हृत्पार्थवीजमुखं॥मपनीर्वेनात्यहिकागः॥स्यनरुदगादे॥उमात्रगद्यपवतंसह

१२४

ॐ विष्णुं नमस्कृत्य नमस्कृत्य कथाय कुरुं वा लपं सहता वयं गनार्हानि लाङ्कदिमतीवदः खं ॥ ॥
 नृगण्ड वाका स्याय कुरुगनिव कपाल हादू स्याय माहावयीत। सुनधमथं। कुरु कुरु स्याय धः
 कानतवतवत दनवयिव प्रियानजा यिव उथं शवयिव तादृस्यं कालस्यं हादू स्यं वयिव विला
 यरक्षानुवयिव तवरग दनउम कनवयिव थगल कृदावागतनववगुम हाक कुरु स्वसिय ॥ ॥
 वातकृदि ॥ ॥ मूर्च्छा पिपासा मूर्ख मूर्च्छन्ता ल्वजिस्तकायतमाउ माहिः पीतं वदन्त
 विगंसति कंधू संवपिरुत वमस्यदाहं ॥ ॥ नृगण्ड मर्च्छि प्यास वाय कुरुगं कपान थंका मि
 खा म्हासूय मिखा खिउय ॐ कुरु तवमानं छाय कुरु पाउय खायूयस्यं म्हासूयं हादू स्यं आउ
 स्यं कुरु नक्षस्यं पिरुया कनकृदिह यिव ॥ ॥ पिरु कृदि ॥ ॥ तन्दास्यमाधूर्यकुरुः ॥

सुकः संतापनिदानविष्णो नवाहर्हि । त्रिधनस्य स्वार्थकरो विष्णुर्द्वं सत्तामहर्वात्यकरो द्वमहर् ॥ ॥
 क्षत्रहर्नवा निवः क्षुवाक्युः ७७ नहायिवः सको स्रयं क्त उवयिवः नयमयवः क्षाज्या उवायिवः य
 नकलायिवः विमिकं कतिवयिवः स्या कतवमहेवः धातः (संभानववक्कदिद्या ॥ ॥ ७७ ति (संभ
 क्कदिः ॥ ॥ कागम्भस कना हिक्का टफ्राव विरुभाहता । द्वाग स्रमकं (वेव ह्या क्कदि च ल क्त
 : ॥ ॥ भा साः धं साः क्षत्रः हिक्का व्यासः विरु धील मरुवः नू (म उम किं तम कम्भस वयीवः स्रम उ
 यदवः धात ल क्त ल ल जव लायक मजिवः ॥ ॥ गुल्या विद्याका नू विदाह टफ्रा भस उमा ह प्रवर्
 श्रवकं ॥ ॥ यक स्या यः पाक मउाः नू विमद् व्यास वायिवः सारं र व निवः वेष्टा मदयिवः ॥ ॥
 क्कदि जि श वा न वना ल नीलः साना क न कं मरुतां व टफ्राः ॥ ॥ ७७ ति य न क्का कया । विनू पा उ व व

१२५

३२

कृदिमात्रमसि॥

नसकाक हननभव। अतस्तुल्यरुद्रावतिदासकृदिभय॥ ॥ त्रिदासकृदि॥ ॥ वृत्ति॥
निदानाकृदिभयकृदिनिदानं॥ ॥ अथा। कृदिविक्रिया॥ ॥ उलालवंगमजकमलेका
लमज्जालाजावन्दन। त्रियंगुयनपियलीनां। दूर्ध्वगितामधूयुगंमनूजाविलिखान्। कृदिनिहकिकहमा
नूतपिरुजाय॥ ॥ उलालवंगजयिची। नृपकंग। कालसिमं। तायवजि। त्रियंगु। कसू। श्रीखण्ड
यिची। अतदूर्ध्वमासनकलिनवालेनकं त्रिदासनववकृदिनाम॥ ॥ उलादि॥ ॥ इलालरुद्रः
खं। त्रियंगु। कृद्वदन्। आदग। कदक। अतस्मलगकाथदासंसासनरुद्रास्यंत्वनकं प्यासवाव। हिथनवव
पिरुद्रननाम॥ ॥ नवठ। जिहा। छुसमी। नृपकंग। अतदूर्ध्वकलिनवालेनसं त्रिदासनववकृदिनाम
विकृटिकंठकालि। नृधि। वाकू। समलगकाथदासं पियलिदूर्ध्वकस्यंत्वनकं जीर्णकं नजन्वि। मासावव

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः

गूलः त्रिसः का सह उरु वया नागः ॥

॥ अंधिक सुः अति न सुः गुड गुः धन का थ दा स्यं त्वन कं न विम

इः आम ग्रहणीः थन नाग नाग माकः ॥

॥ मनः सिना माग धिका घन नां दूर्ध्व कपि चो स्य न सु न यूकं ला

जा सना सा सधु ना वली टं कर्दि पुग का मग रुनि ह कि ॥

॥ मन तिलः पिपीः मन वः थन दूर्ध्व कपि चो

सिया ती सहा स्यं त्वन कं क हि छां तं त्वन कं थन व वे नागः ॥

॥ इति निदाना कप विज म कर्दि वि कि १२५

सा धिका नः ॥

॥ अथ लक्ष्मण निदानं ॥

॥ त्रिगुण थ स्यं त्वन वं वरु कं गुवी न म वा गु न पां क

शानिः लय गु मा त्यां वल सं जया वा उ अ वि तं पिरु वि व र्द्ध ने थ पिरु स वा तं कपि न न ना नां ताल पु य न जन थ न

पि पा सान् ॥

॥ लय वा लः आय क रु लः वल म द लः रु स पिरु वा ध न यं थ हा स्यं व यः थ पिरु वा नः

न ग डा व मा नू या या थ क स का प न यूः पिरु न पा वः प्या स ना य जा य न प नं ॥

॥ कामा स्य ना मा नू न स

कृवाया स्नादस्तु भगवन्निनस्य वापि । अमानिला धाविनसं वव कुं नीगाहिन हिम्व विवृष्टि मणि ॥
 ता तन जाय न पूया रवा न रायू । कृकृ मा उ सु या थां स्थायू । कलूया ल गियू । कृकृ म साक । स्था उ स्यं व न डा य
 प्या स नो य जाय न पयू मख ॥ ॥ मूर्च्छा नि विद्वष विलाप दा रु न के कृ । ता तं व व न ध्य । भाषः । नीगाहिन न्या म
 खति कृ गाव । पिता सि कायां प नि धूय नं व ॥ ॥ नू । भा उ म । छि उ । न य म य व । ता क रु क न न्वा क । हियू । मि
 स्वा का उ यू । उ थां र स न प नि व । स्वा उ स्य व ल ज व छि उ ख । कृकृ खा यू । पि रु व ल ला क या ॥ ॥ वा ध्या व
 ना धा क रु सं वृ त । म्मे रु क्त व ला । धे न ह व न न स । नि डा गु वृ त् म धू ना स गा व ॥ ॥ ट क्रा दि नः शु ध्य नि ता नि मा थं
 ॥ ॥ स्वा वि स हा य के स । अ ध्या न ज नि स ह द न यं थ थं वि रु । अ ध्या मि त ल यं थ त न प्या स द य क वः
 कृ उ त व मा नं द यि व ॥ कृ अ पा उ । कृ कृ वा कृ । प्या स न पी उ न यू । त व मा नं कृ रु ग उ ॥ ॥ थ न । अ ध्या य

॥ ॥ ^आकृत्वा स्वयं कृत्वा विना गमात्स्यात्कृत्वा वरु धर्तृकृतजामनात्। न जकृत्वा हा कृत्य सक्तताच्च न मा हि ह
न न्यनिमित्तदिनेषु ॥ ॥ **॥ घालया हि हा या व स्या क न पी उ न या व। घा स न ग जा य न य न। धं ना यं य ना।**
४ घा स न ग ॥ न ज कृत्वा श या व। कृत्य न जा य न य। घा स न पी उ न या व। वा नं कि नं यि य म जि व ॥ ॥
लक्रयनेः (सुः) ससूखं नयाति तां सन्निपातादिनिके विदुः ॥ जिदावलिमाससमूहवन्तु दृक्कुलनिशी
वनसादककी ॥ नसकृत्वा कानियलकृत्वा निगस्याप (नयेव) हिमव्यवस्यत् ॥ ॥ **मुलिलं खल्वनस**
नं सको यमश्व। ध सन्निपात न श्व वया सत्राय ॥ ॥ **जिलिंगं जिदावलि कृत्वा** आमजायनयन
(ग) कृत्वा कदव खयिवाधनय कृत्वा क आमया सस कृत्य सजा काल कृत्वा दव ध आम ससवधये य ला
कन विवानया रुनि ॥ ॥ **वीजपूवकर्षं स्रव जतिमं वा स्रवत सं। सगर्कं वनिहस्या गुलहं कृत्वा सुद**

१३०

॥ कवसि यं ह्यमसि क्षत्रवीजं संसि ॥ अतनिस्पं सा घवन ता वं न स्पं व्यासनाग इरुं य जय न वूः
 ॥ ॥ क नमह क्रय का ग वि सा इह हृद हि नां ॥ ॥ का दयू मि ही नं तं गु ग नी व जी न मा सा व यूः
 सा ले र य नि व अ ति सा व न तं गु ॥ अत उप ड व न तं गु व्या स ना गी म स्वा क ॥ ॥ सर्वा स्त्रि ति पु न क्रा नां कृ ग्म
 नां व मि भ व त ॥ ॥ स क लं अ तु न जा य न य अ ति क्का क व्या स ना य न त व सा र्ग न थं न व यू वि व र्ण श
 यू ॥ ॥ आ ना प ड व यू का व ह क्र या म न व न ह वे त् ॥ ॥ अत उप ड व श न ना स थ व्या स ना य न सि
 यू ॥ ॥ आ म्भ व न स वृ ङा म्भ दा ति म व द ल क वि र् वी ज दू न यू तं ये व प र्श स मू दि नं वू धः ॥ ॥
 सं सि ह्य म सि क्ष त्र वी ज व य ल सि त व सि यं ॥ अत या ति क्क गु स ल य न मा य ॥ ॥ पं वा स मू ख
 लं य न ॥ ॥ ॐ नि नि दा ना कृ प त्रि कृ म न क्क ल कृ ग नि दा न वि कि त्सा धि का नः ॥ ॥ ७ ५

अधमूर्च्छाऽमनिद्रा तन्धा संन्यासनिदानं॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

गमद्यागोदहिशामाहीनसत्यस्वययूनः॥कनवीयागनेइजावाक्षस्यनेनमुवे।निविनकेयदादाषानदा

मूर्च्छा निमानवा ॥

॥ संज्ञावेका सुनीका सुयी छिता त्वानिता दितिः । नमो त्वये निमदसा सुखदः खं

मधुहृत् ॥

॥ विगता बहवः पूना श्री ह्वाग आदि नक्षत्र पंचद्विय सुवहव पाव अश्व का वन भा क

पूयावसुखनंतावगीवः ५: खनंतावगीवः ॥

॥ सुखदः स्वव्यापाहनाः नवः पतितका सुवत् ॥ ॥

सुरेन्द्रः खेंमसि नतासु थंमनुष्यसिमादुअथं॥

॥ माहमूक्रीतितामाहःषाद्विषसायेकीर्ति

॥

॥ मनस वि का व रु न ग व मूर्च्छा प्राय रु यिव मूर्च्छा प्रागं वृ न य का व ल्का य प वि पा ति न ॥ ॥

वातादिभिर्विहितेन मयनवविधेयव। ष घृष्यतासुपिरुकुपहृत्वनोवतिष्ठते॥

॥ वाग विह्वल

अ. हि. सन्निपात. (धन का उ. धन वृत्तान मूर्च्छा ना म जाय न प नं॥ ॥ दृष्टी ज ह म न ग्ना नि सं
हो दो र्व ल्य भव व। सर्वा सां पूर्व रूप। सिय ध। स्य व वि रा व य न॥ ॥ नू. ग. उ. स्या क. उ. म. का ल व व. सं ह्राः
ही न. सक ल यां पूर्व रूप ध॥ ॥ ध व ध व या वा क म र व नि॥ ॥ वं य धू. स. म. म. र्द. य. य. पी. ज. ह. द. य. स.
व। का र्थ. ल. वा. नू. ध. का. या. मूर्च्छा. ये. र्वा. त. म. म. र्द. व. त॥ ॥ वं. व. हा. क. ध. श. ने. आ. का. म. उ. नि. ध. र. न॥
आ. उ. ध. श. न. स्य. य. व. ल. खि. उ. ख. नि. व। ख. वि. नं. ००. क. ख. वि. नं. न. त. ना. म. र्द. ख. वि. नं. क. रु. क. नू. ग. उ.
स्या. क. म. ल. आ. उ. उ. नि। वा. त. न. जा. य. न. प. म. र्च्छा. या॥ ॥ स. वि. या. सा. स. स. ना. य. न. क. पि. रु. क. ल. क.
तः॥ स. रि. न्ने. व. र्च. पी. ना. रं. म. र्च्छा. ये. पि. रु. सं. ह. व॥ ॥ ण. स. वी. य. स. ना. य. श. य. आ. उ. का. स. आ. का.
न. व. र्ध. ख. नि. व. मि. र्वा. का. य. का. स. य. को. द. व. का. ल. य. पि. रु. न. र. व. म. र्च्छा. या॥ ॥ ॥ गु. न. रि. या.

वृत्ते वं गोर्य (धेर्वा) उत्तवर्नम् । स्यु संतः सुदत्ता सा । मूर्च्छीथे करु सं रव ॥ आकाश स स्तनना क धाया
 धं खनिवः स्तन्या एयुः कसते ला थं ड निवः प्यासीन कसवू ड थं ड यिसिं म सिंद निवः ॥ स्तनहा यिव
 नू (म) उधे वूयुः (स्तन) न जायव वू मूर्च्छीया ॥ ॥ सर्वा कृतिः सन्निपाता दयस्मान् ॥ वागगाः ॥ सज
 कुः कातय स्था ॥ उ विनावी र ससे वनेः ॥ ॥ स्वताया ल कृष वाग सन्निपात दयः ॥ अयस्मान् थं व
 यिवः ॥ ज तु न न नानं द न यः ॥ कर पिया म दा श कृ वि (म) स सय ॥ ॥ पृथिव्या य स्तनानूयं न क
 गन्धे य त न्ययः ॥ त स्मा ड क स ग न्धे य र वि मूर्च्छीति मानवः ॥ ॥ पृथिवि नं लं खनं स्ति उरव नि
 वः ॥ हि तव शन ज वः ॥ हि न तु नायितः ॥ पृथिवी सः स्तनना क धाया थं म नूयानः ॥ पृथिः आ य न ज वः
 यू आकाशः ॥ थं ड वा स्तना व रत न ज वः वाधे न ययुः ॥ ॥ मथन विलयं (म) ते न वृ वि प्रा कृमा

१२२

नसः। गणवि विवि क्रिय हू मो या वयं किं न या निरुत ॥ ॥ धन का या व श व मूर्च्छा या । र वा यू व न्वा
यू व । म्भ र द र व वि व । नू (ग) उ ध व क म द् । मि खाने नू (ग) उ नं हि उ हि लि व । धा ना उ गु । जी र्धू म अं गाल
ध धं वा नि व सि य ॥ ॥ व य धूः स्व म्भ मूर्च्छा स्पृ हू म क वि ष मूर्च्छि तः । व दि त वं ती वु त लं य धा स्व वि
ष ल क षीः ॥ ॥ ई उ व न डा व । गो यू व । त व मा नं नू (ग) उ म किं । ज व द्वा श यि व । वि ष मूर्च्छा स । त व
व ग श यि व । वि ष नि दान स धा व ल क षा क्ता ना धं ठ नि व ॥ ॥ मूर्च्छा पि रु त मः पु र्वाः न जः पि रु
नि ला ध मा नू । त मा ना त क रुा ग द्वा । श्वा त स्मा रु स म्भ वा । षू न्द्रि या र्थ व लं न वं । गो व र रु म्भ न क मः
॥ ॥ त मा गु ष व पि रु व द्वा ना व मूर्च्छा जा य न य नं । न जा गु वं । पि रु वा वा ग व । अ डा व अ म जा य न य
नं ॥ त मा गु ष व । वा त । श्वा त अ डा व त न्द्रा जा य न य नं ॥ । श्वा त । त मा गु ष व ना य ना डा व । नि डा जा य न

मूर्च्छाप्रमत्तिज्ञानसाधनम् ॥

पत्रं ॥ ॥ कासनं नमतालः कासनं नयमतालः मिखानं मखडः कृष्या तुलः वाकालवयीव ॥
मूर्च्छाप्रमत्तिज्ञानसाधनम् ॥ ॥ कासनं नमतालः कासनं नयमतालः मिखानं मखडः कृष्या तुलः वाकालवयीव ॥
वगु ॥ ॥ सनागं तागु सनासं कासीरुगं मगीयमं ॥ या (वे) विमूयते नीचुं मूकासय क्रिया रु
लं ॥ ॥ नागं शनं सलावनः ग्रामवयं सीक थां वा निवः जीवने गोदतयः न नाने अषधिमया न
सा था रुल मायिव ॥ ॥ ॐ निनि दाना कपत्रिजम मूर्च्छाप्रमत्तिज्ञानसाधनम् ॥ ॥ १३०
अथ मूर्च्छाप्रमत्तिज्ञानसाधनम् ॥ ॥ कासनं नमतालः कासनं नयमतालः मिखानं मखडः कृष्या तुलः वाकालवयीव ॥
मूर्च्छाप्रमत्तिज्ञानसाधनम् ॥ ॥ कासनं नमतालः कासनं नयमतालः मिखानं मखडः कृष्या तुलः वाकालवयीव ॥
लं ख सन स्य सन कं अग्नि मूर्च्छाप्रमत्तिज्ञानसाधनम् ॥ ॥ विषतिः दूर्ध्वकस्तिनवा नं व ॥ ॥ मूर्च्छाया ॥ ७ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

उगीलपवर्धटं धमं नर्कना नीत ता त्रिधा ॥ मधूयूकं विवेचेव उमनागतमूलमं ॥ ॥ इति लहा रवा रवः ॥
(मम) हां। सावन तं खसु नि सें क सिद्धं तं त्वन कं ॐ कृ नाय नाग ॥ ॥ स्व हूत्र मधू कं दा का कात्मय सु
हलु स कं। क (म) नूक सु द म आ दू र्गिता नर्क ना विता ॥ लिह लो उ वृता य ना उ म नू क मि या य हं ॥ ॥
॥ स्व हूत्रा दि उ म नू र्छा या ॥ ॥ डा का ह नीत की मूल था स प र्ध ट कं स मं पा च य इ द के पी त्वा उ म नू
छा पु स म नं ॥ न क पि ल क लं वे व ट क्रा दा ह उ ना ग नं ॥ ॥ मी सि ह न उ क सु र वा खं शि क दू स म
हा ग का थ दा स्यं त्वन कं नू (म) उ म र्छि ॐ कृ हि यू ग ल २ हा व या स ता व हि पि ल न जा य न पू क न थं त
नो त या क ॥ ॥ डा का दि ॥ उ म नू र्छा या ॥ ॥ ॐ मं ग र्छि संधू व्या त ग जि था न दू र्ध न कं
नि डा क ना मि। कू उ व य के ॥ ॥ इति लहा गु उ गु क सु स म हा ग का थ दा स्यं त्वन कं वा न पि ल न र

अथ पाना लय लेख

वच्छेदु नाय नाग ॥ ॥ दुला लरु खाखं कसु खादा सुमराग काथ दासं चनकं पिलुन शवच्छेदु नाय
नाग ॥ ॥ कइ क आदग खाखं खादा दिगुल इला लरु काथ दासं चनकं नक पिलुन वच्छेदु नाग
॥ ॥ दिगुल मिठिसि गुउगु खादा खाखं कसु कइ क काथ दासं चनकं ताक बुकन न्वाक चतना
मइ गलर खाव नाग ॥ ॥ दिगुल पियला मल कइ क रुवउ काथ दासं चनकं आम गलर पि
रु नाग ॥ ॥ वृत्ति निदा नाक पत्रि क मउ मरु क्क निडा न्वा वि कि ल्हा धिका व ॥
अथ पाना लय निदानं ॥ ॥ निर्ह क मका क तय व म शं निश्चाय मानं मनूजन निर्ह आ पा द थ ल्हा
न मान् वि का ना ना पा द थ द्या पि न नी न र दां ॥ जव क रु आ व द ना द ने व सा जी गृह के न त थ व ले न ॥ उक्ता
हित फन व सुव मानं क ना नि म यः वि वि क्ष वि का ना न् ॥ य वि ष स्य गु धः आ का ते म था पि व व ल्कि ता ॥

नममि। धर्मपयूकेन तव स्पर्शममदात्मयः॥ ॥ गुलिं सुयावे गुवाहन उलिं थया गुवाहनं
धर्मनवेलकालमदयकं अयनिमाननत्तनाव तवमानं मदात्मयमगयात॥ ॥ हिकात्मसमि
वस्तुस्य तोदगुलपुजागत्रैः॥ विद्यावदुत्सायस्य वागुपायं मदात्मयं॥ ॥ हिकुववः सावेने पडः मा द
ताकः ऊउमदः गा ककुकन चाक तवमानं वा तज्जधिकरुवमदात्मयसिय॥ ॥ टक्रा दाह कन स्विद
भा हा निसा न विजमो॥ विद्या हनिगतवर्गस्य पिरुपाया मदात्मयः॥ ॥ आसुवावः हियूः कनः चन नि
हावः अवेष्टादवः पिरुकादवः ॐ कूः ववूउनिः पिरुाधिक मदात्मयया॥ ॥ ऊर्धवाव कनः लास
तन्दाभे मित्पः (मेववः॥ पिरुाकीन पत्रीनस्य करुपायं मदात्मयं॥ ॥ धनवतियवः नूतिमदः नूः (मउ
धवूः कनोह तया निवः ककवश्चिवः आनुनपीउ नयूः (प्रयाधिक मदात्मयया॥ ॥ य ह्ययय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

महिं च न व व न व व माद स्या क हियु थ त्व न न जाय व य विभु मया ल क दा सम सं धी व जन न ज्ञाना सुद
॥ ॥ **पाना लय** ॥ ॥ डा का क यि न्क रु ल दा डि म यान कं व य रु स्या ग विभु महात्म धू ग क ना यं
॥ ॥ मी सि एव न व्या ल धा न वी उभ स न व कि सा ख न व कि त स्यं र वा उ लं ख हं स्यं क स्ति त स्यं च न कं
पाना लय या पान विभु मया ॥ पाना जी र्ध्या ना ग ॥ डा का दि ॥ जि को व द न म सि ने स्य थ वा पि
नी ले पि ल न य स्य न य न र धि न उ र द ॥ ॥ मं कू रु सि द न हा क य उभ उ य म सि या उ नि श यं रु वः
मि र वा क्ता सु का उ यं रु व ॥ ॥ **हि का क न व म थू व प थू पा र्ध्या ला का ग उ मा व पि व या न रु गं रु ज**
के ॥ ॥ हि कू व यू का द यू थ न व यि व क रु क वा का स्या क मा सा व यू कू यू थ न उ य ड व न रु ज न
पं उ य रु ग या गं ॥ ॥ भ व न स्वां व वा कू ग अ सि या हा ले ख स नि ना व ग उ स या य स नि या न दा रु क न

सहिउ॥ ॥ लवउत्तवः लुकम्यालः पागकः नृपकेगलः पिपीतेवाः साधनः स्मरागकः हिसुनिस्पं मं
 ३ ग्पनकं नकं (लेख्य) नववदननाम॥ ॥ तिरुलाः मन्त्रवः पलकं नृपकेगः स्मरागकः हिनतालं मं ३ वा
 नकः कृगहाः कोलसिया मं तेवाः साधनः धननकं दाहवनयाः विदूषनया॥ ॥ वृत्तिविदना क
 पत्रिजभयानात्ययविकिसाधिकावः॥ ॥ लवयाय समानाख्यः पिरुवकातिमूर्च्छितः दाहयुक्
 नृगधात्रं पिरुवरुस्यतेषजं॥ ॥ कुली मः लरु सः समानवायुचांगु अग्निपि हावनगवः थूकिस
 पिरुवः हिवः गनावः हियुतवमानयानं॥ थूकिस पिरुया अम सलयाय मान॥ ॥ कः स्रंद हानूगवका
 मूडकं दाहगं क्रवं॥ विदूषनेन पागवाता मारस्मा सुलावनः॥ ॥ **क्षं नापं हीन व्यापनयं मीन दूक थं॥**
हियु कनः प्या सवायुः क्षं नापं वृव्यानाथं स्याकः क्षं मिखा क्काउयु॥ ॥ लाहगः क्षंगवदनावा क्रिप

१३३

३२५

दावकीर्यत। पिरुक्तनमः पिरुक्तवाप्यस्यविधिः स्मृतः॥ ॥ कनं कुरुनं न कुरुयानधवः पिरु
 कनया लुक्तवत्तु पिरुक्तं शवः दाहयापनिवानः पिरुक्त्याधं॥ ॥ कनानिनाधुदमेमनो जीवतजः
 समुद्रतं। स्वाकात्यकनंदं हं पदहात्मन्यवतसः॥ ॥ व्याससुलंखमत्यगवज्रयानंधुजीवत
 नंतजहीनशत्रं॥ पिरुक्तं द्रवमंहियुवः चतनामद॥ ॥ संशुक्कगलनालोष्टाजिकानिस्तुष्यवेपत। अ
 हसं पूर्वकाष्टस्य दाहायः सासुद्रस्तनः॥ ॥ कुरुनं कुरुसिनं मनंगनिवः कनयुवः व्यासपिनावदा
 हशवया॥ नृणामुनक्तनाहिनधः हीनः पुरुश्वगवः दाहशयितः धनायकथाक॥ ॥ धनककाष्ट
 दाहकाय॥ ॥ ॐ तिनिदानाकयविश्रमदाहनिदानं॥ ॥ अथदाहविफित्सा॥ ॥
 उनीलचन्दनं मूकपटालं समहोषधं। नक्तनामिनिनं ययं दाहकनहर्नयनं॥ ॥ उनीहाः श्रीखड्ग

कसुनिःपालउमि। उनिधतवर्षसाधननवानंखाउलंखसुहास्यनकंहियूकनमान॥ ॥उमी
लादिदाहया॥ ॥ॐतिनिदानाकयनिजमदाहविकिसाधिकानः॥ ॥अथउन्मादनिदानं॥

मदयन्त्युक्ततादासायस्मादन्मार्गमागताः। मानसायस्यतश्चाधिब्रन्मादंॐतिकीर्तितः॥ ॥विजम
रुनगावःदाघनमनसवहनपूनाडीसुविमार्गंरुनगासुभवगुलंनवहनयंवानिवमनयावाधिधकंभया
काधसुभाकसुधनसुआयशयिव॥ ॥धीविजमःसत्यपनिप्लवधपय्याकृलादष्टिनधीनवेद्या। अथ

इवाक्काहदयंतगूनां सामान्यमून्मादगदस्यलिंगं॥ ॥वृद्धिविजमःशयूवंवनसुहावशयूमिस्ताव
वृत्तिलेखीलमशवताककुननवायून्गमउसगून्। सामान्यआयमालकदा॥ ॥अस्मानहास्य
स्मृतिनृत्यगीतःअंगधविकेगननादनानि। उन्मादकालनिपतयस्य। हताहमून्मादमूदाहनकि॥ ॥

उन्मादनिदानं॥

१३४

मूमात्र धयस कल्लययू ताकलुकनन्या यिवः प्यारवनरुयीवः मेहालीवः ६ लाहाः वता वितीनमनीवः
 वयीवः वेलरसथधिं गुसलावनमनिवः ॥ **थलल कुल रुतना सरुता न्यादधय ॥** ॥ विरुद्ध
 ह्यरुजिहोजनानियुधर्षदेवगुनृदिजानां । उन्मादहर्षहर्षपूर्वमनाहियाताविषमाध्वयः ॥
 ॥ **॥ अरु कुल दार्थनयावः दवयाः गुनृयाः डाकृषया दारुया गदाधनविकानरुयावः धुगुका**
नहनअय रुयिव ॥ ॥ तेनल्पसत्त्वस्यमलापुद्रुष्टावृद्धनिवासं हृदयं पुद्रुष्यं आतां स्पधिं ह्यायम
 नावहामि । प्रमाहय न्या गुजनस्यवेतः ॥ ॥ अवा मुखमूखावाः ॥ कीलमान्मयल कयं । जागवृको स
 संदहमून्मादनविनन्यति ॥ ॥ **॥ धा मा क क सा क व थ धा क ल नी न कि न रु व व ल म दू थ धि क स**
नृषया क द म द न अत उन्मादनागीसियुः स द ह म न्याव ॥ ॥ इति विद्वानाकृयविडमउन्मादनिदा

उन्मादविक्रिस्ता

त्रं॥ ॥ अथ उन्मादविक्रिस्ता ॥ ॥ हिंगुसोवर्चनं वाषट्पलां गोघृताटकेः । चतुर्गुणैः । गवां मू
त्रं सिद्धम् उन्मादनाशनं ॥ ॥ हिंसा लक्ष्मिकुरुः पुरथया विदधे लक्ष्मि मूत्रं चतुर्गुणैः । अनमो न न धलस
मूत्रं न कंठा यन्मादया नाम ॥ ॥ डाका तथा कक्षमंगी वयस्का गुन उद्यतः । मधुना सह न हायं सन्निपात
त्रिदासज ॥ मूत्रं पुनाय न द्यावहि का उत्रः गलग्रहः । हृता उन्मादमहिना स गुल्मान विपुल कथम् ॥ ॥
डाकादि ॥ हृता उन्मादया सन्निपातया ॥ ॥ मीसिः हन्तः । पिपीः । कर्कटासिः । वयलसिः । अंगुसिः । उक्ता ॥ ९३५
ल्लं । धनं दूर्ध्वकस्त्रिंशत् न कंठा उन्मादया । हृता उन्मादया । त्रिदं सन्निपातनाम ॥ ॥ कर्मासास्त्रिंशत्
लपुत्रं दहति निर्माल्य पिशुनकेः । त्वक्कांसि वृषदं विषयववाका । लक्ष्मिर्मावकेः । लक्ष्मिर्मावकेः ।
हिंगुमनिर्वे सुखे च धूपः कृतः ॥ हृता उन्मादपि सवत्राकस नृगधेन कनधः स्मृतः ॥ ॥

निर

मदनरुल

नं

छायुः सुखापाः कष्टकालिः निम्नविः तं केनायः नवं च वः जटामासिः हो र्विः विहाः जः विष्णुलिः मा उः किं नि
याद नः हिः मत्रिवः धनं स्मृतागवृधूय कृवकेः हतोः मादया ॥ ॥ नकनायः ॐ ह्रीं कले जसिः पा
साउ वतिः हनउः मन्थिः विहाः कालिः स्वां हिः नकाः कष्टकालिः मित्रकिसिः हनउः सात्तिः मदनरुलः खयल
सिः कर्वसिकीवः हाकृसिमलसियापूदवदानूः वित्रिसिः वनउः वसिः साताजनः निहः कसूः ॐ दुज आनिः
वाः स्वां ॐ हनातिस्यां दन्तिः विगकः मथअं कृदः धालाउः बालः मसयावाः बालसयावाः रुसियावाः सुउ
यावाः धनयावाः सधलखूठं धधलः हं आसथ जवः वंसमउ कूयावः धूडंगयः लालछिन्नं गभकः नलां ते
वः धधल कायावः नकं तेवः काससथ नंतवः ताकालं आयवाउया ॥ जयस्मानयां लनधुतगृहादीनकड
यां कृष्णगयां धनसुगुहाविव ॥ ॥ कृष्णमः जातिपणः कृष्णमः नृपकं गलः पद्मकं गलः वयस्मान

[Faded red text]

वृषभ
वृषभ
वृषभ

पञ्च. व्याल पञ्च. जील स्वान पञ्च. स्वत निर्मलि पञ्च. धाय स्वयन्ता संघात्रिय पञ्च. इलायु व्याव. कयपिंता. इध
 नयू. सूक म्मान. खड्ग नमी सि. वसू पति. धर्मेच्छा २ या उं भा उ हू य के उ य वा. वेनायू. नि. धय ह न
 ॥ ॥ मुष्टि पिपी. मन व. नूप के ल ल. लव ड. पात क. सूक म्मान. उम स ल व छि. सा ख ल व छि. धर्मे व र्धून
 सं. अग्नि म न्द. गुल्म अ वृ वि. नू ग ल म छि. (म प्राय ना ग या क ॥ ॥ ॥ हू त उ ग पि ल व. ना क न यू उ या म उ
 उं न मः ग्री व उ म हा प्रा स ल य ॥ ॥ उं न मा वि छ स ह न का य ॥ ॥ उं जां जीं जां व उ नू प य तै य व न र क ह र उ हू
 ल र उ हू ल य र ह न र ग स र ब न्ध र ज हू य र हू हू य र मा हू य र सर्व ग कु नां मू ख व न्ध नं कू नू र सर्व ग कि
 नी नां ग हू हू त पि ल व व्या धि य का लां जा न य र मा न य र नू नू व कू नू. न कू र व उ म हा प्रा स सर्व मा हू य य नि
 व उ म हा प्रा स ल य हू हू हू हू हा ॥ ॥ अ न न म उं ल ह र्ज य उ लि ख त् धा उ ल य उ क हू हू मु (म प्रा व न न का

१३५

व ५ मा एता म ५

अथस्मार्तलेखः॥

लस्येष्टवर्धयित्वाक्रमयन् ॥ ॥ ॐ नि नि दाना क य नि ज म उ त्मा द वि कि त्सा धि का वः ॥ ॥
अथ अथ स्मार्त नि दानं ॥ ॥ त मः पु व न स म् रु द द षा धि क रु नः स्म नः अ य स्मार्त ॐ नि ह्म या ग दा यो न
क्षु वि धिः ॥ ॥ मि खा खि र क्षा स्यं व यी वः ह्म न आ कि श यी तः ० ला हा न हि रि र ता यी वः दा ष अ धि क श
न श व वृ द्धि मा च की यू न क स थान श यी व अ य स्मार्त या म् रु नः थ या य र यं क व प्य ता यु का न वि धि द व ॥ ॥
॥ ॥ ह्म क म्यः पू न्य ता स्वि दा ध्म न मूर्च्छा उ मूर्त ना नि ज ना न ध त स्मि रु ह वि ष्य नि रु व रा थ ॥ ॥ नू ग म
उ उ य् थ व नू ग म उ थ व क म इ च न ति हा यि व नू ग म उ म डिः ह्म न म इ ऊ उ म इ अ य स्मार्त या ज्ञा यो थ थ
श यी व ॥ ॥ क म्य त उ द ग द ना रू ना द मि धि सि त्पि पि पू न्वा नू व रु क्रा नि प ग्ध क्पा लि वा नि ला
क्ष्मा य् उ म क प जि य् म् रु स पि यान जा य् क्षा स पि त य् क्ष्मा उ हा क्क्ष्मा उ ना वी न या नू प ज्ञा का ग म स्

अथ २२ भा २२ ॥ १०॥ ५५॥ २
वी २२ ॥ १०॥ ५५॥ २

या थं म्मन्याना ॥ ॥ वा न न रु व ज प स्मा न या ॥ ॥ पी न रु ना न व कु कः पी ना रु म्म प दर्शनं । सु रु क
न ल व्या कं व शा क द नी व पो रु का ॥ ॥ वि या व यी व । खा न मि खा का सु य । का उ न या य । या सु वा य ॥
क का क । मी न उ ना थं उ नि व । ला क पं व । लं ख । ज धि क ख न उ व यी व । वि रु ज प स्मा न या ॥ ॥ ॥ ॥
ना न व कु कः पी न रु द सा मी जा गु नः । प म्म गु क्का नि नू या वि । म्म मि का म्म य न वि ना न ॥ ॥ वि या नं । क्क नं
मि खा नं गु य रु य । खा उ य । वि मि कं क लि व यी व । म्म ज्जा गु य । सु या र धा म्म गु य व रु ख नि व । म्म म्म या न न
नं म ल उ ॥ ॥ ॥ म्म म्म धि क ज प स्मा न या ॥ ॥ ॥ सर्व न हिः स म स्मि ध लि । म्म रु यं वि दा म जः । ज प
स्मा नः सु वा सा । म्म यः की व स्मा न व थ यः ॥ ॥ ॥ थ स्व ना या ल क लं द न क व । वि दा म ज जा य ल प्म
प स्मा न सि य ॥ ॥ थ न ति ग ना य ला य क म जि व । म्म म्म या म्म व ल म्म व यी व । ता द य का व ॥ ॥ ॥ रु ति नि

१३७

दात्राकपनिष्ठमं जपस्माननिदानं ॥ ॥ अथ जपस्मानविक्रित्ता ॥ ॥ लवंगतिरुलायाषनासा
 मृगीसपूकना। लवंगीविगुनकप्यत्रकंकमलाजिजातकः मृगनाहि किनाटीववेन्दननागकेमल। सम
 वर्णमिदं लहसर्कनामधुसर्पिषा। त्रिदाषवैसृकार्गवजपस्मानमन्त्रवकं। जपस्मानविद्यान्मादग्रह
 क्षीनकमूलनृग ॥ ॥ लवंगतिरुला। त्रिकटु। इगुच्छा। कर्कटासि। पूकनामूल। नवंत्यव। जीवविज
 त्रिजं गुसि। कप्यत्र। कंकम। ला। जिजातक। कस्तूनि। रत्नाखं। ग्रीखउ। नृपकेमल। समलागवर्णप्यत्रकसि
 साषनसवालंनसं त्रिदाषवैसृकार्गवजपस्मानमन्त्रवकं। जपस्मानविद्यान्मादग्रह
 याक ॥ ॥ कनकलवंगमदिजपस्मानयो ॥ ॥ निग्रहकृष्टववायविलेननवाषहिंगुहिः ॥
 साजमूउहृत्तंनलापस्माननवमांजनं ॥ ॥ निग्रहेल ॥ ॥ त्रिरुलायाषपीतकृष्टववायविलेननवाषहिंगुहिः ॥

टी. सुकः अथा मार्गना काचकलं जहल भवव ॥ साधिनं वसु मूठक इनेल विपाचयत् ॥ तिरुला
 नेल माखा नमपस्मान विनागने ॥ ॥ तिरुलामे लजपस्मानया ॥ ॥ चन्दनं चित्तकं निंही व
 च्चकं मूक नागनं । कट्टका जयमानं वक्ष गुरुलील विमो लिवं । उर्द्धा ईपलमाया विहा भव वा नु सं ह्र
 जी नाटक समायूकं सूर्यियाई उलायवत् । वा उर्थक उल्लसं व उन्माद विषम कानन । ग्राहिक न्म स
 कानं व । सर्वपस्माननागने ॥ ॥ चन्दना दिद्युत जपस्मानया ॥ ॥ जटिना पूटना के नीवा
 लटी मकीटी वता । जयमाना यवानी वराव कंकुशाहिणी ॥ कायस्त्रा सुकनी कृपा सा निष्कृपाय ल
 कखा । महापूत्रपदकाचवयस्त्रा नाकली वयः । कट्टहवा वृष्टिका नीलिलाखेव गुणवृणाः सिद्धवा उर्थः
 का न्माद गुहाय पस्माननागने ॥ महापेक्ष विकाना म्माद्युत मगयथ मृगं । मक्षवृद्धिः स्मृति कनं वा

१३४

लानां वा नैवर्द्धनं॥

भजपस्मानविकिसाधिकानः॥

॥ महायेश्वरविकानेतत्रयस्यात्रया ॥

॥ॐतिनिदामाकयविअ

नव्यायामातियुजागत्रैः

यित्वा निष्ठावली ॥

ॐ रु सु न द्या य न द ना व ॥

तथा पूर्वतूयमिति स्मृतं॥

नरकशयं हव ॥ नायक

तायूनः संकाचपर्वना रुभू

क म श व गोल पूर्व रूप धय ॥

॥ कामयाधवधतनूपसंपूर्णकडावता

[illegible]

तकोयनपंडुरय ॥ धनूस्तुल्यतसंयुतः सधनूस्तुल्यसंयुतः ॥ लियच्छायाथं क्लृप्तिकथं
लितधलज्जुगुतातधनूस्तुल्यवागधाय ॥ परुमन्यतनं हृदि सविवभान्तिमाजयत् ॥ कृत्साई
कायस्यतस्यजुकर्म (धवि।यतनं ॥ ७ काज्ञभागं केविचज्जयपठं मधः विदुः ॥ ॥ ग्यक्षयावाक्कृताक
हावथं स्यायिव अथिजाधमाउगा क हावथं स्यायीत ॥ धयावाक्कं २० लाहातनं कृतायायमदु। विरुजा।
क्रिश्चिव ॥ ध ७ कज्ञभागधायंगव ॥ ॥ धयज्जुवागधाय ॥ ॥ सर्वाज्ञभागकेविचसर्वकायालितने
लं ॥ ७ ॥ कृतायं स्याकसा कृतायं रु सनव्यायनपावयानसिया ॥ ॥ धसर्वगवागधाय ॥ ॥
वक्रिंरवतिव कृाईज्जुदिगंजनयत्यधः ॥ ॥ कृगुवहिस्याय ॥ ॥ धज्जुदिगवागधाय ॥ ॥ क
पिगाहनूस्तुल्यः संयुयित्वा निलाहनूः कयातिविदुगास्यत्वं मधवा संयुगास्यता ॥ ॥ वक्रयाहास

आ इतान् को यन पाव डी कं ना पं सु गु उ म हान खा य् उ म कृ कि ना व वा हान खा य म ह स्य चो नं दू ॥ ॥

॥ ध नृ सु सु वा न क्ष य ॥ ॥ म न्या सु सु य क नृ न स उ वं (स) य न वृ त ॥ ७ ॥ मि खा स्या क (स) य व

रु मा व ना प या डा व व व ना य ॥ ॥ ध म न्या सु सु वा न क्ष य ॥ ॥ वा ग्वा हि री सि ना सं ह्वा जि क्वा सु

सु य ना निलः ॥ जि क्वा सु सु ग न ना न पा न वा क्य ग कि ना ॥ ॥ व व न व रु न पू ना डी स वा न वा डा व भ वृ

य म रु यी व न य त्व न म रु ना न उ म य य क म डो ॥ ॥ ध जि क्वा सु सु वा न क्ष य ॥ ॥ न रु मा सु य १४०

य न व कृ यी इ र्वा ध ना सि ना नू का स व द ना क्का सा सा ध स्या सि ना ग्र हा ॥ ॥ हि स रु स इ हा या व या

क क ल स वा उ ना नि सु व डा व सु उ सु वा उ ना डि स्या क ड य के ध क वा न र मा उ स्या य ॥ ॥ ध मि ना

ग्र ह णी वा न क्ष य ॥ ॥ रु सु र्वा कि टि पृ ष्ठा नू जा नू जं या प द ज मा नू ॥ ॥ नू (ग) उ क्का पां स्या य क ज

लजलसः यः सः खनसः कं कं सुयाः सः कमाकथनं कहास्यं स्यायीव ॥ **॥ धर्मधमीवातधाय ॥**
नलप्रत्यक्षलीनायां कउनावाइयुष्टनः । वाहाकर्मकयंकरी ॥ **॥ इति य विमदकां ज विजाधिपः ॥**
लाहागसं लेकदलसं यालियालिरव संयुल्याग का स्यायीव । लाहागनयाय कर्म कतायायं मरु ॥ **॥**
धविष्विकावातधाय ॥ ॥ वातधमिजः ॥ धमिजानुमधमहावृजाः कृयंका सुगीर्षकुसुलाः का
सुकगीर्षवत् ॥ **॥ वागजः दिवनजायवपूयाः यः यादधुसमनिवः नवमानं स्यायूः ॥ धउयाभाउधुयः**
मनिवः ॥ ॥ धका सुगीर्षवातधाय ॥ ॥ खअरकुदाखेऊकुपंगुसुजादयावधाय ॥ **॥**
लकदडिखूनरनसाः खअरवातधाय ॥ **निपांदडिखूनरसां पंगुवातधाय ॥** ॥ **॥ उकासवपनयसुः**
खअरनिर्वलगतिः । कलापखअरकदिशासुकसन्धिः उवर्हने ॥ ७ ॥ **॥ जस्यवनजवः हेउवलिथ**

वनिवः थमनू स्यायाः खोड न्याव थं डनिवः ॥ थकलायख जेवात क्षाय ॥ सन्धिता कदाव थं
 स्यायीतः थन लुङ्ग राशव स्मृती दने मान ॥ गुधिग थर क स्यायू ॥ थक क वात क्षाय ॥ आय
 कशन जव स्या कः पातलिहियू मिलव हिव आ डं ववया ॥ थपाद दा रुवात क्षाय ॥ पातलि
 स्वथ लावे कः स्यायू व वात (लघ्वन जयत्रयू ॥ थपाद दुर्ध वात क्षाय ॥ कं नायं तु क गु ॥
 सुवां गं कं प वात क्षाय ॥ मिखा गोल क डः सं हाम सितः क थु सु ड नू न हावः नू गन रु वायू न नीत ल
 ज सः म सुद नः हु न नू गन सु वायू व न जवः मोह शनः लयं क न वायू नः जप तान क धा स्यं ज्ञाना वैद्य लोक न ॥
 थ जप तान वायू क्षाय ॥ पं व वायू या थय सः (लघ्व सः हित व मानं वा ड जवः थ क सि स्या ना
 थं वा निव ॥ थ द उा प तान क वात क्षाय ॥ आरु ल वायूः सु क रुा ध म नी ग व वाहिनी न न

किं नो लघु लंघ्यं अथ कवा कृ ग म दं ॥

॥ हस्त (हस्त) सव गव नय व ह नयं हस्त गु ना त्री स. थ म नू ध न

कृ ता खं य क न ज्ञाय म कृ । ऊ उ थं खा खा तु क ॥

॥ थ ग म द वा न ध य ॥

॥ पा द या मू ल मा स्त

य क दा वि द्ध स्र या न पि । आ धा वि स म व कु धः त द हं मू प सा म्य नि ॥

॥ पा न लि स (म लि कि नं ला हा

हा त म्भिव कृ न ग क या वि स ग या य न प्थं स्या यी व । लि य त स ग त्री न द कं स्या यी व ॥

॥ हस्त न कृ न्ति द

हस्त धा सि गः हस्त या द या धि य न तु इ इः । त स्र धा क वा य नं इः खि त न । त या व ला इ य न वा न व कः ॥

हि स वि का न ला ग व थ हि न वि का न या ग व कृ हा या व ० ला हा ग स वा य ल या व ह स व हि व वि का न श सः

थ ह स व हि व ल ला ग व यी उ न प यं ॥

॥ थ वा न व कृ ध य ॥

॥ उ व हि नी उ क र्म्य स्र (स म्भ

ति मि त न व । त दा त स्या ति त ना नू न धा नी ना व द न नः ॥

॥ ख न स कं नि या इ व न (ह स्र या य नं वी

डावः खन चैरक्षयः उल्लूय मजिवः रक्षा उयः स्वथल वियः कृति न डाता मवायुः॥ ॥ थु उ वृ सु
 वागक्षयः॥ ॥ यगप कृपि नावागः कटि सभि पुवन कः। न सुवा कृ नृत येव जा म वाग सु उवाग ॥ ॥
 थु जा म वागः काप न पावः खनः कृ कट सभि र स व्या प न पावः कृ रक्षय क नः खलः कृ कटः उल्लूय क कृ या
 क॥ ॥ थु जा म वागक्षयः॥ ॥ छु ति नि दाना कृ य नि कृ म वाग नि दानः। व कृ वा त नि दानः। जा म।
 वाग नि दानं॥ ॥ रु उ स्तान वि (ग) षा च ल व क्ष ग वि (ग) ष कृ न॥ ॥ म ति गु श व न पा वि (ग) ष व
 स्तान वि (ग) ष वः। ना ग ति (ग) ष नः। ना म वि (ग) ष वः। अ नी ति वा त उ त्प र्ति र व ८० थु वाग व्या धि न वाग वि (ग)
 ष ना म द कृ मा ध व नि दान स सि द्ध नि॥ ॥ अ थ वाग वि कि त्सा॥ ॥ गु णि या र्त्त ती मू ला नि दे व दा न
 स कां जि कं पि ष्टा च्छं ले पं का र्थ वाग व्या धि वि ना ग नं॥ ॥ गु थ दि॥ ॥ गु णिः क्रा उ म ना जा य

श्रीगुरुगीर्वाणाय
ॐ नमः

हा दंत वायुः स्वदं स निस्पृध निमि संत वः काल थं जात्र पाया वागया ॥ वागया लेयन ॥
गुर्गुर्वाका वृणीषव गु हवी विरु ला म्हा सा। कीनले न पुने लन विव वा वृद्ध दानकं ॥ गुर्गुर्वाका वृणीष
गुदगु वृद्ध दान विरु ला लं खि इ इ थ निता दाय कं जल पु वि कन च्छु स्पं त्येन कं जा वृणीष वात ॐ मंगु या ॐ
व ॥ ॥ जा वृणीष वात या ॥ ॥ मा प्र कं व स्यं गु काम न पु गत क हलं। हिं गु से भव सं यू कं य जा दान वि
ना गनं ॥ ॥ मा सः सु स मि अ न पु क व सि क्क हिं स धू वि च्छु इ त्येन कं य जा दान वा ह न स्या क वात या ग मा क
॥ ॥ य जा दान या ॥ ॥ अ ला स्व ग न्ध ह वृ षा गु डू वी स ना वली ग म्हा न कं स ना स्या। थ मा ग वी थ्या व
वणी य मानी स ना ग वं स नि स म नि दू र्ध ॥ पु त्या ह वं को नि क म पु म थ द य क थ स वि वि ना इ ला गं अ का ई मा
उ कु त नः पु या ग म्हा त्या नू पा नं सु न या थ यू र्धः मं य न वा का क्क ज स न वा पि। जी वि व वा मा स न स न वा पि। क टि

ग्रहगृहसिवाङ्कदृष्टं हनूग्रहजानूनिपादयूरम॥ सन्निहितवाष्टिगतववान्नमर्जीगतस्त्रायगतववान्न।
 शम्भ ऊयंवाचकदृष्टधाने। वागविनाहृहयानिदावाग्। एवाह्निवाक्किषुखज्जवाने। एयादम्भ ऊय
 वदन्नि सिद्धाः॥ ॥ जथादम्भ ऊगुर्गुनूः॥ ॥ वागया॥ ॥ सूकम्पाः जग्धगन्धः ऊउत्ताः जग्धिता

गम्भवावः इगुच्छाः प्रियंगुः गवधिः मायसाः ०० मूः गुं धिः धनस्मरणगवृद्धिः असनवद्विगुर्गुनूवद्विधन
 वृद्धिः धनस्वलावस्वकलानवककायाव। जीमाधसंगतवः काकलंखसंगतवः इइसंखलावगतीसंभवतः
 नकंसर्वाङ्गवाननाग॥ अयनस्याकयां गृधुसीवानः वाहास्याक जस्याकः क्रकृस्याकः यत्तिस्याकः अथिउगि
 स्याकः कागसः गवसः स्यवसः वउगुवानः ॥ अथः नूः गम्भ ऊस्याकः यानिनायसः एगवानसः रुसनधालः यम
 स्यावः खूशवः थ जथादम्भ ऊगुर्गुनून थननायनागयाक॥ ॥ जथादम्भ ऊगुर्गुनू वागया॥ ॥

श्यापानः स्वा न वि धि त्री सु म नू या न सं स दाय का दे या य ॥ ॥ य ऊ वा ग या ॥ ॥ ख दि पा न ॥
 स लं ख स नि स्यं पा य ॥ ॥ ॥ ॥ वा ग या ॥ ॥ ग त यू ष्या दे व दा न ना ग ने न उ स न्ध व ॥ अ न्न पि ष्ठाः स म
 का कं ले पा वा न वि ना ग नं ॥ ॥ सा य सा दे व दा न ॥ ॥ अ न्न ॥ अ ल हा ॥ स धू वि ॥ धा त स्व क्रि जा नि स
 नि ना व पा य ॥ ॥ वा ग या ॥ ॥ हि म स्त वे ग स न्धु णि सो व र्च नं व दा डि मं ॥ वि वे दान क रू प
 व क म्य द्रु डा ग नू छि गं ॥ ॥ हिं ॥ स सि ॥ अ न्नि ॥ सू वा क ल ॥ धा त वी ज ॥ धा त दू र्ध न कं वा न ॥ ॥ अ न्न ॥ अ
 ता क ॥ नू ग द ह्मा क वा न ना ग ॥ ॥ ह न्री त की व वा ना स्त्रा स न्ध वं सा न्न व म स ॥ अ न्नानि स वि धि ने व न
 ग ये त्य व ता न कं ॥ ॥ ह न उ ॥ वि हा ॥ दू गु ष्ठा ॥ स धू वि ॥ अ न्न ॥ धा त दू र्ध न व दा ले नं कं ॥ ॥
 अ य ता न क वा ग या ॥ ॥ उ सा न धी स तं ता यं उ ह्मं ते लं उ ह्मं का जि क व स प या दि गु रं क र्कं वि उ कं

यद्विमर्शमेव वं च वा न ना जा दानू ना स्ना ग ज पि प्य ली पु सा त्रि ध म लं । मा सि त त्ता ग क पु थ क क र्ष मे
 ल पा चं जे गी ति वा ग कू डू नि मि ल ख उ ग डू सी अ दि त ह नू ल कू नि त्रा गू ह ध नू ल कू ना म नं ॥ ॥
 ग न्ध पु सा न जी का थ रं १ व क न रं १ स्व रं १ सा इ रं २ थ त स क क् वे त क हा वि ष ला मं ० ० ० मी
 स ध वि ति हा हा प हा दे व दा नू इ गु क्ता हा ग ज पि धी पु सा न जी हा ज टा मा सि न क व द न थ त क ता न
 क र्ष १ ता ग वि क न वू न ॥ थ सि क न या गु ण ज गी ति वा त दू सि खू कू उ ग डू सी ह नू ल कू मा उ स्या क ध
 नू ल कू आ दि त स म स वा त ता म या क ॥ ॥ कू डू पु सा न जी ते ल ता त या ॥ ॥ आ ला वा स्ता गु
 पु वी व न ग मू ली म हो ष धं स न पु ष्या व ग न्ध व रु वू षा व डू दा नू व ॥ य मा नी वा ज मा ज व स म ला ग म नि
 का व य ॥ हू र्म वू र्म मि दं कू त्या वि ज ल प द मा य कं पि व त्मा न् स व से यू षे व थ वा क्रा द के न वा ॥ स र्पि षां वा

पिवेद सुदधिमालुनवापूनः अस्मि संभिगता वायुस्त्रायु मज्जा त्रितययत् ॥ कटिग्रहं गृह्णसीव मन्यास्त
हं हनूगृहं । यवकाष्ठगता वायुः तां सर्वान्नामयस्वत् ॥ अरायना मन्त्रः (धूमं सर्ववाधियुष्मत्तनं ॥ ॥

सूक्तमालः इगुच्छाहा गुठगु अतिहा गुच्छि सायसा अन्वतन्ध ओ स्वां वृद्धा नू ०० मं अज मं स्महागव
नूया उं धं ल सुवालं न कं लाति संतव का कलं ख संतव ध त्रिति संतव ध तं सुहा स्यं न कं सर्ववातनामयाक

॥ अरायदूर्ण ॥ ॥ हपलसेधवं पंचगुणी प्रच्छि क विजकं । वंदे हलाटका स्त्री नि सर्ववात वि
कात्रनूत् ॥ ॥ सुधु विप्ररुग्निः पियला मलः विगकहा प्रजवाला उ प्ररुग्नि रुं ४ विकन रुं ९ १५ तया अ

नूजमन विकन मूनः अ विकनन गृह्णीवात जादिन समस्त वात विकाननाम ॥ ॥ सेधवादिने ल ॥
॥ अथः सूक्तसिवाहमं कपाध्यान निपीडितं । नूजार्हिसकं च ननं वातवाधिविनामयत् ॥ ॥

विंशति दंत धाटकं आलनात्तं तथ उच्छंते लभत प्रपात्यत । गृह्णीवात नूजार्हिसदि ४

मंगु. स्वधनीक. स्यउतातायाक. कुरुक. यतडाव. इवनेस्याक. धातनपीउनयूवागनागन. मन्वसि यः
नास्त्रापूषनविल्वानिसिग्रसेधव. मरुनात्. कुरुविद्यापयत्सर्पिः कुरुवातातिनाशनं. ॥ इ गु
हो कौ. पूषनामूल. बाल. विगु. सधु. वि. मरुबाल. विपी. धतस्रतागधलषूठं मस्यवागनाग. ॥
नास्त्रादियुतवागया. ॥ सधेव. प्रयसीनास्त्रागनपूषायमानिका. मुर्जिकातीतकुरुवपुष्टिसेवच
लंविउं. ॥ ववाजभाजाकननं पूषनं मधुकंक. ॥ उवा मईयलान्तागमत्. तुरुविद्यानिदापयत. ॥ पुस्त
मनपुतेलंचपुस्तवेनतपूषकं. ॥ कांजिकं द्विगुलक. मस्तुवद्विगुलंरवेत्. ॥ उगदस्तुसंरात्रंनैर्मृदग्रि
नापयत्. ॥ सिद्धमननुथाकयमानवागहवंपनं. ॥ ॥ सधु. वि. विपी. इगुकाहा. सायसा. ०० मं. ह
कजी. मनिव. क. ६. गु. वि. साहाक. विनि. सि. विहा. जजमं. बाल. पूषनामूल. ०० मी. धतउमसंरकता

१४५

नवाहलल्लिधमवर्णः विकनरुं १ सुटं ४ थतया जून कमन विकनरुं २ वयकं गृह्णीतवाग्रादिन स
मस्तुवागविका नभाचकनं ॥ **॥ भवेत्वादिनेलसर्ववातया ॥** **॥ जेवाहृतगतिर्यस्य स्थानरुः ॥**
कृतोत्ति तं वायुः स्थात्साधिकं जीवद्वातवागः समासतः ॥ **॥ जस्यवनजीवः थवरथनसुपुति**
या इंवा इगुवातवायनपीउवपूकः ताम्वाय ॥ भवेतावायमइय मनुष्या ॥ **॥ हंगनाजवला नास्वा**
कृष्टमईयलंरवतु विषस्यपलभकं वयवक्रानपनकथा ॥ **॥ सुहं वक इतेलस्य (गमस्य स्यवगुर्गुं ॥**
तस्मिं विषनेलं मरुवातविनाशनं ॥ **॥ गुष्ककावतथवागं नकवाते विनाशनः जर्दितसूटवागानां स्त्राय**
सुभिगतिषुव ॥ **॥ रुक्मपादजानुगुल्फकाद्यागविनाशनं ॥** **॥ हंगनाजः तयावाः इगुकाः कृष्ट**
नकृष्टरगः विषकषीयवक्रानकषीय वकाविकरुं १ गमस्य रुं ४ थतजून कमन विकनरुं

वयं के महावातया ग्रीवमडयाः वक्रवातयाः मरुतातः स्नागतवातः सन्निगतवातः हस्तगतवातः जानुग
 गतवातः गुल्फगतवातः पङ्कवातः धनवातनालयाकः ॥ **॥ विषमेल ॥ वातया ॥ ॥ हस्त्याः ॥ अश्वेः ॥**
 कृतं अथ न स्पविष्ठा कृतं संविदा हासनस्य । कृष्णं न कं विद हस्त्या गुतत्रु इष्टं प्रष्टं पादयाः धीयते ॥ ॥
मनीः पुनयाः । नानाविकारः शवसः । किमिः गतः । उदः गयावतलिलावकं वने । हस्त्याः वस्तु नयसः । समस्तहि
नः । दहनयावः । घातलिः सहेद नयने ॥ ॥ तसेष्टकं वायूनाः इषित न तस्याः बल्याः इवाते वातनकं ॥ ॥
 धनकसवायूनसंयुक्तशयावपीठनपूजा मीललयं वनजवः वातनकधायः ॥ **॥ स्वदात्यर्थनवाकाः ॥**
 सप्तर्षिः कृतं नित्यकः । सन्धेः । लेधिल्यमानस्य सदनं पीठकासनं ॥ **॥ वननिःश्रितं केहायुः उथ्यं रवयीव**
सासं सयः स्वधनवैके । गतं उत्पत्तिः शनः अथिआधस्याकः । अथिआधितनं मशवः । अरुसिवावः । अस्याककक

१४५

[illegible]

आदि न न क वागना स ॥ ॥ पिरु विदाहः संमाहः स्वदा मूर्च्छा मदः रुतः । पत्तिसहस्रं नृप्रागः । मरुः या
 कोह । मरुता ॥ ॥ हि मू । वंशामदः वनतिहाव । ॐ कुरु न वनिव । व्यासनायिव । धियमजी कस्या क हि
 धनवव । मउ । दग्गुरुव । हिनकं द्वाकः थन वागन क स । पिरु पुवलया ल कण ॥ ॥ पिरु रु न रुका म
 र्य द्वाका न गे ध व ननेः मधुकं जी न का का सी यू कं का थ सु नी त लं ॥ स र्क ना मधु सं यू कं वाग न कं पिव न नः ॥
 ॥ ॥ गिनिया न हा । मी सि । गी र व पु । ॐ हू मी । जी ल का का लि । थन द्वा धा दा स्पे न कं र्वा ड कं सा व न
 क सि क्क डं । पिरु धि क वाग न क ना न ॥ ॥ क रु स्ते मि ल गु नू ना सु कि स्ति न्धे त्व नी त ना । क पु म्मि न्दा व
 नृ न्द न्धे सर्व लिं गं व सं क लेः ॥ ॥ ॥ म्मा धि क या । ह म म म क्ष व । ज्या दु । स थ व वी क । वि क न लो क । स
 उ का उ य् । क वा सु य् । म न्द वे द ना । द न्द या थ व र ल क ण नि ना र द य् व । वि द ष व क वाग या स्व ता ल क ण द य्

[illegible]

यत्तम्व। यंति हाव। उपडवन न न गव। वलं मा सं जय शय। थ न क ता न ज सा ध। द कि ता उ म सु न या
इं त य जित। लाय क म जिव॥ ॥ न क वा न या उप ड व॥ ॥ अ त्व प्रा ना व क म स। मा न स का द नि
वा ग्र हाः॥ म र्छा प व न नू क लौ ष्टा क व मा ह पु व प काः॥ हि का यां उ ल्य वे स र्प पा क ता द उ म क माः॥ अं गु ली
व क ता स्तु टा दा ह म र्म ग र हा र्ध दा। अ ने नू प ड वे र्क मा ह ने क न वा पि य त्। अ क स्तु प ड वं या य। सा धा स्या
नि नू प ड वं॥ ॥ उ म इ न य म य व। थ सा व ह न प। मा न स का द स्या क। मा उ स्या क। नू (म उ म किं जा
त त्रि स्या क। प्या स द त। क न। अ वें ष्टा। हि कू। पू व र क कू द यी त। स्या क लो क द्या उं। य वी म इ सि। त व श क॥
वू कू। हि यू। म्म र्म स पी ज। थ न उप ड व न स हि त थो य। गो व रं मा न। थ न उप ड व न। गो व रं मा न य त्व न
म कि श व॥ उप ड व कू नू म र्म सा उ म स ल या उं इ य क जिव॥ ॥ वा न या उप ड व॥ ॥ स (श म

१४२

मदयवनः सामसत्यर्थं संवितः। अतिरुयनं दाषमूवतुतिपयन॥ ॥ (अथवा वातवः तदगुवात
याः आमसतिनकं मूनजवः मवता दाषयात्रवका नमदयूः खलसजामभाका दाषवायायनयं सानजव
थ उवृत्तु मूवातभाया॥ ॥ मक्का सिनी पुयूर्यागः (अथवा अतिमिगनवः तदा तद्वातिननेव तद्वा
नीतावचनने॥ ॥ य० का न सयूनयश्याव संकेसजीवः अतिक्काकः अतिखनपायखा उः वतना।
म५॥ ॥ यनकीयाविवगुवृस्यातामतिरुयनव (थो) धानासमदस्तेमित्ततडा कर्शवृविहने॥ ॥
मवया खलथं लावनयूः निगुलि संज्या उवथ॥ ॥ उरु रुनवठः अक्का रयानाथं स्याकः रुमसमभावं अरु
खानलायूः वृविम५ रुनदव॥ ॥ ॥ संयू को पादसदनं रुकुर्कुर्कुनलसूफितः तसूवृत्तु मित्ता रुना
द्यवातमथयन॥ ॥ पातलिः थकायमजीवः कखनथ रुनजीवः स्वथलवकः थ उवृत्तु मूभा

अथआमदाननिदानं५

यथावागनागक्षकंभवतक्षयुःथवागनागमख्वा

॥ तिरुलायिप्पली मूलं ववाकडकलाहिणी

लिरुवा मधूना चूर्णं मूत्रं कृत्वा दिनत्रयः ॥

॥ विरूपाक्षाय नमः ॥ सिद्धिदकस्तनमस्तु ॥

नवालेनकं खपायच्छाकथं नयीकनायनाय ॥

॥ इन्द्रकृत्या ॥

॥ पाददाहाहिता ॥

ॐ विष्णुः पूरुषो हवेत् । इन्द्रमुत्तमं हवामासाधयदन्धधामनवं ॥

॥ इलाहियूवनपीउनेयू. हानु

माथं खल पायस्या क ॥ ५ ॥ उरु रु न मो व क रु व

॥ तेन थ ध्य म श व गा ले व ल नं सा ध्य य जी व ॥ ॥

॥ ॐ ति नि दामा कृ प नि कु म् उ न्नु म् वि कि त्सा धि कानः ॥

॥ वायूनायुत्रिका संक्षेपम् ॥

स्त्वनं युष्मवति। तनाएथविद। ग्मासी क्षमनी यु निप यते॥

॥ वायुषवत्तुननाम् ॥

नसवनीव. नू. गम. उनथ. दह. नथ. मरुते. थ. ते. श्याव. ना. जी. सु. व. स. न. य. न. ॥

॥ वातपित्तकफहृत्पाह

षितः सान्नजा वसः स्रगं स्रति स्रन्ययंति । नानावर्ण्यति पिष्टिलं ॥ ॥ नडी स्वहृत्रयू मुखद्वारस
हृदयं रुवः वारुपिरु स्रव्यन । आसस्रुर्दिषा तु मगलं । अत्रया वसतर्जी मभय कत्रं । नानावर्ण्ययातं अ
तिथ्युयू ॥ ॥ जनयस्रग्नि दोर्वलो रुदयस्रवर्ण्यनवं ॥ ॥ अग्नि इर्वल रुयू नू (म) उज्या रुयू ॥
वाधिना माग्रया अमसं क्षति दातृणः । यूगपत्कृपिता वता त्रिक सभि युवतको ॥ ॥ आमधयाना
मः अगिष्ठा कः रुर्दिजा दित उं वातव स्रव्यन नापं कायनयू त्रिक सभि स्रवानिव ॥ ॥ अजीर्ण दान
साजातसंक्षिन्नवकु मलवेः । स्रजामसं रुका रुयलि शान्तय धावना ॥ ॥ अजीर्ण आदित्नस्रनजा
यत्रयू धावस्रपत्रिणा तिनस्रतावता उं ॥ ॥ आमधक स्रुन ॥ ॥ आमनः माउ नं रुनं स्रकत्रं ॥ ॥
स्रुचं वाकृ नृत्तगम उ मासवातः स्र उवाग । अंगमर्दा नृवि लुक्का वानसं (मे) नवं रुनं ॥ ॥ रुकायू

श्रीमवातयाः कृच्छ्याश्यानाथस्यायूः नृविमद् व्यासवायूः तान्वायूः कृच्छ्यायूः काउयूः ॥

अपाकः गूलतां ज्ञानां श्रीमवातस्य लक्षणं । सकृदः सर्वभागनां यदापु कृषिता हवेत् ॥ ॥ पाकमशु

वः कृच्छ्याकः श्रीमवातस्य लक्षणं । सकलभागयोः सितं च श्रीमदयके तव कृच्छ्रः गुरुवले सश्वः उगुवले सं उ

पचात्रयायमानः ॥ ॥ हृष्टयोदनित्रागुल्फे विकजानूत्रसन्धिषू ॥ ॥ लाहानः पातलिः माउः गुठि

सामसंभिः पातलियाः खलपायया सन्धिसः ॥ ॥ कनातिसकनं (म) थं ययदाषः उययनः । सुदसाद

अनसार्थवाधिविष्वद्वद्विकः ॥ ॥ कनननं गुः मंगुः तथामृच्छागुवसुनयं यायूः थथयसुववन

यं विकृतताकथं वदनाशयकनः ॥ ॥ जनयत्सामि दोर्ध्वल्यं पुस्तकानूवि (मे) ववं । उत्साहहानिवेन स्पंदा

हंववद् मूकता ॥ ॥ उपजयलपूः श्रीमनः अग्निमदः उरुगमयूः नृविमद् कृच्छ्यायूः मनहर्षमशुवः हि

१५०

युवा अधिक रुयं मालिव ॥

॥ कृष्णक कथिनतां गूलं तथा निडा विपर्ययं । तच्छुद्धिं उममर्कवद

सुहं विद्विवधनं ॥

॥ यतता कृयुः स्यायुः कृत्तमद् व्यासवायुः धनवयुः कृयुः अथवा रुयुः नू

॥ उममर्क निवः मलवध रुयुः ॥

॥ मातृक कृत्तमानाहं कष्टं वा न्या नूपडवान् । पिलासदाहवा

गन्धसगूलं यवनानूगं ॥

॥ कृष्णकर्मयानानं असामर्थः यततावः यततावः लायकमजिवः म

वतादका उन्मृष्टक्याथं उयडवः पिरुतनलः हियुः वातननलः स्यायुः मनिवः ॥

॥ सिमितं गुर्वक

॥ कृष्णकर्मयानानं असामर्थः यततावः यततावः लायकमजिवः म

॥ वननिहायुः ज्याउ

वासुः ॥ अथ अधिकया कृतादावः शतालसाधः नितादावः शतनासः उयके धाकृ ॥

॥ सर्वदेहवनः

॥ अथः सुकृष्ण सन्निपातिको सर्वाभिः ॥ अथ याग रुवकः सन्निपातनत उक्ता उयके धाकृ ॥ ॥

अलं वृषा (गम) कून के मूलं वनूक क स्यवा गुडूवी नागलं व नि स्य रा गम नि वूर्ध्वयत् ॥ कां जि के न त तः ययं
विजल पदमा उकं ॥ आम वाग पु वृद्धा पिथा (गम) य म स गाय मं ॥

दगु ॥ गुणि स्म रा ग दूर्ध्वया उं क र्ष १ धा न लं ख सं ग व सृष्ट सं ग व हा स्ये त्वे न के आ न वा त ना म अ म त
थां रु नं ॥ ॥ अलं वृषा दि वूर्ध्व ॥ आम वाग या ॥ ॥ स रु नि डा व वा कू ष पि णा ली वि न्व त ष जं अ ज

जी ला ज मा ज व य वि म धू क से न व ॥ ७ ता नि स म रा ग म नि स्र म वूर्ध्व नि का न यत् ॥ त वूर्ध्व स र्पि षां ली यां पु र्य
हं ह क य न्न नः ७ क विं न नि वा ज लं रु क यं प्र ति ध ना न नः म य द न्द रि नि र्धा षा म रु का कि ल भ व व ॥ ज उ ग म
उ म् क त्वं लं रु क ल्या व का ज यत् ॥ ॥ क ल्या व क ली रु ॥ ज उ वा न ग र्ग उ वा न स क वा त या ॥

क वि रु न् वि हा कू द पि षी गु णि अ ज म् जी ६०० छ मी स धू वि स स रा ग दूर्ध्व यत् स वा नं न कं कू २१ न कं ज

१५१

उवातगर्गउवातमूकवान् ध्यातनागयाका ॥ स्वनहिनिवा ॥ हनिडादिवातया ॥

अजमाजयमानेव अजाजीकालवीतयम् । खवां वसंश्च वं कृष्टं जानंवेव पूनर्नवा ॥ त्वयं विप्यली मूलं वि ति
मवाइकार्षिकं त्रिक ४ क म नावा दवदा नूरुलजयं ॥ तालीन कृषलं मूलं कषिक मय कल्ययत् । पत्तुषीगु
मर्नं तापि अथवा गुठमवत् ॥ अर्दिवातं वनकं वउतुल्लिहं हनूगुहं । पजाद्यातं कटी मूलं । सर्वा मकायपी
ति ॥ अग्निं वक्रुतदी किं सर्वेषां वातनागिनां ॥

॥ अजमं ६० मं जी । हजी । सिपि । सधुवि । कृष्ट । यवा
जान । पूनर्नवा वंश्च व । तजयत् । विप्यली मूलं । वि तिसि । मं ५ लग । लि क ४ । दा क ४ । मसा । गुठगु । दगुका
दवदान । त्रिरुता । तालिस्त्रां । त्रिक २ । क म । ध्यातित्व १ लग । त्वयं गुं गुनि । ध्यातयू । पूताकृष्टवत्तावगुटिका
दयकं नकं अर्दिवातं नकवान् । उतुल्लिहवान् । हनूल्लिह । पजुवान् । जलस्याक । सर्वागस्याक । ध्यातनाग । अ

निवेष्टियाक ॥ ॥ अजमातादिगुर्गुन ॥ वाग्या ॥ ॥ ~~वलाग्वगन्धमलदात्रनास्नास्ति~~
 नाववानागवनासहेत्याश्रुक्नवन्दनपूष्कनाकाः नटगुहूचीत्व (ल) रुमं व काकोलिमदविदात्रिचिप
 कं सगुर्गुनजीवकनामकं व (डा) कागुर्गुनागवधन्यकं व (उ) तेनुसर्वसमहागयूके स्तेलं पव लायम्यतुं व
 मस्त्रासनात्रंदधिइग्धयूकं दत्वा समासद्विपद्विधिरूः तन्नावनालं जननस्य पातं निरुद्धि धावात्र विवर्णगोम
 त्। कल्याणकं नाम महश्चतेलं। सक्तुयत्कास्मूकनाम (धेयं) दधुपतानादिववेयमानां सपिष्टिगाकश्चिरत्ख
 अकृष्टाः पुनर्नवानाग्वजवाहिन्यामाः। तव कितने तव लेन सर्व। अर्धपिलग्नः सकृदेव देह वस्तु हवमावूत
 विक्रमस्य वन्धविपूषलरुतमलपुलं। दीर्घायुसर्वगुलेनूयनं अष्टपुवागाहनवश्चरनास्मि महादधिलं
 ययतीहवलाः। नवागजावहिनतेलनाजं नागन्कविलंघयनं समर्धः ॥ ॥

॥ महाकल्याणकतेल ॥

गुलं

११२

ध्वविक्कनयागुणः दधुपतानकवायुजादिनः क्वकंपवातः कूडः खूः कूडः जर्गः हगन्धनः आदिनः समस्तवातनाम
 याक। **ध्वतेवातप्रागसुः समूडपानयाताध्वेवातयायजिवः॥ ध्वमहाकल्याणकतेलनाजन॥** ॥ प्रसा न
 ध्वविनिदिष्टगतमकं यथकयथक। जलडा। गगलेकेकं साधयं कुं भ्रूटिर्नैतं। प्रसावधीममं वृं पचह्यय
 म्मि। गगुहं। पाद। गघसमनेलेंदधिंदेयात्सकाजिकं। दिगुगंतवपयादेत्याकल्पादिपलिकथम्॥ विप्रकं विष्य
 लीमूलं मधुकं स्युधवं ववा। गगयूष्यादेवदावूनासावानलपिष्यली। प्रसावध्वमूलानिमानिहर्लाटकस्तथ
 पवत्सुधमिनातेलं वातध्वमयायहं। जर्गीतिनवतात्रीह्वान्वातनागमन्वयाहनि। कूकृत्तिमितयंगु
 लंगुडसीखजंरकादितात्॥ हनूयवृत्तिनाग्रीवं हूहूमानुनियक्कमि॥ ॥ कूकृप्रसाविलितेल॥ ॥
 प्रसाविलितगिगुहिरिन्नरयाडंकायावलंरारुं ४ सदायकं प्रसावधीकृगुलिनप्रु ५ ध्वतेत्याखेनग

तद्धि पल १०० दायकं पादसप्तमसविकं. (धो. स्व. धू. या. इ. ग्रा. सा. इ. द. न. य. उ. म. स. ल. च. र्. न. य. वि. उ. क.)
 पियलात्तल. ००० मी. सुधुवि. विहा. सापसा. दवदा. इ. गु. क. क. सु. वि. पी. उ. सा. न. दी. या. हा. ज. ता. मा. सि. र.
 ला. त. य. थ. न. वि. क. न. व. स. व. य. कं. वा. त. (ध. म. ना. ग. म. नी. ति. वा. त. मि. सा. मि. ज. न. या. के. पी. उ. न. य. वा. त. ग. ध. सी. वा. त. ॥
 ख. अ. र. ह. न. र्. क. न. ज. ल. सा. क. मा. द. सा. क. ग. ल. पा. त. सा. ग. नी. र. अ. व. य. व. स. न. क. म. र्. उ. न. ना. न. ना. ग. या. क. ॥ ॥
 ॥ मा. व. उ. स. स. मा. द. य. प. व. स. म. य. क. ज. ला. ट. के. पा. द. (ग. व. न. स. त. सिं. जी. वं. द. ला. व. तु. म्. हं. उ. स. व. ति. ल.
 ते. ल. स. क. लं. द. ला. प. व. धू. धः. जी. व. नी. या. ति. थो. न. य. क्षा. न. त. य. धा. स. से. ध. वा. ॥ ना. स. ता. म. गु. का. म. धू. कं. व. ला. वा. ष. ठि. कं.
 क. कः. प. जा. या. ता. दि. ता. वा. त. क. र्. स. र्. व. दा. न. (ग. म. न्दे. प्र. म. र्. मि. मि. ल. व. ति. दा. ष. ज. क. स. क. म. य. नि. नः. क. म. य.
 वि. न्द. वा. म. र्. व. वा. दू. कं. क. ला. प. ख. अ. र. स. म. य. पा. ना. ल. य. अ. र. न. व. ति. व. मा. व. ने. ल. मि. दं. (प्र. स. मूर्. ज. उ. ग. दा. प. हं. ॥ ॥

१५३

(६२८)

रुं १ मा स रुं ४ लं ख का थ दा य पा द (ग) ष स रुं ४ सा इ इ त य रुं १ हा म तिकं त य पा क या य ॥ उ म स ल क
क त स्ये ॥ ल ली क सा य सा स्य धू वि इ गु का स्र स मि ६०० मी व या वा त्रि क इ लि क ४ दा क ४ ॥ ग म घा न
थ वि क न न वू य कं य का या न न पी उ न पू उ क र्ण मूल अग्नि म न्द य वि ग्र म मि खान म ख ठ त्रि दा ष ग नी
न उ क गु इ सि रू थ वि क न ता स्यं वू स्यं मूर वा न जा दि न थ गे वा न ना ग या क ॥ ॥ मा ष गे ल ॥ ॥
प ले षा उ ग पु सा न थ ज ल डा (ग) वि पा व य न छि न रा त्रा द य य धी वि ष क क ठि क क थ ॥ उ ता न्द ग य
ला न्ता ग म न व उः पा दा व (ग) षि न् ॥ उ ल्क द यं य य स्या व ॥ द ग ना ज न सा ई कं ॥ उ ल्क व तिल गे ल स्य ग न्ने मृ द
मि ना प व न् ॥ त्रि रु ला त्र ष ष ग जी सि भूः सो व द न्ति उं ॥ त्रि सृ ग (अ) ज मा जा व का व वी च य वा व कं ॥
जा गी रु ल त्रि उं गं व न न पू षा गु णं त थ ॥ हु व व र्णं व व नू णं ला ज्ञा ना हि न व न्द नं ॥ उ षा न का न्द म हा ग म न्

लक्ष्मणनिकायम्। विजालयक्रिमान्मानिपलक्ष्मणकं हिषकाकाध्यादावगणधनसिद्धं पु
दाययत्। मानात्यजनेधनस्येव जायामवापारुति। हस्तपादसिन्धुस्य अर्द्धमिवायुपीडितः आमवा
तहवयस्य कर्णनाद हनयवम्॥

॥ पुस्तान्वी पु१५५ लंखं ४ काधदायः इगुकाः सानवणी पु१५
पणी। वितका कलकाली। धनं पु१० हं २ सा २२। हंगनाज नस कर धनकाधदाय वतुली गसक हागल
नके। हं १ हा मविकं तस्य वल्लू हन सिद्ध्या वदायक उमस लक्ष्य॥ विरुला। विकटू जी। स्वधू। सोलाक १५४
वउवि। विसृगन्धे। अजमं हजी। सिपि। कसू। हिंसा। विडिसि। सापसा। वनूवसि। हसवधू। दधि। लाहाज
कवन्दन। धनं लव १ हाग वल्लू। हठि। ना। धंगलना। पु१२ काधदावगणध॥ धविकननवयके। नसध
नके। धनं न प जायाम। लाहाउक। पुनितक। निवउक। वाक्त्रं सनकेमजिव। आमवात। कसूयनहा

मुः धनं नाग ॥ ॥ मा **सनेल** ॥ ॥ अष्टवर्गं सयस्त्री कं लता का कृष्ट संभवं । नास्त्रावलात्मगु
काव । वाताविमदं न तथ ॥ अथा मार्गं समं जिह्वा समरागमनिका वयम् । व्युत्तनेल समं कृत्वा जीव न सह
जावयम् । हनुस्तु मुनिनाथा । गज इवायूर्यादिनां । अहियागा दन धाने वक्र कर्म समन्विता ॥ पत्रिभूक न
नः कुर्यादवगमं हं वि । लषणः ॥ नत्थ मत्तं जनं वेव हि हयम् मयुयाजयम् ॥ ॥ **अष्टवर्गं दियममनेल**

॥ ॥ साधयित्वा जल डो । एवला सहवल स्यव । पाद । लषणं वेव लेलं दत्वा जीलं कुरुगुणे ॥ वन्दनगुम्
यस्या कर्मथी । इव कर्मयनं । सन्धवं वाज मा जवका कात्याजल काम्युले ॥ कृष्ट सोवर्चनं धाव नास्त्राहमी
ककलुकः ॥ गेन कृ समं रागे न कृ नाया पलाष्टकं । पक्षयुयाजयत्या न सा ह्यं गमनां वनयिवा । उड्डीवा
ने कृ । क्षवाते पत्राणां व वा कृके । कस्य वाते निवत्क म्यनिनाथा । गग थदिता ॥ सर्ववाग कृग ना

(म) करुमदपुननिता ॥ ॥ सहचलायते ॥ ॥ यज्ञवागादि सर्ववागया ॥ ॥ ह्येन
 उवला नास्माकं मर्षयलं रवन् । विषस्य यलं मेकं च यवज्ञानयलं नथा ॥ पुस्तं च कइते लस्य (म) म
 उ स्यव पुर्णं । न सिद्ध विषमे लं महावाग विना ननं ॥ सुफजावरु धावति न कवागतिना ननं । अदि
 न मूटवागं व स्त्राय सभिग न स्यव ॥ ह सुपाद जानू गुल्फ यज्ञायाग विना ननं ॥ ॥ हंगनाज अवनहा
 वयालो इगुका कइ धात त्वरताग ७१७ स ७१७ यवाखान यका विकरुं १ (म) मूयुं ४ धात वुं
 वृस्यं महावाग न कवाग मूटवाग सच सधाडवाग लाहा गुति य ७ गुति यज्ञवाग धात नागया
 क ॥ ॥ विषतेल ॥ ॥ गतावलीवागु मनी यष्टयली सवीवला ७ ल ७ स्यव मूला निवृह
 स्थापुतिक स्यव ॥ वधूक स्यव मूलानिग धा सहचन स्यव । ७ वां दनयला हाग नु जलडा (म) विपा

१५५

२३
॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

वयं न। पादाव। ल। वयं रुं तं ग ईवे व सु मा वयं न। पुनर्न वा व वा दा न न ता दा व न ना गु नः। ने ले यं
त ग ने कू ल म ला मा सी स्ति ला वे ला। अम्ब का स्ये न न ना स्या य ला दा नि नि पी यय न। ग व्या ज यय सा
पु स्तं ई न उ व पु दा यय न। स मा व ती व सु पु स्तं ते ले पु स्तं वि पो वयं न। अ स्य ते ल स्य सि द्धे स्य गृ वी र्य मे
तः यने। अम्ब नां ता त रु म्ना नां कू ज ला ना नृ भ क्था। ते ल म न स्य या कू वीं सर्व वा न नि वा न लो। आ यु श्मा च नः
वः पी त्या नि च य न द टा र व न। अर्ह म च न ती वि या न किं पु न म्मा नू षी ग थ ॥ इ च्छु ले पा र्ब तू ले व न। थे वा छी
रु व द नं ॥ अ प वि ग पु मा ला च ता न व कू ह नू ग्र हं का म ला पा पु ना गं व अ म नी वा गु ना ल य न ॥ ते ल म न इ ग
वां च वि श्रू ना य नि की र्ति तं ॥ ना ना य न मि ति रं व्या ना कं क वः सर्व वा न नू न ॥ म हा ना ना य न ते ले ॥ ॥
॥ वा न या वि कि स्ता ॥ ॥ उ ति स्वा खं हा। द व दा व कू। स्मे ला ग। स्व धि न नि सं दा य कं पा य वा त

नस्याकया ॥ ॥ अहिहा वयासाहा इगुक्काहा गहावि जामाहूतसिहा स्मतागकाथदास्यंतितानकंहि
 वावया समस्तवागनस्याकया ॥ ॥ इध्रिवस्थानपूलागगरजीलागवनिनावत्वाकनालसपायसलारनस्या
 कया ॥ ॥ घृणपंधघृणसीधअलेपूधकस्थानयानिपनूलयानिस्थधिर्लंखसमतागदायकंदूय
 रुसनथाकया ॥ ॥ वारनिहसवस्थायाहाकृणहा नकिजठामासिकूदजिहासीधअपामार्गवि
 तकस्मतागकर्पवमं९विकनप्र९षुडंयकंमनायंवि०००स्यअभययधनमिडया ॥ ॥ पकाविहा
 हजीकूदकयविकनसुषुडंवायसुर्वीगमंगुया ॥ ॥ ०००मंविपीवास्यंयालिनिनावयालविनावका
 कनडनरुसयावाययंडसडया ॥ ॥ कृणहाकाउकलेहास्थानहामलककोलावृषकनकसु॥ म
 शाहंअंवनधतनिनावयायवागपिरुया ॥ ॥ पटपूमविव०००धमीलंखसनिनावपायक्राससु

११५

धनं ॥ ॥ सूर्यवातया ॥ ॥ जिह्वा मीकू सि मन् ग्वय अं वन पिपी प्युत कलि ध्वन न कं रवा खन
वात नाग ॥ ॥ अमृता मधूक दा का तिरु ला नाग नं वला वा सा न ग्वय वृषी व दव दा नृ पिक कं । क इ
का ना हि णी रुक्मा का मर्य स्य पला निव । ना स्रा रुव क न क्षव । वृद्ध दा नृ वला स्य लेः । क ल न हिः समं क ल्या स
पिं पु लं वि पा वय न् । क्षणी व सः समा दा यः वा नि ति गु ल सं यु तं । सम्य क सि द्धं उ वि द्या य । ला स्य पा न रु स स्य
न ॥ व द्वा दा धा लि तं वा तं न क न स रू र्छि तं । उ ला नं वा पि ग म्ही नं ति क्क जं या उ नृ जा न कं ॥ का स नी र्व म हा नू
स वा म वा नं व दा नृ । दा रु ना ग पु स्र स्या स्यां व द न वा नि वि ल्प ना ॥ मू य क्कु सु दा व र्त्त पु म रू वि ष म क्क न ॥
ना स र्वा त्रि रु स्या नृ वा न पि ल क रू हा लि तं । स र्द का ला पु या ग न व र्त्त य व ल व र्त्त न । अ पि त्या मि स्मि तं ॥ ॥
पु न म न द नृ रु नं ॥ ॥ अमृता दि घृ त वात या ॥ ॥ व क्रि वा स क म र्म क क नि वा प य त्ति

त्रनृहं। नास्त्रात्रा। हि लीना जवृक कृत्रक क्षात्रा नृग न्ना स्तथा। कृष्टन वृत्र ला विहीन कीयू न का थ स म्य कृ पित
तु। दा नृत्त क पा वि पा द यू ग ल वृष्ट व त कृ स्त ल। दा ह। म थ नृ जं क वं व कृ ह गं वा ता ह। म्था नं ह वं॥ ॥

मधू का य क षाय॥ ॥ म वि व पि य ली लु ठी से भ वं म धू कं न था। ला का जा नी ह लं कृ ष म जा जी का न वी कृ

था॥ य मा ती न ग यू था नि ला गं व व रु र्म्य सि केः ध रु न व स कृ उ वं ने लं वि प ल म व वा। ने ल पा वं पु ल पं व ले व ना

द्या त ना ल ने ह स्त पा द वि स्त म्य क म्य वा त वा पा ह नि। उ नृ त्यां जं य मू लं व अ र्म मू ल क टि मृ हः॥ ॥

ध रु न ने ल क म्य वा त या॥ ॥ म वि वा स र्ज म जि ह्वा य वि सि के य या चि ते ह ने ल प कं पु या क वं यि

अ र्थ वा त म्भ गितं॥ ॥ वि पु ने ल वा त व क या॥ ॥ म लि वा स र्ज य ह्वा क म धू सि ह्वा य या चि त्वः

नेः सि ह्म म व पु जं ने लं वा त व क नृ गा य हं॥ ॥ न ना जा ने ल वा त व क या॥ ॥ कृ ह वि न क वि पी

क स्र स धू वि द गृ ह्वा न कि अ मृ लि सि ज ना मा सि मि कृ सि मा ह नृ वि डि सि सा य सा पु सा न नी॥

१५१

यातिरुं१ लंखरुं२ साइइकुरधनितकुरस्य॥धकुरविकनकुर१ धनदायकं वूयकं वातया॥ नकुरवात
क्राकनवान॥धकसीकया॥ ॥धननकुरवातयाविकित्ता॥ ॥कुरुंग्रीवैकुरादीयं१
नदावूयकनलं॥जजगन्धवन्धवयवसर्वयनेलकं॥जक्राडमाजयागसाइवूक्तुकादितः॥यिवेन॥
कुरायातेल॥जामवागया॥॥वूक्तुकाया॥ ॥सेधवं॥प्रयसीनास्त्रागतपूषायमानिका॥स्वकि
कामविवंकुरुं१॥विसेवचनविडं॥ववाजभाजालवगपेधनं॥मधुकं१॥ध॥॥नान्येधपलान्॥गगन॥नक्र
ति॥स्त्रानि॥दाययन॥॥उरु॥मलपुतेलस्य॥उरुं१॥वंगनपूषयजं॥कांजिकं॥दिगुं१॥दत्तामस्तुं१॥वदिगुं१॥न
ध॥॥॥नसं॥हृत्पसेरागं॥सने॥मृद॥मिनाय॥धन॥सिद्ध॥मन॥सुथा॥क्रय॥मा॥मवाग॥हृनं॥यनं॥॥याना॥सं॥जनवसु
च॥कथा॥एनि॥वलं॥हृत्॥॥वागादि॥नक्र॥ल॥न॥कुं॥कटी॥जा॥नू॥र॥सां॥विजे॥न॥॥नू॥ल॥हृत्पा॥र्वज॥वाग॥हृत्कु॥स॥

त्रिनिषीडितः वाक्कायानादिनः तादृजकुट्टिनिषीडितः ॥ अस्मिन्निषीडिते ज्ञानाग्नौ नान्यथा पुनरुद्दिता
॥ ॥ वृद्धस्यैव वायते लज्जामवातया ॥ ॥ ॐ ति वाक्कायानादिनः तादृजकुट्टिनिषीडितः ॥ अस्मिन्निषीडिते ज्ञानाग्नौ नान्यथा पुनरुद्दिता
किंसाधिकावः ॥ ॥ ॐ ॥ अथ गूलनागनिदानविहितसा ॥ ॥ दाधेः यथ कुमसा

मदन्तेः गूलनागनिदानविहितसा ॥ ॥ दाधेः यथ कुमसा
पिह ४ वाक्कायानादिनः तादृजकुट्टिनिषीडितः ॥ अस्मिन्निषीडिते ज्ञानाग्नौ नान्यथा पुनरुद्दिता
नवायुना जा शयीव ॥ दाधेः यथ कुमसा ॥ ॥ दाधेः यथ कुमसा
जाजनयदिगूलनागनिदानविहितसा ॥ ॥ दाधेः यथ कुमसा
वायुकायानादिनः तादृजकुट्टिनिषीडितः ॥ अस्मिन्निषीडिते ज्ञानाग्नौ नान्यथा पुनरुद्दिता

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यस्य कृतिन स्यात् ॥ अजीर्णं स वर्षा कालं स अतिष्ठा उत गीतं स वाक् स न वायु काय शयीव ॥ ॥ मू
कर्म कृ ॥ अप स मं प्र का पं ॥ विज्ञात संतु न ता द रं देः संस्य द ना त्यं न न म र्द ना येः त्रि ॥ ॥ कृ ता ये च स म प्र
याति ॥ ॥ ख छि र नं स्या क ख छि र नं म स्या क वा न या क मी थं थं न स्या क म ल गु द्वि म द् क्वा क वि क
न न ॥ स स त स म र्द न या स्यं ल उ गु थ उ प स म ॥ ॥ थ न वा न म ल ॥ ल ऊ व ॥ ॥ या म्या दि या ग द न
ने वि द र्थेः पिरु उ क र्मा लु क ना ति गू लं ॥ न भा ह दा हा र्ति क वं हि मा त्यां संस्य द मू क्थ म ल प य क् ॥
य व ज्ञा न आ दि न स व न पा व अ प थ व लु क अ धि क न या व पा उ पा लू अ धि क न या व पिरु उ का प शू य पा
स वा य व द्वा म द् हि य ता पं ना य ना ति स्या क व न ति हा य म ल रू वा व ॥ ॥ म ध्य दि न कृ पा नि वा र्ध
ना उ नि दा य का लं ज न दा ल य व गी त नि ती तेः स मू पे ति ल किं सृ स्या द् गी ते व ति हा ज ने च व न व न ज ल

वलादिमाशेः॥

॥ वाक्रीसु. वाचासु. क्षु. आघाटसु. आश्विन. कार्तिकादि. वाधनपू. पिरु. गीत
कालसु. स्वा. उव. सुनयासु. स्वा. उप. नार्धनं. भ. क्रि. शयिव. वनवन. जलवनया. नानयासु. मधून. आ. हा. नयो. सुं. ॥
भ. क. श. य. ॥ ॥ पिरु. मूल. याल. कु. व. ॥ ॥ आनूप. वा. त्रि. ज. कि. ला. त. प. पा. वि. को. ने. मी. ध. क. पि. क. क. न. रा.

गिल. सः. कु. ली. तिः. न. मे. र्वा. ला. स. जन. के. न. पि. हा. ज. ने. वा. ॥ अ. म. यु. का. प. म. प. ग. म. क. रा. ति. मूलं. ॥ ॥ रु. सि. म.

सु. अ. दि. न. व. न. व. न. या. रा. द. न. व. न. या. रा. ज. ल. व. न. या. रा. इ. इ. ध. त्रि. मा. स. वा. क. उ. वा. क. म. धि. खि. व. त्रि. हा. म. ल. १५२

जा. ह. न. वि. क. न. भ. व. ता. २. ॥ अ. म. वा. ध. न. पू. व. मु. क. न. या. व. ॥ अ. म. ना. ती. सु. व. ज. व. ॥ अ. म. का. प. न. या. व. ॥ अ. म. न.
मूल. या. नं. ॥ ॥ रु. ला. स. का. ग. न. द. ना. नू. वि. सं. य. सु. के. ना. मा. प्र. य. सि. मि. त. का. क. नि. ना. गु. नू. त्वं. ॥ रु. क. सु.

दे. व. हि. नू. जं. क. नू. ग. ति. मा. जं. ॥ सु. र्या. दि. य. थ. नि. ति. न. क. सु. मा. ग. भ. व. ॥

॥ नू. (म. उ. ध. व. भा. सा. व. य. स्या

क. नूविमइ. ॐ लहाव। आमाग्नयसुहदनयू। माउज्याउ. नयउनुं. जतिम्याक. सुथ्यादयस. संध्यास. नी
नसमयस. गिनिलकालस. गीला. विला. वल्लकजु. चेउ. वेगभस. ॐ ब्रह्मलवाधनययू॥ ॥ ॐ
ब्रह्मलयालकृष्ण॥ ॥ द्विद्वामलकृष्णनेत्रनेत्रिद्याकृष्णद्विद्याषजं॥ ॥ निताश्यालकृष्णदगसा
दन्दगुलसिय॥ ॥ सर्वपूषाधपूषसर्वलिंगं विद्याहिमसर्वहृदहिगुलं। हृदहमनंविषवजकल्यं
विवजनीयं पुवदकिगहाः॥ ॥ सर्वविद्रुदल. सर्वदासमन्त्रियात. ॐ ब्रह्मलवाधनगुलयासर्वलकृष्ण
गकसिय॥ ॐ लायकेधकृ॥ ॐ ठिवाधगुलयाविषधं. वजमंलकधो जतिच्छाक॥ ॥ सागापदली
सवमीपुनूत्वं। हेमितासानाह. करुपकोहेः करुसलिंगमनिसमानलिंगमाभाहवंगुलमूलाहनकि॥ ॥
धतगुडूनडाव. नू। गउमच्छिह. धनवयीव. धतलाशकयू. ज्यागुयू. ॐ लहाव। ॐ ब्रह्मस. धाकोदावदव॥

थजाम न जात्य न पुंशूला॥

लक्ष्म्येतिः॥

॥ वलिहल्लुठपाण्यवसुसुल्लकरवातिकः । कजिहल्लुनाहिमल्लवसुसुल्ल

लेकह्येतिः॥ ॥ वसस नू(म)उस गलयतस वीकोस स्यायु ॥ ॥ वाग (म)अन जायने पूनूल सिय
यत स्यायु नू(म)उ नाति स्यायु ॥ ॥ पितु (म)अनूल सिय ॥ ॥ दाहकन कनाया विहया द्वागयेति

कः १७ कदाधास्तिसाधाः ककुताध्वादिदशजः ॥

॥ हियू तव क्षान्दक ॥ ५ ॥ गूल वात पित्त नव व

सिम्ब ॥ कृतादाय शमील साधु नितादाय शनडात कदनकु साधु शयीव ॥

॥ हर्षजीर्णवयस्कूलं

दत्तं पविष्ममजं ॥

॥ नया गु. लु हा गु. जीर्णवडं लि. पंत ह्या य. ॥ ध्यन विष्णु मंगल लक्ष्म्य ॥

हिमवत्कृष्णमविबंयमानी. जानाह्यासम्भवउत्पलंगं। दूर्ध्वविषद्वद्विषमउमिश्रंमूलंयवचनिल

ॐ निनाय॥

॥ हिं चूक यिपी म बिच ०० मूं ७ म सखा हनउ सधूवि स्म लाग वूर्ध लंख सध

त्रितीसुः स्यात्संत्वनकं वातगूलनाग॥ ॥ वातगूलनाग॥ ॥ क्षान्द्यानसविदार्यावाजायनिःसक्त
नां वृत्ताः। विवत्सुगर्कनादिष्वपिरुगूलनिस्तदनं॥ ॥ अंतनतिः हंसपादमिति मालमिमीसिः लंख
सुहास्यं विनितसंत्वनकं पिरुगूलनाग॥ ॥ पिरुगूलनाग॥ ॥ हिं गुं च वनसं व्यापलवत्तन्निव
वाहया। पाथावेव सुहावयमाना नीपूष्कवर्कतिः उक्रादकनपातयं कुरुगूलविनागनं॥ ॥ हिं ससि
त्रिकटूः स्यधुः चितकः विहाः हनउः वाहायः उमसखाः ॐ सं पूष्कनामः सूकस्याः धातवूर्णका कलंखसुहाः
संत्वनकं प्लवगूलनाग॥ ॥ प्लवगूलनाग॥ ॥ गंखवूर्णसुनवतं हिं गुवां वं वसं युगं उक्राद
कनपातयं गूलहकि त्रिदाषजं॥ ॥ गंखवूर्णः स्यधुः चितः त्रिकटूः हिं धातवूर्णयासं धा कलंखसुहाः
संत्वनकं त्रिदाषगूलनाग॥ ॥ त्रिदाषगूलनाग॥ ॥ उं वूर्णशरया हिं गुपूष्कनं लवनयं॥

पिवं यवा न्ना वात गूल गुल्मा प गूलकं ॥ ॥ तं ह ह न उ हिं पृथु नाम ल साधु वि साहा ह वि वद वि
सहा ग चूर्णं त क्लृप्तं सहा स्पृष्टं न कं वात गूल गुल्म गूल नाग ॥ ॥ वात गूल गुल्म गूल या ॥ ॥
करु पिह समा वृत्त गूल काली रवे वली ॥ ह क र व ति तं गूल तं देव प्र वि लभ न जं ॥ ॥ करु पिह न शव गूल
ल न या जी र्ण व उ व ल स सा यी व थ प त्रि लभ म गूल भय ॥ ॥ त स्य ल कृ ग म या तं सा मा स न वि धी य त आ
भा ना टा प वि मू उ वि व ल भ द ति व द ना ॥ ॥ थ प ल कृ ग ला य थ न र्हे ति हां र धा व गु डूर न ग यू वि
नं धा नं थ प उ अ ति व द ना न य म य व च्च कृ य व ॥ ॥ त्रि लभ कृ य स मं प्रा यं वा ति कं तं व द हि म क
ट क्रा दा ह न ति स्य द क व न्न ल व ल भ रु मं ॥ ॥ वि कं ला यी व का क वा न या प्पा स वा यू हि यू नू वि
म इ च ल ति हा त वि कं ला यी त पा उ पा नू वं ल न लं स्या क थ प त्रि लभ म गूल या ल कृ ग ॥ ॥

उलाहिं गुयुतं कानं से च तं विवरे षजं । उश्रदक न पातयं स य मूल विना ननं ॥ ॥ उलाहिं गु
म सुखा । स्पधु वि । गुलि । वृक्ष का कलं ख सु रु । स्पं लन कं स य मूल नान ॥ ॥ स य मूल या ॥ ॥
हि गु वि क इ न र्मे ना । ववा कृ व स से च तं उश्रदक न पातयं वायु मूल विना ननं ॥ ॥ हिं वि क इ
सुक म्या । विहा । कृ द । स्पधु वि । का कलं ख सु रु । स्पं लन कं वायु मूल नान ॥ ॥ वायु मूल या ॥ ॥
क श्रया ला ह वृक्ष वि लिह स धू स र्पिषा । प त्रि ल म मा ह वं मूलं स या रु कि गु न न विः ॥ ॥ पि
पी । रु न उ । न । धा त वृक्ष क सि धु न न वालं न कं ॥ ॥ प त्रि ल म मूल या ॥ ॥
वद ना व द वा मू क्ता ग ना हा । मे व वा न विः । का गः । स व हि का व मूल स्या प ड वा द न ॥ ॥
म्या क त व ॥ म्या स द व र नू ग म हि र य न गं व ४ क्क ज्या गु ५ नू वि म इ ५ मा हा व द न सा न र य उ ६ हि

इवयः॥ ॥ २५ गेहूँलया उपडव। देश १०॥ ॥ लतावल्या न संक्रोडं यूकं प्रागः पिवन्नमः। दा
हगूलयुष्मन्त्यर्थं सर्वपिरामयाय हं॥ ॥ अहिहाया नमः विनिगसं त्वनकं दाहगूल सर्वपिरामया
॥ ॥ पिरुगूलया॥ ॥ लवणय संयूकं पंचकालसनामथं। सुखाक्राम्बुनापी तंव करुगूलं पुदा
यथं॥ ॥ सधुचि चंदवि साहाचुवि पिपी पियला मूल विगक सिपि गुलि नामथं काकलं खसग
सं त्वनकं करुगूलनाम॥ ॥ करुगूलया॥ ॥ विगकं ग्रन्थि केन गुगुलि धन्य जलं १२ गं। गूलाना रु
विवलं यः सहिं गु विजसेधवः॥ ॥ विगकादि॥ ॥ विगक पियला मूल जलहा गुलि। गमसाहं हिं वं वि
सधुचि लंख सहा सं त्वनकं॥ ॥ आमगूलया गुल्मगूलया॥ ॥ हिं गु सोवर्चनं पथम विजसेधव गुम्
नः। पुष्कनं वपि वं चूर्णं दग मूलिय वाहवाः॥ ॥ हिं साहाचु हनज वं वि सधुचि नं लं पुष्क

नामूलः धृतं चूर्णः दशमूलया नि स न च्छुं हाया नी स रुा सं स्वन कं ॥ पार्श्वमूलः दृक्कूलः कटि मूलः पृष्ठा
न न्द्रा जपान न वायु ॥ अथ ॥ गलनाग धृतं नाग या क ॥ ॥ वृहदुन्मुनादि ॥ ॥ बीज पूनक
मित्र गु नास्त्रा ॥ गहन कं ववा ॥ पृथक् च पला लाग नून यव पु स्तु समा युगं ॥ वात्रिद्रा वं च सा ध स्या पच त्या दा व स
षितेः दृत्त पु स्तु पया रुत क कं द स्या ऊ सं मि त ॥ उन्मुत्र ॥ धृत्या हिं गु था ष सो व च्च नं वि उः ॥ सन्धे वं या व ग कं चः
स्वर्जिका सा स्र वं ग सा ॥ पूष्क नं ज डि सं व वृ का स्र जी न क दयं ॥ मम्बु पु स्तु दयं द या न् सिद्धं म्द द मि ना प च न् ॥
पान थ च्च पु सं ग कि ग्ल ह त्या कि दा ष जं ॥ वाग मूल य दृक्कूल ॥ गुल्म प्री हा य हं प नं ॥ दृक्कूलं ॥ ग्लं व जं गे
लं व य ह वं ॥ वल व र्ण क नं द यं म मि सं दी प नं प नं ॥ अमुक ॥ धृत मृ नि नां रा षि गं द लि गं त नः ॥ ॥
बीज पूनादि दृत्त ॥ ॥ सर्वमूलया विक्रि सा ॥ ॥ सामूद्र सन्धे वं का ना नू च कं ना क नं वि उं ॥ द कि लो ह

नञ कीर्तं नृचक्रलनकं समं ॥ दधि (ममू) वयसा मनुपावक पावितं । तद्यथा म्निवलं चूर्णं पिवे इक्षु नवा विना ।
 जी (धू) जी धू वलं जी तसासा दिद्युत सान्वितं ॥ नातिशूल यदृच्छल गुल्म ह्री हृत्तं चयनं । विदधे स्त्री नञ हनिकरु
 वाता हवं तथा । अन्न दव जन त्पिरु मजी धू ग्रहणी तथा । शूलानामपि सर्वेषां मोषधे स्पवनस्य वा । विवित्री नाम
 संधस्य विसंधानान्न स्मृतः । अत दध्ना दिनाग्रहा के चूर्णं वा गुग्गुलु (वनवा) ॥ ॥ साम्नादि चूर्णं ॥
 विविज्ञ विज्ञकं वया । विरुला गुरुषध निव । नवरा म निव गानिला ह कील समा निव ॥ (ममू) द्विगुधं दत्वा मू
 णा द्विक गुज निवः । नमो मृद्विनायका सू सिद्धं गु उ पि उ कं । सिग्धे रा उ वि नि क्रि य र ऊ य र्को ल मा उ कं । प्रा
 नक्षत्र कर्मने वरा जनस्य य हा जितः या (मयं) सम यत्पा गु य कि शूल सू दानू धं । कामला पा गु ना गं व (ममू) सं स च
 मितामपि ॥ अर्धं निग्रहणी नागं कि मि गु ल्मा दना निव । नागथ दसु पिरुं च स्त्रो ल्यं वै वा पे क र्षति । वर्जयन्

पुनर्वध न प्रवृत्त नः आनाद नः
आनाद नः क नः ॥

सूक्ष्मकानि विद्याहान्तक इति वापि किं भूला न क को अथ गुण मभूत संज्ञितः ॥ भूला कानां क्रिया ह को ता
नया न पत्रि कीर्तिनः ॥ ॥ मउल गुड ॥ ॥ यत्रिध मभूत लया ॥ ॥ त्रय रूत सिख गु रया ना त
निहा न स पाय वृ क म ना व ध ल स काले सा म ल स षू ड वृ न ड व रू त सि च्छू य अ स न च्छू य उ क द जी
उला न वं जाय पत्रि ध न वृ रू षू ड गु टिका दय के न सं वाल वृ द्वि ना गया रु स न वि का न रु व या दिन वि का
न रु व या स म ल ना गया ॥ ॥ कृष्ण गु क गु ड ॥ ॥ ॐ ति नि दाना क पत्रि क म भू ल वि कि र्त्सा धि का
नः ॥ ॥ अथ ज्ञाना ह नि दानं ॥ ॥ वा न वि न्मू य ह मा ग्गु रू वा ना न व मि न्द्रियं इ लू श्रु क्ता ग नि डा
नां वृ लो दा व र्त्त सं ह वः ॥ ॥ म ल मू य स्वा ति हा र्त्त काल धो का न अ का न ध न्न व व य त्या क या स वा
व ष्म स क्क ३ ध न वा न न व न्ध या ल उ दा व र्त्त प्रा ग रु नं ॥ ॥ वा न मू य पू नी षा नां सां ग म ध न क मा न

जा। ज० न वा न जा न्य ना ग स्यूर्वा न वि ग्र हा न्॥

न मू उ व न्ध या य् वा न क र्म व न्ध या ड या ॥

पू री ष मा स्या द ध वा नि ल गि पू री ष व (ग रि ह न न व स्य ॥

ध का र व य् मू उ नं म ल क्ता य् ॥

नि ना वृ जा ॥ म र्म यी ज न धा ना हं स्या लि ङ्गं मू उ नि ग्र हं ॥

य् मू उ गू ल रु य् मा द स्या य् न य म य य् क स्या य् ख ल स भि स्या य् ध न री र क्षा त ना स ध ध स्या य् ॥

म ल मू उ पि डं वा ड या ल रु ण ॥

ना न्ध व द ना म या च र व कि ती वा स ह क र्त्तु ना ग ॥

॥ वा न क र्म ह ति र नं व न्ध श यी व प न री र क्षा य् वा न न म

॥ आ नी य गू ल प नि की र्ति का व व न्ध पू री ष स्य त्थ आ र्द्र वा नः ॥

॥ गु ड र न ड व क र नी न रू या धं स्या क म ल व न्ध ॥

॥ वा हि नि ति य य व म नू ष या ॥ ॥ व सि म ह न याः गू लं मू उ क र्त्तुं

॥ मू उ व (न्ध या व र्कः ॥ ॥ व स स लिंग स स्य

॥ क र

॥ म न्या ग ल रु क्ति ना वि का ना ह क्ता प द्या ता त्प व ना त्म काः स्युः ॥ न धा कि

॥ ग ल पी न क्ता य् भा उ स्या क उ म का र व व व ल स रु य्

५४

मिखा (मउ) का सखा न वमानं स्यायुः कर्षु नाग न सहित न उमका न पिडाया ॥ ॥ ह्रस्वा वन्धादावर्क्या
आनन्दं वाप्यथ (म) कर्षु न वानं शिदकं युक्त मसुं वनादि। निनागु नृत्वं नयना मया च तव किंती वा सह पीन सन।
हर्षव ववखाति (म) कर्षु न ववखा वि मिखा न ववखा वि पिडाया ॥ भाद स्यायुः मिखा स्यायुः क्रि सुलू न वयीव।
पीन ससहित शय ॥ ॥ अर्षु वन्धादावर्क्या ॥ ॥ मन्था सुकृति नः गूलं मर्दिता ई विरदको। ॥ न्दिया
नावयोर्वलं कव (म) स्या विधा न धन ॥ ॥ क्रकृ वक्का क भाउ स्या क लिंगया वल मर्द का कर्षु का न पिना
या ॥ ॥ कवधु सुक्कादावर्क्या ॥ ॥ कर्षु स्य पूर्व मती वनादः कर्षु ववाथा नथ वायु वलिः उजा न व (ग
रि हते तव कि न विका नाः पवन युक्तः ॥ ॥ कर्षु स पूर्व श स्य क्ता या थं हा या थं स्यायुः दे उ र मिनि
व व्यक्त न ख लाय मजिव अथवा म्हा सवन्ध्या उं तयु वाग विका न न धका न पिनाया ल कव ॥ ॥

उद्गात्रवन्मदावर्क्या ॥ ॥ कर्तुकाधनृविवांग (मथपाञ्चमय कनः कृत्तुहत्तासवेसर्पा कृदिनिग्र
 हजागदा ॥ ॥ वासूयः ससकाउरुटिरदयीव नृविमदः पतलमंगु पात्रागः कनदयूः दसिः पूर्वककृव
 यीव ॥ ॥ कृदिवन्मदावर्क्या ॥ ॥ मूगसयावेगुदमूक्याध (मथपाञ्चमय विनिग्रहयाः पुकाः म
 नीतकुवसंरुवञ्चानेनविकानाविधनउज्जुके ॥ ॥ वससायः आपामनं अदगनं सायः सनिवः गत्कात्रनं वन्ध
 शयीवः मूगसायः उनिशयीवः धनविकानाविधनउज्जुके ॥ ॥ वीजवन्मदावर्क्या ॥ ॥ गन्धोगमर्दवन्
 विः प्रमथः कृष्णारिद्यागा कृष्णगावदृष्ट ॥ ॥ वक्षामदः स्रक्षैरक्षवः साकः नृविमदः जावः ॥ ॥ कृष्णव
 न्मदावर्क्या ॥ ॥ कश्मसः (मथः प्रवसावनाधस्रक्षारिद्यागा कृष्णगावदृष्ट ॥ ॥ कर्तुः कृत्तुगनिवः पान
 यालीकः प्यासवन्मदावर्क्या ॥ ॥ ॥ कृष्णवन्मदावर्क्या ॥ ॥ अकृष्णनिवः सविनीयः रुनदृष्टागभाहाव

१५५

धवापिगुल्मः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ आयकं वलनास तथा सापिना वरुयू नू (ग) उ स्यायू अथ
 वामनिवः गुल्म रुयू अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ हलंगमदनिनातिजायं निडातिद्याता दधवापिगुल्मः॥ ॥
 उमकावतयीवः अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ मिखा (ग) उ स्यायू अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ तन्दादयू अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥
 ॥ निडावन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥
 नमस्तुते॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥
 यू अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥
 विगुल्मकं कनातिगुल्मं सवन्धादावर्तः॥ ॥ मिसाया रुनसां रु सनहि धयनडावः हियु स्पं धा थ स्यायू
 हिक्कदयमरुलकुलसिय॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥ अथ सवन्धादावर्तः॥ ॥

अनादि विविक्तिः ॥ ५८ ॥

गता। हृदि वा भोऽप्युर्वनि हृदि गंगं न्यवक्रुण ॥ ॥ वाग आदि न इः खया डावः अन्नया न स स नू (गमउस।
विका न या नावः नू (गमउस्य च क न। वाग को प न यावः ॥ ॥ धन हृदि गति दान ॥ ॥ ॐ नि नि
दाना क प नि क्रम आना ह गुल्म हृदि गति किं त्सा धि का नः ॥ नि दानं ॥ ॐ ॥ अथ आना ह गुल्म हृदि गति
किं त्सा ॥ ॥ ॐ क मूल क सार्धं च तर्षात् मूल पंचकं। आनं वग रु लं वा पि य क्रा क न च तं पंच नू ॥ नाभयं पीय
मानं न उदावर्त वि (गमनः ॥ ॥ ॐ न ॐ छिः का ध दा स्ये पुनं द न गि निया ल सिः न ज पा न गं रा वि वा ना ह
वि न दि गू ल धन दूर्ध्वा उं ध ल स मू उं न कं उदावर्त ना न ॥ ॥ धन व व या ॥ ॥ व वा र या वि
व क या व ग कान स पि य पी ला नि वि षा न स कृ षा न। उ क्रा म्बू ना ना ह वि म्भ र वा ना न पी न्वा ज य दा गु व सा दः
ना न ॥ ॥ वि ह न उ वि न क ना य वि लि सि पी पी अति न स कृ ह धन दूर्ध्वा का क लं ख स ह स्यं त्व न कं
वि हा १

१६६

आनाहनागनाम ॥ ॥ वचादिचूर्ण ॥ ॥ सव्याषपिप्लीमूलतृददनि सविजकं। तच्चूर्णं गुडसंयु-
 कं। तृकयत्कल्पसंस्त्रिः। उगद्गुजश्चकं नाम बलवर्धनं निवर्द्धनं। सादावर्णं गुल्मघ्नं। स्त्रीहायाश्च। मयापहं ॥
 गुजश्चकचूर्ण ॥ उदावर्णया ॥ ॥ हिमग्रगन्धविजगुण्डिकाजी। हनीतकीपूष्पबमूलकृष्णं। ला। गमरु-
 तं चूर्णितमगदिष्टं। गुल्मादनाजीर्णविशूणिकासू ॥ ॥ हिं विहा वदवि। गुण्डिकाजी। हनीत। पूष्पनाम-
 ल। धनचूर्णं नस्यं गुल्मनाय। अजीर्णनाग। धं क व ड गु। नाम ॥ ॥ हिं ग्वादि ॥ आनाहया ॥ ॥
 ॐ तिनिदानाकूपत्रिकुम्भजानाहविकिसाधिकावः ॥ ॥ उद्गानवाहल्यवृनीषवहूस्फुक्कमगानवि-
 कूजनानि। आनापमाधनमपाकगं किमापन्नगुल्मस्य वदनि विक्कं ॥ नूजान्नपानविषमातिमात्रं विवक्ष्यते न-
 गविनिग्रहश्च। अकाहियातातिमलकयश्च निवन्नतावानिलगुल्महृत् ॥ ॥ दृष्टावागादथात्पथं मि

धम्महात्रविहानिहं कुर्वन्निपंचधगुल्मंकाष्ठान्गुच्छिन्नूपिनं॥ ॥ वातज्जादियं दृष्टं रुयावलिपां
पा. नयाव. धनधय जाव. धनं न जागते दयुकात्रगुल्मं प्राग. धन इव नं गुच्छिदयू धूमिहुतु। धनं जनेम।
यानाव॥ ॥ तस्मपंचविधं स्नानं पार्श्वद्वन्नाहिवस्तथाः दृष्टं स्नानं नृपगुच्छिः संवात्रीयदिवावनः॥ ॥
धयाधान जागगुकात्र. वाकस. नृ. गजस. नाहिस. वसस. त्यरुवनू. गजवज्रनृस. ग्रन्थिपायदयिवः
अनृवि ककुविन्मृगवागताकवि कूजनं। जानाह (असर्धवाहितं सर्वगुल्मेषूलकं॥ ॥ नयमययू. स
लमृगककन वि य धाक. वागकर्मन. धन जायीव. हांरधायू. धकात्रवयू. जागगुल्मयाल कृणधधायूव
॥ ॥ यस्नानं स स्नानं तज्जाविकल्पं विज्ञानसंगंधनवकु (अधं। अधवावृणत्वं निगिनवृणत्वं। दृष्टं जिपा
ध्वंन निगानृजध॥ ॥ धवरस्नानं सुरुश्यं रुव. धयमनेव. धवस्नानं सुरुश्यं रुव. धवस्नानं

१५१

सहयं द्रव ध्वने ध्वनं समसहयं द्रव। (मज्जनं पायनं तल्लिखी कर्तुं स्यात्कर्तुं मस्या कर्तुं गङ्गा गुल्मयां आमर्ष
 काविका न सिय ॥ मलसुवागवहनपू कष्टु मूगनिव विद्रुयु कनंदयु नू (मज्जनं ध्वनं त्वका म्माज्जनं ध्वनं
 स्यायीव ॥ ॥ एकं मद्रत्वं समर्थे नित्यं वाग्विद्या गुल्मो नवगुण नू कं। कषायनिक कद्रवाय (गं) कनात्य
 जीर्णस्यधिकं युकायं ॥ ॥ वाग्विद्या कर्तुं ध्वनं कृत्वा नू कयाय मनेव कृत्वा स्वाय पात्र नय मनेव नना स
 मस्या क नया जीर्णमजं गु अतिकाय शयीव ॥ ॥ ॐ निवाग्विद्या गुल्मया ल कृत्वा ॥ ॥ अथ वाग्विद्या गुल्मया विकि
 त्वा ॥ ॥ मातुत्रंगन साहिं गुजदि सं विउ सेश्ववं। सूत्रा मन्देन पातवां वाग्विद्या गुल्म नू जाय हं ॥ ॥ तडा सियात्र
 स हिं क्षात्रवी वं उवि मधु वि धन वृक्ष वना ध्वनं व मन्द दास्यं द्वा स्यं त्व कनं वाग्विद्या गुल्म नाग ॥ ॥
 त्रुषलं त्रिहलाक्षान्य विउ नवव्यविउकं। कल्पी कर्तुं द्युर्ग सिद्धं सजीवं वाग्विद्या गुल्म नू ॥ ॥ त्रिकद्रु

त्रिरुला. गमसाहा. विठिसि. सिपि. विरुहा. धूतिवूर्णसवनावइइनकचिस्यनकंवागुल्लमनाग॥ ॥
 ॥ ॥ **पुरुषद्विद्युन॥ वागुल्लमया॥** ॥ **ॐ निवागुल्लमविकित्सा॥** ॥ **अथ पिरुगुल्लमनिदानं।**
 कत्रपिपासावदनोगनागः मूलंमहकाप्यतिहाजनंवास्वदाविदाहावदप्यातिगुल्लमस्यर्गसहःपेलिकगुल्लम
 रूपं॥ ॥ **कनवव. प्यासदव. रत्नाव. रत्नं. रक्षय. स्याय।** क्रिनसअन्नेजीर्णवनशव. स्याक. चलनिहाव. हि
 य. द्यावस्याकथांगुल्लमहनशवस्याक. थापेपिरुगुल्लमयालज्जव॥ ॥ **अथ पिरुगुल्लमविकित्सा॥**
 दाकारुयावसंगुल्लमपेलिकंसगुर्वेपिवत्॥ ॥ **मीसि. हनउ. चाकूतस्यंतनकंपिरुगुल्लमनाग॥** ॥
 पिपलीपिपलामूलंवत्पविष्कनागनेःयवजात्रेर्द्युतंयुल्लमृद्वग्निनाविपावयन्। जीवयुल्लनवत्सपि
 हकिगुल्लमकजात्मकं॥ ग्रहणीपाधुनागध्वनीहकागकनायहं॥ ॥ **॥ पिपी. पिपलामूल. सिपि**

चित्रहा. गुणि. यवा रत्ना. रं १ घृ. न रं १ इ. १ धन पाक या संत सं गुल्म प्राय. ग्रहणी नाग. पा लु प्राग ॥
प्रीह प्राग. का नी क न धा न नाग या क ॥ ॥ की न व ल क घृ. ॥ गुल्म या ॥ ॥ हि गु नि क उ कं पा
ध ह व पा म र या ग वी. अ ज मा ज ग न्ध व ति नि जी का म्भ व र सा. दा डि मं धी क्क न्ध न्ध मं म ज जी ति न कं व
वा. दो ज्ञा नो द य द य ल व र म न दू र्ध्व प क ल य थ न्. वू र्ध्व म न लु या क वं अ न्ग न नं दि धा स्म गा. पा गु क म थ
वा प यं म द्य ना क्क द क न वा. पा र्व द द सि गू ल ष गुल्म वा न क रुा त्म के. ॥ आ ना ह मू र्ध्व क्क व गू ल व गु
उ था नि ज. ग्र ह व र्ण वि का न ष प्री ह पा धु म या नू विः उ ना वि व (न्ध हि का यां का ग न्ध मं ग ल ग्र ह. रा वि
नं मा गु न्ग स वू र्ध्व म न दू र्ध्व न वा. ॥ व दू सा गु टि कां का र्पाः का र्म का स्म रु ना धि कं. ॥ हि. नि क द
क. वा हा य. ~~धु र्ध्व म न~~ धा स्म ह न उ. न न यि. अ ज म्. अ ध ग न्ध नं क सि. स सि. धा न वी ज. पू क्क ना म्

आभा मरु न दुवः

४॥ नारुडी कलक

ल. (मासाहं जीनि विनहा यवाखात्र नमसखा र स्थू वि वेद वि धनं वूर्धू सूनायान संन व. का कलं
ख संन व. द्वा संन व. न कं। गुल्म आदिन. वाक स्या क. नू (माउ स्या क. व स स्या क. कला धिक. आनाह. मूय दू कु
मूल. एग न्द व. या निशग. ग्रहणी. अर्ग. अल वि. स्या. सा. मउ गु. पा पु प्राग. अत्र वि. नूग न वन्ध. हि कू. भा सा
थ सा. गल पा न स्या क नाग ॥ ॥ हिं ग्वा दि गु टिका ॥ मा रु नू ग धाय न व सिया न स न दू न विया व गुः
टिका दय कं न केंद्र ॥ ॥ गुल्म या ॥ ॥ रू नि पि रु गुल्म वि कि स्या ॥ ॥ अथ (मा म गुल्म नि।
दान वि कि स्या ॥ ॥ ते मि लणी न क न ग म उ सा द दू ला स का म नू वि नं ग। मे व वः। ले रं नू ग स्या क धि ना
मू न त्वं। गुल्म स्य नू यानि क रु ल्म क स्य ॥ ॥ ह म स म धा व र वा उ य्. अ ल्प. नू (मा उ क्को व. भा सा व व.
नू वि म दू. आ गु. का क न उ ग न र वा उ य्. न व मार्ग न म म्भ क. छा क. च हं न जा व. क रु गुल्म या स क व ध

रसेषा गुल्म नि दू व

१५२

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ अथ कुरु गुल्मया विदित्सा ॥ ॥ यवानी चूर्ष्टि
तं न कुं विठन न वना चितं । पिवत्स दीपनं चैव मूषवर्धनं ला मगं ॥ ॥ ॐ मूर्च्छाया संवद वि स्प
धु वि धात धनिगी स रु । स्पं च न कं मल मूष अनूला मजा दिन । प्लषा गुल्म नाग ॥ ॥ महावृजं दाह
पत्री तम मभवत् घना न्न तं गी पु वि दा हि दा नृगं । गत्री न मग्निं च वला पहा नि धं । वि दा ष जं गुल्म मसा ध
मा दि । गी त ॥ ॥ न व र्ध न स्या क । हि यू न पी उ न प् । च ह न्न जा व । छा क । वा नं वा न हि यू । म न नं । गत्री न
नं अग्नि नं वल नं धा नं घन य रु व क्ष । वि दा ष गुल्म या ल कृ द अ सा धः ॥ ॥ अथ विदित्सा ॥ ॥
व वा पृष्ण न कृ ष्टे ला म द ना स न दा नृ च । का काली दय य स्या क भ दा यू म कू टं न नं ॥ पा धा जी न क जी व नि ता गी
व न्द न क कृ लेः स न ला गु नृ वि त्वा न् च वा जि ग न्ध मि वृ द्ध रिः ॥ वि उं ग ल ग्ध न्ध मा रु वृ न्मा गी धि कं रु लं ॥

विद्यामग्नस्योत्पत्तिः॥

कल्कतेलपत्रं त्यो पंचमूलं च रागिकं । गुल्मानाहगलादार्ज्यग्रहणीमूलसंहिता ॥ अक्षसन्धि
तादात्म्यं नृ॥ ॥ विहायुष्कनामूलः कृदुल्लासधेः ह्यदवदानकूकाकात्रीद्वययष्टीआक
झाकं हाः झाकं हाः नकिवाहायः जीललीकः हागिहाः गीखउः कर्वसिक्खुधंसिक्खुअंगुसिः बालनिः ।
अश्वगन्धः चिगहाः वृद्धदानः वित्रिसिः आनग्वधः इइकाकासिः तिलवं मागधिः पंचमूलः धनं चूर्णविक
नष्टुं त्वनकं गुल्मः आनाहः गलनागः अर्जनागः ग्रहणीनागः मूलनागः धननागः ॥ ॥ विद्यामग्न
स्योत्पत्तिः ॥ विद्यामग्नस्योत्पत्तिः विद्यामग्नस्योत्पत्तिः विद्यामग्नस्योत्पत्तिः विद्यामग्नस्योत्पत्तिः
ताकं । गुउरुजवदहलीविदध्वगु ॥ ॥ गममूगः स्वधः कस्तिदन्तिहाः मदनरुलः पिपीः वेदति
कयनिपासनः कृदुल्लासधेः ह्यदवदानकूकाकात्रीद्वययष्टीआक
झाकं हाः झाकं हाः नकिवाहायः जीललीकः हागिहाः गीखउः कर्वसिक्खुधंसिक्खुअंगुसिः बालनिः ।

खिपनसु उमसलनलपनयाय। मार्गयात्रसधलनिगय। थ। खिपनधनयात्रसइकाय। खिक्रमद
 वया। धनमंगुनायया। विष्टिकादयीव॥ ॥००॥ निगुल्मविकित्सा॥ ॥ अथनकगुल्मनिदा
 नं॥ ॥ पिरुस्यलि। ननसमानलिंगं। (गधवावायपनंविवाधयः स्यन्दनपिठिनवनागेः विना।
 सुगूलः समगर्हलिकं॥ ॥ पिरुगुल्मसशक्तनकगुल्मसशयीव। धनसपाय। धूरसुनगुपिठि
 नक्षाय। सयनडाकथंताउनीनस्याकगु। मंगु। मवायाधसद्वययागनीनथं डनगु धननकगुल्मयावि
 क्रसिय॥ ॥ सत्रधिनमी। एवउवगुल्मा मासवर्गनिदगभविकित्सा॥ ॥ यानीनहिहावमि
 सायाशक्तदव। नकगुल्मशकागनूवियाशकादव। वालकयावृद्धियामद॥ ३॥ सलयाय। जिलोलीवज
 कयायनव। मवादमदलं कामदनडावउमसलयाय। जिलायूनसोनायकेजूलयू॥ नकगुल्मयापिरु

अथ दृष्टां सानिदानं ॥ १ ॥

गुल्मया उपवाच ॥ ॥ दोर्वल्मानुविहता सकागच्छन्निहने । सुक्रान्द्या पुनी स्यायेर्यथेन
नेव सिध्यति ॥ ॥ वलमद् नृगमज्झिं भासाववधन्नववक्षत्रदव । प्या सचाव तन्दादव । का ।
सहदेरधवधधिं गुल्मनागस्युथागयानसां सिद्धमश्व ॥ ॥ ॥ सस्रुलापियासानविद्ध
धाम्निमृगान् । जायन्ते इव तत्त्वगुल्मिनामनधयये ॥ ॥ ॥ सालं लंपनिवधक । प्या सचाव
नयमयव । खच्छिनं ग्रन्थिपायदव । खच्छिनं मदव । इव लधधिं गुल्मनागी म्वाचकमजिव ॥ ॥ ॥
कूलवीज । पुअकि सितानी सद्वा स्यं त्वनकं हिक्कदवया धमयशयीव ॥ ॥ ॥ निनिदानाकपनि
क्रमेण गुल्मे विकिसाधिकानः ॥ ॥ ॥ दूषयित्वानसंदाषा विगुधददिसंगता । ददिवार्धं पुकर्वकि
दृष्टां च उपवृत्ते ॥ ॥ ॥ दामन । नससहदवपाव । दृष्टशवदाषनृगमज्झिं वडाव । नृगमज्झिं

नविधिनपीउनपावदुडागधायकनं॥ ॥ ज्ञायस्यनमान्नजदुदयं दुशनंतथा। निर्मथानदीय
तवस्तुयनपायननथा॥ ॥ कडावसानावरुयाथं वागननू। (ग)उ स. द्वा २ नया डाथं स्यायू मरु
नया डाथं रुयाथं पानवनाथं स्यायू चवागन॥ ॥ ॐ निवागदुडागनिदानं॥ ॥ जथवा
तदुडागविकिन्ना॥ ॥ सुविशोवर्चनंहिं गुदाति संवास्तनसं। वूर्ध्मस्क्राम्नापीतं वागदुडागना
ननं॥ ॥ गुवि साहाच्छवि। हिं। क्षत्रवीज। ससि। थनवूर्ध्मकाकलं खसहा संत्यनकं वागदुडागना
॥॥ ॥ जथपिरुदुडागनिदानं॥ ॥ रुक्माक्रदाहदाषावपेरिकदुदयस्यव। क्षमायलंवमू
क्षेत्रस्विदः। (ग)षा मुखस्यव॥ ॥ प्यासदुक्षाक। लटिहियू। पिरुयाकेननू। (ग)उ गयाहानथा निव
कूनकावथं उनिव। मूर्च्छा रुयीव। चरति हायू। मूर्गुगनिव। पिरुदुडागया॥ ॥ पिरुदुडागयाल।

कृष्ण॥ ॥ अथ पिरु हृदागया विदित्सा॥ ॥ यस्मीमधूक मदीकानर्क नामधूसंयुगं। कीरकाथां
 विवेकीतं कृत्ति हृदागनागनं॥ ॥ ॐ श्री. सी. सि. सा. घन. चूर्ण. कृत्ति. कुं. त्वेन. के. का. थदा. संपिरु
 हृदागनाग॥ ॥ डा. कामलक. कामय्यो. मधू. काल. ग्वधं. स्मृ. तं। दृक्का. दा. हृ. प. नि. ता. सा. वि. वे. त्सा. मधू. न. क.
 ना॥ ॥ पिरु हृदागया॥ ॥ अथ (श्लेष) हृदागल. कृष्ण॥ ॥ (गे. न. वं. क. हृ. सं. ग्र. वा. न. वि. सु. का.
 ग्नि. मा. द. वं। मा. धूर्य. म. पि. वा. स. स. व. ला. सा. व. न. त. हृ. दि॥ ॥ अथा. गु. य. उ. ल. हा. य. नृ. वि. म. इ. नृ. ग. उ. स. न. के.
 म. जि. व. अ. ग्नि. म. गु. स. वा. न. वा. कृ. (श्लेष) वि. का. न. न. वा. ध. न. पा. व. थ. न. रु. यी. व. (श्लेष) हृदागया॥ ॥ अथ।
 वि. दि. त्सा॥ ॥ कृष्ण. गी. व. वा. ना. सा. गु. ठि. प. थ. म. स. पू. ष. का. चूर्ण. गि. तं. वा. स. गं. मू. लेः. पा. न. वं. क. हृ. हृ. न. दं॥ ॥
 पि. पी. स. न. पि. वि. हा. इ. गु. छा. गु. ठि. पू. ष. का. मूल. हृ. न. उ. ध. नं. चूर्ण. ग. म. स. दाय. के. त्वे. न. के. (श्लेष) हृदागना

ना॥ ॥ मूले ला वन्दना नीत्र यमानी या ष विजकं । विल्व त्वक्क द्द कं दानू दार्वी त्वक्क र्पट त्ववः ॥ पटी ल
निम्ब ष कुळा मूर्वा हनिम्ब निग्रकं । वूर्ध्ना यकि सोना छिके गला नि विषासमा ॥ गिरू कना मगुल्मव
लह सन्निपात नू ॥

॥ कसू ७ ला श्री ख उ कृ ग हा ०० मूं मत्रव पिपी ७ छि विग हा व्या ल ख ना क
दुकि दव दानू मी कू सिक्खु खा खं लवं त्वव खा यू पा ल हा निह विहा मूर्वा खा इ निग्र ते मात्र सोना छि नू
पके गल अगि ७ स स्म ल ग नू र्ध्ना ल ख स रुा स्यं त्वन कं क रु रु डा ग ना ग ॥ ॥ ग्ल षा रु डा ग वि कि र्म

॥ ॥ चन्दनं नागपूष्कं वयर्पटं सहसाषिकं । उदकन सह पीत्वा सय रु कूल नाग नं ॥ ॥ गीख

न्द नू पके गल माषिक लं ख स रुा स्यं त्वन कं नू ग ७ स्या क न नानं लायीव ॥ ॥ चन्दनादि रु र्ध्ना

या ॥ ॥ यमानि याषहि गुं नू विज सो व र्ध्ना सै न्व वं । मा उ नू ग न सा नी रा पार्श्व रु द्द सि गूल नू ॥ वि

उत्पिपुदुशगरेकु

उत्तलवनं पिष्टं विल्वविजकनागनेः सामवागकरुवागकाष्टलहवंपनं ॥ ॐ मं. ठि कट्. हिं व
दवि. सुगच्छवि. सधूवि. थगवूर्धू नउसिया वससवसं नसं न. गभउ स्या क. वाका स्या क नाग ॥ ॥ वद
वि. सधूवि. व्याल. विगक. गुवि. थगवूर्धू नउ। सिया वससवसावनकं आमवाग. करुवाग. धग स्या क नाग
॥ ॥ यमान्यादि ॥ ॥ ग्रयसीगर्कनाडाजीवकर्षणकात्पलं। वलाखर्कनकाकाली. भदयू. गमा स्व
साधिकं ॥ सजीवमाहिमाहिषं सविषिपिरुदुडागनागनं ॥ ॥ पिरुदुडागया ॥ ॥ घनं वलानागवला
रूनाम्बू. सिद्धयष्टीमधूकककपादं। दडागभूलजगत्रकपिरु. काभनिलाष्टकूमयन्युदीर्घ ॥ ॥ वला
ग्रघुग ॥ ॥ ठि दाष दडागया ॥ ॥ ॐ निदुडागविकित्सा ॥ ॥ जथकिट्टिडागनियानं ॥ ॥ उत्कंद
वीवनं सादभूले हला सकं नथा। ज्वविः। ममनउत्वं। मघश्चकिमिअरवन् ॥ ॥ उभकीलवयू. क्रिमि

१०३

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

संस्तुतवान्नल। किमि सवागननल धकावउ थां वयीव। किमि सपिलननल नयमयव। मिखाववूयू। कि
मि सतिशायननल। गमययीव॥ ॥००॥ ति किमि दूडागनिदानं॥ ॥अथतिकित्ता॥ ॥विभन्ता
काथ। गमयूँ किमि दूडागनागनं॥ ॥कावउसिहा। गमयूसदायकं लनकं। किमि दूडागनाग॥ ॥
वाग दूडागया॥ ॥विदिंगकम्पिल्यपलागवीजं। जिजीवपूँ। सतिरुक्रुक्रुं। अवलुजं। रुम्बुनूयाषवि
ल्वं रुललकं हिंउववावलांग। ग। कयवायूत्रलिहाकयूकं चतं विपकं सधूनायुधूनीययूकं दूत्याध्वनूलक
रुवानकूजी। अयितथहकि। किमि चसर्वान्॥ ॥विडिंमदिद्युत॥ ॥किमि जायविवन्मयं विडिं
गमयसंयुतं। धूँक्षलापिपलीयूँ चतनालादिगं विवत॥ यथामयाषजिजीवावि विडिंममि जिजागकं॥ कू
ननिम्ब कलमूलवीजकिंउकसंयुतं॥ ग। कनासमवूँ निरुजिगं वविकावकं। किमि नामागि सावेवध्वसका

नतिनाशनं ॥ विप्रिसि सावा सदायकं त्वनकं क्रिमिनाग ॥ सुकम्पा पिपी चूर्ध्वं च न सवत्साव
 नकं क्रिमिनाग ॥ ठिकट् ठिजील विप्रिसि विगक ठिजागक गभा निह पिपला मूल लाहवू स्मरागय
 धूसाघनसं त्वनकं क्रिमि आमानि सात्र थसा मासा नाग ॥ दिवूरुना हिंगु ववा सकृष्टा सोवर्चिका
 धतिविठं वचूर्ध्वं उक्रामूनाल हविस्तयिका हिं हडागगुल्मावममीलनं व ॥ हिं विहा कूट सजिखान
 वजवि थनचूर्ध्वं काकलं खसदा सं त्वनकं हडागगुल्म धका नुवव नाग ॥ किन्नः साक्षरवः
 धा ह्या सुषामुपडवाः ॥ क्रिमिज क्रिमिजानीनां श्मश्रुकानां वयगदा ॥ स्वसं सं धव साक ०० ॥
 साघनय धया उपडव शयु सिय ॥ क्रिमिन जायनयू काल क्रिमिनिदानया उपडव थं शयु ॥ श्मश्रु
 या श्मश्रुनिदानया उपडव थं शयु सिय ॥ ०० निनिदाना कपत्रिकुभं हडागविकि साधिका
 क्रिमि १

नः॥ ॥ ॐ ॥ अथ मूत्रकृच्छ्रनिदानं ॥ ॥ अथ कुमलाः स्त्रियः कृपिताने दानेः सर्वार्थदा
काय मूत्रस्य वस्त्रो ॥ मूत्रस्य मार्गं परिपीठय क्रिय दानदा मूत्रय नीह कृच्छ्रात् ॥ ॥ मूत्रकंथ शून्य नापे
थ शून्य थ वक्षः काय वपयू ॥ सक वक्षः थ शून्य ॥ वसस वायू वडाव मूत्रया मार्गं सपीठनयू ॥ गुग्गुलस
वाहाग उगुवेल सपीठनयू वाहन ॥ ॥ नीलागि नूगु वक्षः वक्षि मूत्र स्वल्पं मूद्र मूत्रय नीह वागात् ॥ ॥
नीलागि स्याक खल संक्षि सवसस लिंगस हनि श्वानं चावव वाहन ॥ ॥ पीतं सनकं सनूजं सदाहं कृच्छ्रं
मूद्र मूत्रय नीह पिलात् ॥ ॥ आसू उनि हितं गुरु स्याक हियू कषया उं वा नेर मूत्रवव पिलाया ॥ ॥
वक्षः सलिंगस्य गुवृत्त्व ॥ ॥ मूत्रस्य कृच्छ्रं करु मूत्रकृच्छ्रं ॥ ॥ वसस लिंगसं ज्ञातु मनीक मूत्र थ मूत्र
स्यायीव ॥ ॥ मूत्रकृच्छ्राया ॥ ॥ सर्वविनूपा निगुसनिपागा हवनि गल्लु कृत्तममु कृच्छ्रं ॥ ॥ सकं

॥ सकां

गानूय श्रव सन्निपात कृच्छ्र श्रव सिध म्म उच्छ्र सन्निपात या सायक धाक ॥ ॥ हत्पी जव पथः मूलं क
 जाव निश्चिद्वर्तलः ॥ ग या एव कि म्म र्छा व म्म उच्छ्र सदा नृधं ॥ ॥ नृगम उ म्मा क म्म उच्छ्र म्म ल थं म्मा क
 पत म्मा क ॥ ॥ अस्मिनी न अग्नि म्म उच्छ्र म्मा क ॥ ॥ अस्मिनी न म्म उच्छ्र शयाव म्म र्छा शय क न अग्नि उ ग्म या य थ ॥
 ॐ ॥ ते निदाना क पत्रि क म्म म्म उच्छ्र निदानं ॥ ॥ अथ म्म उच्छ्र वि कि त्सा ॥ ॥ अस्मिना ग
 नंभा जी वा जि गन्ध रि क ॥ ॥ कान् ॥ प्रविष्ट दान वा ग्म रिः मूल वा म्म उच्छ्र वान् ॥ ॥ गुड गु ॥ अग्नि अं व ल ॥ १०५
 अग्नि गन्ध ॥ ग्म म्मा व ॥ ॥ अथ का थ दा सं तन कं म्म उच्छ्र ना ॥ ॥ ॥ वाग म्म उच्छ्र या ॥ ॥ हत्नी त की ॥
 ॥ ग्म श्रव ना ज वृ क्क पा पा दा र दत्त व वा स कानां ॥ का थं वि व त्मा रि क सं प्र म्म कं कृच्छ्र सदा ह स र्ज वि व र्ने ॥ ॥
 ॥ हत्नी ॥ ग्म म्मा व ॥ दि र्ग ॥ ल वं त व ॥ आ द ग ॥ इ ला ल र्ग ॥ का थ दा सं तन कं क स्मि क्क उं स्त्रा उ कं ॥ ॥ ग्म क ॥ ये

म्म उच्छ्र वि कि त्सा ॥

लूमूगृहकुनाग॥ ॥ पिरुमूगृहकुया॥ ॥ कदनीमूलनसनमूगृहसूत्रयाविवा। करुठकुविना
 गायलकुपिष्ठाकृतिविबन्॥ ॥ कदाहायावससंधशर। सूत्रापानसंधशर। गममूगृहसंधशर। सूकम्याल
 वृक्षसंतनकं। ॥ पिरुमूगृहकुनाग॥ ॥ ॥ पिरुमूगृहकुया॥ ॥ गृथानजः सुपिष्ठंतमधूनासहयाजि
 तं। मूगृहकुनिहस्यागृजिहिदधितसंगयः॥ ॥ नवूर्धुकक्तिनवावंनस्पेतिदाषमूगृहकुनाग॥ ॥
 ॥ ॥ पिरुमूगृहकुया॥ ॥ ॥ उर्वीवृवीजमधूकंसदाविपिरुपिठरुलपूष्कनन। दावीनधेवामलकीनसन
 समाजिकैः पिरुठकुनधरुनन्॥ ॥ ॥ उर्वीचादि॥ पिरुमूगृहकुया॥ ॥ ॥ वृहनीधवनीपाधाय
 क्षीमधूकलिंगका। पावनीयावृहत्यादिठकुदाषगयायपहं॥ ॥ ॥ वृहत्यादि॥ ॥ पिरुमूगृहकुया॥ ॥
 टंकलंवयवज्ञानं। कर्कनासहसंयुगं। कृगकागवसंधयंतिदाषमूगृहकुहात्॥ ॥ ॥ पिरुमूगृहकुया

ॐ नि नि दाना रूप वि क्रम मू ण कृ णु वि कि त्सा धि का नः ॥ ॥ जा य न कृ णि तेः दो षे । मू ण घा त उ या द नः ॥
 पा था मू ण वि द्या ना शे र्वा न कृ णु लि का द यः ॥ ॥ वा न कृ णु लि ना पं जि म स्त ना १३ मू ण घा त जा य न प य
 स्रिय ॥ ॥ नू णा व ग वि द्या ना द वा यूर्व स्तो म व उ ना । व न नि मू ण मा वि ष्य वि नु ण कृ णु ली कृ तः ॥ ॥
 नू ण व मू न या व । मू ण व ग पि ना व । व स स । वा यूर्व ण व । स्या य । मू ण स पी उ न पं शू यी व । मा र्ग न मू ण स व य । वि धे
 न आ यि व ॥ ॥ मू ण म ल्या ल्य म थ वा स नू जं स य व र्त्त न । वा न कृ णु लि ना नु वा धिं वि द्या त्स दा नू णं ॥ ॥
 मू ण वि ता य र क्ष न व यी व । अ थ वा स्या क न ग नी व । अ वा न कृ णु लि का धा य ॥ अ वा धि न्नि क्का क ॥ ॥ अ ध्या
 प य । ए लि नु दं नू ण वा यूर्व स्तो न नां । कृ णि लि म । छी ला मू ण मू ण वि मा र्ग न्ना धि नी ॥ ॥ व स स । व र क्ष व
 व स स । आ षा म स । वा यूर्व ण व व न न पं थ नू स्यं व यी व । अ वा य न त व पी ज या नं ॥ अ ष्टि ना धा या नो ग न म ल मू ण

११६

ॐ किययाक ॥ ॥ ॥ अष्टिलाधाय ॥ ॥ मूत्ररसाहवलेन वस्त्रिद्वित्रिणीति ॥ वागवस्त्रिनिहयं ॥
 व्याधिः सकृच्छ्रसाधनः ॥ ॥ मूत्रवेगनधननपुत्र ॥ ॥ साधययजेव ॥ ॥ वागवस्त्रिधाय ॥ ॥ वागवस्त्रि ॥
 विनंक्षप्रयत्न मूत्रं त्वनयानं प्रवर्तते ॥ मरुतामान समन्दत्वं मूत्रागीतः स उच्यते ॥ ॥ ता उगीत वा रुक पिना
 न्याव रति नायं मवन ॥ मूत्रकागजव रुय मालीव ॥ ॥ अथ वा स्या हन रुका वयीव ॥ ॥ ॥ मूत्रागीतधाय
 ॥ ॥ मूत्रस्य वेगति हन रुदा वली रु रुकः ॥ अपानः कृपिता वायू नूदनं पूनय रुगं ॥ ॥ मूत्रवेग पिनाव
 उदावली रु रु रुयीव ॥ अपान वायू कापनपाव धन स इः ख वियू नातिनं क रु रुधायू गी वुवेदना रुयू वसन क
 आणामन ध ६० सूयू ॥ ॥ ॥ मूत्रज ० वधाय ॥ ॥ वस्त्रो वाप्यथ वाना रो मद्ये वाय स्य दहिनः मूत्र
 प्रवर्तते सर्वग सन कं वाप दाह नं ॥ ॥ वस स ल्य रु स म विस ॥ ॥ मूत्र स रु धाय स स्यायू हीन जायू ॥ ॥

वक्त्रे नैव मलं स नूजा धवनी नूजं । विगुह्य निन जा वाधिः समूहात्सर्गसंहितः ॥ ॥ सात्राहन हास्यं वि
 लायश्वा ववः स्यात्कदवः विमार्जन जा व ॥ ॥ धवाग मूषा संगक्षय ॥ ॥ नूऊ स्या काकदं ह स्य वस्ति स्तो पि
 रु मा नू गो । मूष ऊयं स नू द्या हं जनय कं तदा ऊयं ॥ ॥ नूऊ गत्री नया च स स पिरु वायू वडावः मूष ऊय यागं द
 हया नं ॥ हियू शत्रं ॥ ॥ ध मूष ऊय क्षय ॥ ॥ अ नर्वहि मूखे वरुः स्त्रियात्म स रु सा ह वं न । अ मनी गुल्य नू
 नुक्तिः मूष ग्रन्थि स उच्यते ॥ ॥ च स इव नः मूष सः (मा उ दवः स्त्रि न न चांगुः चक्र ति (मा उ गुलि स्त्रि दवः गु
 त्रि स्त्रिं स इ अ मनी या धां च स स्यायः (मा उ दवः ॥ ॥ मूष ग्रन्थि क्षय ॥ ॥ अ मनी या पिरु न ग्रन्थि जाय न
 यू ॥ ध या न क न जाय न यू ॥ ॥ मूषं चैव कियं जागी वायू ना गु क मूष नं । स्त्रु ना च नं मूष य नः पुा वक्ष्य दाय वरु
 न ॥ ॥ मूषा वि का न स जाय न यू मूषः वायू वि का न गु क स व डाव न का ग्र इः या न गु क स्त्रु न सः काल स्यं व यी वः
 कुडा इं लि व नं वि का न रु यी व ॥ ॥ र स्मा द कं युगी का नं मूष गु क न इ च्यते । व्याया मा च्चा न येः पिरु वस्तिं पुा

पानिलायुगं॥ ॥ रुस्मतिथ्यं वव मूगमुक। आयकं वलं न वज्रग्निरुलं न वनिहा न रुलं पिरुवायू च
स स वस न पाव॥ ॥ वलिभं दु गुडं वेव पुद हं म वथ दधः। मूगं हा विद सध वा स नू जं न क भव च॥ ॥
वस लिंगं आयाम थं स हि मूकं मूगका दयूव। ह न डि या गि थं क दयीव॥ अथ वा म्वा हि थं क दयीव॥
॥ ॥ रुक्मान्यूनः पुनर्जुना नू क्रवा गं व दकि गं। पिरु क को द्या व पि वा स हं न ग निले न च॥ ॥ क
रु न वा नं र आय न म् थं न उ क्रवा ग धा या। पिरु (ह) म् न गं गु थ श्रं पिरु (ह) म् वा ग र द न यू या॥ ॥
रुक्मान्यूनं दापी गं न क स्व ग य नं स उ जं ग। सदा ह न वा व ना नू र्धूं नं ख व र्धूं र व च न ग्॥ ॥ वा रु य क रु श य
वा क्मा स य् गी य् क्वा उ य् न क व द न या उ नि श य् य गि हा यी व हि यून न नि व। ग्म न वा व न या उ नि पिरु या॥
वा ग या ग व श्रा य् स त्रि पा ग या स र्व ल क ष श य् नू क ण नी न या इ र्व ल या वा ग न ध ग स इः ख वि या व पू नी ष

समूह आसं वयीव ॥ ॥ धर्मसूत्र सादधाय ॥ ॥ मूत्र (अना) नूपयन वित्तसक्त मूत्रदाननः । विद्वान्
 मूत्रयत्कृच्छ्रादिदिनं ववितिर्दिशत ॥ ॥ मूत्रवहनपूधानसमलपुटलिशयीव । मलयानदयीव ॥
 मूत्रकषणं तु वयीव ॥ ॥ धर्मविद्विद्यानधाय ॥ ॥ दुर्गंधलंघनाया संश्रित्यानात्युपीतनात् स्व
 क्कानाक्षि नूचलः स्फुल्लेति शक्तिगर्भवत् ॥ ॥ नायिनं गलं ग्यालं अयाससं अरिद्याननयोऽ
 नपत्रं । त्वदूकासं चोडुं च सप्तवनं गवधेन सदवक्ष्यं तव (गंध) नश्यीव । ॥ ॥ अरिद्यान
 मूत्रकृच्छ्राय ॥ ॥ गलस्यन्दनदाहात् विन्दुविन्दुप्रवक्ष्यपि । पीठितकुसुमं दानासंस्तरं दक्षना
 र्तिमान् ॥ ॥ स्थाकं कुयुं हियुं उलूनवव । रुटिरवव । थूं रन स्याक । हुनं वधेन शव ॥ वसिक्तुन्द
 लमाद्रुक्त्याना सुविषायमं । पवनपुवमं प्राप्य शनिवानमं वद्विहिः ॥ ॥ धर्मवसिक्तुन्दलधाय ॥

हीमममुथं विषवदुल्य वाधि वागवाद्रुल्य शयीव वृद्धिमद्वेयनसियकधमक ॥ तस्मिन्निगानि
 नंदादुल्ले मूगविवर्णा ॥ अथमममेव वं ॥ अथमिन्धेवर्ण्यनं निगं ॥ ॥ पिरुसंयूक शयाव म्याकहि
 यवायाउनि विवर्ण्य शयीव ॥ अथमनगंगुया ज्याउ मनीव चस ॥ वाविकनलायीव त्वयूय ॥ ॥ अथमनू
 विलावलि पिलोजी ॥ अथमनसिद्धाति ॥ ॥ अथमवससवसवपंधाल नयाजीर्णमअं त्वल लायकधमक ॥ ॥
 अविशक विलः स्या ॥ अथमनयनः कउलीकनः स्यादलीकउलीकनसमाह ॥ अथमउवव ॥ ॥ विशक शयीव म
 गुदावन मलकाधनयय ॥ अथमवधनयंदकउंधाल साधयायमजिव कउलीकन शवकाल नू ॥ अथमउसल लाय अवे
 द्याशव ॥ अथमसवहनय ॥ अथमलकन ॥ कउली शवसिया ॥ ॥ अथमनिदाना कपत्रिकममूगयागनिदानं ॥ ॥
 अथममूगयागविकित्ता ॥ ॥ अथमन ॥ अथमकं काथकल्कयूकं कनपिवर्ण मूगयागमूगयाग

कदापि सुदान् (॥) ॥ (गमसाहं गममान् चूर्णधूलिषु संमृज्याद्यानः) ॥ कदापि आदिपेनाम् ॥ ॥
 क्षान् (गमकृत् ॥) ॥ अमृतं नागं क्षणीवाजिगन्धकिकृत् ॥ तस्मीत्यावागनामर्कं मूलं वा मूत्रकृत् ॥
 न् ॥ ॥ गुग्गुलुः शिः जंवनः अथ गन्धः लिङ्गः दाहः ॥ (गमसान् धनं चूर्णं लंख सदायकं त्वनं वागमूत्रकृ
 कृत् स्माकं नागं ॥ ॥ वागमूत्रकृत् कृत् अमृतादि ॥ ॥ क्षणीरुलं वक्रं सः पितृदाहकं नायुगं मधु
 मिश्रयुतं तेव अहिद्याग सकृत् कृत् ॥ ॥ अहिद्याग कृत् कृत् ॥ ॥ उलाहिं गुयुतं कीले सपि मिश्रं पि
 वन्नः ॥ मूत्रदाहयुग्मार्थं ॥ कदापि हनेनं ॥ ॥ कदापि या कृत् कृत् ॥ ॥ उलाहिं ॥ ॥ ॥ ॥
 सवृत्तावनकं ॥ कदापि मूत्रकृत् कृत् नास ॥ ॥ काथः (गमकृत् बीजस्य यवज्ञानयुगं सदा ॥ मूत्रकृत् सकृ
 जंवनः नीयुं नियकृत् ॥ ॥ (गमसान् काथदासं यवज्ञानयुगं सदा ॥ मूत्रकृत् कृत् नागं ॥ ॥

११२

अस्मिन्निदाने॥

॥ ॥ गमश्च नादिक्वाथ ॥ सकृज्मूत्रकृच्छ्रया ॥ ॥ जलाग्महृदकनिना जलपिप्पलीनां सर्वावी
जलवत्पारुमकृश्मानां वृक्षनिगदूलजलनयूतानिपीत्वा पुण्यमृत्फनयी जीवति मूत्रकृच्छ्री ॥ ॥
जलादिपात्रे ॥ तव मूत्रकृच्छ्रया ॥ ॥ गतमूली कषायं न कृच्छ्रं नूतं यत्तु संयुक्तं ॥ ॥ गतमूला
दि ॥ मूत्रकृच्छ्रया ॥ ॥ गिलादिदं न उक्तं लिनादिपूतनं वाहीनूयवेषु सिद्धं तैलघृतं कील स
थानूयानं कालेषु कृच्छ्रादिषु संयुथाद्यं ॥ ॥ मूत्राद्यागविकित्सा ॥ ॥ ॐ नितिनिदाना कषयत्रिज
म मूत्रकृच्छ्र मूत्राद्यागविकित्सा धिकानः ॥ ॥ अथ जन्मनी निदानं ॥ ॥ वातपित्तकफे हि
वदुर्ध्वं गुक जायते पापः श्लेष्माश्रयाः सर्वा जन्मर्याः सूः यभायमाः ॥ ॥ वातपित्तकफे हि
जननं अवधेना ॥ वादल्यशका श्लेष्माश्रयाः श्लेष्माव उतिगुहा शनं जन्मनी जायते ययुः जम ॥

किं कथं च ॥ ॥ विष्णुप्रथमस्ति गतं स मुकुं मूगं स पिरुं पवनेः करुत्वं । यदा तदा स्माप्य पजाय न तु
कमलपिरुस्त्रिवरावनेव ॥ ॥ वससः । ग्मनयः । मूगः । मुकुं स हितया शवः । वससः । उमुकुं । मूगसक
रुस हित रुयीव । ग्वनगा थथ रुनः । वनत जू मनी रुयीव सिय ॥ पिरुया पत्रिणा त गथ रुन जू थ सियः । मूग
ग्मनावनया तिथो वा निव ॥ ॥ मूगवस्ति तू गभितं मूग रुकुं क्ता नू विः । सामान्य लिंग नू ग्ना रिः । सुवनी
वसु मूगवतु ॥ ॥ बालसया वा थं वा दाय कष्टः । रुन दवः । नू विमदः । सामान्य सर्व लिंग या उ थं । त्यरु सा
कः । लिंग या तेल सः । तुलि थं । ग्मदवः । स्मायः । वस थवनः । त्यरु थवनः । कावनः । स्मा क थन पूर्व नूप ॥ ॥ विसी
धूम्रं मूगसः । तया मार्ग तिना धनं । तद्यताया तू खगभ दं जू क्ता । ग्मभदका पमं ॥ ॥ मूग भना वववूकः । मूग
मार्ग सथा शवः । मार्ग रुकुं कयया कः । क्षमदा भोद तत शवः । तू खन वा दायः । भदया थं । मलमदः । उ निः । वा स ॥ ॥

वा नास्तीति विहिता॥

नत्संज्ञा रातुर्जनं सासुमाया साच्चातिवृत्तं नृणां गणवा नाहं दार्ढ्यं दत्ता न्वा दति वंषत ॥ ॥ अमरी शनः
अवः शानलात शव हीन जायथा असा स्याकेन अगि स्या कथा वागन अत कुं रेवाय ॥ ॥ गज्जातिमं ह
नातातिः पीठयत्यग्निं कनं मानिलं मंत्रसकृच्च मद्रुर्भूतिविन्दुः ॥ ॥ पीठवपुर्महयाथां नाहिसपीठ
नयू रुसनतंगुच्छपात्रयातसामूकनयं वीड हुने वा नेरुटि रया उं वयीव ॥ ॥ ॐ तिवातामरील कुलं ॥ ॥
अथवातामरी वि किंसा ॥ ॥ शुद्धमग्निमन्त्रपाषाणं विल्ववृक्षं गन्धर्वः अथवा नवधरुलेः काथं क
र्ष्यद्विव कुलः ॥ नामथ जात्रलवले वृक्षं वृक्षं गन्धर्वः अथवा नवधरुलेः काथं कर्ष्यद्विव कुलः ॥ नामथ जा
त्रलवले वृक्षं दत्वा पितृवन्नरः अमरी मूककृष्णं दीपनं पावनं पत्रं ॥ हन्ति कोट्या विनं वागं कश्चू नृगुडमं दुजं ॥
शुद्धिं गिनिया वसि पाषाणं हृदं बालं वृक्षं गन्धर्वं हनतं दिग्गुलं हिं अमसखा वृक्षं काथं दासं त्य

त्रि

[illegible]

१८१

कदाहमत्रा विदिता ॥

[illegible]

ध्ववधूकाविदाः॥ न स्यात्सूत्रमात्रायां शुक्रमरिर्विलीयन॥ ॥ **ऊल स्यात् सूत्रक दन नुवव चा सिम**
 नीव ध्वन उ प ड व रु त श व । वि नु ध्व हां र व उ गु ध्वं उ नीव॥ ॥ **पीठिन त्ववका (म) सिन्न मर्थ व न ग र्क ।**
 ना॥ अ नू (म) वायूना रि न्ना सा न सिन्न नूना म (ग)॥ ॥ **ध ध्व पीठ न पा व पि हा व य स हि (म) उ ध्वं उ २ ग र्क**
 ना म नी । सू मार्ग न व व वायू न रि न्न व पं पि रुं रु य रु व सा सू मार्ग न मू क व पं व नि व॥ ॥ **निल गि सह मू य व**
 पु निलो म वि व ध्व न । मू य (म) नः पु रु ता सां ग का कू र्पा दू प ड वान्॥ ॥ **मू य व ना पं व व मू य नी न मू य ध्व**
 न स व स न पा व पा पा न रु या व उ प ड व या नं॥ ॥ **मू य कि क य या नं॥** ॥ **तिला पा मार्ग क द ली प ला सा य व वि**
 त्वे जः । का थं य या वि मू य द ग र्क ना म नी ना न नं॥ ॥ **हाम ल अ पा मार्ग क ली मा या हा प ला म वी ज न**
कू याल ध्व न का थ दा सं त्व न के वि श्व स व ड गु वी ज ग र्क ना म त्रि ना न॥ ॥ **नृ ज व ल य व जा व प थ म का**
 न र्क रा स्म त्रि या उ म स॥

न र्क रा स्म त्रि या उ म स॥

लीयकान्वितं। दधिमत्वा हिनत्यग्रं जम्भया गुविना गन्धम् ॥ पात्रं यवज्ञानं हवत् कालीयकं स्वतः
 व्यालं ध्वनं काथयास्यं त्वनकं जतिं उग्रं जम्भरीणीं युननो ॥ ॥ नृवंलादिकाथं जत्पुष्पं मन्त्रीया ॥
 ॥ ॥ दोवर्धं सदने कांशं कुक्किं लममथ नृविः पाशुत्वमूकवागं वदक्रादृती उनेवमिः ॥ ॥ विवर्धं
 श्रीवः वलमदं धनस्याकं नृविमदं काकं हियू व्यासदवः नृगण्डस्याकं क्लायमालीवः ॥ ॥ यस्तूननातिवृ
 षणं वद्वमूकं नृजावितं। जम्भरी जययत्या गुणिकता गणकं नाविता ॥ ॥ जृष्ठं एरुमनीवः मूकवधं गणक
 दवः हि गण्डधं सासत्रधं वयू मूकद्वानं ॥ जम्भरी ननानं पाथभावकं ॥ ध्वनं उयडवद्वजव ॥
 कृष्णोऽकं वसा हिं गुयवज्ञानं गितायुगं। वक्तिमदं सगूलं वगणकं नाजम्भरी नागनं ॥ ॥ लायूरुसियाव
 सः हिं उमसखा विनिः लंख सखासं त्वनकं वसस्याकं लिंगस्याकं गणकं नाजम्भरी नाग ॥ ॥

कृष्णाशुकादि॥ ॥ एवमापराजितामूलंतेलकूर्वन(धेववातकुक्षमववृक्षगुलीपीतंवीजनिहन्निव॥
अस्मिन्नीमूककृकुं वमूगयागतधमसजं॥ ॥ लयूअहनातिस्वायाहा वि कनमून॥ वनृक्षसिगुलि
वृत्तसवात्रंनसं विकनत्वसंअस्मिन्नीमूककृकुं मूगयागतनाग॥ ॥ एवमापराजितादि। अस्मिन्नीमग
या॥ ॥ वनृक्षपलगतजलडादागुडगुलागुलिउर्वानूवीज(मकूत्रकधा। पाषाणरुदहीगलीकृष्णाशु
गुपूषवीजकूनीवास्तुकनिगुदाशाजलागिनिजाहयाविठिंगपुष्टकं पलपयगुडपावनअमृपमान १८३
गुटिकासर्वदाषअस्मिन्नीनागनं॥ ॥ वनृक्षगुड॥ ॥ अस्मिन्नीया॥ ॥ पाषाणरुददृग्धेपाकसं
यागनागमईननसंसयूगं४ कर्पासवीजगुपूषवीजरुटिकुठया। पुष्टकंनटियूगं४ कदलीनसंसयूगं। पि
वस्तूकृकुं गर्कनामिन्नीनागनं॥ ॥ पाषाणरुदादि। गर्कनामिन्नीया॥ ॥ वनृक्षगुलाजलडा

६ काथपादाव (गमथान्। चतुष्टय क क क क द नू क द ली विल्व रु पं व मूल ज म गानिला रं द उ य म वी ज
गत पूर्व गिल जान द्य ता न रु द पं व य श कं क र्ष कं। तत्सर्वि विव र्जी र्ण काल गु उ म म्मु पाने॥ ॥ **ज म नी**
मर्क ना म नी मू उ क क ना ग नं॥ ॥ **व नू धा दि च त॥** ॥ **पू न र्त्र वा म ना री नू** जान वि न व ल ग णी
कृ षं व वा य नं ना स्ना क हू लं पू ष ना नि व॥ य मा नि ह वू षा हिं गु ण ता क्ता म ज भा द कं। वि उं ग म नि वि षा य षि
पं व काला उ स मि तं॥ तेल पु स्तं स (ग म मू र्णं। दि गु षं कां जि क स मं तेल पा क स मू हू तं पा न व सि प या ज य नू
मर्क ना म नी मूल यं मू उ क क न (थे व व॥ क द्यू नू व सि म डुं च कृ जि व रु षा ल्ति नं। क रु वा ता म मूल यं
ज नू वृ द्धि व ना ग नं॥ ॥ **पू न र्त्र वा दि तेल॥** ॥ **पं व मू ला कृ ण** खा व न थ (ग रु न क स्य च॥
व थ क द ग प ला रा ग नू ज ल डा हा वि पा च य नू। व रु र्ण ग व नि ष्ठ सि नू द्यू ग पु स्तं वि पा च य नू। गु उ

वाक्यमकुशा

गमनकवीजं च कल्केन पुनः पुनः पुनः । तस्मिन् मूलाध्यायः । नमो श्रीगुरुभ्यः ।
सप्तमिं ब्रूमः ॥ **॥ मूलाध्यायः ॥** नमो श्रीगुरुभ्यः ॥ **॥ त्वं गुरुलसुलसुवन्**
दाम्पतिकृष्णकान् । कषायनपथके लंबस्तिनां स्थापननव ॥ नमो श्रीगुरुभ्यः मूलाध्यायः पुनः पुनः
ते ॥ **॥ वनवते ल ॥ नमो श्रीगुरुभ्यः ॥** **॥ उमसखा सुकम्पा ल कली ल लीख न द्वा स्यं त्वन के**
मूलाध्यायः ॥ **॥ पुनानुसियागी स उमसखान वूर्ध्ना स्यं त्वन के मूलाध्यायः ॥** **॥**
पलपू । गमनमनव । गमन वूर्ध्ना ख उलं ख स द्वा स्यं त्वन के लिगन हि व व मूलाध्यायः ॥ **॥ वना**
वाद्यवः द्वा र्या उं जं द्या उमया जा कि नी स द्वा स्यं त्वन के मूलाध्यायः ॥ **॥ दुयुगुं दुयुवया**
वालहा लं ख स द्वा स्यं त्वन के मूलाध्यायः ॥ **॥ गुडगु जं गु लि लं ख गु दाय के द्वा ना स्य**

१८४

न कं दायकाव कू ३ त्वन कं मू ७ वन्धना ॥ ॥ नवानं मसखा. सूकम्याले. नवसागन. विनिता
 षन. कलील लंख सनिता वत्वन कं त्वना १ पुमानत्वन कं मल मू ७ वन्ध शवगु उपडवंत न मलाक
 गु. प्यटि ८ या हित न मल मू ७ वन्ध न मू कि शयीव ॥ ॥ मल मू ७ वन्ध नायया ॥ निष्पय नयना
 क्रमदव ॥ ॥ क नवी नरु लेप कं विदानी वग नावली ॥ जीन वपी वय न्यातः म्रियाः मसू निनाग
 नं ॥ ॥ कर्ण वी नया पाक शवरु ल ॥ जीन विदानी ॥ अति हा. इद सग स्पं त्वन कं मिताया मसू.
 निनाय नाग ॥ ॥ मिताया चा रुय मरुया ॥ ॥ ०० ति निदानी कय त्रिकु भज मनी ग क
 ना मनी. मू ७ कू ८ निदान वि कि सा धि कानः ॥ ॥ अथ मह निदानं ॥ ॥ भद ममान सुवा
 गनी नजं व केंदक रुव सि ग लं पु दृषा. कनाति भहा समुदी र्ण मू ७ कू ८ ना नव पि रुय त्रि दृष्य व सि ॥ ॥
 मिहिं याल रुवा ॥

दाकन. मानस. गत्री नन जाय नयू नवर वस्तु नयास. मनी गुनया सच सस आग्रयया अव म हयागं । उष्
इवन का पन पाव पिरु भ ह शनं ॥ ॥ श्री लघु दा ध स्व वरु ध धा गुं सह धा म हा त्रु न नि सूत्रं । सा धाः कः
हान्ता दग पिरु काः षट् । या प्या न सा धाः पु व ना च्चु र्थः ॥ ॥ धा उ दा धन जीव धा गु द का ह या व दा ध स
हं द व पं म ह या यू वा ग न श व गु सा धा या य म जि व । ॥ धा न व व जि ना त द श का पिरु न जा य न यू षु ना सा म
वा ग न व व ध ना अ सा धा ॥ ॥ सम क्रिय त्वा नै दा त य त्वा य धा क म नै क रुः स पिरुः । प व न ध दा धा ।
म दा ध गु का म्बु व सा न सी का ॥ ॥ क रु या स म क्रि या . पिरु या वि ष क्रि या म दा त य वा न या . अ ल्प गु
प त्रि पा ति न क रु स पिरु न ग लं . क ट न ग लं . दा क न . ही न . पु क न . सं ख न ध र लं . ध न न ग लं . ला न जा य न यू ।
चि क न धं यं गि हा त . ध न ल सि का ध य ॥ ॥ म र्ज न सा जः पि सि गं व दू धाः पु म हि धं विं न ति न व म हा

१६५

उदकमहेश्वर

सनतिथ्यं. लासिलातिथ्यं. लायाउनिथ्यं. पुमहयानीयगा२० विकान्न॥ ॥ दन्तादीनां मलाद्यत्वं प्रा
ग्रयं पांतिपादयाः दाहविक्रानगादहं नृत्सु द्वास्पंवजायत॥ ॥ वासूथकस. भ्रमस. गलस. जलगभय॥
नकशयूहउ. पा०. लाहाहियूशयू. स्रविकंलायीव. पासवायू. स्रुवाकूयू. धनपूर्वनृपसिय॥ ॥ दा
महृष्णावि. लाघपितत्संथागवि. लाघतः। मूयवर्धुनितदततदमहयुकल्पयन्॥ ॥ दाघलहदनपू. वि
लाघन. ग्वक्षयागुगुदाघसंथागशत्र. अक्षयामूयवर्धुवि. लाघन. मिहियाहदकल्पनायाय॥ ॥ जृच्छं व
द्रु नितंतीतं निर्गन्धमूदकायमं। मरुत्पूदकमरुत. किंविज्ञाविलपिच्छिलं॥ ॥ वा. नायू. लाउ. नमइ.
लं स्वथ्यं हति वूलूयू। सायथागु। ध्व उदकमहभय॥ ॥ उदकमह॥ ॥ पानिजानकपाथन उ
दकमहविनागयन्॥ ॥ वकसिक्क. काथदास्पं त्वनकं उदकमनाग॥ ॥ ०० श्रवस मिवात्थ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

मधुकं वक्रमहच॥ १ ॥ इति ध्यं वव अति वां कू ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विवेदि न संवेव ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
विना गयत् ॥ २ ॥ यस्तु कं न्या हवत्पूर्व याग कृद्यानि लोकत्री । तस्या कमानूषी प्राप्य सवमहादिता ल
वत् ॥ सान्दी हवत्पर्य धिने सा नुमहनमहति ॥ ॥ सत्र सया डाव सुक थां थ्युः सानुमहन थ्युः ॥ ॥
सकपर्त कषायन सानुमह विना गयत् ॥ ३ ॥ कृतिवन काथ दासं त्वन कं सानुमहनाना ॥ ॥ सूना
मही सूना तुल्य सूर्य यच्छ (धो घनं ॥ ॥ जीमाथ उनि ध्यं वां हनु सूनामह धाय ॥ ॥ विवे निम्ब ॥ १८५
कषायन सूनामह विना गयत् ॥ ॥ निम्ब काथ दासं त्वन कं सूनामहनाना ॥ ४ सूनामहया ॥ ॥
सं हस्तामा यश्चन पिष्टवद्ध नं सितः ॥ ॥ वारुणा नास विष्म कं कनिवव धागति ध्यं वव सितामह
धाय ॥ ॥ विवे दं कि कषायन सितामह विना गयत् ॥ ॥ विनक काथ दासं त्वन कं सितामह

असिनेपहिजा

नाग॥ १ ॥ वाञ्छायद्ययंकूर्या रुद्धाधिं विनिवर्तते। सपत्नीमातृगमना रुलमहीनत्रारुवत॥
तगिनीगमनादि कृमं हवान्ननराधमः पापात्मा मातृगमना मधुमह हवे कुरवं॥ वाञ्छाली संगमात्सर्वी
पुमही कुरुषाननः॥ कृतनाननसा म्यक्ति पुमहादा नृक्षदयि॥ ॥ **वक्षस्यनवाञ्छायद्ययन**
वक्षयातधुगुवाधि उत्पलिशत्र। मामकलातदयकाव जलमह शत्र त्रिवाकलातदयकाव ००
कृमह शत्र। पापात्मा मामयाक विकारयाताव मधुमह उत्पलिशत्र॥ वञ्छात्रजातियाक वडाव दक्षमह
उत्पलिश वक्षमनूया शत्र॥ तयानकमह शत्र सांधू किन नक्षत्रि शयीव॥ ॥ ०३ क्लारं ०३ कमिधंवा
०३ कमही पुमहका॥ ॥ तायुस्पंववती सचिकननाक ०३ कमही क्षय॥ ॥ ०३ कसुनूयू निकं
कृमीकं प्रवसन्धवं। जलन क्वधिगं पीतं ०३ कमह हनं पत्रं॥ ०३ ॥ मूः ससिकतामह सिकता ०३ व

नूयिषः॥ ॥ वाङ्मनः डावलिपतसः मुडिरया डंववः रि (ग) उ थं ववः सिकतामहधाय॥ ॥ सि
कतामह॥ ॥ ॥ लनेननेननेर्मरुः मदमहं पुमरुति॥ ॥ **विताय २ धनं वावं २ वाङ्मनः कथा मदम**
हधाय॥ ॥ मदमह॥ ८ ॥ लालान्कयुतं मूयं लालामहं वपिच्छिलं॥ ॥ लालथं सूकाथं
ववः धातुः ॥ **लालामहधाय॥ ॥ लालामह॥ ९ ॥** जिह्वलान्कयुतं डाङ्मनः कथायं वपिवरुतः॥ १८१
कथायं प्रथ्याकं वा लालामहं विनाशयत्॥ ॥ **जिह्वला दिग्गल मिच्छि सिः कथायं सत्वनकं ला**
लामहनाश॥ ॥ गन्धकारुतसः स्पर्शः क्रान्तं क्रान्तं गायत॥ ॥ गन्धक उनिः स्वादतं सायानं चरु
ध क्रान्तमहधाय॥ ॥ क्रान्तमह॥ १० ॥ नीलमहन नीलारं कालमहं मसीतिहं॥ ॥ **असियाति**
थं वाङ्मनः नीलमहधाय॥ ॥ नीलमह॥ ११ ॥ मसि थं वाङ्मनः कालमहधाय॥ **कालमह॥ १२ ॥**

पिवत्कषायं जयति कालमहविनाशयन् ॥ ॥ कासू जयति स्थान काथ दास्यं त्वनकं कालमहनाश ॥ ॥
कालमहया ॥ ॥ नीलमहया ॥ ॥ कद्रुकं हविनामहं हविनासन्निहं हन् ॥ ॥ हविनामहया स्वा
दयालुः उतिहविदिधो जाह्नाक हियू ॥ ॥ राजवृक्षकषायन हविनामहनाशनं ॥ ॥ दिखलकाथ
दास्यं त्वनकं हविनामहनाशनं ॥ ॥ १३ ॥ विघ्नमांजिष्टमहं वमंजिष्टासलिलापमं ॥ ॥ दर्शय मन्त्रिस्थं
ववमंजिष्टमहक्षय ॥ ॥ पिवन्निष्कषायनमंजिष्टमहनाशनं ॥ ॥ मिवकिमि काथ दास्यं त्वनकं मे
जिष्टमहनाशनं ॥ १४ ॥ मजिष्टमह ॥ ॥ विघ्नमूर्ध्वसन्वधेन कारुं नकमहनः ॥ ॥ नववः काकविन
हिया उतिधनकमहक्षय ॥ ॥ सर्वदाविगुडीवीवतिन्दूकरत्नरुक्म ॥ मधूयूकं कषायननकमहवि
नाशयन् ॥ ॥ श्रविला गुजगु रुसि खरू वसि काथ दास्यं कस्मिन्कूटं त्वनकं रवा उकं नकमहनाशनं ॥ ॥

॥ १५ ॥ **नकुमहया** ॥ ॥ वसामहीवसा मिध्रवसारं मूत्रयस्मदः ॥ ॥ दाफव वावनाप अहंवव थव
सामहधाय ॥ ॥ १५ ॥ **मऊाहंमऊमिध्रं वामऊामहीमूद्रमूद्रः** ॥ ॥ स्थलयातिथं सननवानाथं रुठि
रपियानजासं वा दाय ॥ **मऊामहधाय** ॥ ॥ **नगलं** खदिनें पूगं काथं वपयिवन्ननः ॥ डाकासहलव
लुपां मऊामहवापाहनि ॥ ॥ **नकनाज खयल ग्वव मी सि थन काथ दासं तनकं मऊामहनाग** ॥ ॥
॥ **मऊामह** ॥ ११ ॥ कषायं मधुनं नूऊं ओडमहं पदं वधः ॥ ॥ कसि दायकाथं उनि लायसं वव ॥ १८८
थ ओडमहधाय ॥ ॥ **ओडमह** ॥ १८ ॥ हसिमरु वा जमुं मूत्रवग विवर्जितं ॥ ॥ कि सियामदथं ।
हिवीकथं वात्रं र वगनवामव ॥ ॥ सलधीकं विवर्जं व हसि भरु पख्यापिगं ॥ ॥ यकि थं वव रुं सिंह
नवव थ हसि भरुधाय ॥ ॥ **हसि भरु** ॥ १९ ॥ विवल्कषायं खदिनें मूलं महं विना नयन् ॥ ॥ स्वय

लकाथदासंस्वकं नृलं भद्रनागं ॥ हस्तिभद्रनागं ॥ न्यग्रोधवकषायनजस्रभद्रविनागयत् ॥
वलगतसिक्ताथदासंस्वकं नृलं भद्रनागं ॥ ॥ कृष्णकटजपाथवह्निगुणिकद्रवाहिनीगुडुविनेः कषायेश्वर ॥
नृलं भद्रविनागयत् ॥ सर्पिभद्रविनागयत् ॥ ॥ कृदकृदवीरवाहायः हिंशिकद्रगुडगुः थनकाथदासंस्वकं
कं धलथं ववसर्पिभद्रनागं ॥ ॥ सर्पिभद्र ॥ २० ॥ अविपाकात्रविच्छिदिनिजाकागः सपीनसः उपडवाप्रजा
यकभहाककरुजानाथ ॥ ॥ नयापाकमवं नृविमद् क्लायमालः कृत्तमद् क्रिस्रनूनहावः थनउपडवा
शनशवः श्वभभद्रसिय ॥ ॥ वस्तिभद्रनयास्तोदमूष्कावहननं कनः दाहस्तुक्रास्रकासूक्तविहृदविरुज
मनां ॥ ॥ चसलिंगसहायाथं स्याकजुपाकयाउमायू ॥ तव ॥ कनः थसंनिपातउपडवाहियूः य्यास
वायूधकात्रवयीवः अवेष्टाशयः मलवन्धशयः पिरुनजायनपूउपडव ॥ ॥ वातजानासूदावर्हिकं

पद्म सुहृत् लालता। मूलन निडता। लघः। काशः। स्वः। पुजायते॥ ॥ वातयाकेन नृ। ग। उ। स्यात्। च। म। क
स्म। क। सकलतां। ला। रु। या। क। य। त। स्या। क। कृ। उ। म। दृ। मा। सा। व। व। स्व। स। व। रु। न। पू। थ। ता। त। या। उ। प। ड। व॥ ॥ य। थ।
का। य। ड। वा। नि। श्र। म। ति। पु। सु। त। भ। व। व। पि। ति। का। पी। छि। तं। म। रं। पु। भ। हा। रु। कि। मा। न। वः॥ ॥ आ। व। ला। कृ। उ। प। ड। व। अ।
त्रि। श्र। ति। न। के। मू। ण। व। त। अ। सा। धा। क। च्छु। न। पी। उ। व। य्। क। थि। न। या। डं। व। व। थ। धिं। गु। पु। भ। रु। न। म। नू। षा। भा। व। क। न॥ ॥
पु। भ। हि। नां। य। दा। मू। ण। म। ना। वि। लं। व। पि। छि। लं। वि। न। दं। ति। कृ। क। दृ। क। त। दा। प्रा। गं। पु। व। ऊ। त॥ ॥ वा। म। ल। थ। अ। उ। य
वू। र्वा। उ। पा। लू। स्वा। दृ। थ। पु। भ। रु। ना। ग। श्रू। सि। य॥ ॥ ग। ना। पि। का। क। च्छु। पि। का। जा। लि। नी। वि। न। गा। लि। नी। म। स्तु।
त्रि। का। सृ। ष। पि। का। पू। ति। नी। स। वि। दा। त्रि। षी॥ वि। ड। धि। थ। नि। पि। ति। का। पु। भ। रुः। पु। ऊ। या। दृ। गः॥ ॥ पु। भ। रु। स॥ ॐ
लियू। सलाविका। सलावथां दधु रुकगाक। कच्छपिका। कायलया आकाल थं ना दहन जाव जालिनी धाय

गव। गभउत्तना उगु वितगा भय। गवर गभउ। गभका उ मरु त्रिकाया हन थं ग्राकाल। मरु त्रिका
भय। सूर्य पिका भय। नका थं ग्राकाल। विदा त्रिका भय थं थं। गभउ वी क। काक। विडधिया ल न व
दत गव। विडधिसिय॥ तय रुवगु। पूटिनी भय। थं क कू म रुया उप डव। द ग पिठिका भय जि
गा श ना॥ ॥ सन्धि मर्म नू जाय न मानु ल वूत भाम स॥ ॥ सन्धि स. मर्म स व व. ला ना व स्र ता व थं
क कू या॥ ॥ साय ड वा इ व ल। ग्न पितिका य त्रि व र्ज थं ॥ ॥ उप ड व न न ड गु ज्ज मि म गु या पिठिका
क कू व ल ग व ता त्र न मान॥ ॥ रु छ्वा ग मानु सं का रु भा रु हि का उ म र्ज ना॥ ॥ प्या स. ग्ना स. व रु
न पू. सत्र रुव। रु कू व व ०० कू. रु न द व. पूटि र क कू न म र्म स वा ध न पू. वि स र्प म र्म स वा ध पिठि ना
मू प ड वाः॥ ॥ वि स र्प क कू न म र्म स यी उ न पू. थं ग पिठिका क कू या उप ड व॥ ॥ सन्धि म ति

कृष्णानि ज्ञांगलाहनि धातुजाः यदा न विकृता मूर्त्ताः गन्धनमनिषष्टिका ॥ यात्रि जा तां जयानि
 स्यव क्रिगययीधं पृथक् । या धायां मागुना चीनाद्यस्य सादनस्य च । जलं कृमशसिकतासुनेः लवध ।
 पिष्टकं । सान्द्रमहान् क्रमोप्यक्रिका ॥ धातुव समाजिका ॥ इवा कसूतू पृष्टिक फूलीक सुवसेधव । जलं
 न कश्चित् पीतं गुग्गुलुहहनेयनं ॥ ॥ सहि धादि ॥ ॥ गुग्गुलुहया ॥ ॥ त्रिहला न गंधं डाऊक ।
 धाय मधू संयुतां पीता निहकिरु धातुं पुमह निहगं नृधं ॥ ॥ त्रिहलादि ॥ पुमहया ॥ ॥ सु क
 र्णहस्तिना कर्णक मूलं यत्सात्मली कूलं । पीतं गन्धमधू मधू मधू विनासुनं ॥ ॥ मधू मधू ॥ ॥
 त्रिभुल्या कदल मूलकानां विडिं ग पा धा ई न धनयानां कदम्ब माला ई न दिव्य कानां विदिं ग दधी यवम
 ल्य कानां च त्वानुगं मधूनां कषाय । करु पुमहू नि संचनीयाः ० ॥ धातिकरु मधू ॥ ॥

लाभुर्नानीनरुक्मवन्दनानानीलासला।लातिनिभर्नानी।वत्वारुगविहताकषायःपिरुपुमहम
धसंययुक्ताःपिंलेंपुंमहें॥ ॥लाभुदि॥ ॥आननीलकालहविडा।धप्यतामहयांगद॥ ॥
पिरुमहया॥ ॥अश्वत्थवकुलांगुलव्याग्राभुदिरुलपयं।सत्रकसात्रमंजिष्टाकाथपंवसमा
क्रिका।पिंवन्त्यानिसंवतमंजिष्टामहनाशनं॥ ॥अश्वत्थादि॥ मंजिष्टामहया॥ ॥सुभेता
वयवआनमजाजीसितयासमं।गीतनाथनसंपिष्टापिरुमहजयतुधुवं॥ ॥शुभेलादि॥ ॥
पिरुमहया॥ ॥कर्पूरवन्दनानीनयावभूकमिलाजगु।पाषाणहृदस्कूललापठालंमूलधान्यकं
कोडापर्यटकंयासत्रकवन्दनमृत्यवं॥ जीवेलावासकंहृगंरुगकर्षसप्तचिगं।गर्कनाकूदवंनीत्वा।
सनेमृद्वमिनापवेण्।मर्मना।गघुसर्वषुत्रकाष्टगसवदनेप्रपिलाहनेभूमहृषूमृणमा।नेवि।भध

कृत्। ७ कविं न तिया रक्ता ला यवं जाय न नृत्वं। कर्पू नाय मिदं खलु नामः कर्पू न खलु कं॥ ॥ पि
॥ **रुद्रमहया॥ कर्पू नादि॥** ॥ छिन्नवक्रिक षाथन पाथाश्रुटज नामधं। निकृष्ट सप्तिवर्धुम।
पिरुमह पिवन्नरः॥ ॥ **छिन्नादि॥** ॥ **पिरुमहया॥** ॥ कदवं खदिनं पूगं काथं पीत्वा पि
वन्नरः सधू मिश्रं वनयाश्च मज्जा मधुवाहनि॥ ॥ **कदवादि॥** ॥ **मज्जा मधुवाहया॥** ॥ अग्नि
मन्त्र कषाय कुवसा मधु पिवन्नरः॥ ॥ **अग्निमन्त्रादि॥** ॥ **वसा मधुवाहया॥** ॥ **पिपलीपि**
प्यला मूलं च वा विष्क नागनेः पाथा विदिगं नुय वाहिं गुलागि ववाघनेः सर्षपा निविषा जाजीविश
क नु जङ्गमः। गज कृष्ण जम्भा देक कटू कागि जनसमः लागे कंचू धूनिं न बां विरुला विगुला हवे न
सर्वेषां भवेद व्यानां समाशया थगुर्गुलूः ७ के कने गुहं ला। ७ मधूना मयत्री पूगः॥ याग नाजठ्ठ निरवा

तं या एतयममृगीपमं कनिषात्रिहानसुगानराजनमेधनेः अशुदाषामयं पसा नजा दाषातुथाषि।
गा। निरुकि सर्व इवात्रं नाणकार्यविवात्रभग॥ जभमिवातेगुमं ववातवागमनाचकं। नारिभूलसदाव
रुद्रडागग्रहणीगदं। अयकृष्टमपस्मानं पुमेहं वात। भवितां। महागमनि सा देवकाभम्भसहगंदनं
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तं जीववर्षनंदयं॥ — ॥ योगनाजगुर्नु॥ ॥ धनवानभहयाचिकित्सा॥
भगी सर्वपुमरुषुनिभगी डसमन्विताः कषायमधवादान्तिरुलामृत्तकेष्टं॥ ॥ भयादि॥ ॥
तिरुलादान्मसं वकाथं की डसमरुहान्॥ ॥ तिरुलादि॥ ॥ भहया॥ ॥ कटदावीदम
कंचरुलण्यम। भहया॥ गुइवास्वनसः पयमधूनाभहनासनं॥ ॥ कदादि। भहया॥ ॥
जतिध्वनगुइवावस्वनसा मलकस्ववा मधूयुगाहपागवं पुमहानयनाशनं॥ ॥ जानिध्वनादि॥

पुमहया ॥ वृक्षादनीस्वडं द्याचयावभूकजस्मरददरुकाग। ४०० दृगुत्थलितथापिवन्मूज
प्रवचनं ॥ ॥ मूजप्रवचन ॥ ॥ त्रिकटुतिरुलागुलंगुर्नूवसमान्मिकं। ॥ गमश्चकाधसंयूकं गुटि
कांकावयवधः। पुमहान्वागवागंश्चवागलितमभव। मूजाघातमूजदधपुमहंवापिनाशयन् ॥
॥ गमश्चगुटिका ॥ ॥ दाडिमस्यववीजानि त्रिमिश्रस्यवतगुला। वजनीवविकाजाजीनागत्रंतिरुला
कक्षा। त्रिकटुकस्यवीजानि जमानीधान्यकं तथा। वृक्षास्यवकालेवसिन्धूरवसमायुगेः कल्पावजसमा
नारिः घृतपुष्कं विपाचयन् ॥ हाश्यानाकथागव्यं सर्वेष्ववमाजया। पुमहान्विंशतीश्चवमूजाघातं
थास्मरी। कृच्छुसूदावृक्षेवेहनापादनसंगयन् ॥ विवन्धनातिशूलघ्नं कामलाकरनासनं ॥ अदिमा
द्यद्यतं नामजृम्बिनायनिकीर्तितं ॥ ॥ अदिमाशद्यन् ॥ ॥ दगमूलैकैकलंजदावृक्षयावर्षादि

वनूषदन्निचिश्चकपूनर्नवासूहा निम्बकदम्बवित्तरत्नागकगधियूष्करग्रन्थिकः पृथक्पुनर्दशगोयाम्म
 नेकाथयवकीलकल ४. पृथक्पृथक्काथपादाव (ग) ष. घृण पृथक्कलनियूनतिरुलागगीनाहीषगजधि
 प्ली ३३ विडिंगववाकंयित्तरत्नसर्विन्नुमं॥ उमहाकृष्टगुल्मस्तथवाग (ग) मिति तल्ली हादत्रविदुधियी
 ठिकाजपस्मान उन्मादनागने॥ ॥ धन्वनेनायद्यत॥ ॥ सावीनकं गूला ३३ कंतेले चतं जम्मा
 कृत्रमः पिष्टान्नासूपमास्मानिवर्जयत्॥ ॥ जम्माकृत्रम॥ ॥ मिलायाक्षोसितायाक्षोपलानि
 लिकानिच। गृणी कल्लगुग्मधगी वृहती रुलमूलयाः। पलंवर्जगी गपलंलीकासमध्वूर्ध्वीनं जीर्णक
 नावृत्तिरुन्नानाम्नामिलाजगीचतं॥ ॥ मिलाजगुल्लह॥ ॥ भ्रूया॥ ॥ तिरुला मि
 चक्रिसि. काषगुहा. कसून. धगवूर्ध्वकसि सहा स्पृहत्रतिवूर्ध्ववत्वनकं मंगुभहनायनास॥ ॥

सुकम्पावः पिप्पली पाषाणहृदः स्वर्गमनिवः । गम्भात्रः आदलः अत्र उः समरागः काथदायागी सः निलाज
 उन हः स्यं त्वनकं मूः उः कुः नागः भरुनागनाग ॥ ॥ १ ॥ पाषाणहृदः निलाजः पिप्पलीः समरा
 गः कूर्क्या उः जावः हायागी संतिवः वा कूनवात्रं गवः मूः जाघातः मूः उः वः मूः उः कुः थः याहि उः ॥ ॥
 हः उः गम्भात्रः दिग्गलः पाषाणहृदः इलालहः समरागः काथदायागी सकृत्तिः उः त्वनकः । हियूवः
 मूः उः वः नायनाग ॥ ॥ धूतिः त्रिदोषमहया ॥ ॥ सूत्रपत्रकयायूः मत्रवः निस्पंसाघत्रसवानं ॥ ॥
 नकं रत्ना उलंखनकचूय ॥ ॥ भरुनास ॥ ॥ ॐ निनिदाना कूपत्रिकमभमहविकिसाधिकारः ॥ ॥
 ॥ ॥ स्फुल्लनी अर्थः उदवली हादवली निदानविकि । त्सा ॥ ॥ कर्मविपाक ॥ ॥ अत्रवोना हवः यस्तु
 सकत्मा ज्ञायते कृणः जन्मा कृतं हवः मर्त्यपूना । एवायूनववी । अद्याप्यामदिवा स्वप्नः । शेषला हावः सवि

नः मधुना न्नपायास्तमहासदा विवर्द्धत। भदसावृणमार्गत्वायुष्यत्वेव धावतः भदस्तु वीर्ययस्मा
दशकः सर्वकर्मसु ॥ दाकवधयश्च शवः रुसनवहनेयत्रं। लनियुः सफधुपूष्टियायू। दाकम
शववाफश्च शवः शयनं जसकृशयीव ॥ ॥ इडस्वादकृषामाह स्वप्रकुधनसादनैः ॥ यूकः इ
त्वेददोर्गन्धेन रूपपाक्षेत्तमेधूनः ॥ ॥ सागयमूकनयमरुः ॥ ॥ अस्मिन् विडः पिया सचावः नू। गद
मच्छिः निडादवः अकस्मादनसावहनयूः वननिववः नववः मेधूनमरुः ॥ ॥ भदसावृणमार्गत्वाद्वा
यूकाश्च वि। गधनः ॥ वनत्संधूकयत्यग्निमाहाने। गधयत्यपि ॥ वातत्रायदकानवेष्टनयं मार्गवधयाय
वि। गधनप्यनसवलवकप्यकवापनयं अग्निवृद्धिशयूः जहात्र। गधनयय ॥ ॥ गत्मात्सगीचुंज
लयत्यहानं वः उकषति ॥ विफानाश्च अग्निं धावात्कश्चिन्नात्रैलवति कुमातू ॥ ॥ धनं न जत्यज

यनपू. आहानव. आकांकाशयू. काष्ठसृष्टिश्च शत्रुताव. विषमाग्निशयू. नानाविधिनविकात्रशत्रुता.
 (गमलिच्छिन्नं) आहानवयति कुमवेलसमयाशनं ॥ ७ ॥ तावूपदवकनावि. (गम) दग्निमानूतो. (गम) हि
 दहनस्कूलं वनं दावानलाय धा ॥ ८ ॥ उभहादि उपदवयातं विषयन. जग्निवरुसुव. विकान्त
 धातादहनपत्रं ॥ ९ ॥ स्कूलग्रीवगुप्तमिखाताथं इवनेदहनपू. पिवनेहालाभावा ॥ १० ॥ मदस्य
 गीवसं वृद्धं सुहृत्सेवानिलादयः ॥ विकानादात्रुक्षं कृत्वा नागयन्त्यागुजीवितं ॥ ११ ॥ दाकजृतिवाधन
 पावतल्लक्षणं वागजादिनक्षत्रदकाकायनपाव. लयानकविकानमाशत्रुणी दुष्टजीवभावकनं ॥ १२ ॥
 मदामान्मातिवृद्धत्वाधनसिगुजत्रुनः जय. धापवयासाहाननातिस्कूल उच्यते ॥ १३ ॥ दाकनां
 नां व्यर्थनजृतिवाधनपूयावलमदयकर. यतनू. (गम) उ. इह तवधेउ शयू. मखू. धाता शत्रुवगतामद

१२४

उत्तर
मार्ग

अगिज्ञोऽमनूष्यामलरुतदयू ॥ ॥ ववांचजीत्रकंताघहिंनुसोवर्चनानिला।मस्तुनासुहसंतीता
भदाष्ट्रं वक्रिदीपनं ॥ ॥ सिपि. जीत्रि. विकट. हिं. मूलकल. वृद्धि. त्री. संगव. काकल. ख. संगव.
रु। स्पे. त्वन. कं. वात. भेदना. सयाक ॥ ॥ अग्निवृद्धियाफ ॥ ॥ रुत. जयं. विकट. कं. संगे. लं. लवना. नितं।
ष. मा. सपा. लया. गन. करु. भेदा. निला. यहुं ॥ ॥ वि. रुला. विकट. सध. विकन. पाय. कं. जनू. पान ॥ ॥
॥ ॥ करु. भेदना. न ॥ ॥ ॥ अग्नि. निदा. ना. कृ. य. वि. क्र. भ. स्फु. न. रा. ग. वि. कि. सा. नि. दा. ना. धि. का. नः ॥
अथ उदयरागनिदानविक्रिस्ता ॥ ॥ अथ ह्याधे. स. म. स्फे. च. श्री. रु. व. द. अ. ना. द. के. स. म. रु. व. कृ. द. ना. न. य. शे. ग. षां.
लि. ने. य. थ. कृ. दू ॥ ॥ वात. पित्त. श्लेष्म. जि. क्षे. ष. स. म. स्फ. थ. व. रा. ग. न. जा. य. न. पा. ज. पू. क्षा. द. न. आ. दि. न. उ. द.
न. रा. य. या. गा. पु. का. न. व. जा. य. न. य ॥ ॥ ॥ मल. प. स. लं. ख. थ. उं. त. या. थं. प. न. मं. गु. उ. द. म्फु. न. म. मं. गु. वा. ना.

द्वयय॥ कानकयीव॥ प्यासवायीव॥ ध्वपिहोद्वयय॥ मडउल्लीव॥ भासावव॥ लक्ष्मणउद्वयय॥
मकुलजहिरिधाननलंखलनकाथं डयकेमजिव॥ ध्वजिदाखाद्वयय॥ ॥ खबलावकसहंरुंन
जासंमनिव॥ जल्यजवया॥ ध्वशीहाद्वयय॥ ॥ जबलावकसमनसास्यमंगुधाय॥ ॥ नृ
गमउव॥ लक्ष्मणमधुसमनिवध्ववधुअद्वयय॥ ॥ दूटपत्रार्थनयासजकनसलनिस्यंवा
गवल्फूयाकसमनिव॥ स्मायीव॥ ॥ ध्वजोद्वयय॥ ॥ लंखयापलनथडंतयाध्वं
कारनधाधमनिवध्वउदकाद्वयय॥ ॥ नृचासिदाम्बवाहीनिदाषा॥ अनामिसंस्तिता॥ पा
धग्यपानात्संदृष्यजनयत्पूदनंरुं॥ ॥ नृधनपाव॥ बलनिव॥ हिव॥ रामकूपदकनंजम्बवाहध्वं
वयू॥ गालूमलनंनाडिनं॥ अगवहनपूनाडीकासदाषदकथाशव॥ पाववायूनजग्निदाषनपावजग्नि

१२५

[illegible]

उदरविक्रिया॥

वाक्क. जस. जंघस. अथिआधिपनिं सूर्याथं स्यायभासावयीव. वाक्क. छा. रया. ग. थं स्याक.
अज्यालु. ववूडनि. छा. उ. उ. नि. ख. छि. नं. म. नि. व. ख. वि. नं. म. मं. ग. थि. कू. य. ॥ सतादहदमदनंगन
कू. क. लिला. तने. ॥ आध्यान. द. छि. न. कू. यं. भा. ह. गं. यु. क. रा. ति. व. ॥ ॥ द्वा. र. न. सूर्या. थं. ध. न. स्या. क. हा. कू. उ.
नि. हि. नू. डि. धा. त. स. ह. स. हा. व. गु. छि. दा. न. पू. या. थं. ग. द. द. व. धा. ग. ग. स. ग. द. द. व. ॥ ॥ वा. य. थं. ग. स.
नू. क. कू. द. वि. व. नं. सर्व. भा. ग. ति. ॥ ॥ वा. य. या. थ. व. नू. प. न. स्या. क. ग. द. द. व. च. न. ल. पं. श. य. व. स. क. रि. नं. ॥
॥ ॥ अ. थ. वि. कि. ल्या. ॥ ॥ कू. द. द. नी. य. व. आ. न. य. धा. गि. न. व. नं. व. वा. अ. जा. जी. दी. य. क. हिं. गु. स्वा. ज.
का. व. वा. वि. गु. कं. ॥ श्री. वा. कू. र. म. सा. पी. ना. वा. ना. द. न. ह. नं. प. नं. ॥ ॥ कू. द. द. कि. उ. म. स. र. वा. वा. द. य. मं. ध.
सू. वा. कू. ल. व. द. वि. वि. हा. जी. अ. ज. भा. द. हिं. स. जि. स्वा. न. सि. पि. वि. न. क. गं. धि. ध. न. च. र्ण. का. क. लं.

१२६

खम ह्रीं स्यं त्वन कं वा गो द न भा क ॥ ॥ वा गो द न या ॥ ॥ पि ला द न क नो म र्का दा ह न क
 उ का स्य ना । उ मा नि सा न पी न त्व । ऽम थ म य मू द नं ह न नू ॥ ॥ क न द व चं द्र म इ ह य । पि या स
 वा व । कू उ पा नू । यि कू । पा क कू ल र न व व । पा न म ड ॥ ॥ पी न ता मु नि ला न डं स स्त दं सा म्प द म न
 धू मा य नि मू द स्य नं जि उ पा कं पु ह्य न ॥ ॥ ॐ ७ य । क्वा उ उ नि । प न स चो उ हि न लि न च व नि हा
 व । का क । हि यू । कं थू । व क सा य क्वा चू । ख चि नं पा क यू यि व । क न द न ना स ॥ ॥ पृ ष्ठ प र्श्वी व ला वा
 धि ला ज्ञा ना ग न सा धि गं । की नं पि ला द न मि ति पि ला द न जि यां न थ ॥ ॥ पृ ष्ठ प र्श्वी व दि या च
 लि क ४ । ला हा । मुं धि । थ न इ इ स र्का स्यं त्व न कं पि ला द न ना स ॥ ॥ पि ला द न या ॥ ॥ ऽम थ म
 द न र्ज स द नं ऽम स च य थू । ऽमे न वं । नि डो क्कं । ऽम वू चिं ऽम सः का ग ७ कू ल्म म दि ताः ॥ ॥ ऽम थ म

दनसः अथिआधिष्ठायः थसावयूः अथुयूः अथ्याथुयूः ऊदवयूः केवाकीलवयूः नृविमइः मा
 साववः उनित्वयूः ॥ उदरस्तिमिगंस्त्रिगंधं उक्तनाजीवितं मरुता विनातिमृद्विकेथिनं नी
 स्पगं गुनेस्त्रिं ॥ ॥ अकलां लोकावः केनलाकः आयुहिनलिः स्वनहनपुवाधनपूः गकन
 कधवेः सायखा उः ज्याः अकलनमजिवः थः (अथ्या दनधाय ॥ ॥ यमानी सधेवंजाजी
 व्यासयूकं कलादनी पयमूक्राम्बुनापीतं कलादन विनामयन ॥ ॥ ॐ संः सधे जीः ॥ ॥
 केद्रः चूर्णकाकलं खसकास्येत्वनके (अथ्या दननास ॥ ॥ (अथ्या दनया ॥ ॥ मियान
 णानं नखनाममूगं विजरुवयूकमसाधुवला यस्मिन् यत्तुयदृ नयानगरस्याइष्टाम्
 दाषाविषसवमद्धा ॥ ॥ स्त्रीजादिनहानमदयाः ननत्वउलामनावः मूगनां थनितासक
 नामस्वस्यविकावनयावः असाधेनवरुनपनः ग्वक्षयागः गऊलविषसंयोगयानाथ्यः सिंह

१५०

न. ॥ नगी कलं खलं विघनलं धनं तत्तुलं ॥ ॥ नना नुन कं कृपि गंवदा वा कूर्युः सुधा वं जं ० ले ।
जिलें गं । अति नी गवाता लश इदि नव वि । न वनः कृप्य नि द र्श न व ॥ ॥ धन नगी युन न कृ नों दा घ द क
नं का य न पा व हिं स न या उं धा न मं गु ना य शयू वि दों घ न स्वा उलं रु स न वं ग या य । वात लिंग स थ धा स्या य
॥ ॥ वा गु ना मूर्ध नि यु न कृ पा धुः ज नि कृ णः गु षा नि न घृ स्या च । दू षा द नं की र्ति त मं ग द व । श्री हा द नं
की र्ति ग या नि वा धे ॥ ॥ धा या मूर्ध्ना श्व वा नं रं गी य उ नि । घा स न ग उ । दू षा द नं वि घ द र्श नं ल कृ ण
क्राय धु न ॥ श्री हा द न या पु का व श य ॥ ॥ वि द श क हि स्य दि न ग स ज नाः पु द र्श म ल क म स क य थ ।
श्री हा रि वृ द्धि कृ न नं पु द र्श श्री हा द न कं पु व द कि न ह ॥ ॥ ॥ हि य व मु न या न । पि रु द्धि श य । प्पा
क व मु न या न । प्पा द्धि श य ॥ धा न तान ज ल्य जा य न य य ॥ का प श य । ज नि त व द्धा न न क नों । धा षा नों

नितावृद्धिश्चावर्ज्यवाधनयनं ॥ १ ॥ रायनयनमंगुलीहादनधाय ॥ ॥ गङ्गामया (ध्वज) विवृद्धिभ
 निवि (ग) वनस्त्रादतिवाधनापि । मन्दकनामिकरुपिरुमणि । दाक्षेस्त्रधा पात्रवलागिपात्रुः ॥ ॥ खव
 धिकेका उवाधनयुः वि (ग) मनज्जलासि शयुः ॥ श्रीहादनकनः जन्मिमन्दशयुः ॥ (ग) वापिरुयो विक्रनउप
 डवश्वं ॥ श्रीहादनयाज्रनिययुडनि ॥ ॥ विजकंगुटिकां कलागर्भं कदलीरुलं । गनीषधं हकय
 यः श्रीहादनविनाशनं ॥ ॥ चक्रहागुटिकादयकं कदासु ॥ १ ॥ आवनस्य श्रीहादननामः ॥ ॥
 अल्पजवया ॥ ॥ ॥ सुवाह्मपा (ध्वज) कुनियुद्धं ह्यं यक द्याल्यदनतदव ॥ ॥ जववाकसवा
 धनयं वलः पनमंगुथयकृद्दवधाय ॥ ॥ उदावर्ह नूजानाहो माह नृदहनकनेः (ग) नवाविकाधि
 न्ये विद्यालयमलाकमात् ॥ ॥ नृ (ग) उस्त्राक पनलोकां धावे वातया । प्यासः हियुः धववः कोदवः प्यत ।

१२८

[illegible]

मङ्क

डाव. लंखत्त डागु इव नमः सां स्यं चिलू स्यं सकृत्तिनं वडाव. यत सडाव. अक सइवि स्यं आया मन सत्र नयं
वयू. ॥ नारि नध. ॥ दन मति वृद्धि निर्मु यत नाल्य ववाति मायं । जगत्पनि अयू दनं पु विहं । दका
दनं कीर्त्त यगा निवाधं ॥ ॥ लपून कपत मनि व. नल रुया थां स्यायू. अतिन. ॥ याना मय नि अ वि उ
दवधाय ॥ ॥ दका दन या ख ज्ञा स्यं हय ॥ ॥ यः स्रि हयी गो प्य नू चा सि गो वा । वा गो पि त्रि का मा थ वा
नि नू हः पि व ऊ लं गी त ल म सु त स्य । ॥ अ ता सि ह स्यं त्रि हि त द्व हा नि ॥ ॥ ग्व द्वा या ख क न ला यू. व लु अ
ति न या न. वा त धा गु वा हि क न. व र्त्ति क र्म या लं. क्का लं. लिं ग न नि नू ह. वा त वा हि क न या लं. र्वा ड लं ख अ
ति ल लं. ज ल व ह न यू. ना डि द क स व ह न यं द ष ध न न य वं ॥ ॥ स्र हा प लि फ प्य थ वा ति क षू. द का द
नं पूर्व व द न्य प ति ॥ ॥ वि क न व. लं ख व. भ ल ल यं ध न र्ध प ल. ॥ द का द न धा य । ॥ ज्ञा ना गु प नि अ

१२२

वादनथं घेतमनिव॥ ॥ सिग्धं सहाकं पविट्किनातिः समागतं पूर्वमिदमनुवाच। यथादृष्टिः कृत्य
निकं घेतव। नद्यायनवापि दको दनरुत॥ ॥ यं कनलायूः तव धनशूयः त्वरुनवाधनयूः लंखथं डाथं
पूत्रयश्वथं लंखसनिवथं सनिवः यतेद्वनेः तव घात्रशूयः लंखथं डाथं घेतः गुठ गुजयमाननडा
यूवः थदको दनधाय॥ ॥ जन्मनेवा दनं सर्वे पायककुतसंमतं। वलिनस्तदजाता मयत्नात्साधन
वान्छितं॥ ॥ उदनस जायत्रपत्रडावलायकेमजिवः वाकृत्यनः लायके थकः वलीयान् शतालं लंखम
वाधनयूः लंखन लायके जिव॥ ॥ विजिगिहिलावाणी वृहगीक ठविणकेः पलांसेः सार्धिषः पुस्त
यूभाजीवपलंपयत्॥ दधिद्विगुविगं साधं तदुयकं यथावत्। विविचवागज थलं गुत्तस्वपधूनाशनं॥ ॥
विदि सिः शिरुलाः लिकठगिनिः शकठगिनिः चेतकहाः पु१ धात्रधलरुं १२२ पु१ धात्रिनिनिदधलषुठंन

कं वातजथलकदयुः गुल्मनां पतमउनां माक ॥ विदिग्मदियुता ॥ वातादिसुर्वादवया ॥ ॥
 दणमूलदानूनागवच्छिन्नरूपापूनर्नवा रुयावयूकं । जयतिजथनादवसा र्थप्रीयदगलगुमालावा
 गविकानान् ॥ ॥ दणमूलः देवदानूः शुधिः गुडगुः पूनंदवः रुवउः धर्मकाथदास्यं त्वनकं जनादव ॥
 धनागः ॥ ॥ रुनीतकीनागलदेवदानूः पूनर्नवाच्छिन्नरूपाकषायः सगुर्गुनून्मूगयूतं सपयं ॥ ॥
 दनाक्षं पुवलं पुयागं ॥ ॥ रुवउः शुधिः देवदानूः पूनन्दः गुदगुः गुर्गुलः समतागकाथदास्यं ॥ ॥
 ऊं उं त्वनकं पुवलं ॥ ॥ रुनीतकादि ॥ पुवलं ॥ ॥ पकादयंगु
 दं पूर्णं सर्वजागोदकं तथा । प्राया रुव लपलावाय छिडाकं वादवं नृणां ॥ ॥ बालश्चिन्नविनागवधय
 रुवगुयाः लेखनमडयां उधं । बाहूल्यनलायकमजिवः था उदवनागमनूषया ॥ ॥ मूलानिकृति

[illegible]

मातुर्गुणनसायनं श्रीहृन्मूलहनाजगुः॥ ॥ हिंम्बदिबू॥ ॥ श्रीहादवया॥ ॥ यमानिका
 विजकयावमृकंसमुक्तिकदकिहवानिभ॥ श्रीहानभगदिनिहकिवृन्मृकाम्नांममुसूनासर्वया
 यमानादिबू॥ यकृत्सीहया॥ ॥ नादयी कूठजार्कसिग्रुहगीस्त्रहीवित्वरत्नाटकी। व्याखीकिं
 शुक्रपाविहृदकश्रयामार्जनागमनिका। व्याषापोषकपात्रविसनवसंइन्ध्रसंयाविगं। हिंम्बदिपुवि
 दाहपुभगद्विगंगुल्मादश्रीहिषू॥ ॥ गुजमसियायू. कृद्वीज. जर्कसिहा. सोलांजन. दाकशुमिनि.
 सितस्वान. व्यान. वालाउ. लिक४. चिलाषसिक्. दंतदात्रहा. जयामार्ग. नृपस्वानसि. विजकहा. उिकद्र. प
 ष्कनामूल. पाशुसिसि. वि. धनंउमसुच्छाश्यानावतंदासधन. छगुदिनकपूय. चान००ले. मिसदाहन
 पावेहस्मयाय. धाहस्म. धासंतव. लंखसंतवखा. लयनकाव. धाखानसिंसहिं कर्ष१ कृदकर्म३सजिखान
 नि

मम ७३ अ

कर्म ४ वेदवि कर्म १ थन वूर्णुत याव मिसदायक लुवक न लान स पा ना व ग द का डी वूर्णुया डं न के । अल
पि म ड या स्य स म ड या । ग । थ द न या अ निति हिं गु ॥ ॥ ना द य्या दि पा क ॥ ॥ श्री हा द न या ॥ ॥
हिं लग १ पि प्य लि ३ वे द वि ३ ० ० मं ३ म न व ४ रु न उ १ । ग म न ४ जी ४ कृ द ५ वि ण क १ थ न वूर्णु या डं डि
प थ सं ग व ला सिला नि सं ग व भ निति सं ग व का क लं र व सं ग व हा स्यं त्व न कं अग्नि म न्द वा न या अ म द
त या सा लं कृ २ प ड या नू । ग उ का म स्या क या अ ल पं ज व या थ न ना ग या क ॥ ॥ हिं ग्म दि वूर्णु ॥ ॥
॥ ॥ ० ० ति नि दाना क प वि क म श्री हा द न । ग । थ द न उ द न ना ग नि दान वि कि त्सा धि का वः ॥ ॥
॥ ॥ अ थ । ग थ नि दान वि कि त्सा ॥ ॥ क र्म वि पा क ॥ ॥ प र्व ता । ग्र न दी ती ल च्छा या मा
नू क्क वा पु नः मू ण पू नी ष म थ वा यः पु म् व ति वा ज लं ॥ ॥ न क पि ल क हा वा यू द क्ष न हि नि ना ग

ता। नीत्वा नूद्वगतिस्ते हि कुर्यात्त्वग्मांसं ग्रयं। सः स्यात्तथापि सा प्रातिवि किं सौ। सा सा हं कः ॥ ॥
 सु ०० प्रोवा विवधं वा सा वित्वा हि क्रवं जयं ॥ सर्वहं गुवि। गधेय नूपरं दान्न वा मेकः कधिः पृथग्द्वयः
 सर्वत्र हि द्या ता द्विपादपि ॥ ॥ सकल ता हं पुन थ वर गु वान गु ता। स्या थ इ ॥ वात। स्या थ। पिरु। स्या
 थ। स्या थ। स्या थ। वात पिरु। स्या थ। वात। स्या थ। पिरु। स्या थ। जिदाय। स्या थ। जूहि द्या ता। स्या
 थ। विष। स्या थ ॥ थ। न गु ता। स्या थ दव ॥ ॥ तत्पूर्वं सेव स्वपथ निनाया संग। स्या थ वं ॥ ॥ थया पू
 र्व नूप। उता न शयू दिन विस्मा कः स्या थ ॥ ॥ स। स्या थ वं स्या दन वल्लिग त्वं सा क्रा थ मू स्या थ निना ग
 मत्वं स्या मरु र्वं सु विवधं तावः सामान्य लिं गं न्वपथू य दिष्टः ॥ ॥ ज्या उ न ता उ उ थं मयां मि द्या
 थं क्रा के दिन लि वि कृति शयू वि क्कि कं क दिवयू उ नि मतिं सकल थय। स्या थ या उ नि शयू ॥ ॥

२०२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

वल्लभ नृसुखं युवधाम्नाम् ॥ सिरः सुखि हर्षार्थं युगानि मिरुतः ॥ सुसाम्पत्तिं प्राप्तामनिषधीति नादिवाव
लीव स्वपथः समीपे ॥ ॥ मंगुस्की वमशवः **संवसालयः चकनमलाकः रुहनवडः सादवीकः सुनमन**
भावः साकनपीठनयः वगनस्तनजवडयः समशवः क्रिनसवानननडगुया ॥ ॥ **सुं वृत्रविजकयथाय**
मानी विजसेभवं ॥ यत्किं वाजभा दावनिर्गुणी यायकं समं ॥ आपजामवत्तं रुवत्तं मित्रं वा मिमन्दकं ॥ पुम्य
नादिमिनिख्यातं सर्वमानुषदोषजित् ॥ ॥ **नरु विजकः रुवडः ॐ मूं वेदविः सधूविः पियलामूलज**
जमादः वासंदात्रिः जिकटः धनं समलगवृत्तं नस्यं आपत्तं थः आमत्तं थः ॥ **नृमि मन्द**
॥ **नृमि मन्द** ॥ **समस्तवागदोषः ॥ दकं जयलयः ॥** ॥ **सुं वृत्रादिबूधू ॥** ॥ **मृदः सुगन्धः सिनपी**
ननागवान् ॥ उमकनः खिदृषामदा न्वितं ॥ यदृष्यत स्यादवृत्तं जनागकृत्सपितुः ॥ **नृमि मन्द** ॥ **मृदः सुगन्धः सिनपी**

[illegible]

यलीव निदि। धिकानागव विषके च। नजन्यथयि यलीमूलगाधः मूलं च दूर्लभं सुखमायपीतं हन्या
क्रिदायं विनजं व। मथं कल्वं वरुनिचमहोषध्यायां ॥ ॥ विपी जी गजयिपी कल्वगिनि गुं धि च
तक मिव किमि पिपला म बाहाय कसू धग वूर्लं खस काध दासं खनकं द्विदा मजग नुक ताक
लदव मथमीक ॥ एवाइव गुं धिव कल्वं यायं गव ॥ ॥ अरिघात नस मुल कंदरं दकृतादि हिः ॥
॥ अरिघात मथ धाय। दाने न मुन पाल गुं न घाव शत्रु मडगु ॥ ॥ हिमानिलादक्ष निसेरत्वा
टकायिक कृजेः वसेः सुके व मं स्पर्जेः स्वपथः स्याद्वि सूर्यवान् ॥ ॥ ए मथ्या लाहिगाता स प्रायस
ः पिरुल कुलं ॥ ॥ द्वाय यागीत समुद्र यागीत वाला उयो व स सुसमिया व स निगाया व स धि।
यान मनिव कछू धं वयीव अतिष्ठाक काउ सं वा निव पिरुया ल कुल व ल ला उं वा निव ॥ ॥

[illegible]

दशमूलनायं। अथ गोरुमं। अथ धनि सुदनव॥ ॥ पूनन्द विठ्ठक देवदानु विहा मनव यवा ज्ञान ह
न उ अथ कल्क या उ दशमूल काथ दासं धलषु डंनसं सर्व (अथ नाना॥ ॥ पूनर्नवादि घृत॥ ॥
छुर्दिग्ध सावु विसृक्का क्षत्रागि सावु वव। सुफकायं सुक्षोर्वल्यं (अथ। अथ पडव संग्रहं॥ ॥ क्लाक सा
ले २ पड नू विमद् प्या सवाव कवदक क्लाहानव ड अ क्ल सता उय डवन न ल इर्वल शन डाव (अथ।
अथ गीता न न साव॥ ॥ अनलाय पडव कर्तं (अथ। अथ पाद समुच्छिगं। पूनृष ह कि नात्री कु मूरव जी गुरु
० क्लादयं॥ ॥ अनक उय डवन न ड गुरु (अथ। अथ गान नि संध म डं वन सा पूनृष सियू॥ म्ली यारद्या
न क्रापा म डं वन सा मिसा सियू॥ ॥ नवानु पडवः (अथ। अथ सा (अथ १ सा (अथ पूनृगितः॥ ॥ नक श
व (अथ। अथ स उय डवन न म न न सा धा शव॥ उय डवन न न सा ज सा धा ध कं ला के न क्ला डा॥ ॥ पू

नर्त्तवादा नृगुं धि सिद्धार्थ सिग्रमववा। पिष्टावे वालनालन उल्लयात्सर्व। ॥ प्रनन्द
 देवदानं नृगुं धि ॐ का। सितमत्रिच। धगस्वरे सुनिनावपाय ॥ सर्व। ॥ प्रनन्द
 दि ॥ ॥ विजकं तिरुलायाम विठिंगवयग्रन्धिकं। किन्ना हवाट्टट्टदन्निवर्षाह कर्षभवव।
 अथानजलाह कीतं दिगुलं वेवदापयन। गुजद्वादगपलानां वगने मृदविनापयन ॥ ॥ प्रनन्द
 पुमयं श्रीरुगुलमेकाग कनायहं। वलवेर्ग कनं दृश्यं नाचनमभिवर्द्धनं ॥ ॥ विजकोदिगुज ॥ ॥
 ॥ ॥ सितकं तिरुला। त्रिकट्ट। वित्रिसि। सिपि। पियला मूल। गुजगु। तिलवं दन्निवर्षाह नव
 नास्ति। वाक्कुराग १२ धगपाकया ईनकं सर्व। ॥ प्रनन्द ॥ ॥ त्रिकट्टपिप्यली मूलहट्टदन्नि
 सुविजकं। पुनानगुजमिग्रानि सर्वंग। ॥ प्रनन्द ॥ ॥ त्रिकट्टादिगुज ॥ ॥ त्रिकट्टपिप्य

२०५

अज्ञेयामाया हा ३

कृच्छ्रवाचानिगतं वाक्कलराजनं । महीषियुनिनूयस्यदानं व्या । धनिवाचनं । कृच्छ्रानूचगतिः ।
 वायुं । मथगूलकनश्चनन् ॥ ॥ कृच्छ्रनकायनयंकाहास्यं वद । धवायूनमनिव । स्यायिव ॥ ॥
 मूष्कोवकलगायाप्यरुलकाघातिवाहिनी ॥ ॥ कास्यसुभिसु । नृगवसुभिसुधहास्यं वद । नयूवायू ।
 पुषीयधमनीवृद्धिर्कनातिरुलकाप्यया ॥ ॥ नाजीसयीउत्रयावकास्यमंगु ॥ ॥ दाषाग्रमदासूया
 केः सुवृद्धेसकषागगः ॥ ॥ मूयजृक्तसजायनयू निलहृदुवमुकेवलवागपितु । मूयदकनमूयद
 मूयविकात्रन धनवृद्धिनायकसगाविधिहृदनवाधनयू । मूययां । मूययां । वागयाहृदुनजायनयू
 धनिगाया ॥ ॥ वागयूवृद्धस्य मूयनूजावागादहृदुवृक्त ॥ ॥ कास्यगवच्छानमंगु । धिवडाव
 धाचू । यकनमलाक । वागननिलाकालस । स्याक ॥ ॥ गुर्गुत्तवपुतेलेवा । ममूयद । धिवन्ननः वा

गृध्र

तद्वृद्धिनिहन्त्याऽऽविनकां नानुवर्धितं ॥ ॥ गुग्गुलुः अलवकनसखा संत्वनकं तव ॥ गमस्य सत
 संतव ॥ वागनकास्य मउ नास ॥ ॥ वागवृद्धिया ॥ ॥ पकइम्वरसंका न पिला द्वा हा भ्रया क
 यान् ॥ ॥ किं गुइम्वरसि स्थो मउ गुः पिरुया केन रुयुः का कः कच्छु द्यं रुव ॥ ॥ चन्दनं मधु
 कं पद्य मूनीनं नील मूलं । श्रीवसिष्ठं लयः स्याद्धारुः ॥ ॥ धा नूजा पहे ॥ ॥ श्री ख उ ॥ ॥ श्री मी
 काथय नः उ मू हा उ रुयसां इइ सनि नावल पनया य । पिरुनकास्य मउ या ॥ ॥ पिरुवृद्धिया ॥
 कलाञ्जी गो गुनः सिग्धः कच्छु माज्ज निना ल्यनूक ॥ ॥ ॥ लषयाः स्वा उ ज्या गुः वकन ला क वासु ॥
 का कः तव मानन स्या क ॥ ॥ ठिक इ ठि रुला जो न न वनं का क्क वा नि ॥ ॥ क रुवा ना लम का क्क व विन कं क
 रुवृद्धि नू ॥ ॥ ठिक इ ठि रुला उ म सखा सधू थ न चूर्ण या उं का कलं ख सखा संत्वनकं ॥ ॥

मदवृद्धिया ४

अवात का बसवी ठ आम का दन ॥ अवात का स्प म डया ॥ ॥ अवात वृद्धिया ॥ ॥ कृष्ण रंग वृत्त
पिल वृद्धि वै केलि ग व क जः ॥ ॥ हा क सं उला म क. हा टा र या उं या उ गु। पिल या ले उं हा थं
उन गु. हीन जा य न यू ॥ हीन का स्प म डया ॥ ॥ व क वृद्धिया ॥ ॥ क रु व त्म द सा वृद्धि म् इ स्फाल
रु ला य मः ॥ ॥ अवात या ल रु ल थं उन गु दा क न का स्प मं गु यां उं का म ल ता ल सि थं उन गु ॥ ॥
॥ ॥ मूला धर व नील स्प मू ग य स्प उ ग क ति ॥ ॥ वा हा य य डा वा डा नं. वा वि ना डा व डा डा २०१
वा वि ना डा व का स्प म डया ॥ ॥ मू उ वृद्धिया ॥ ॥ अ म्हा रिः पू र्ण द ति व का तं या ति सु वृ म्
इः ॥ ॥ लं ख या य ल द उ थं उन गु. सा क न ता उ गु. सा य ना यू ॥ ॥ लं ख न का स्प म ड गु ॥ ॥
उ ल वृद्धिया ॥ ॥ मू उ क कु म धः सा च व ल य त्पै ह ल का य थाः ॥ ॥ वा हा य स. मू उ वृ

कुं थं स्यात् थला कोला मदयकं स्यात् अतिवत्रपं स्यात् ककास्य ॥ मृज दाषण कास्य मउगु ॥
मृज दृडि धाम ॥ ॥ वाग कोपि निला हा नं नीत गोया च ग हने ॥ ॥ वाग कोप न पूर्व मुन स
खा उलं ख सत्व क विल वाग दृडि श यिव ॥ ॥ धा व (व) जल ता नाध विष मांग उवर्तित ॥ का हने ॥
रुतिता मे च रु दान्य वय वाय द ॥ ॥ वेग द व सं ख धा न रु ल ज्या तु क वूल जाय क रु न नायि न डा
ल तव मान न क वृ पृ थि पू स ल तव र लि गु व सा ल व ला सा ल तव मान न काल व स व रु व ला ल ॥ ॥
पव ना वि गु णी कृ त्वा स्व नियं भ द (ध) न य न् ॥ ॥ अ क स वायू न अ गु व याय कास्य मन डाव उय वा
स या ल थ म निव अ ति स्या क थ रु स न ॥ ॥ थ वाग दृडि धाम ॥ ॥ पु पी डि का क स्य न वाय या
ति पु धा य मे न्ने ति पू न च यू क ॥ ॥ अ क स पी उ न्मू या डा द द यू थू गु मार्ग न म डाव ॥ ॥

बुद्ध गंगा सा नृणां वि किं सा ॥

[illegible]

वाक्ये पथमसमूहवः। कृष्णसंभवसंयुक्तं बुधनागहनं यनं॥

॥ अलङ्कारिकनमूठावः कृतं

प्रियः सध्विः ध्वनवृत्तिः कनननलानं खलखदडववगु भाष॥

॥ लघुषणं प्रियली मूलदेवदा

नूरुलजयं। कषाययोजयल्लेषां सञ्ज्ञानवववजयं॥ ॥ त्रिहिमसिः प्रसाम्पत्तिवृद्धिबुधकरोयहं॥

॥ ॥ लघुषणं प्रियली कषाय॥

॥ त्रिकट्टः प्रियली मूलः देवदा नूरुलला ध्वनकाधदास्यवेदाविम

ध्विः सध्विः ध्वनकस्य त्वनके कासिमडगुः खलसध्विः सखिलखे दडववगुः मासइयाहितनसाम्प

शयिव॥

॥ भेष्वेवमदनं कृष्टं सपका निवृत्तं ववा। जीवले मधुकंतागनी देवदा नूरुसनागनं। कहुलं

पूष्करं मदावविज्ञा विजकं लथी। विदिंगमि विषाण्णमाहनवृत्तीलिका। हिला। विलो जभाद कृष्ण

वदकिला स्रावतः समो। साधमनभुजंते लं वागकरु बुधायहं॥ वृद्धावर्क गुल्मार्गः ह्रीरुभवाद्यमा

गणेश उवाच ॥

ब्रह्मा ज्ञानाहमसूची ॥ ऐव हन्ता रुदनूवासनात् ॥ ॥ वृहत्संज्ञवायते ल ॥ उध्वया ॥ वृद्धिया ॥
सुध्विः मदनरुलः कृदः निवृत्तः विहाः जीवन् ॥ ॐ ह्रीं ॥ लामिहाः दवदावः ॐ धिः कर्वसिक्कः प
ष्कनामूलः महामंदः वविकाः वितकः सिपिः विविमिः अतिवसः इह काकासिः हवन् नीचिकाः ॐ ला
व्यालः अजमादः पिपीः दन्तिः इगुक्काः ॥ अतस्मलागवृत्तः अलविकनसुषुसंतलः उध्वनागः वृद्धिना
गः गुल्मनागः अलपिमः मदवृद्धिः वातवृद्धिः ॥ अतनासुमाक ॥ ॥ ॐ ति निदना कृपनि क्रमव
धुनाग वृद्धिनागः वन्ध्यानाग विकित्सा निदानं ॥ ॥ अथ गलगुनाग निदान विकित्सा ॥ ॥
कर्मविपाक ॥ ॥ गगुमाली लवच्छिन्नाधना ॥ अथ वं वयः कुरुः पून्रवसूकं सायसेस्या क्रमदक्षल
प्रंशतं ॥ अषिक्कन्दा देवतानि ह्वा नागमवा प्रयात् ॥ अक्षाययः क्रमवापि सपाया क्रमजायते ॥ नि

२०२

तद्धवपथूर्यस्य मूष्कवल्लयने गले । महान्वायदिवा कृत्वा गले गण्डमादि । अहं कृत्वा कृत्वा कृत्वा
गण्डमालीनं वा लवणं । गण्डमासाय कृतं च दानं काष्ठं पुष्पं कीर्तितं ॥ नागगोविधवा गमसी । नित्यं नावदतः गृह्यः
नकावृद्धं तवत्कुर्यात्प्रायश्चित्तं पुनश्च कथयन् । वातकरुक्षतिगले पुद्गलं मन्त्रं तु संस्तुत्य तथैव भद्रं । कुर्वन्ति
गण्डं जमनाः स्वलिङ्गैः समन्वितं तल्लगण्डमाह ॥ ॥ वात । क्षयान् गले सकाशं लघुं च कुर्यादि न सः

पीठत्रयूदाकनः गलसुगुयलिपातिनधवधवलकुलकाय॥ ॥ तादाचितकक्रगिलावनधुगधवान्
 धवायवनात्मकम् ॥ ॥ स्वाध्यायं ह्याकः दिनलिहाकः धार्याध्यां वा उगुवयुः रुदनमिनिवः वागया ॥ ॥

पात्रायूकश्चिन्नद्विपाकः यदृक्यापाकमिव कदाचिन् ॥ ॥ नूतनशिवः ताननुवाधनपंचयीवः क्रिन्नमह
ताननुनिःक्रिनिव ॥ ॥ त्रेलस्यमासस्यवगस्यजकाहवैरुधगालूगलउत्तमः ॥ किलः सवर्धुगुनूग्रग

पुः लीला महान् अपि कुरुत्सुकम् ॥ ॥ म्रुमुमसाक गल थका वक्कगड लि ननया डगुल नी वया ड
 निथं डनगु तवमाननया डयु वासु अतिरवा ड (लेषया ॥ ॥ विनाहि वृद्धिं ह दन विना द्वा उपयते
 मउ नृजः कदाचित् माधुर्य मास्य सवतस्य जको हवेरु था गाल गल पुलयः ॥ ॥ तान कुध वनयू तान
 तुलज नयू किनेरुवे गुलि छिनं स्याक मइ ॥ म्रुमुवाक थज कुया थक वक्क गल स खयवतिन सुयाथं
 डनिव ॥ ॥ सिन्धु गुरुः पाउव निरुग (भामं दारवः कयूयूगो नृज थ पुलम्वने लावूव हस्य मूला देहा
 नू नूपा ऊय वृद्धि मूकं ॥ ॥ वकनलाक आरु गलगुगायु डनि नमस्ता क दाकन जाय नयू या तिगि ड
 सं स्याक तवमानं वासु ॥ ॥ क सजवगु जव सि थं हा सवि कृटि पिखिव तव ग नी वया अनू ड म नू पन व
 हनयं वयिव ककून गव तवधंगु ॥ ॥ सिन्धु सगत स हवे जको गल ननार्क कू नू नव निहं ॥ ॥ रवा

लवेंकनलाक गलन (धमकन दयाक) ॥ सिन्दूरदनी नवनं नसानं कानन धावे निक काकननः ॥
निपिष्ठा पुपिल छिन्नं नीचुं विनस्यं गलगुदा मान ॥ सिद्धं दन्ति वि. लला ७ मसखात्र लयुगं
पु. धर्म समल गति स्यं लपन याय। नीचुं गलगुदो ग ॥ सिद्धार्थ मूकं मधूचा हावी जं सकाल वीजं
नजनी समतं। (ग) जिह्वा मूलं ससिता वरूँ खादति न सं गलगुदं सर्व ॥ ७ का. कसू. ०० हमी. ज्वल
मू. कालसिमं. रुद्र उ. ग्ध वयल रत हा. विनि सा घ। धर्म चूर्ण नि स्यं त्वन कं गलगुदो भाक ॥ गलगुदो
॥ रुद्रा कसू कं मद्र सर्व गं सस्य सना नी न म ना व का रुं ॥ जीवतो वे धा गलगुदो यूकं हि नः स
नं वा विवि वरूँ यन न ॥ ॥ सा न य स्या क. ०० सू. कनायू. दा के वं नि नू वि मद्र पी जया क. कग उ. गल
गलगुदो पी उ नयू. स्व र हे द द व. म उ व. ॥ ना न मान ॥ ॥ कर्कशू काला मल क उ मा लि क ऊ सम न्या गल व

ऊ(६७)॥ ॥ वयलसि थं जवल थं पुमान् का सः क्र सधातलिवनगल सः खल सः सन्धिसः चतथा
यसुवयीव॥ ॥ भदः करुण्यं विनमउयाकेः स्या मउमालाव हति मुगलुः निगुन्यः कविदवाक
पाकाग्रवनिनयनि पुनः पुनो हति॥ ॥ दोकव (१) वनजायनपूतानकु नि कि निवः तातावा ड ग
लगउमालाः तव (१) उंदवः थग्रकिगुलिदिं मद्रि संयतिरकववः मन्नातासमलरवयं रुव॥ ॥
कालानुवन्धं विनमादध निः सेवापवीति उवदः के क विन॥ ॥ ताकालवा डगु थ जयवी धाय॥ ॥
सुषपात्रिदफजालिदग्धरलोणकेः सहः क्कागमूखल सेपिक्का मयवी प्रं उलयनान॥ ॥ पलका
कइकपातक वा राउः थतवाल सवा सनि संपाय जयवी नाग॥ ॥ साध्याः स्मेता पीन सपावर्ग
लः कागः कवकुदि युगानसाध्या॥ ॥ थतसाध्याः पीन सवा को स्याकः मासाः कानपूर्वः क्लोके थत

नन उगु साधः॥ ॥ वातादया मान्मस क उइष्टा संइष्टा मे दन्धतथा निलान्ध॥ ॥ वातादिभि
दासल वयं रुव ला हि दाक ना जी सह द न पं वेयीव॥ ॥ विरुन्नेनं विग्रन्कि तं तु ल्म थ कर्वन्नुता
ग्रन्कि विनि उदिष्टं॥ ॥ म उवीक ल्वहं न जाव न कर ध व गान्ति रया उं म न्य थ थ उ न ना व ग
निक्षय॥ ॥ आय सन वृष्टि निगु यन व उर सन म थ नि हि यन व॥ ॥ ग्रन्कि माला ध
य वेक व संधा निव स्या थं र्वा या थं स्या य॥ ॥ कृष्ण म इव सि नि वात न्ध हि न्ने उवे द्वा लि न
जाग्र मं चं॥ ॥ हा क कामल र स र्वा व गु गार था क हि हा व वात न जाय न प्या॥ ॥ दन्ध सन
धू धा नि नू धा न व पाय च न उ क ल नी व वा पि॥ ॥ अति हि य ग्रन्कि स गा य नो व न व मा न्ने न कि नि
व मिच्छा व थं उ निव॥ ॥ न कृष्ण पी ना य थ वा पि पि लान् हि न्ने उवे इष्ट म नी व वा ग्रं॥ ॥

म्र३ उम३ ज थ ता क्का सु त व मान न हि व व पि रु या ॥ ॥ नी ना वि व र्ण स्य नृ जा दि क र्णः पा घा न व न्ते
 ह न ना प य त्रा ॥ ॥ र वा उ य वि व र्ण र य त व मानं स्या य चा स्य र्ण व ह ॥ ग म उ थं ता द न् ॥ अ पा उ ग ३
 ॥ ग म उ क च्छू द यि व ॥ ॥ वि त्रा नि वृ द्धि च क रू उ को पा नू हि न्न व रू नु क्क य न स्य पू यं ॥ ॥ ता का ल न
 तु वा ध न यू ॥ ल षा या के न प न म्मा व गाय स्यं व व क्रि हा यि व ॥ ॥ ग वी न वृ द्धि क य वृ द्धि हा नि सि ग्म म
 हा क पू र श गो वृ जं व ॥ ॥ ग वी न वा ध न य न सा ग गु मा ला व उं क य ग वी न कि न्न श व सा ग गु मा ला रु क्क च क न
 ला यी व त व मान न चा स्य र्ण स्या क म श व ॥ ॥ म दा कृ ना ग कृ ति वा य हि न्न पि क्का व क र्ण कृ ति सं व म दः ॥
 ॥ ॥ दा क न श व या प न म्म न डा व हा क स्यं व यी व हा म ल नि ना गु ति थं व यी व दा क न ॥ ॥ निर् गु षी स्य न
 सं ते लं ला ग स्या म्म ल क र्क ति तं ॥ ते लं न स्या त्रि रु स्या गु ग गु मा ला सू रा व र्ण ॥ ॥ वा स्यं घा लि ती स च क न षू डा

व. पण्ड्यावयाहा. चूर्णया डाव. १४ व. कनकासधानं. पाय. गणुमा ला माक ॥ ॥ व्यायाम जाते नव न साने हे
ना क्रिष्ण वायु सुनिशो पुमानं। संकाय संयिष्ठ वि। लक्ष्म वापि. ग्रन्थि कनामि नन मा लु वृत्तिः ॥ ॥ श्याव
जायन प. वलहीन श्याव. रुसने गल लपाव. हिन। लित वरक्ष सं वयीत. कृन्व न पाव. धाम ड. गना व व ड. ग्रन्थि
र दो हा न जाव. (गम उ वि संधा ड गु. ॥ ॥ ग्रन्थिः नि ना जः सुष्ठु कृत्तु साधः एव यदि स्यात्स नू ज य न च।
अनू य उवा पुव नाम हा य म म्मा निष्ठ पि वि वर्जनी यात् ॥ ॥ हिन लिन जायन प. ग्रन्थि लायक था क
गुत्रिच्छि नं स्या क न त न सा व लं द व ॥ ॥ म स्या क. हिल न चा ठ गु. त व धं. मर्म या न श व सा. धा ग्रन्थि वर्जनी य
मान ॥ ॥ स्य र्जिका मूल क जा न संख चूर्ण सम चि तं। पु ले पाय ग ल (न्ये व. ग्रन्था वृ द वि ना न नं ॥ ॥
सु जि र वा न. ड न लुं धि. म सु र वा. संख चूर्ण. धन नि संधा य ग्रन्थि ना य ना ग ॥ ॥ पा उ उ द ल क वि दे व

लभषा सुमृदिता मात्समसु सुदृष्यः। वरुं स्त्रिवं मधुनृजं महांतं मनर्कं मूलं विनष्टं द्विपाकं॥ ॥ द्रुगजव
 वडः नय रक्ष रुवः ॥ ५ ॥ वायु हिवाः वावनः कायनपुसिय॥ ॥ ५ ॥ नवीकः मेदुग २ भावः स्त्रिनममस्याकः तवधः तलस
 गडः ताननुतवधउ शयीवः ताननु क्रिनिव॥ ॥ कर्वकिमाभा कुयमस्य गधं तमवूदं नमुविदावदकि॥
 वागनपिलुनकरुनवापिनकरुनमाभूनवमदयाव॥ ॥ लातयं मडगुः ताकः ॥ ५ ॥ ज्वदधकं लाकु सुवय
 निहानलाना। वागनः पिलुनः ॥ ५ ॥ अतः हीनः लानः दाकन जायवपूछ गा २ उमान॥ ॥ यज्ञायते तस्य
 वलकलानिः ग्रन्थि सुमानानि सुदाहवकि। दासा पुइया नृधिवंति नासः सुत्कं च सुस्यि पुनत सुवपाकं॥ ॥
 ॥ ५ ॥ यालकल सुदृनः ग्रन्थियावउ थां सुदाकालं॥ दासकायलपावः दिनलिनपाकयात॥ ॥ मन्दानिः
 मन्विपापुं कृष्णाभा सुकागिनी। आयूः पृष्ठिकं धनं वलवर्णं उमानदं। दयमनद्वनं सर्पिविष्कृतापनि

हि. वि. रु. क. भा. उ. म. स. ॥

कीर्तिनं ॥ ॥ अ. ल. क. सियात्र सरुं १ लं खरुं ४ काथ दाया वय्य दा सुच्छिवा लेन के. कषाय दयक
जा किं हाया निरुं १ वाल सरुं १ धल सरुं १ धूने । वासं घात्रियात्र स. ही मनाज यात्र स. घियासात्र रु
नूसासि. वृ. धूमी. अ. ल. क. सियाहा. मिदिमि. अ. रि. हा. ववकन हा. थ. ग. वारु लच्छि. कल्लेयाना व
साधन वारु लच्छि. पृथन के. धूने थ. धल स्यत्र हुन नायकं धूने. थ. धल नस्यं. वागपिह. शेष
लि. दाधन जायत्र पू. न. का. ति. सा. न. गायूं स्यं वव. ववूं स्यं वव. हाकूं स्यं वव. उद्वन गाय माक. प्यक स्याक
तिल स्याक. थानि स्याक. नाना गूल. अ. मि. म. धु. नू. वि. म. इ. पा. धु. व. धू. हाकूं व. धू. स्यासका. ग. थ. ग. भा. व. के
न. आयू. पू. धियात्र. ध. न. प. द. श. न. व. ल. न. उ. नि. न. वि. नं. ॥ थ. उ. रु. म. ध. न. ग. उ. न. ध. क. वि. धू. स्यं. भा. हा. द.
दं. ॥ ॥ थ. अ. रु. ग. द. ल. या. वि. कि. सा. ॥ हि. वि. रु. क. या. ॥ ॥ वि. नं. ति. धा. प. दा. या. ने. नि. ।

दिक्षु नागसंग्रहः। मिथ्यावाचननाः श्रीभं प्रादुर्भवन्त्वा॥ नियगावापदव्याधि महाया नि
 उद्भवति॥ ॥ आनिर्याखलाय। नागसंग्रहसु मनोनुपदार्थनवडावः श्रीजनया वागादिक
 पत्रपावः दुष्टशमोऽस्तु शनडावः॥ ॥ जायनेवीर्यदाषादेवाचष्टवृत्ता यथक्। मरुनि
 लमूदावर्तनजकुचुनमूवति॥ ॥ जायलपंवले देवदाषलंरुतः वीर्यदाषनेरुवः येकनलाय
 उद्भवः। विज्ञानतउनेकुंलपयूः पूर्वमनितः क्रियमरुः लटिउक्रिवः॥ ॥ साग्रवमूनकतिमां
 सपिउं। मासांकुत्रेवावित मागुचलं। कुर्वन्त्यजमुन्धिनं पवलिमसाधमन इधिरात्मकम्॥ ॥
 थंतिहतिहायूः लाः पाउरशयूः ननानंनवधउः वापंरुहिहास्यं वयीवः धहीनजायनपूजसाध॥ ॥
 नकुठयापडवपीउतल्यपात्रुहवदंदर्वदगी। उतस्तुः मूष्टिउहानादिहिनदिता। श्रीमासुपुदुष्ट

जनयन्त्रं ॥ ॥ हि क्रयश्च यः उपडवनपीठवपवडावः कं नापं नीयुश्च यः अर्वदनपीठवपूया
॥ कृति किनादाया थं स्यायः साहदवपावः मंगुदयीवः ॥ ॥ आवदनं त्रिन्धमनल्यवर्तुं मपाकसां मा
धूपनमयनास्य ॥ यद्रूपमानस्य नवस्य गहमेन हवत्सात्स्य नायनस्य ॥ ॥ स्याकमद्रुचकनलाक
वकृतिमश्वः वातनल्वहं थं ताकः थीनश्च ॥ ॥ लासुः दोषनतडगुः साध्यायजिवसानं थद्रुका
वतमावः ॥ संयुमुनमर्मनियच्चयातः ॥ अतः सूवायसुं तुलवदवात्यं यज्ञायनन्यत्वत्पूर्वजान
ह्वयंतदर्वदध्यापनहेः ॥ ॥ हिहावमर्मजायनपूः गुलि किं कासदानसजायनधं रुवः चिकुगिमश्व
जायलपूः भवगुः क्कावाडाधसः उं दुवयीवसियः थ अर्वदध्याय ॥ ॥ यद्वन्दजानं युगपत्कुमादादि
वर्वदंतत्रवदसाध्या ॥ नपाकयातिकरुधिकत्वात्मेदोवद्रुत्वाच्च विनोषनस्तु ॥ ॥ नितायाउव

वः गुलिच्छिनां जायत यः पृथ्विर्बुद्धयश्च साक्षात् ॥ क्रिन्मरुः पृथ्व्यश्च अधिकयानं विष्णोः प्रमा
 धयदक्षया सिनं अधिकगु ॥ ॥ दामस्ति नत्वा दुधना चतुर्षां सर्वा बुद्धयश्च निःसर्गतस्तु ॥ ॥
 दामस्तीव शनडावः प्रकिर्या उंचान डावः ॥ सकलता अर्बुदयाः धव रूपा नगन डाव माय रूव ॥ ॥
 त्रिहागुतीनकास्त्रिहात्ता नय दर्वुदानि ॥ ॥ सितखा इदं मन धेवः विकनषूडावः स पनया स्य
 समस्त अर्बुदना ग श्रवं ॥ ॥ वन्दनं साहया ला जाव वा कट्ट कनाहिणी ॥ उत सैलं सृगं मूला मपची वरु
 नानयत् ॥ ॥ वन्दनायते ल ॥ ॥ विदिंग कान सिन्धु ग्रामास्त्रा निष्ठा व दान्तिः ॥ कट्टुं विरुलन स
 कट्टुं लं विपावयत् ॥ विना क मपिन स्य त गल ग पुच्छिना नयत् ॥ ॥ दुम्बीने ल ॥ ॥ अर्क सिया
 वः स्वधिसुनिना व पाय ॥ ग पुमा ला ना ग ॥ ॥ हिः क कला लव डः म न वः पिपी गुं धिः ॥ क म्पा ल ॥

मसुगत्रउः धर्मेवूर्ण कस्मिन्वा नावनकं गलु नायीव ॥ ॥ मसुयागत्रउ निदी २ हकजीव कके
ला मलव हिं धर्मेवूर्ण या डाव मंसुगत्रस्यं वाकू सुवू नावनकं नय या उलाव कान्यया स्वा
हाने सुवा डावनय लखन कवूयाव पिहाव डाव भवन्ते तु य अथवा खिवा न्नातके ॥ उमउ पाउ वि
नय मनेव ॥ लंख जालं मनेव लंख गू कवेल सुनय माव ॥ निचय नं गलु नायीव ॥ ॥ गलु उ या
उमसुत ॥ ॥ कलत स्या नया हल स्वधिसु निताव पाय गलु उ नाग ॥ ॥ हायू स्या नया हा ग
त्रउ सुवि स्यं तय पायं तव गलु मालां नाग ॥ गत्रउं नाग ॥ ॥ मसुयागत्रउ मंसु १० सुधुवि मंसु १ सुला
कवि मंसु १ वेद वि मंसु १ सुह निवि मंसु १ सुजिखा व मंसु २ मसुखा व मंसु २ हवउ मंसु ३ मनव मंसु ४ तागि हा मंसु ५ वा
हाय मंसु ६ २ गुं धि मंसु १२ पिपला मूल मंसु ८ पिपी मंसु १० विउ कर्म ६ विर्य गु मंसु ६ गज पिपी मंसु १ धर्मेवूर्ण न

२ गलो उधाय गतपातसु (गमउ) २ ववगु. सुक्तातगुलनवयंरुव. पाश्या सुक्तातगुलनं वयंरुव. गनठ ३ क्रवसान सागा

[illegible]

२९६

[illegible]

श्रीपदमाश्रमसूत्रे॥

पूनाल्लोदकहृयिष्ठाहृयिष्ठाः सर्वेष्वसूमीतलं॥ ॥ बागमकलंखगमउसवाउगुलंखसदा
कालंमीतलश्रवथं॥ ॥ यदंमसुषुजायनेग्रीपदानिविलिषतः॥ ॥ गुगुथायसुजायलप
थंउंग्रीपदयाविलिषसिय॥ ॥ धूर्त्तत्रेनउनिर्गुतीवर्षाहृनिग्रसर्वपेःपुलपःग्रीपदंहृनिवि
नान्ममपिदावृणं॥ ॥ इधेन-अल-उ-वा-सं-घा-त्रि-यून-न्द-सा-तां-जन-पू-का-ध-त-नि-सं-पा-सं-ता-का-न-द
व-ह-यं-क-न-ग्री-प-द-ना-ग-श्र-नं॥ ॥ विउंगममिवाकंषूनागवंविउककथा। हडदावीनकारवायसुध
षूत्रवनेषूवागेलपकंपिवद्यापिग्रीपदानांनिवर्तन॥ ॥ विदिसि-मनव-अर्कपाग-गु-धि-विउक-
देवदान-सूकम्पा-स्यधू-सूलादुल-वेदवि-पागमवि-संरविवि-विऊन-षू-इ-त्व-सं-ग्री-प-द-ना-य-ना-ग-या-कः
॥ ॥ विउंगमदिनेल॥ ॥ साम्रावमत्फनेगसर्वलिंगं। सूकपुन-स्य-यूनं-विवर्त॥ ॥ यन्नि

२११

विदधिने कृता वि किं नः॥

हावः तव मार्गन दहन जावः विदा घया ल कृता वास्तु लघ्नान तन डावः तावते मानः॥ ॥ ग्रीव दनाग
या ल कृता लमथ व उ था ख व र वा उ र कृ अति र वा उ ॥ ॥ वृत्ति निदाना कृ प वि कु म ग्री प द निदा
न वि किं सा धिका वः॥ ॥ अथ विदधि निदान वि किं सा॥ ॥ विदधिः रु स रु रु स्या न्या वि ना डा कृ
स्य उ। व का मि त नु गी का लं दान हा मा दि तिः पुनः॥ ॥ स्व कृ त कृ मा न स म दा वि सं गु ष्या वि मा नि ता
॥ ॥ म व गु हि स ल स क क स को ग स रु उ दी स धा त स यी उ न पं चा नि व ॥ ॥ दा षः ल म थः ल
नेः धा तं जन य त्पु छि ना ह तं। म हा नू जं न जा व नं म कं वा य थ वा य गं॥ ॥ का प न पं म नि व। सा नू ह न
का कं जा य न प य। त व मार्ग न दा हा न जा य। ह या न क वा ग स्या क त व ल म उ व क ॥ ॥ स विदधि वि ति र वा
ता ष दि ध मु स म व व। ए थ लो र्धे स म ले च कृ ते ना य स जा न थ ॥ ॥ थ विदधि वि ति र वा न सि

२९८

लक्ष्मणन जायत पुरि सिय ॥ ॥ तनू पीना सिता ॥ तस्य स्या म अवा कु म न व । नाना वर्ण नूजा अवा द्या ता
ला विषमा महाने ॥ ॥ वक्र गति वात या केन । पिरु या केन ॥ ॥ वा या केन । नाय शय ॥ ॥ था या कु म न हा स्य व ।
यीव ॥ ॥ नानो ड नि चंति हाव । मनि व । तव ॥ ॥ ३ ॥ ॥ विषम प य न वा वि वि ड धिः सु नि पा ति कः ॥
तव मार्ग न द ग र क्ष स्यं क्रि नि व । ॥ सु नि पा त न व व सिय ॥ ॥ ॥ ते स्ते री वे न विरु त अ रि द्या य थ का नि वः
कृता ष्मा वायु विरु तं सु त र्कं पिरु ही य न ॥ ॥ दा यो द या वि का र न । हि म व व ना स । अ प य न या वि ड धि
या न या ता य न हि ॥ ॥ ॥ व न या व वा त न ग ति व । हि स । हि त या ज नं पिरु त नो क यू यू ॥ ॥ क न रु क्रा व दा ह
व जाय त न स्य द हि नः आ ग नु वि ड धि ष्म पिरु वि ड धि ल क लः ॥ ॥ ॥ को न पू यी व । या स वा व । हि यू जा
य न प । आ ग नु क वि ड धि धा य । पिरु वि ड धि धा य । पिरु वि ड धि या ल क ल व ड थं ॥ ॥ ॥ क क्रा स्ता द

दृतः प्लवः नीव दा ह नूजा कनः पिरु विड धि लिङ्ग म्नु न क विड धि नू चान ॥ ॥ हा कू ह्वा रया
 उवतः वेवः तव मार्ग न हि यः स्या क का न यवः पिरु विड धि व न क विड धि व उ थं ॥ ॥ यथ कू ह्वा रया
 दा स सु वा ल्मी क व न्म मू ड नः अ नः कूर्व नि या स्य नि विड धि मू चान य थ ॥ ॥ व्या ग ल र थ या ल उ व
 स्या नी न य्म या वा थं दा हा न जा वः इ ह न द वः थ विड धि धा य ॥ ॥ गु उ व सि मू र व ना हो कू जो स क
 दा या स थ ॥ इ स्का या प्री क्रिय कृ ति कृ ह्वा का नि वा प्य थ ॥ ॥ आ णा म स व स स र्वा ल स ल ह्म स
 धा त स क न स भि स व यं व ह्म व ॥ नू ग म उ स अ प थ प ना स अ ल पि स स स स थ न थ य स विड धि
 व यं ह्म व ॥ ॥ त षा मू का नि लिङ्ग नि वा क्का विड धि ल कू लोः ॥ गु उ वा न नि वा ध सु व को क कू ल्य मू उ
 ता ॥ ॥ थ यां धि न या विड धि व इ न या विड धि व उ थं र व आ णा म स व व ह्म उ त्रि या को ह्म स प उ व स

२१२

सुवव. मूत्र कर्म धाका विहाय सुवव ॥ ॥ नात्यां हि क्वा तथ तापः कुञ्जो मा नूत कायनं। कटि यष्ट
ग्रह स्त्री वा व ऊ। अन्तिन विड। धो ॥ ॥ एरु सुववया हि कु वयीव। पत स्या क दयीव। पत सुववया. स्या क
रु सुन काय वयू ॥ कउ सु. जल सु. त वे छान स्या क. क। उ संधि सुववरु दिया ॥ ॥ रु दया पार्श्व संका वल्ली।
सू च्छा सावना धनं। सुर्वीग संग्रह स्त्री वा रु दिका न यु जायत ॥ ॥ नू। ग। उ सु जं प वल. वा क स स्या थं स्या
क. स स पिय. सा तय म जिव. ली वी न त पं त व मानं स्या क. म्ब सा वयू. नू। ग। उ सु जं क व ग व ॥ ॥ ग्म सा य
कृ ति हि क्वा व. स्त्री न जायी यत पयः ॥ नार्ह ई म वि जाय काया न्य ध मि त न च धः ॥ ॥ ग्म सुवव. हि कु व
व. स्य सु व ड या। म्ब सा वव. लं ख च न कु मा व. एरु न धा व वया. क्रि न ग व. मार्ग न क्रि का दय. म ल व ना पं ॥
॥ ॥ अ धः प्र त यू जी व कु प्र त यू र्ज न जी व ति ॥ ॥ क्रि का द ल ता म्बा व के जि व. क्रि म व न ग व सि यू ॥ ॥

वीजं धूर्त्तं न पठं वालवनं वा युषमयं न। मूर्ध्नि मूर्ध्निः पुस्तकायं विदधिः पक्वमादि। लत॥ ॥ इधनयुतं वरु
 लंते व। सिद्धं डालं खवनि स्यं वा नं वा न पाय। रुदि द्विनके॥ ॥ सुवपूषा रुत्रि डो वा मधु इवीन सन्त
 धा। गेलपकं पुदा त वां विदधिः वृषा न पायनं॥ ॥ सुवपूषा रुत्रि डो वा मधु इवीन सन्त
 स्यं विदधिः धाय रुदि कच्छु भाक॥ ॥ नावयके॥ ॥ देनाति वस्त्रि वर्ययत वृत्ति न्न वृवा कृतः॥ जी
 वकदा वित्पुनूषा न्यत वृष कदावनः॥ ॥ नृ। गद स। लरु स। वसु स। धत धाय सुवलं ता वत माव॥ गुवि २२०
 चिं पूषया भलं शवत सा म्वाय रुव॥ ॥ साधः विदधयः पंच विवर्ध सा त्रिपातिकाः॥ ॥ गुलिचि
 लायके जिव। गता सुत्रि पात नव व शक लायके मजिव। ता दत माव॥ ॥ आ मपक विदग्धे त्वं ते वां। ल
 धं व आदि। लत॥ ॥ कंचन पंचोडु। क्रि स्यनं हियुगु। त वमानं त व। गत सिय॥ ॥ आ ध्यानं व ड

ब्रह्मसोऽथ न कदा विद्विक्ता॥

[illegible]

वातया च्छु गुदिलसक्रिनिव. च्छु गुदिलस. मक्रिवा पिरुयाननानं कि निव. पिरुया थं हिया खव. हिया मनी
 व। आगनु कया हिया थं ल क ह मय ॥ ॥ मया प्रता स्य (म) रु तं का चि न्य त्व कू व र्ण ता। मन्द वदन ताये
 व (म) (म) ना मा म ल क हं ॥ ॥ हति रु क का क. हटि २ म ड. का क. च्छु गुदिया ड नि उ थं। तव मानं म स्या क
 म ड गु ना म मा उ श क म ड ॥ ॥ द क ने द ह न ने व ज्ञाने ने व वि प च्य त। पि पी लि का ग (ने) ने व द क ने रि श न त
 थ ॥ ॥ हि य. मी न य क थं. वि व र्ण न रु या थं ड न गु। ०० मू नि न ड क थं द ग र भ व. ता क ध ना थं स्या क
 ॥ ॥ कि य न ने व ग मु ल द. उ ने व व ता य न। पी य न पा नि ने वा नः गु वि रि नि व रु य न ॥ ॥ म मु न हा न
 र व ड थं तु ता म न दा या थं ड न गु. ला हा नी न दा या थं. म न न सू या थं स्या यी व ॥ ॥ पू य स्य पी उ य त्पे क म
 क म न व पी उ न। रु क्ता नां ज्ञा म या ये व (म) थ य पा क ल क हं ॥ ॥ क्रि च्छु रि न वि ना श ड व. इ व न या क्रि न

पाठ्या इव वा। अन्तः। आत्मावनशवः। बुद्धिः। अथ या या क शवः। अन्तः॥ ॥ नार्त्ता निन्ता इ क्क पिरुं पा क
: क रुं वा वि वि नान पू यः॥ ॥ वात म दय कं स्या क म इ पिरु म दय कं पा क म शवः। अथ म दय कं क्कित व
मानं वयं म दू॥ ॥ तस्मादि सर्व प लि पा क का लः प वं ति। अथ लौ क्क सि हि त्र व द शि षेः का ला क न ना क्क दि तं
तु पिरुं। क्कत्वा व म वा त क रु उ स द्ध॥ ॥ अथ त स क ल यं उं पा क श य व ल स त्रि दा ष उं। अथ पा क श य रु व
ता का ल श न श वः पिरु वा ध न प यः वा त। अथ न ह द न यं पिरु व ल ला उं व य॥ ॥ प व र्त्त नः। अथ गि त म व पा
का ति ता प न षां वि द्वां द्वि ती यः। क कं स मा सा य य। अथे व व। क्कि वा ता नि नः स न्द न गि उ स द्ध॥ ॥ पिरु व ल
ला त श वः। ही स ह द न यं न क्क पा क श स्यं व यी व॥ ॥ कैं कैं मं मां मां शं यं। अथे व वैं कैं॥ ॥ गं गु द्या स स
स स। मि त न्या थं द ह न पं व यी व॥ ॥ त। अथे व मू त्या य नि रु गो हि मा न्स्। जी नः नि ला स्त्रा य व र्त्ता द

गीह॥ ॥ थ्यक्रिनाव लिवा लान दिन लिनं मचनं पिरुन कील यायू॥ ॥ इवीनलमूलं वेवमधू
 कं चन्दन रुध्र॥ गीतलाय उज सर्व पुलयः पिरु (म) रुहा॥ ॥ गुं उहा वितक हा ०० ०० मी. पी ख पु।
 थ्यनिनावयासं पिरु (म) थनागः॥ ॥ पिरु (म) थया॥ ॥ आमविदममानं वसं मय कं वयाहि
 सक। जानीयासु रिष कुवे यं (म) वात रुन वृहयः॥ ॥ पिवनेम साक सुउया उनिम दिव अया कन
 रुदेनयू पिवनेग ववगे रुन दव अति क्रिन गु उप डव थुनिसिव क्वेश धाय। मसिव रु खूया पा न धाय।
 घात तवया ल रुहा (म) थ॥ ॥ रुकं वा (म) लिवा मूल सर्व पुग वि (म) धनं॥ ॥ इइकाका सिया हा नि सं
 पाय सर्व पुग नाग याक॥ ॥ (म) लिवादि॥ ॥ रुनि दन रु ल पिरुं विन्दू माय पुलय नातु। अत्यर्थ
 क धिनं वा पि। (म) (म) पावन रुदनं॥ ॥ लंख सुद रुवा ला व रुठि रुक पा सं अति छा क रुन सां॥

२२२

मङ्गुयाकशस्यव्यानगजवक्रिवयीव॥

॥ न्याग्रः ॥ इच्छलास्यस्य सु कवेन सवस्य लेः लूतिवद्यमजि

शायिष्ठपूर्वनिविक्तः॥ ननक्षीतः द्यु
वं॥

॥ दहन् (ग्रन्थादि) ॥

॥ तिलसंभवयव्याकृनिम्बपत्रनिक्षयगिः रुक्मस्यन्यूतेविष्टः ॥ ७ ॥

पात्रुली (१५) था. ॥

॥ तिलादिसुपन ॥

॥ यच्छीदार्थी तिला निम्बसे भवंचतनः सुमंते लयाकमहाधा

न विदुः (धुलनायनं) ॥

॥ यक्षिणैः ॥

॥ निम्ब-हामल-००-शुमी-कस्ति-तयाव-निस्पंयाय-बुध-दक्ष-सु

मउदक्यां व्यावगड्यां हि उ॥

॥ निम्बादिलयन ।

॥ ॐ नि निदात्रा कृपनिजम बुद्धिस्थनिदा

नविकित्साधिकावः।

॥ कर्मविद्याक ॥

॥ अथ सशुद्धनिदानविकित्सा ॥

॥यास्पूत्रेणमु

गमनाङ्गायतमस्तु कवली। सतर्ककर्मविशुद्ध्यर्थं प्राजापत्यं वृत्तं च ननु॥ दिक्षु वृत्तं च विदुः संज्ञासीना गतुर्ह

६३॥ ॥ निगाप्रकाशघातसिन्धुः। गनीवसुहजतशवः। आगन्तुकनशवः॥ ॥ नानाधात्रमूर्खेनभुः
 नानास्नानान्निगतितेः॥ एवकिनानाकृत्यावृक्षानानिवाधयत्॥ ॥ नानाधात्रनयोरुगुधवगसु
 नघात्रलाभ्यः। नानास्नानसुः। घात्रनातसुः। नानाप्रकालनः। घाललायीवधदक्यालजलसिन्धुः॥ ॥ कि
 त्रविनातथाविधं कृतपिरुतभववा। मृष्टमादू सुधमसृतेषां वजामिलजलं॥ ॥ नाकनठगुः। हाट
 वावगुः। सूयाघात्रसुः। टमवावगुः। एकसुनगुः। वियावः। कयावरुनः। कुलः। नलः। धदक्यात्रयालजल व
 नाप्रकाशनकाय॥ ॥ दाधेनायसुयानन्यनकादिकनसंहवः। सुप्रकथिनसंस्य। मर्ममउग्रवा
 महानूतः॥ ॥ वातपिरुः। म्यादिघात्रसुज्ञानादासनः। नमुघात्रः। आगन्तुकघात्रः। क्हासुः। नाकः।
 यकिहावः। सुनावववः। म्याकदवः॥ ॥ तुयतेसूटितमवावुः। ममावगसुसुवः। क्हाभाहक

लक्ष्म्यदाहृदवावदानूवेः॥

लं लं ददा हृदं वा वदानु (वेः) ॥ ॥ यो सै। खया थां नदमूव. घा नवयीव. था वा ना धि क तु ल भ्र य

॥ वाताधिकबुध ॥

॥ वाताधिकवृद्ध ॥ ॥ व्यासवायुका नयूचीव ॥ क्रिनिव दियु अखंक्षा ॥ हयानकदूष रयीव ॥

विरुद्धतंबवेविद्यासत्येः श्रवेष्वयूटिकैः॥ वरुपिष्ठागुरुः स्निग्धस्त्रिमिशामन्दबदनः॥ ॥५॥

वयिरुनशव. नधव. गीक. । तवमानंथा. तु. विकनलाक. कवरधव. स्याकनायू॥ ॥ विरुवुधया॥ ॥

या ध्रुवः पूर्णसंस्कृतद्विवर्षाकीकरुवर्गः॥ ॥ उनितायुष्टिरिह निवन्ताकालवाङ्मथैव

लक्षय ॥ ॥ अथ बुधया ॥ ॥ नकावकः प्रतिः नकः द्विजिजः स्याकदम्वयेः ॥ ॥ अथ हिता

व. हीन जाय न यूया निगान या क. या. निगाल कृदा वयू. जिदा घन जाय न यूया. स्व ता ल कृदा दयी व. धि

॥ त्वमासुः सुखदेता नृणां स्यात्पुण्यवः सर्वसत्त्वास्ववन्धनसलोक

सोनकशवः उपडवमइ ॥ ॥ भीमगात्रिविवकालं सुखसाधुसुखवृत्तं ॥ ॥ हानिजननथाडया
 ययाकृतं थयानदः स्वसियमम्यानकंडयीव ॥ ॥ गुणोन्नयनमेहीनस्तुतककुवृत्तस्मृतं ॥ ॥
 गुणविलयमधनः थककुवृत्तधायलायकथक ॥ ककुवृत्तया ॥ ॥ पटियूयानिदृष्टास्तु
 प्रायूत्संगिष्टिवमिष्टिवः ॥ ॥ गीकनः तवमानंक्रिववः महिगुहीनः कांडववः ताकालउथंथांड ॥
 ॥ ॥ ६४३ ॥ लोतिगभादिगुहलिंगविपर्ययन ॥ ॥ इयकमजिसंवाडगुद्यानः अतिनगीक
 गुहलजलकृतंमइ ॥ ॥ जिज्ञासुर्गामदः हाकूः स्त्रिग्विगतवेदनः ॥ ॥ जिज्ञायातल
 थं नायूः वकनलाकः थथानतादुसिय ॥ ॥ मूकवस्त्राणिवाग्रावः गुहवृत्तगुतिस्मृतः ॥
 हिनकंधाडगुः यंतिमहावः थगुहवृत्तधाय ॥ ॥ गुहवृत्तया ॥ ॥ कथातवर्णपुतिमाय

स्यान्नाल्लेदवर्जिता॥स्त्रि^{वि}नैपितिकावस्त्रावाहतिरश्चमादिलेत्॥ ॥वदधूनि^{वि}याउनिथां डनगु इवभंगडगु
गाकालयाउगु कछूनसहितगु था नामसिद्धन॥ ॥मूटवर्मविमग्रकिममूलमनूजं बुधं।त्वस्त्रवर्णसु म
तलंसु मयनूरं सुमादिलेत्॥ ॥क्रि^{वि}हि^{वि}यकि^{वि}यापलशव^{वि}स्याकमइद्याव^{वि}छेगुयाउनिमग ड माधवंगु^{वि}था
संमयनूरक्षया॥ ॥संमयनूरबुध॥ ॥कृष्टिनांविषयूषानां।भविषंमधूमहितां।बुधः ककुनसिध्याकि
थमांवापिबुधबुधं॥ ॥कृष्टयायसुनागवपूया।गनीवगीकया।मधूमरुगागीया।थतसद्यावनातडावलायके
तवकछु^{वि}थातद्याववाधेनयूक्ष॥ ॥बलाभदास्त्रिमज्जनामकरंगवयः प्रवेत्।आगकुजाबुधं सिद्धनसिद्धिदा
षममवः॥ ॥दाकथां सन्तथां हास्यं वयीव कातधविथं॥आगकु ककुव शत्यनलायकेजिव।धुकि सुदावल
कृष्टं तडावलायकमजिव॥ ॥अर्हनाइमनाधत्वा लाधुजमूलवः समायसीकइललाजावमूर्तिगा।

कन प्रायमं ॥ ॥ अगवा सिक्क इम्वन सिक्क गुत्वा उकि वू म सिक्क ॥ ६० ॥ मी कर्व सि कि उ ला हा सम
 गग वूर्ण या उं ॥ घाव सुखय ॥ घाव या कि व व या ला व य क ॥ ॥ कलं जा नि व नि गुं श्री न से ह न्या न्कि मि व
 ल न ॥ ॥ कलं ज नि ह न थ न नि वा स्यं घा व रि ति ॥ थ स्य ना घा व स थ उं ॥ गु दा व या ॥ गु द कां भा क ॥ ॥
 इ वी स्र व स सं सि द्धं ते ल कं पि लु क न वा ॥ दा वी ल्य व थ क ल्क न पु क्षा नं वृ णा य नं ॥ ॥ गुं तु नि ॥ सं गू र ग
 कि व्क मि व कि सि कि उ ॥ थ न वूर्ण या उं वि क न वृ णा व घा व या ला व य क ॥ ॥ सि क्क कं म धू कं सा धुं स र्ज न
 स न्क थे व व ॥ मं जि ष्ठा न न नं मूर्वा पि ष्ठा स र्पि ति या व थ ग ॥ स र्व षा म मि द ग्धा नां वृ णा य न मू ल मं ॥ ॥
 नी थ ॥ ६० ॥ मी गुत्वा उ ग्री ला य म न्ना थि ग्री ख उ ॥ स र स नि स्यं घृ त स वृ ना व र्ण य ॥ मी न वृ क घा व ता म उ
 अ घा व ला य क लं ला व य क लं ॥ ॥ मी न वृ क घा व या ता म न व घा व या ॥ ॥ म था गु र्वा ष्म स म नः

२२५

पद्मवन्दनसंयकः सृगन्धरिव्यगन्धः सुसुन्दरः बुधसुताः ॥

॥ धनं अगुलिसिने जिप्रिहान

नं पल्लवाननं श्रीखुतं वं पल्लवाननं न स्वाकनं कुं कुमनं धनतानसियसिय ॥

॥ यवमर्मसुसुतता

वन्द्यतुर्थवदताः दक्षगवहिनतुर्थतवन्द्यतुर्थनीतलाः ॥

॥ यवक्रयामर्मधनसुजायनयूया

प्याकनवश्य ॥ पिअतिहियु इरुवाडु विदुताव ॥

॥ प्राणमालक्या भसकाभनाचकपीडिताः ॥

पुष्टपूपनूधिराबुधयथावमर्मसु ॥

॥ वलनं कील सांलंसे पड मासावव नूविमद धननपीड

नयु क्रि हि अतिवाधनयूयात्रमर्मसुअउगु ॥

॥ क्रियाहिसुम्यगलज्ञानसिअक्रियवुवः ॥ वरुय

तुसंख्यावानतानुसंलकुधत्मनाजसुः ॥

॥ निदानसु उमसुतयातसांमसिधुगु धधिगुद्यान तावने

मात्र धधुउन ये हिनकं जसुनायमरु ॥

॥ जातिनिचपठालानां नकमानस्यपल्लवाः ॥ सिक्ककमधु

कंकडद्विंसा कडला हिनी । मज्जिस्स पद्यकं सोधुमहयानील मत्स्यलं । तुं धकं नम्रि वावी जं न कमात्रस्य
दापयत् ॥ ७ ॥ निसुमलगम निविष्ठाते लं विपावयत् । विवु (दाव) सुमत्स्यने स्फुटक ककुना निष् । दऊ विस्
र्षना (ने) मूकी ट इक्षु सर्वथा ॥ सयः नकु यहा नेषु दिग्बिद्वेषु वेवहि । नख दन्त कृत देह इक्षुमासायक
र्विषेः मकनाथ मिदं ते लं हित (अधन) नायने ॥ ॥ जातिकादिनेल ॥ ॥ जायपत्रि निमः खा य

२२५

पालाया हा कलं जसिया हल । सीध ०० छमी कड कविह न हाक ह न ककुकि । मनू नपके मल गुल्बी उ
हल द उरुस्वा निना धूमि इइका सियाम् धनं समलग वूर्ध्विक न मूना वरुणाय । वल घान तडा झाक
कड दक ल ककु ये सूर्य उदाव नकु वान नाल लसिन घान लाल धन नाग याक ॥ ॥ सुधा व
नया विविक्षा ॥ ॥ चन्दन वट गम वमं जिष्णु मधुकं तथा । पुष्पुली क इवा व पुग न्ध धान की त था ॥

उतेहेतुविषयकं सर्विनीव समायुतेः अग्निदग्धवुल्लोखं गृह्णन्तां डाघवपत्रं ॥ ॥ चन्द्रनाथय
मक ॥ ॥ श्रीखण्ड उवसि कर्कतासि मनुषि ॥ ६६ ॥ सुमी नकि गुंतु गन्धक ॥ ६७ ॥ धातवूचिक
नम्रस्यं इह ॥ यतनस्यं घृणं ह्यस्यं अग्निदग्धवुल्लोखं नागयाक ॥ ॥ अग्निदग्धवुल्लोख ॥ ॥ ६८
तिनिदानाकृषयत्रिभुमवुल्लोखनिदानविकिसाधिकारः ॥ ॥ अथ सद्योवुल्लोखः ॥ ॥ नानाधरमुखैः
गम्भिः नानास्वानानियातिनेः एवकिनानाकृतयाः बुल्लोखनां स्तान्निवाधय ॥ ॥ तलताप्रकालनवीड
गु. न मुयाधरन नानाप्रकावदधाने लायू. नानाप्रविमानन रुवधान थूकिसासियक ॥ ॥ छिन्न
हिन्नरथाविद्धं कृतविविरुमववा ॥ वृष्टमाकृष्टधमवृष्टं गंधां वदामिलकृतं ॥ ॥ नाककानाच
न. सूयाधान. धावकयाधान. डाकधान. कृटिन कृडाधान. धातवूगाविधियालकृतकलाय ॥ ॥

तिर्यक्कुट्टिन्नमन्त्रं विधातुं स्यात् ॥ गणपतये नमः ॥ गणपतये नमः ॥ गणपतये नमः ॥
॥ विष्णवे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥ विष्णवे नमः ॥
॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥

२२१

ईहं नादाहं न्यजायते । मूत्रमार्गगदासंख्योत्रकं धानाश्च गच्छति ॥ ॥ अथ द्यावसुः हि इहावडावा
थ हि नद्या यलेदडावः कानपूयावदियूदयीव । लिंगनः मार्गनः स्त्रुतुनः कासनदिवयू ॥ ॥ मूर्च्छाश्च
साहसाश्चानसुहृच्छन्दुवच । विमूत्रवातसंगच्छेदापावाच्छिन्नकणा ॥ ॥ नूत्नमदमच्छिगुः स
लेलेपउः प्यासचावः पण्डावः नयमयवः क्लाकः मलमज्जसुः धतनायं कदस्यं वयीवः वनतिवयीवः मि
खाकाउयू ॥ ॥ लोहगन्धित्वमास्यास्यः गमउदोगन्धिमवच । रुच्छलं पार्थशास्त्रापि विजाघं यजमण्ड
लूः ॥ ॥ मूत्रुः नयानधायूः क्लेनायं नधायूः नूत्नमदः वाकस्याक धलज्जडापतसुखा उद्यानया इहं व
वयू ॥ ॥ आमाप्रयस्कृन्धिरं नूत्नं कर्दयत्यपि । आध्यानमनिमार्गं वग्नूलोत्थावदावृणं ॥ ॥
त्यदूनथचाउहिः द्यावसुहिः नश्यीव । तवमानं धतडावः धतस्याक ॥ ॥ पक्काप्रयगनेवापि नूजा

मोरवप्रववा नीततावाप्यधनारः ख्यं र्वात्रक स्यागमः ॥ ॥ यकाग्रयसुवंगुयापंतज्याकु
 स्याक। एरूनकखाउ। हिक्कदयू ॥ ॥ ग्यास्यगल्या हिहितं। यदं। गन्नालयं विना ॥ तुष्टितं नि
 र्गतं वातविद्धमिति विनिर्दिष्टं ॥ ॥ यदवि विधं धासंवाउगुद्यात्र। मर्मसमलाक धासंवाउगु। विम
 बावगु। पिकायमजिव ॥ धविद्धद्यात्रधाय ॥ ॥ विद्धवुलया ॥ ॥ नातिस्तिन्ननातिहिन्नमूहया।
 लकृष्णचित्तं। विषमवुलसंगवृत्तकृतस्वरिति निर्दिष्टं ॥ ॥ तादवंगुनं मख्। अतिदूलावगुनं म
 ख्। स्तिन्नयां हिन्नयां लकृष्ण ॥ तवद्यात्रयाउंवाउगु। धक्कवुलधाय ॥ ॥ कृतवुलया ॥ ॥ पुहा
 तपीउनास्याकृयदंगयधूतांगतं। सास्तितापिचित्तं विद्यात्मकात्रकपनिस्तुतः ॥ ॥ ल्वहंवाव। दया
 व। धावाव। कयकाव। ययाव। धातपुहानत। ग्यस्ययां मलासंवाउगु। द्यात्र। कागतापंचं वूर्हृशवगु। म

सुत्र हीन व्यास ६४

शुक्लसिन्धुः ॥ ॥ ध्याना नाम पित्रे कुरुष्व ध्याय ॥ ॥ धर्षणदतिघाताच्चयदंगस्त्रिगतत्वा
वः ॥ ॥ ५ पाशावाचि तंतं तु च मित्थि स्थि यत् ॥ ॥ किनाव. कुं गु वा क तु ल. दा. म. ग्व. म. यो ग नी. ॥
वस. यन्नि हाव गु. ॥ ॥ ध्याना नाम ध्यायुषा ध्याय ॥ ॥ न्धवं स. न्धं पिटि कानि तन्तु. मूद्रु मूद्रु
ः ॥ ॥ न्धित वाहि नं व. मूद्रु कं वूद्रु द तु ल्य मा सं वु लं स न ल्यं स नू जं व द न्ति ॥ ॥ वय. मंगु. क कू द न
उथं ॥ ॥ हि रु स ह न व व गु. लं ख वा वा ल थं वा उ गु. व ला ध्या न थं वा उ गु. कूट द व गु. नृ ति स्या क गु. ॥ ॥
त्वना ती ल्य नि ला दी नि हि त्वा वा प नि रु ल्य वा. का ष्य पु ति स्त्रि तं मूटं कू र्या ड का नू प ड वा न् ॥ ॥ कुं गु
दि द्वा व गु. ना जी स ह द न यू गु. प त स ह हा व उ गु. कूट या त. ॥ ५ प ड व ध्या य ॥ ॥ त ज्ञा क ना हि तं पा.
पुं जी त या द क ना न वः ॥ ॥ नी गा क्का नं व क नं मा न धं च वि व र्ज य त् ॥ ॥ ध्या द थी स का उ. सी स हा

यः उतिः लाहा रवा लः थन रवा उः मिरवा कः उः पत हां रधा व थः कः ना गी ना वत मान ॥ ॥ अमः युल
 यः पटनं यम हा विव वृनं लानि वः थः कः ना वः तः सांग ता मूर्कन मूर्क वा त स्ती वा नू जा वा न क ता ग्य ता स्ती
 ॥ ॥ ॐ कः ता कः यु कः तु न्वा कः ए नू रू न हा वः अ वः छा रू यी वः कः का कः नु ग ल मः किं थः सा व वः त व माने
 न घा वः स्या कः थः सु कः लं वा न या उ प ड वः सिय ॥ ॥ वा न तु ल या ॥ ५ प ड ॥ ॥ मा सा द का तं नू धि नं व ग
 कः नू सर्व न्द्रि यो र्थं पत्र मः स्तः थो वः द न्म र्द स र्वा य थ वी कः न वः सा मा न्य ना म म्म स लिंग मूर्क ॥ ॥ ला सि
 ना ति थं यं ति हा वः यं थि न्द्रि यो ग ज म दः जि ता या व कि डा ना यो थ य सः प्वा व लो लेः सा मा न्य म म्म स व उ गु
 ल कः ल ध य ॥ ॥ सू न न्द्रः (ग प य ति सं पु लू नं व कं य व लू तू क ग ज न्द्र वा यूः) क ना ति ना गं वि वि ध न्द्र थः
 का नि ला सूर्कि ना ल्ध थ वा क ता स ॥ ॥ ॐ न्द्रः (ग प क के उ या उ नि थं) क्रा सः सूर यो कः क्रा उ हि या

२२२

[illegible]

ध्वञ्छिवुलक्षय ॥ ॥ यथा स्वमता निविहा वयं च लिंगमनिमर्म्म स्वतितादिगव्यापातुर्विवर्त्तुस्तु
 नितं नवहिर्यमा नमसमर्म्माहिरियातितः सुः ॥ ॥ ध्वञ्छलिंगन ध्वञ्छलिंगन नवजावसूपावध्वं वि
 वर्त्तुनवा उद्यान भूतिदाया ध्वञ्छकगु पृटदवध्वं कृते ॥ नायु उनि ग्वञ्छया लासहदवध्वं मर्म्म सुशयीव ॥ ॥
 मूलं सर्वजवालीकं सुविष्टं पित्रुवध्वनात् स्वभादिबुल संनाह सुफाहन सुवेध्वं ॥ ॥ हंदाया हा हिनकं
 लिनाव निनाव ध्यानसुग्वदानपाय क्रसु कृतपाय तव रघ्यावया लावु संलायिव ॥ ॥ काकजं घानसं
 ग्वञ्छत स्यामूलं पुष्यवध्वत् वलसुया पि पित्रु अविबुलनाहन मूलं ॥ ॥ काकपुंगलयातीन काकपुंगल
 या हान निनाव ध्यानसुग्वदानपाय काकन उने नना नं रायीव ॥ ॥ निग्न सय श्रीमधूपद्यकोत्यलेः पि
 यंगुकाग्न पनसाधुवध्वनेः विपावगेलं पय साय भाजयत् कृतसु संनाहन दाहनागनं ॥ ॥ श्रीकृष्णि ॥

कृमी. कायपल. उरुसां. प्रियं. गु. कायवहा. गु. ला. गु. ग्री. ख. गु. धन. सा. इ. इन. विक. न. वृ. स. र. हा. स. द्या. न. या.
ला. वृ. य. के. हि. यू. व. थ. मा. के. ॥ ॥ रु. नि. डा. म. सु. रु. र्वा. च. न. गु. ली. य. क. म. ल. के. ॥ पि. छा. गी. तां. वृ. ना. ल. या. द्वि. व. हा. वृ.
हा. (म. ध. नं. ॥ ॥ रु. न. डि. क. सु. गु. ल. गु. च. व. क. न. हा. र. खा. उ. ल. र. व. स. नि. स. द्या. न. स. पा. य. द्या. न. उ. य. के. ॥ सु. न. ना. ग. न.
य. म. रु. ॥ ॥ वि. सर्प. प. क. द्या. त. थ. नि. ला. रु. हा. प. ता. न. कः. मा. हा. मा. द. वृ. व. नृ. जा. क. व. नृ. क्रा. रु. नृ. ग्र. रु. ॥ ॥
वि. सर्प. क. कृ. द. यू. द्या. न. स. क्रि. द. यू. द्या. न. जा. य. न. प. यू. ग. ल. क्रा. स. यू. अ. क. प. जि. यू. अ. व. द्या. रु. यू. अ. य. वा. यू. क. व. द. यू. द्या.
स. या. यू. उ. ता. ल. या. का. व. स्या. यू. ॥ ॥ का. ग. कृ. दि. न. गी. सा. न. हि. का. म्. स. स. व. प. थू. धा. द. (म. प. ड. व. ह्यो. का. व. धा. नं.
वृ. हा. वि. न. के. ॥ ॥ मा. सा. व. व. क्रा. क. य. न. क. द. व. हि. कृ. व. व. सा. ल. र. प. ड. क्रा. क. जि. म. वृ. ना. उ. प. ड. व. क्रा. ना. द्या.
न. या. उ. प. ड. व. थ. न. रु. न. ॥ ॥ स. मूल. प. उ. नि. र्गु. णी. पी. उ. यि. त्वा. न. स. न. रु. नि. न. सि. डं. स. मं. ते. लं. ना. डी. इ. वृ. धा. प. रु. ॥

॥ निर्गुणित ॥ ॥

नाडीबुधनासुदक्षबुधनाल॥ ॥नाडी

॥ धू. स्त्रान. साय सा. ॐ ह्रीं

॥ हुनेउ. वक्रवन्दन. ४०० श्री. पलकनल. प्रियंगु. वी.

॥ कृत्स्नः कश्चिद्गुरुः निस्पृहः पायः क्लृप्तः कनकः कनकाग्रीवा ॥ ॥ स्वा

॥ स्वा न वि त् २

॥ ॐ नमो भगवते ॥

॥ अथ हर्मनियानविक्रित्वा ॥ ॥ हर्मसमा ॥

२३९

साद्विविधं दूताः का (उव सु (भे वहि र सु (भे । उ त्ति छ वि त्ति छ वि व र्ति च । नि र्य ग्द रि कि फ म ध न्व ष च
ता क धू व या सं क्तं ग मा य ल क ण वि धि ज्ञा य ॥ सु भि र सु भि । सो ऽ का म । इ ग न का म । उ त्ति छ धा य ॥ १ ॥ वि
त्ति छ र वि व र्ति त र नि र्य क ४ अ रि कि फ १ अ धः थ न घू ता र नं ॥ ॥ पु सा व ल क व न व र्ति ना ग्न स न्ध
क र्त्त वि द्ध व द म न इ कं । सा मो न्य नः सु भि ग न स्य लि न्गे । उ त्ति छ सं धेः ग्व प थूः सु म ना न् ॥ ॥ य ल षू य
म जि व च्छ तां म या न सा नं त व मा नं स्या क । सा य म य व । थ न ज्ञा ना स ता क धू व सि य ॥ उ त्ति ॥ छ धा य सु भि धि
धि रु या उ स्या क । म ना व स्या क ॥ ॥ वि (ग ष ता ना वि ह वा नू जा च वि त्ति छ जा मो च नू जा च नि त्ति । वि व र्ति त
या र्ध नू जा च गी त्रा सि र्य न्न ग ती व नू जा र व नि ॥ ॥ वि (ग ष ता वा चा स स्या क । सु भि र टि वि हा व । जा ज न
पं स्या क म दि स्यं । थ वि (ग ष सि य । ता क धू व । अ प थ य न व मा नं स्या क थ वि व र्ति धा य ॥ ॥ वि व र्ति त ग य ॥ ॥

सन्धिया विवनेन वमानं स्याक थ निर्यग्ग्न धाय ॥ ॥ निर्यक्क रग्ग्नया लज्ज ॥ ॥ क्रियति गूलं विष-
 मावसुक्को क्रियत्वे ॥ अत्र विद्यतस्य सु ॥ ४ ॥ का ॥ ७ ॥ त्वतः कर्कटकोष्ठकधू विवृर्तितं विद्विगमस्मिभिः ॥ ॥
 को न तव आक थ हा संवव थ क्रियत्वे रग्ग्न धाय ॥ ॥ क्रियत्वे रग्ग्नया ॥ ॥ को न तव आक अति स्याक कल्लुसं
 स्याक सन्धिराव थ अ ॥ अ ॥ रग्ग्न धाय ॥ ॥ अ ॥ रग्ग्नया लज्ज ॥ ॥ को न वं वृद्धं न तव आक थ अ ॥ अ ॥
 कल्लिधाय ॥ ॥ अ ॥ अ ॥ कल्लिया लज्ज ॥ ॥ का ॥ ७ ॥ वरग्ग्नं रुदिया नितं व मज्जा गमं व सुटितं व वकुं ॥ ॥
 द ॥ ७ ॥ को न तव आक थ व पिलितं पं रटखु ठाव को न रुत पूय मासा तय मरू ॥ मरू रग्ग्नया ॥ ॥ मरू र
 ग्नया लज्ज ॥ ॥ ॥ किन्नं विद्वद न धायिका ॥ ७ ॥ प्रक्षंगता ॥ १ ॥ मरू जा हि वृद्धिः ॥ ॥ किन्नया निता
 रद ॥ ६ ॥ ७ ॥ या जि म निता रद ॥ मउं स्याक तव मान ॥ ॥ संयी य मानि रवती ह न दः स्यर्ग म हाः स्य

न न ता द गू लाः ॥ ॥ **डा स्यं खू दू र न मि न गु** साय मय व का ल न त्वा क स्या क ॥ ॥ सर्व सि व स्का
सू न स मी ला हो ह म् स्य का ॥ **उ ख लु वि क्र म न गु** । ह म् स्य का ॥ **उ व दू धा पु या नि** स मा स नो ना म हि न व ॥ **उ**
ल्यं ॥ ॥ **का ल द उ ना क धू व या वि क्र थ थ** । अ नि सू ख म दू का ल ना क धू व या त ल ना यु का न द व । सं क
प मा उ न जा धा या थं उ थं ख व ॥ ॥ **आ ल य ना र्थ मं जि ष्ठा म धू के** अ म् स्य य वि नं । न न ॥ **धो त द्य तं मि**
त्रं ॥ **अ लि पि षं उ ल य य न** । स धा हि या न न जा य न य ना ग मं गु उ य स म र य ॥ ॥ **अ ल्या सि ना उ न्म व**
ना र्ज ना वा ना स्म क स्य व । उ य उ वा ना नी न स्य ह म् स्य क कु न सि ष्ठा नि ॥ ॥ **अ न्न म न व** ॥ **व व न वि रु वा**
ता धि क या । ना नी न स थ न उ य उ व न न न न व ॥ **क र द व** ॥ **प न हो र धा व** ॥ **म ल मू उ म ख थं व व** । **ध न उ य उ**
व ना क धू व या न या । **र न उ व ल न के धा कू ॥** ॥ **हि नं क पा ल क द्या नु** स म्भि म् कं त थ य नं । **अ य नं**

उनिमिषववर्ज्यशुविचकृषः॥

॥ कपालकाश. जयाकाश. यूटकाश. उतालकाश. थका

जातिका. कउवृकुलिसुभिधनेकाशस्यनगु. लित्रवृषभय॥

॥ लित्रवृषभयलकृष॥ ॥

कि. कि. कउ. इसाककाश. शनरावतावतमात्र॥

॥ असंलिषकपालंवललाटवृषितंवयता. हयं

तनाकनगरवगृषमूर्धनिवर्ज्ययत्॥

॥ कपालयासुतत्रिहाय. कपालवृषदय. गुलिच्छियाका

शिकातवयाल. नू. गमदहाल. वृषा. उतवयात्र. धनसुतावतमात्र॥

॥ सम्यक्मोक्षिभित्तम २३३

धृष्टिद्विर्ज्यनिवधनात्. संकाहाद्यापियंगकृद्विजियानुविचकृषयत्॥

॥ सन्निहाय. विसं

ने. अवलवयाउंसल. क्काउंसल. यांतकमजिव. तावतमात्र॥

॥ तवृषाछीवनस्यनुलिशतनलका

नि. उ। कपालानिविहियकेसूटनिवृजकानिउ॥

॥ तवृषाद्विषय. कासयाकाश. कसयाकाश।

मिखायाकांन. थलूसंवत्स. दष्टितवक्षान. कांनविषयवत्स. कपालगतवक्षान. विलिसिस्वत्स. पदम्
नकमजिव॥ ॥ हिन्नुवलयउपदव॥ ॥ ६०० निनिदानाकपत्रिकमरुग्निदानवि.
किसाधिकानः॥ ॥ यः ॥ मथमाममिति पक्कमूपकृतत्तुः यावावुत्तं प्रवृत्तयवससाधुवृ
रुः॥ अत्यन्तप्रविगतिप्रतिदार्प्यतस्य ह्मनानि पूर्वविदितानि नतः सप्रयः॥ ॥ गुरुयां
मउगुलिस. कविनिनिधकंवाले. कृतांमयासंवालेकिस्ववयीव. ग्वस्त्रयाद्यानदनेक्रियाले॥
मक्रिस्वसेरुवयास. थक्रिइहावेडाव. मेवगुधायसपीजशयीव॥ ॥ तस्यानिमाउग.
मनामृत्तिलिखतया नाडीवयद्वहनिननमगाउ. नाडी। दाघेत्तिहिर्हवति साष्टथ। गकगवत्सं
मूर्च्छितेनपिचनलानि। मिहगास्याः॥ ॥ थूकिस. क्रियुजावडाव. पिहावयथायसाय॥

धुकि सु नाडी सवहु नयू वायू न लकने डाव नाडी नवहु नयू । थ प्रिदा सन शयं रुव पूत थयं रु
 व ॥ ॥ नञानिलात्पत्रं नृषं नृषमूखी सुगुला रुना नूव न मधिकं प्रवति कु पा म । पिरुा दुदु रुव ।
 कनी पत्रिदा रुमू का । पीने प्रवत्प धि क मू क्र म रु सु वा पि ॥ ॥ थ या ना डी वु वा वा न न श व नू रु
 प्या व रु टि र स्या क । पियान जा स्यं हि व व ॥ ॥ वा क्र स स्या क । कि क्रा सु सं व यी व । यानं कि नं को क
 ॥ ॥ रुया क रुा ध रु य ना रू न पि रु ला व । न स्या स क पु न नू जा न रू नी पु रु द्रा । दा रु रु व न स न म
 रू न व रु (ना म्) । य स्या रु व कि हि हि गा नि व ल रु व नि ॥ ॥ ॥ थ न श व नू वायू थ नू रु ही न श यी व
 रु नू म स्या क । ना ना वा ध न यू हि यू कान य यू सा ल न प ड । नू (ना द म रु हिं नू रु गं थ न ल रु वा डि दा
 व या ॥ ॥ ॥ प्रिदा स ॥ ॥ ॥ ना मा दि (ना ल व न पि रु क रु पु को पा स्या नां ग ति व स रु ना मि व का

२३४

सुनातिं॥ ॥ उदिशकायनपूमा नादि सुबुलवन हाव पावमावदिय। थयमवदुत्य॥ ॥ न
कुं क थं विदन्मार्गमूदीनिगषु। स्तानिषु गत्यमनिवन गतिं कया नि॥ साहनिहं मथित मूकमसु निमि
॥ प्र। ग्मवंकनालिसुहासासुनूजावनितं॥ ॥ खनेमइइविस्मं नाडिया मार्गसुवहाव ज उवाउथं न सु
इयीव थुकि सु पियान जायनयू मन्तु नाया डा थं उनिव। म्वा कहीन जा संवयीव॥ ॥ लूहा कइइ
दावीहिर्वहिकत्वापुनयत्। न्वां सर्वगनीन स्काइइना जी युयागवान्॥ ॥ नितखान इइ ज कइइ
थनेन क्कासंमिव कि सिन वरुहिया उं पुनवायाय। सर्वगनीन सुइइना जी न सानं ना जी बुवा माक॥ ॥
ना जी बुवाया॥ ॥ हिन्नाह विजाक दूकं ववां व गजि कि काया विव विल्ल मूलं। सुंदरुतेलं विषयं व
लस्य। संवद्वनं पुनवायायनं व॥ ॥ का मउसिहा। हनदि। कइ क विहा ग्मवपल्लहा। बालहा थ

नैकल्लया इंचि कन वूनरुहस्यं। लान नानं वूसं नाठी वुण उव ॥ ॥ नाठी वुण या ॥ ॥ नाठी विद्या वु
हवान सिद्ध केवाय नमः खलु कुरु साध्याः ॥ ॥ विद्या वन रुव नाठी वुण लायक म जिव। वि। न। व। य।
ताय त्वन लावदव ॥ ॥ ॐ ति नि दाना कप त्रिकु म नाठी वुण नि दान वि कि सा धि का नः ॥ ॥ अथ ह
गन्दन नि दान वि कि सा ॥ ॥ कर्म वि ण क ॥ ॥ अतं पूर्व प त्रि हानं त्वला यु क्त वि दान नः। ह गन्दन
वन रफ्फा उत्पल्लिं के न कर्म ॥ ॥ आचार्या तार्या गम नाय कूर्व कि न नाध मा। उय जा न मध र्म न वा न दृष्ट न
नाध मा। तेष व कि म हा दानं न व कं व द्वा स दं। य कि म गूल कृत्स्न र्था वाहनं न कृयी उने। दोर्य न व लु इवू छि
गृ क्रानि म्की धनं गुयः ॥ संस्य न लु वि नू या खं न व कं या य सी द ति। गृ धु स्नाना दिकौ गत मायू ह कृ मा ना नि इ
ः स्तिता। ह स्नायू नं गु सा ह सु म द सं र्वा कथयूनः सा पि ने ने व ना। गन ऊ न्न सं पा य गृ क्क न। दान म स्य उ व के

२३५

हं क्षार्थं स्वर्गपलायकं । गुडस्पृशं घृगुलकं उपावृतः पित्तिकारिः । तिन्नाहगन्धनाह्वयः सुवपं वविधामनः
॥ ॥ श्रीगामया निःशुलिहवनककृवयीव । थककृनउमूनडाव । हगंदनग्रागसिय ॥ थयाडातादि
धिदव ॥ ॥ पूर्ववृपं हवरुस्यवदनाकटिपार्वथाः गुडककुसुमथादाहृस्नादः पामाशूयद्रवः ॥ ॥ थ ।
या पूर्ववृप कउचिकिधनीव अथथपस्याथिव । आयामवासुयू हियू स्याक ककृआदिनउपद्रव ॥ ॥ कषा
यवृजं वति कापितानिलस्यपानदधुपित्तिकांकनानियां । उपकुलस्याकमपनिदानुगं वृजं वरुनावृणहिन्नवा
हिनी । नजगमासूयपूरीषभतसां बुद्धी नमकेः लगथानिकं वदेत् ॥ ॥ हृक हृटवस्तुस वस्तुयाव वा
नकायवपाव आयामसककृवयीव । ग्वकृरनहृनूकायागवकृरयाककृतवमानेकिनिव । स्याकअति । न
उमूयाव हृहृनधावगु पियानजासंवहनपूगु । थ आयामयागकिपिहा संवयीव । वा । रि । वीर्यः अनेकधाव

ॐ लिखाधरहमन्दन ॥

प्रावरगनडाव ॥ ध्यानामगमयानिधाय ॥ ॥ नतया निहमन्दनया लङ्का ॥ ॥ ७ कायेने पिरु
मतिष कापितं कनातिरकां पितिकां गुडागगां । तदागुपाकाहिमयतिवाहिनी । एगन्दनं तूष्कनिशध
वंददत् ॥ ॥ पिरुकापनपूर्व सुखलपंतवच्छानका यशयीव । अति काक ककुदयीव । ओयामसु ।
धननोनं क्रिनिव । कासुसंगी कनवरुनपू । अति काक रुन डाव एगन्दनधाय ॥ ७ कृनिशधवधाय पिरुन
जायनपुगु ॥ ७ कृ ॥ ॥ यनप्रवीकपुयूका कथिनामन्दवेदना । सुतातासेव करुजः पविश्रवा एगन्दनः ॥
वासु । यंति अति हाव । छाक । स्याक रुटि । ३ निगायू । धा । एगनजायनपू । अति कृ हासं वव ॥ ॥ पवि
प्रवी एगन्दनया लङ्का ॥ ॥ वरुवर्नूजा प्रवापितिका । गो । सुनापमा । संवूका वरुवर्नू च दाष डयज
नामगः ॥ ॥ तलगा ३ निगावर्नू नस्या कतव । नाना ३ निनहि हाव । मी सिधं चाड ककु । सुमखू निगा

२३५

॥ प्रयः पिष्टतिलैश्च पुनश्च भूके प्रसूनीतलं । हृगन्द्रेण लुपायनकं ववद

भावति ॥

लायके ॥

॥ हा मल अलमाया हा ॐ ह्रीं श्रीं ॥ थ स्वतासा इ इ स नि स्थं पा य ह ग न्द व स ॥ त व व द न ॥
॥ वि उ का क्कां ट व त्या थ मूल य स य मा न की ॥ सू क्ष य्वा लां ग ली व रु य ता व सू व सिं ॥
का ॥ या ति म्म ति व सृं द य ते ल क्षी ना वि या व य त् ॥ उ त द्वि ष्य न्द न ना म ते लं धी वि ण व य त् ॥ ॥ अ ध नं ना प
नं ये व सू व र्ण क न दं त थ ॥

॥ वि ष्य न्द न ते ल ॥ ॥ ह गं द व या ॥

॥ क व वी व नि म्मे द कि लां ग ली

ल व द म मि तिः मा उ लूं ग क्क व स क्केः प व ले लं ह ग न्द व ॥

॥ क ल वी ना य ते ल ह ग न्द व या ॥

नि म्म क्क ते ल सि न्धू त्क य्वा न्द व स क्केः सि द्ध म ल्प ज न ते लं ह ग न्द व ह नं य नं ॥

॥ नि म्म य ते ल ॥

पू ना क्क द ह न द की व स क्के क ल वी व कं ॥ लां ग ली ल व नं सि द्धं ह ग न्द व द नं य नं ॥

॥ पू ना य ते ल ॥

न सि म्मि सु इ स्थं थू गु न लि या खाल म न कं का य थ खा व नी स् ॥ नं खं कू या व ॥ थू थूं य ने ॥ नं ख नो व ज व

मि स १

२३१

धरवा लतीव त्रिकतवषुसं ह्यस्यं यं निमहास्यं वा ड्यावः कृष्टः हगन्दनः धनेनागः ॥ वातमूत्रपूत्र
 प्रानिजिमयः शुक्रमववः हगन्दनः प्रवक्तु नागयक्तिगमागुलं ॥ ॥ रुसः वाः खिः डिमिः बीजः धने
 हगन्दनः प्रायसः ॥ हगन्दनः ध्यावनः पिहावनः डावः ॥ धनः प्रागीसियू ॥ ॥ वृत्तिनिदानाकृषविजुभरग
 न्दनः निदानः विकित्साधिकावः ॥ ॥ अथ उपदंगलिंगनागविकित्सा ॥ ॥ यथा आदिववनमन्त्रे
 ॥ ॥ गुरुकृषवापितः ॥ अगम्यानावीसंगम्यानस्यमधुदियावुलं ॥ ॥ कृत्वा निरुक्तु वा अनिसूर्या रू द्या
 दपि ॥ अयूगं जन्मसूक्तं निलसूर्यि मधुनिव ॥ ॥ गवः प्राशनां कर्मनः शवगुवः अनया तत्त्वज्ञानः
 डावः नयावः कृजातकला गदयकावः ॥ लिंगनागः शनः ॥ लायकानं लायके मरुया वः अग्निः वेदनाः शनः ॥ ॥
 ध्यायामि निजिदानः अद्भुति विस्मै हामलः प्युतसावनः कस्ति इह स्यै हामयाय धनेन कर्म विपाकः मन्त्रि

शयीव ॥ ॥ हस्मा लिप्या गानुख दक्ष्या गा दक्षवना दक्षपसवना द्वा । यानि प्रदाषा चरव कि नि
 म्नां । पंचापदं सौम्यं विविधं पचानिः ॥ ॥ लाहा गन दायव । यल का लयाना स । लु सिन घात्र ला क ।
 स । वान गाना स । लं खन मसिला स । नृति मे धूत या ग स । यानिया दौषन । थ गाना उपदं न क्षय । नाना जू
 पचावन जायन पू ॥ ॥ सता दह दह नलोः सकृत्स्रेः स्फुटे र्ववस्तु यपना पदनां ॥ ॥ स्याथं
 म्रया थं स्याक । मंगु हा कृ कृ टिरय लग म् संक कृ वयीव । थ वातन शव उपदं न क्षय ॥ ॥ वात उपदं
 न ॥ ॥ पीते र्वदू के दयुगेः सदाहेः पिलुन नैकेः पिसिगा वलासेः ॥ ॥ कासु स्पं क्रि वव दग रक्ष
 व । तव मानं क्रि वव ॥ ॥ थ पिलु उपदं न क्षय ॥ ॥ थ पिलु या लु कन स । स्याथं वा उपदं न क्षय
 लना सन क उपदं न क्षय ॥ ॥ न क उपदं न ॥ ॥ सकृत्स्रेः लम थयुगे र्वहृदिः उक्ते र्वनः आव

२३८

[illegible]

लषध्विक्कनषूनसमस्तुदामावकजिवाथविक्कनसिद्धरुनशवदकउपदंगधायलिंगनागदकुंमा
 कधेकमृनिजनपनिमनज्राह्लादयका॥ ॥ विगीर्णमासुजिमिहिः पुजग्धंमूलाविलाषयनिवर्ज
 यश्च॥ ॥ लाप्याताश्चवगुः पुदायावः पुनलादकंनयीवः कास्यजकलनकः लिंगमदनशवधध्वना
 गीतावतमाव॥ ॥ संजानमपिदनुजागिमूरजियात्रनूयाविषयपुनकः॥ कालेनः ॥ ॥ जिमिदा
 हपाकेः पुगीर्णलिस्त्रामयनसुगन॥ ॥ ककुजाजायवपुमुनेच्छताप्रदानंमयाकः मूर्धगववि
 षयसुः पुलागलपावशुवः कालेनः लिथंमनिवः इहावनिवः हियूरुयूतवमानंक्रिवयूः लिंगयाला
 प्याताश्चकटिनवयीवः ॥ ॥ थायायनमनूयसियू॥ ॥ जंकुलेनिवसंजानेनूपर्यपनिमंस्त्रितेः कुमनजा
 यतवर्हिस्त्रामुवूउलिखायमा॥ ॥ ॥ थलिंगवर्हिनागनकथालजावथं कुमथंजासंवयीवः॥

२३२

खाया कर्कि जाव थां उ ह्य हि रु स्यं वा निव ॥ ॥ वृक्षान्न वृक्षा येव इच्छि किं सा विधा वजा ॥ ॥
क्षा साया अनेन सन्धि सः सकल सन्धि सः वन सां उ थं ख वः सा क भृतिः थम तु लायक मजिवः विदा
वन जाय न पृ सिय ॥ ॥ लिंग वार्हि विं हिं वि निरव्या ता लिंग मर्गः छु ति वा पत्र ॥ ॥ ध्याना मः
लिंग वार्हि ख वः लिंग मर्ग ध्यं द व ॥ ॥ गे त्रिकां जन मं जि छा म धू काली लय घकेः सु व न्द ना त्य नः
स्त्रिंशः पेरि क मू प ल पथ न ॥ ॥ गे त्रिका दि ॥ ॥ च वा दा नू ह नि डा याः सं ख ना तिः न सां ज
नः ॥ लो का ण म य नि र्ग्य से ते ल को ड द्य तं पथः ॥ ॥ गतिः सु वि ष्टे सु ल्यां ग उ प दं ग पु ल पथ न ॥
वृक्ष गन सा म्य नि र्ग्य प थू दा ह न व व ॥ ॥ च वा दि ॥ ॥ वि रु ला याः क था य न टं ग ना ज
न स न वा ॥ वृक्ष पु जा न व का र्ये उ प दं ग पु ल न य न ॥ ॥ वि रु ला दि ॥ ॥ दा र्वा सू न स

३ लंख ५६९

यश्चाह गृहधूमनिर्लभः गोलमल्यं न पक्वं भुञ्जानि वा वलं ॥ ॥ दावतेन ॥ ॥
पंथयलकर्ष ९ नव ५ कर्ष ९ जिगक्षाले ९ खयल ९ हन ५ निलाधु नि ९ मगया सि ९ कर्ष ९ न ९ हा मल
विकन पुर्व ५ मल समग मरुर्धु खस्यं वं स्यं हासं मिसा हाव ना सयाक ॥ ॥ मिसा हाया ॥ ॥

५ मसखा दिं गुलि जूवा निपूटि विखयल कसुनि थत समग म। काउ मल व्याव कृता या गुदे ले
तय थत दू म न हाय ॥ ॥ मिसा हावया ॥ ॥ मदन रुल विपी जिहा कर्ष ९ दिं गुनि

थत धूप कूचक नाक पुस्यं ॥ ॥ मिसा हावया ॥ ॥ गन्धक पाधन हन ५ थत चूर्धु नाव
तीन हाया व जंवल पुमान गुदि चिनाव न के दिन ९ मिसा हाव नाग ॥ ॥ मिसा हावया ॥ ॥

निर्वासि मदन रुल या यू कं व हन दि। हाक हन डि थत लंख सुनि नाव पाय ॥ ॥ कय ना गल
हि गव ५

मिसा हाया

२४०

प्रकाशपत्रे शिवायुषि नक्षत्रे
विक्रमे

या॥ ^१यु या ला त्या श्या ना व. स्पधू चि न वा ना व. वि क न सु का ला व. का प ल सु या न वि स्यं चा क न
उने॥ ॥ रु सा नू क या. आ पा म नू क या॥ ॥ मा क लू वा या कू ल. वि ख य ल. हि म्ब व. रु स्म या ठं
हो सं॥ ॥ मि सो हा व या॥ ॥ ॐ ति नि दा ना क य नि कु म उ प दं न नि दा न वि कि त्सा धि का नः॥ ॥
अथ नू क दा ष नि दा न वि कि त्सा॥ ॥ व्या धं स मा न हा व त्वा क्त र्म या क स मा न ता. उ प दं न व द ता पि डि
यां रु यी चि कि त्स कः॥ ॥ अ उ मा छ रु सा वृ डिं या धि ग क्क नि मूर धी. व्या ध य क्त स जा य न द ग वा यो.
व नू क जा॥ ॥ पु या ग म स य के लिं ग त व ध न के ध कं या स्यं स न गु. मूर् ष या व्या धि जा य न य. जि म या ना नू क
दा ष १२ लिं ग वृ डि पु या ग या ना नू क ति स्यं चो उ गु. अथ नू क दा ष क्ष य. नू क क्ष य ज ल म डू क॥ ॥ ग्ने
न स र्ष य सं ह्ना ना नू क नि रु न रुं उ काः पि डि का. लू वा ना त्यां रुं या स र्ष य का उ सा॥ ॥ ७ का. ग ३ थ

वाङ्मयकनकायाहुतुसपाकमश्वककुल्लवावातवानजायनयू॥ ॥ ध्यानामसुर्षपिकां
कदापसिय॥ ॥ कथिनाविषमहानेर्वीयूनाष्टीलिकारुवेत्॥ न्नेकेयत्प्रतिगंयस्यग्रन्थितनामसत्क
लात्॥ ॥ ककककुवववागनश्व॥ धनिष्टीलिकाधाय॥ गूकयापलथडाथं डनगुमंगु॥ धग्रन्थित
धाय॥ गूकधजल॥ ॥ कूकीकानकपिरुत्तजन्मवास्तिसिहागुला॥ जलकजलजीविशायथधोका
विवर्तनः॥ ॥ द्विविहवनजायनयूगूककुजन्मसियाम्थं डनगुकूहिकाधाय॥ ॥ कूहिकाककु
यालकल॥ ॥ जलध्यानाम॥ जलजीनामधायगुउथं डनगुलाकालकलसुद्धने॥ ॥ सुदितंपीडितंय
सुसुवृद्धवातकोपतः॥ यातिल्याहलसंसूटसंसूटयिनिकारुवेत्॥ ॥ गूकवहवपाव॥ लानमर्दलपाव॥
लिंगयाथंवातकोपनययू॥ ॥ धसुदितधाय॥ ॥ लानिगुदिविहजवककुजायनययू॥ धया

नामसंस्मृतकच्छुधाय॥

॥ दीर्घावतुष्टपितिकादीर्यकेसधतस्तुसा॥ (गम) (धमध) कस्तुष्टावेदना

नामहर्षकृत्॥

॥ तादवद्यानतादवकच्छुधाय॥ (गम) (धमध) कस्तुष्टावेदना

स्याकतवविष्मिकंकदिववकाक॥

॥ (ध) अत्रमन्त्रकच्छुधाय॥

॥ पितिकावर्तपितिकापिरु

(गम) लितसंरवा॥ यमकर्त्तिकसंस्तानाह्यापूष्करकेतिका॥

॥ वादूलरवककच्छुधाय॥ पिरुवहि

वनजायवपुःपलयासूनिथंजायवपुसिय॥

॥ (ध) पूष्करकेतिकाच्छुधाय॥

॥ मंगमाषाय

मात्रकनकपिरुहवावय॥ व्याधित्रधातुमानामनूकजीनिमिरुजा॥

॥ मंगमास॥ (गम) उ

थंजाउ॥ उनिष्ठाउ॥ हिव॥ पिरुवनजायवपु॥

॥ (ध) व्याधित्रधातुमधाय॥

॥ नूकदाषनि॥

पिरुधाय॥

॥ (ध) लायकजलपु॥

॥ छिडेवनमूर्खंतिनंविजयस्यसमकतः॥ वात॥ (गम) ॥

नित जं व्याधिः सुहृयः नतयानिकः ॥ ॥ वा न र ग उ स क हिनं ज्या ह ल द ड गु इ व न वा न व हिव
 न जाय न प व्याधि ॥ ॥ ध्याना म नतयानिक कृ ध क सु ह न ॥ ॥ वा न पिरु कृता हृयः त्यक्ता
 का क न दा ह वा न ॥ ॥ ह गु पा क श व गु का न धा व हिय वा न पिरु न जाय न प सु य ॥ ॥ ध्याना म
 त्यक्ता क क कृ धा य ॥ ॥ कृ श्रेः ह्नाटेः स न का तिः पितिका ति नि घी डि तं य स्या व सि नू ज (अ ग्न ह
 यं त छा ति ता र्व दं ॥ ॥ हा क रू टि र द या व छा उ क कृ न पी उ न व ग्व कृ या व सु ध न त व मा न न स्या क
 ॥ ॥ ध्याना ति ता र्व द क कृ धा य ॥ ॥ मा न स दा ध न जा नी या द र्व दं मा न स सं र वं ॥ ॥ गृ क या दा ष
 न ला स र द न पा व श व गु ॥ ॥ ध्याना सार्व द ध क सु ह न ॥ ॥ नी र्थि न य स्य मा न स ति य स्य स्व व द
 ना वि शा रुं मा न स प क कृ सु र्व दा ष कृ तं हि ष क ॥ ॥ ग्व कृ या ला ष्या ता र हा स व व स क हिनं स्या क

२४२

त्रिदासनजायवस्यसिय॥ ॥ अथ मानसपाकककुक्षय॥ ॥ विडधिसुत्रिपातनय (अथ कृमिति
निर्दि (नत् ॥ कृष्णानि विजायथवा गुणानि सुविधानि च ॥ ॥ सुत्रिपातशब्दरूदिया लुङ्ग ए थं डनग
थयानामविडधिककुक्षय॥ ॥ हाकृजातिना ना नि विषनपीडनयू॥ ॥ पीडितानि पव ।
क्या गुमधुनि वव (न विनः की लो कु । सुत्रिपातसमूहा सुतां विद्याहिल कालकान् ॥ ॥ पीडन य
वडाव पाकशयी व न नानं लिंगं च नायं । कालोक्रमेन हाकृयू । लानायू । प्यतारमिनकं ॥ सुत्रिपातनजा
यवस्यसिय॥ ॥ अथयानामतिलकालकसुत्रिपातककुक्षय॥ ॥ इर्वी सुडस्य व्या का गुरुधू
मनिभयुगे ते लमहं जनं प कं मेधुना ग विनालयत् ॥ ॥ गुं दुयाति ॥ ॥ कृमी कयति या स रुव
त्रि मित्रकिं सि थन दूर् वि कन प्सं हा सं स म सु लिंग नाग नाग या क ॥ ॥ न उ मा न् सार्व दय स

कृष्णजायनपू. मा म स्या ना पापनपू. उलीक कृष्णजायनपू. गुन्या ला सा सुवा ज पापन. चर्म कृष्णजाय
 नपय॥ ॥ नक्षत्रो नन विउ कां सिध्दा यौ व मुद्र ननः वि पादि का ल के सा वि यानं यन दूतं पूरा॥ ॥
 नक्षत्र व्यापापन. सिध्द कृष्णजायनपू. इति यात्र व्यापापन. वि पादि का कृष्णजायनपू॥ ॥ दृह दृह
 वे सा विप न संयन गम पितं। वि स्ना ट क ग दी म र्था ल व द्वा क्क व ता पदः॥ ॥ भव या धन गम पुल पंत।
 या पापन. त्व क कृष्णजायनपू॥ वा क्क व या त दः ख वि या व. वि स्ना ट कृष्णजायनपू॥ ॥ तेल वी व सु।
 पा मा र्क्ष मि उ सु चर्म द ला दि ता। का क न कि ना ज या नि वि उ न ज न त सु न॥ ॥ वि क न व्या पापन. पा
 म कृष्णजायनपू. मि उ डा रु पापन. चर्म द ल कृष्णजायनपू॥ ॥ म ज डा रु पापन. का क न कि कृष्णजायन
 पू. उ हा व्यापापन. वि उ कृष्णजायनपू॥ ॥ अन र्थ व त्र ज मू ल्ये गम ग जा व म नू व्य जः अन्य थ व ह

येन मूलं मुखं कृच्छीरविष्यति । तस्या रुह्यमाष्टत्य रुह्य संज्ञा वद सदा ॥ ॥ अथानं न त्रया मूलाया
 संसाया मूलं किं निगुमनूष्या मूलं या सं मूलं अन्यथा श्यावः खालसकृष्टजायवयवं ॥ ॥ उवम
 द्वादशमदृष्टकृष्टाका मयानुप ॥ ॥ रुनाजन्तु अष्टादशकृष्टजिनका ना ॥ ॥ विद्यान्तु वृधर्षय
 तां पायकर्मवर्कवता ॥ ॥ उक्तं गुन्यात दयायापन ॥ ॥ वातादयन्तु या इष्टान्त्वग्रक्रमान्
 मन्त्रव ॥ ॥ वातादिनम्यता उं हि सः ला सः लंख सः लदवयं वयीव । कोपवयं वयीव । सकल कृष्ट उथे
 वात १ पितृ २ प्लवः वात पितृ ४ वात प्लवः ५ पितृ ६ प्लवः ७ सन्निपात ८ १५ क्रसतान जायवय ॥ ॥
 अतः कृष्टानि जायने सकवेकादलेवव ॥ ॥ १५ कृष्टया संख्या जायवयय । क्रसताव जिमच्छताव ॥
 कृष्टानि सुफक्षदोषैः पृथक्पूर्वे समागतेः ॥ ॥ क्रसतादोषन कृष्टवयीव । तिन २ द्दयां सन्निपात

यां॥ ॥ सर्वव्यपि विदोषव्यपदासाधिकं हितं । अतिस्त्रिंशत् खनस्य णिष्ठस्य दास्यदविवर्णनाः॥ ॥
 थति क्लान्तसां विदोषसु न जाहयमइ॥ ॥ सायनायुः अथवा छावयुः वलति हावंइ च लति म हावंइ ॥
 विवर्णइ व॥ ॥ दाहकश्च स्ववगायः स्नादः कोधान्ननिः प्रमः । वृत्तानामधिकं मूलं नीष्टात्य किञ्चिन्न
 क्तिनिः॥ ॥ हिंयुः वासुः पियुः स्याकः हानं शाकं थं दाहानं जावः । जम उरवव । घालं लं अति स्याक न नानं
 जायवयुः गानं कुचा उ॥ ॥ नृजानामपि नृकत्वं निमित्तं स्य पिकापनं । लामहर्षः सृजः बिलं कुल्लज
 लमग्रजः॥ ॥ इत्यहिस अति नृकशयीव । विकृतिहेतुन कापवयीव॥ विचिक्रं कदिवयीव । हिहायीव
 गीकः कुष्ठवल्लसः काथानं नवयीव॥ ॥ कृकान्द्रा कपाला रंय ऊ ऊं पवृषं तनू । कपालं गोदवदूलं तनू
 षं विषमस्मृतं॥ ॥ हाकः काडः शायुः विकनमलाकः केंपु कानू । स्याकतवः विचांदकः थकपालकृष्टः

अथ ॥ १ ॥ नृप्याह नागक उरिः पत्रीगंशामपिंजले । उड्म्वनरुलाहसंकुष्ठमोदस्तनंवदन् ॥ ॥ सा
 क हियू लागवयू सुकलिनंवासू विमिलिससियू इम्वनसिथं ॥ ॥ १ ॥ इम्वनरुष्ठभाय ॥ २ ॥ स्विनंनकं
 स्विनंस्त्वानंस्त्रिंमूकन्नमउले । कृकुमन्यान्यसगकं कृष्टमउलमूयते ॥ ॥ नायू का उ स्विनंस्त्वान
 विकनलाक दहानजाव । वाक २ लाक लायक धाकू थथ मित्रवयंववकृष्ट ॥ ॥ मउलकृष्टभाय ॥ ॥
 ॥ ३ ॥ कर्कसंनकपर्यकः नृकः प्थवंसवदनां । यदृकजिज्ञासंस्त्वानमृकजिज्ञातइयते ॥ ॥ कावू सि
 कृवाकलेका उ इवनहाकू स्याकवकृयां हावूयामेथं नविवीक ॥ ॥ ४ ॥ जकजिज्ञाभाय ॥ ॥ ४ ॥
 सत्त्वतंनकपर्यकंपूउलीकदलापमं । सात्सधंव सुनागंवपूउलीकंनइयते ॥ ॥ दधूसनायू सिक्का
 कनंयसपनिथं इनपु रतिदहानजाव नागवयू ॥ ॥ ५ ॥ पूउलीककृष्टभाय ॥ ॥ ५ ॥ स्विनंता

२४५

सुतनूवयं न जायते विमं वति। उय (अनसिर्गसिधमलां वृक्षसूमायमं॥ ॥ मायू छाउ सा लू
हिहाव वाङ्मन। अवसिवान थं डनगु। उदव॥ थयानाम सिध्द कृष्णाय॥ ५ ॥ यत्काकनक्रिका व
सूस्पाकंती वृवदनं। त्रिदासलिंगत लूय्यकोकननेव सिध्दति॥ ॥ गन्धक्यागुं जया उनि थं डनगु
हादुदधीस सीसका उदथूका उदव क्रिसं स्याक त्रिदासया लज्ज। वन्द्या लज्ज सिय॥ ॥
थकाकनक्रिकाय॥ ॥ डयके मजिव॥ १ ॥ अस्वदनं महावमुयस्मत्स्या सुकलायमं। तदेव कृ
ष्टवर्मास्त्रिं वरुनं हस्तिवर्मावत॥ ॥ वनति महाव। डयास्त्रिं थं तवरयाने खिव॥ ॥ थवमा
स्त्रिं कृष्णाय॥ ॥ थकृष्णैति वललाशव क्रिसिया कृगु दि थं डनगु॥ ॥ थवर्मा कृष्णाय॥
॥ ॥ ८ ॥ अमं किने खल स्यनं वरुषा किटि संसृतं। वेपादिकं पाणिपाद स्रुतं तीवृवदनं॥ ॥

उनिहादुःखानसुखं तथा च सायकावू। विकनमलाक॥ ॥ थकिटिमक्षय॥ २ ॥ वेपादिकाक्षय
 लाहुरुतितागाकाकगु। नवमाननस्याक॥ ॥ थवेपादिकाक्षय॥ ॥ १० ॥ ककुमहिःसु।
 नागिचगलेलवसुकंविग॥ ॥ वासूनागनयू। काउमउलयाउंरसहावगु॥ ६५॥ थयदललारवान
 सिनावकक्षय॥ ॥ ११ ॥ नकंसुलंककुचत्वमासुहाठयदलं। नक्षर्मदलमारवानेम।
 सगर्नहेसेमयान॥ ॥ काउसाकवासू। नउभाकसुउयतिरवाकू। चर्मदवयानामथियमजिव॥
 थवर्मदलक्षय॥ ॥ १२ ॥ नक्षवजुचपितिकाप्रवरयःपामरुकाककुमलसुदाहा॥ ॥
 विकटिककुयनिहावपामाक्षयनवमानंवासूहियूदललारवानवयकक्षय॥ ॥ थपामाक
 क्षय॥ ॥ १३ ॥ सेवसुगटेमुवुदाहेवृषणा। रुयाःपामाःककुवृग्रस्तित्व॥ ॥ थपामासु

२४६

रुदिनतठावः अतिहियसिया। कालतंतदवयूसियः॥ ॥ थयानामचयककुक्षयः॥ ॥ १४ ॥
रुटास्यावान्महासाविस्त्रातास्यः ननुत्यवः॥ ॥ रुदिहाककाउः सुउलासाल् थरुदिविस्त्रा
टक्षयः॥ ॥ विस्त्राटकुक्षयः॥ १५ ॥ वक्रं भवसदाहाहिः सगीनूः स्याद्वद्वुवः॥ ॥ काउः हाक
हियः घानतलहिनैववः॥ ॥ थसगीनूक्षयः॥ ॥ १६ ॥ सकपुपितिकाभवावद्वग्भवाविवचि
का॥ ॥ ककुवासुः यंतिहावः ककुहाकः किहावः॥ ॥ थयानामविवचिकाकुक्षयः॥ ॥ १७ ॥
थतक्रसतावः जिमक्रतावसंख्याजिमयातकुक्षः॥ १८ ॥ ॥ खवं भवान्मनूजं वातकुक्षं सुवेदनां॥ ॥
पिलाभुकुपितंदाहनागभवावितंमनं॥ ॥ कावू हाकः ह२क्षवः थकनलाकः स्याकथवातनले
दवयूकुक्षः॥ ॥ वातकुक्षयः॥ ॥ पिलयाकेनकापवयूयाः हियः नागनयूः यंतिहावः॥ ॥

थपिलकूष्ठधाय ॥ ॥ करुं दानं सिग्धं कलुः सेतुवणेन वं ॥ द्विलिंगं द्वन्द्वं कूष्ठं त्रिलिंगं सान्नि
 पातिकं ॥ ॥ एषायाकेन दग्नरक्षवत्तवमानवेकनलाक वासुखाउ ज्वातु ॥ ॥ एषायाकूष्ठ
 धाय ॥ ॥ निगामिललपंववतु ॥ ॥ द्वन्द्वकूष्ठधाय ॥ ॥ स्वगामिललपंववतु ॥ ॥ संनिपातकू
 ष्ठधाय ॥ ॥ थनसामान्यल कलधाय ॥ ॥ त्यक्स्त्ववेवर्धुमिंगवूकूष्ठनूजं जायते ॥ ॥ मयूस
 वांगुकूष्ठया विवर्धुश्वक्नराय ॥ ॥ त्यक्सायाः नामहर्षस्त्वदस्यानियुवर्धनं ॥ कलुविसृत्यक (स्त्व
 कूष्ठ (अग्निसंश्रितः ॥ ॥ विम्व विमिकं केलिवव अग्निलतिहाव वासु हिहाकू थहीसला उ
 गुकूष्ठ ॥ ॥ रकूकूष्ठधाय ॥ ॥ वेवर्धवकु (अथ चकार्कसंयितिकागमः तादः स्नाटः स्थि न
 त्येवकूष्ठमान्ससमाश्रिता ॥ ॥ निमहिंगु र्वालमठ कार्ककूष्ठ स्याक नुभाव तव (अथ उ लान जाय

287

नमो कृष्ण ॥ ॥ मा नमो कृष्णाय नमः ॥ ॥ को व्यगति कथा ज्ञानां संतदः कृतवर्षां । मिदस्त्वानग ।
गालिगं संयुक्तानि तलकं भू ॥ ॥ लाकुडाव रुयमरु कृष्णक व्यावर्तपी उवयू थदा के सुवडगुया
लु कृ ॥ ॥ मंदकृष्णाय ॥ ॥ नाभतं गमः किना गमः कृतं पू जिमि संतवः । स्वनायद्यान संतवः द
ष्टिमका समाप्ति ॥ ॥ ज्ञा स पवीमक जव मिखा का उ व्याल सकुत जायनयू स्वतथमथु नथ
थत रुतना स काग स सल सजायन पू कृष्ण सिय ॥ ॥ दम्य र्णा कृष्ण वा कृ ल्या दूष्ण विर गु कृयाः ।
यद पत्तं नया कृतिं ह्यं न दपि कृष्ण वत् ॥ ॥ श्रीया पू नूषया वा कृ लेन कृष्ण नाय रुतसा इष्ट रुयू
ही स वीज सुवंगुया मवागदग सां थ कृष्ण नाय रुयी व सिय ॥ ॥ थ गु कृ सुवंगु कृष्ण सिय ॥ ॥ सा
धं स्वे कृ नक मा सा स्वे वाग र्णा धाधिकं वयत् । मिद सिद्धं कृ जया यं वरुं मका सि संवतं ॥ ॥ मवता

[illegible]

याजयति प्रसिद्धा सर्वेषु कृष्णेषु (एषां प्रयासं सिद्धं वया मा विनिहन्ति मयः) ॥ तिरुला निम्ब कैथाला
ति कट्टक खयल जाले त क नाय दिरुल मनू वाहाय हाक विडि सि खाल हवदि मीकू सि ग्रीख पुदवे
दानु वल कंधगि वि ॐ नुय कट्टक कसू बाले **थत को थ दासं लेन कं सम सुकृष्ण जय न पू सिध कृष्ण पा**
मा कृष्ण थति मा वरू ॥ **॥ क निष्ठ क वाय ॥** ॥ मूल गति क कानां वती जं व दय म द को त क पि वं व ले
प न द डू कृ वं वि ना न नं ॥ ॥ गव व प ल ख हा ॐ त्रियू जल धि स्थान पू थत धा व ती स नि स्यं ले प न या स्यं नि
ना व क कृ ना न ॥ ॥ ज व धि स्थान पू ॐ न पू पा धा व कं कृ म थत नि स्यं ले प न या स्यं सि ध कृष्ण ना न ॥ ॥ का
न म द क वी जा नि मूल कानां त (थे व व) ग न्ध पा धा न मि (प्र न) सि ध नां व न मो ष थं ॥ ॥ **॥ सि ना व क कृ या ॥** ॥
ध र्त्त न वी ज क र्त्ते न मान कं जा न वा न ना क इ मे लं वि प कं व द डू कृ न्ना धि पा दि का ॥ ॥ **॥ इ ध न पू चू र्त्त या ठं मा**

रुक्मिणी सुसमिपुः धातवूर्णपलकाविकनवस्यंकास्यं ॥ ॥ दद्रुविद्यादिकाकृष्णज्वादिननागयाक ॥ ॥
 इलाइलितवश्याकया ॥ ॥ सिन्दूरसंभवसिक्कं त्रुहीजीवं समन्वितं । उतरेलं विपकुरु ककु सर्वव्यापा
 हति ॥ ॥ सिधनः सधुविः सितखावइइः धातविकनवस्यंकास्यं समस्तककुभाक ॥ ॥ सिन्दूनादि
 तेलसर्वककुया ॥ ॥ नकमालहविडदेअर्कतगलभवव । कनवीनववाकृष्णमास्त्राटावकचन्दनं ॥ मा
 नतीसफयपूवः मंजिष्ठासिन्धुवावला । उषामर्चयलोलागं विषस्या विपुसकयं । चतुर्गुणगवाम्भुजं तेलपु
 स्तं विद्यावयन् । विप्रविस्त्राटकिटिमंकीटलूगाविवर्जिकाः ककु ककुविकानाशयवृक्षविषहविकाः विष
 तेलमिदं नाम्ना सर्ववृक्षविषमधनं । कलंजयूः हनदिः पीकूसिः अर्कपातः तगनाजः कनहालः वेहाः कृदः वृषल
 का । नकचन्दनः जीस्वांवाः कृतिवनः मनूः वास्यं धानिः धातवारुलच्छिषावः ॥ समल १ धातयाप्यदेसावा ॥

वि कनरुं १ घूने चि उ कृष्णायुष्या क दूदि किम शुदाव कृष्णाय क कृष्णाय विकार वासुक कृ
उसनागवयू दहं माक। **थविषतेलन समसुष्याव (मधनयाक) ॥ विषतेल ॥ ॥ रुत्ताटको**
नां कृ उवंकादयित्वा विवृजतः। लर्क नाकृ उवंवा पित दधं घृत संयुतं। लनेर्म हग्निना सिद्धं तत धूमं
क्रियेत्पूनः। तिरुलाई पलेके कं त्रिकटु त्रिगुणमिव। वागुजी अस्मत्तदं वली तहत समाक्रियेत्। हन्या द
ष्टा दग्ध कृष्णं दधं यथैव वलं ॥ **॥ वाला उकृद १ तिन क (थसं साधन कृद १ धल वाकल छि १**
मन्द अग्नि न सो ला रुत ना यकं दायक तिरुला वा रु ल छि धन धल रवा उल उव तय। थ धल न सं थ
या वल न अष्टा दग कृष्ण ना ना या क ॥ ॥ स्वल्प निकृ त ज्ञात क ॥ ॥ वि उ कं तिरुला वा षगु जू वी
कटु ना हि ली। प टाल निम्ब रु निम्ब वि जला रु वग न्ध कं ॥ सिद्धार्थ क वि उं ग नि उ ह्य कं वा पिक वि कं।
त्रिकटु त्रिगुणमिव कवि अस्मत्तदं

वन्दुलखा हृदय निववा कृष्ण निम्नयुगेः ॥ कलिं गतिविषायाथा सा लिवा द्वयसंयुतं । उतत्कर्वद्वयं
 मूर्कं गुणयुक्तं नृत्तसमं ॥ अद्यादगविषं कृष्णं मूर्कं वैवमहा कृत्यं । सर्वव्याधि विनिर्मुक्तं का न्दियुक्तं विना
 मृतं ॥ **॥ विरक्तहा । त्रिरुला । त्रिकटु । गुणगु । कटुक । धालउति । निम्ब । खाल । नलहा । आदग । गन्धक ।**
ठठाका । विनिमि । धतकर्व । तिलव । वसूवदकि । विहा । कृष्ट । हलउ । मीकसि । ॐ न्यय । अतिवस । वा हाय । कु
लोसि । इ इ कालसि । धतकर्व २ गुर्गु नू २ २ धतवू डं न स्ये । अद्यादग कृष्णनागयाक ॥ ॥ मूर्ककृत्यनेमा
क । समस्तवायडडा ॥ ॥ विप्रकादिगुर्गु नू ॥ ॥ हलाटकं वा कृष्टिकं वक्रिनागत्रयिष्यसी । क
लवीना कर्षामूलं विषं वा पिसमाहवत् ॥ वस्तुमूयवा पिष्टु निम्नपा क्षिप्र विनागने ॥ ॥ वा लाउ । व
कवि । विप्रक । गुं धि । पिपी । कर्षुवी नहा । अर्कहा । उम । धतसमराग । वालसुवा सु नि स्यं लपनया स्यं वि

उद्धृष्टनात्। त्वयूवनव्याकृच्छाउनव्याकृच्छानात् ॥ ॥ किमिदं द्याहमन्यानि संयुतं यद्विशेषजं। प्रलि
त्रं च स्फुटं गं च न कर्त्तव्यं हतस्त्वं ॥ पंचकर्मगुणगीतं कृच्छं हन्तीहमानवं ॥ ॥ कीदावगुहियुः अग्निम
न्दश्वः धत्तनत इगुः प्यात्र इवने धां क दवगुः यंति। किं हावगुः मिखा छाउः स्वनहीन इवः धत्त इव कृच्छ
शगीसियुः धात्रिदाषन जायवपू ॥ ॥ धत्तकृच्छया उपदवल्न कृच्छ ॥ ॥ वातनकृच्छकापालेः पिरुन इ
स्त्वं कृच्छान् मगुलाखं विवर्चिकाया काखं वातपिरुजं। वर्मकृच्छं किटिमं सिध्मा लस विपादिका ॥ वात
पिरुवाहवाः। धात्रिदाषन दद्रुसता नृषी। पूउलीकं सविस्किठं पामावर्मदलकथा। सर्वेऽस्याकाकलय
वं त्रिदाषदद्रुकाकलाः ॥ पूउलीकं सर्पाजिह्वं महाकृच्छानि सुफुल ॥ ॥ वातन जायलपू कपालकृच्छ
पिरुन जायवपू उद्मनकृच्छः। धात्रिदाषन जायवपू। मगुलकृच्छः विवर्चिका। वातपिरुन जायवपू अर्धजिह्वा
कृ

२५९

धनकलासंस्तिष्ठति कृता॥ ॥ गुरुसु इला इलि सु सु सु सी सु धन धय सु जाय न प्र वि उ क
 सु ता द व न त्री त सु धन ना न त मा न ॥ दिन कं ज सु ना य य व लो क न ॥ ॥ धन वि उ क सु य ॥ ॥
 प्र संग म ग सु सं स्य न्निः श्रु ता स रु हा ज ना त् ॥ स रु स्यु स ना श्रु पि व सु मा ल्या नू ल प ना त् ॥ कृ
 कृ न श्रु त्म थ ध न श्रु ति स्य न्द्र व ॥ ओ प सं लि क ना ग न्द्र सु क्रा म कि न ना न्न वं ॥ ॥ ना प यो सु
 सुं र कं य कं र सु सा न सा ना प ला कं चो ल ॥ उ ध ल सु न स्यं न ल उ लि व सु ना य उ ल आ या व सु न
 तिल व व ना प का ल न वू ल कृ ष्ण ना य कृ न ॥ म थ मि ख्वा स्या क ना य धन ना य न पू न य व कृ यं
 य व म नू ष्य नं म नू ष्य या के ॥ ॥ ख दि व वि रु ला नि म्ब प टा ला न ग व त्सु को जा य मा ना व ला ।
 म मा च न्द्र नं सु इ ला न रा । कि ला ट ति कृ क इ का वि उ कं द व दा नू व ॥ सु फ कृ द न ज न्मा व मं जि

[illegible]

या ॥ विद्यादिका कृष्टया ॥ ॥ वक्तवि मंदगन्धक ददवदा नूदकृष्टमना जाहा दसूनताली मं४ काथयल
४ रवाइ ४ तिसि कर्ष ९ साकृद ९ सादकृ ९ संखकृ ९ थतवूजव वूजव गलनात ४ धलकृ ४ कृ ४ सं ४ लने
थविकननति सं ४ सास ४ थ ४ ॥ तिलि २ मिसं ४ हायि सं ४ व ४ वाकरया डंवल हियू वासू तागा का क क कृ ४
व सिनाक कृ ४ थतना ॥ ॥ सामनाजीतेल ॥ ॥ कृष्टया ॥ ॥ गन्धक ॥ ॥ वृष्टमी ॥ कृष्टवक्तवि कं व हन ४
मनव कर्षवीर ४ तिरुला ४ वीकागुं ४ सन्ध ४ ७ स ४ यथकं सं ४ साकृद ९ ॥ गमू ४ कृ ४ द ९ थतवू ४ सं ४ ४
अष्टादल कृष्टना ॥ ॥ विवतेल ॥ ॥ गुग्गुन पावागल वसि सन्ध ४ यथकं कर्ष ९ साकृद ९ ४ मसि
या ॥ वस कांजिक ॥ गमू ४ यथकं कृ ४ द ९ गुण वयक कृ ४ दूयी कृ ४ धाविक कृ ४ हियाविकाने कृ ४ नानाक
कृ ४ ना ॥ ॥ दवदा थग्वदा सीधविकन पंथ धले सिल्लाय हंरपाल खयल थतसमतागविकन

घुं घ्यात्रयां नानाककुयां लिङ् ॥ **॥ मङ्गलं विकं ॥** **॥** शमनाजी रुविड्डे संवर्षान्नम्रधंगद। कलंज
 वीजे उगजगर्भं च त्वो विपावयत् ॥ तेलसुर्वपसंयुक्तं नाजी इव वृक्षपहं। अननं च पुष्पम्यनिकुक्का
 दले वराती। लिकापि सुतायंगमगम्भीरवातलभनितं। कषु निवपुलमनं ककुयामा विनाशनं ॥ ॥
॥ शमनाजी तेल ॥ **॥** मनिवपिपलीक वृक्षार्क जीलसुक्तुसुदवदानरुविड्डे मासिलोहितव
 चनं ॥ विमलालाकलवीरं वरुनिगालमनः निला। गेखदपलेर्तालोः सुविषः लक्ष्मणिकेः कद्रुतेलस्य
 वपुस्तं। गमूषकुचकुर्मुहं। मृहा। उसाहता। उवागने मृद्वग्निनापवेत् ॥ तलेलमधुवर्धुतनिहून
 मवतावयत्। नूननचापलम्यनिकु कामलाखवजायते ॥ बलीवर्द्धकुव। गवातयाव्याधिविपीठितः। वि
 हिर्वह्नि हि वलपथरुवेमावृत्तविक्रमं। यासां वदीपयन्तसं क्रीलं उधमयोवनं। जनासमयमासा यरु

नेमायान्निविडियां। पूर्वस्यापि यस्य दं दीप्यत बह्नि कर्मणि। याजनानां बुजस्तुष्टान्प्रमावाप्रात्यस्तो
पथिः॥ अष्टादशनां कृष्टानां तैलमतद्विधीयते॥ ॥ मन्त्रिनः पिपी कृष्टं अर्कं दृष्टं कस्ति दवदावू
कं विह्वं हावृह्वं जतामासि वक्रवन्दन कावतुसि कर्तुवीव रुविताल मन्त्रिलित पुरताग नृसु ॥ ५
नवूर्ण कयष्टिकं रुं १० मन्त्र रुं ४ ॥ ५ ॥ वातं दासुश्वसां लोहं रुं असुश्वसां मन्दमन्त्रिन पाकयाग ॥ ५
विकन कस्ति यावर्तुश्यकं पियाम दयकं कृते॥ ५ ॥ विकन यागुता लत्री वयावेदना सिनाकचु ल्यकचु
नासूकचु पासाकचु देसर्व कृणु कामल शयीव दाहा ॥ ५ ॥ रुश्वसां पीडन पूगु नाना मन्त्रार्थ वायु वेग शयीव
ल्लिया पुथ मयोदन शयीव। अथ समयस् नक्तिया हित न व्याव कृशयीव। याजन किं शायरुयीव। अष्टाद
श कृष्टानां पाक ॥ ॥ मन्त्रिवायते ल ॥ ॥ मन्त्रैव नन्दनं मान्निविडिगं वजनी दयं। पियंगुपयकं

कृष्णं मंजिष्ठाखदिरं वचा। जातुर्कं रुक्मिणीमिव कलंजविषमवच। कृष्णविष्णुकलाधुं वपुना उंचं संरुनेतु ॥
म्लक्ष्मिष्ठावसर्वा निधा जयहेल मा जयः। अरुं। गन पुयं जीत सर्व कृष्ण विना गनं। पा मा विव र्चि का क पु वै
सूर्यादि हितं मंतं। वकपिरुक्लिता हकि ना ग म व क्लि ता च दू न। सिन्दू ना घ मि दं ते लं म न्वि त्या नि मि तं पे
ना ॥ ॥ सिन्दू न। श्री ख पु। जटा मा सि। वि ठि सि। हा क ह नू कं वि ह नू। प्रिय गु। नृप के न। कू द। म नू। ख य ले।

विहा। जी स्वां ता। अर्क इ इ। तिल वं। निरु। कल ज सि। उ स। म वि त। वि त कं। गु ह्ना उ। छु लि पू। धा न रू र्ण वि क न ख
संवृ स्यं सर्व कृष्ण ना न या क ॥ ॥ सिन्दू ना दि ते ल ॥ ॥ पा क्ष न। ग न्ध कं। नि ला धू ति। म न लिल। जी। मि दि

सि। म न व। सि ध न। च क न। म्ब ल वृ स्यं वृ य ॥ ॥ आ उ वा प र व व या ॥ ॥ हा म ले। कू द। छु ह्मी। धू ति।
नि ना व ल प न या य ॥ ॥ आ उ वा प र व व या ॥ ॥ अ न ता प टा ल पि दू म र्द क्ष व नी। उ रु ला क लं ज वृ व

कल्क शत्रुहिः घ्नन्मूकमविधि विपक्षमादत्तं। प्रपीवमिदं ऊयति कृष्णमाहुतं॥ ॥ गुडगु. पालउह
ल। निम्ब. कण्ठमित्रि. तिरुला. कलंजसि. आदत्तं। धर्म समताग. वृक्ष. धल. ससू. ठं. न. कं. अष्टादश. कृष्णनाग
॥ ॥ अष्टादश. कृष्णया॥ ॥ अष्टादि. घृत॥ ॥ जाती निम्ब. पटाल. पत्र. कटुक. दावी. निम्ब. साविता॥
मंजिष्ठा. लयसिक्त. दुग्ध. मधुक. नका. कवीजः. समैः. सर्पिः. सिद्धमन. न. श्व. व. दना. समा. नि. ना. मू. वा. वी. वा. स. नू.
जा. बु. ग. स. ग. ति. का. गु. द्या. कि. श. ह. कि. व॥ ॥ जि. नि. स्या. न. ह. ल. नि. च. ह. ल. पाला. उ. व. ति. ह. ल. कटुक. मि. व. ति.
सि. कं. वि. ह. नू. ह. नू. इ. इ. का. ल. सि. ह. ल. म. नू. सी. ध. नि. ना. थू. ति. ठू. छ. मी. कलंज. यू. धर्म. समताग. धल. ससू. ठं. वृ.
स्यं. ता. का. ल. श. व. द्या. न. उ. डा. ला. वृ. य. दू. अ. दि. कं. द्या. न. ग. न. सां. त. व. क्का. न. स्या. क. द्या. ल. ना. ग. या. क॥ ॥ जा. ति. का. दि.
घृत. कृष्णया॥ ॥ आदत्तं. पाला. उ. व. ति. स्वयं. ल. नि. च. ह. ल. ल. वं. ल. व. गुडगु. पटाल. पत्र. धल. समताग. वृक्ष. धन.

समूहं न कं। वि सूर्यः वि ह्नाटः हि वि कात्रक कृ सं गु ल्म सं। कृ ष्ट सं। धर्तं स हि ड ॥ ॥ दृ षा दि द्यु त ॥ ॥
नी लि का ण्डं ज का नी नं धू र्त्तं न हं स पा दि कं। सूर्यो व र्त्तं सूर्यो वि र्त्तं वि ह्नाटं पु लं प य नू ॥ ह्नाटं ह्नाटं पु लं
नृ थं स क ना वि पु नः पु नः ॥ ॥ ध्व त कृ ष्ट नि ह्नाटं पु लं सा ध्य सा ध्य न सं न यः ॥ ॥ नी लि का दि ध्व त कृ ष्ट या
॥ ॥ त्रि ला धू ति। ख य मृ ग। कृ ण हा। इ ध व ह ल। ह्नाटं पु ल। सूर्यो व र्त्तं। प नू द्या व र्त्तं। धर्तं सूर्यो व र्त्तं।
त्रि ला धू ति ॥ ॥ त व द्या क। ध्व त कृ ष्ट ना ग या क। लो य म ला य धू क सं द ह म द ॥ ॥ ध्व ति नि दा ना क
प वि कु म कृ ष्ट नि दा न वि कि ल्सा धि का त्रः ॥ ॥ अ ध गी त वि रु उ द र्द का ध नि दा न वि कि ल्सा ॥ ॥
गी त मा नू त सं स्य र्त्तं नृ दृ ष्टेः क र्त्त मा नू गो। वि रु न सूर्य सं सूर्य व हि न क वि सूर्य नाः ॥ ॥ र्त्तं उ द र्द सूर्य सं
वा त (सूर्यो व र्त्तं) प ल पा व धू कि स वि रु न क्का क। वि रु न प त डा व। वि व न नं इ व न नं द्या प न य ॥ ॥ पि पा सा

॥ नीलिकादि (७) नक्षत्रा

॥ त्रिलोचनः । खड्गः । कृष्णः । इन्द्रः । रुद्रः । पद्मः । धनुः । अश्वः ।

निनाव पाय ॥ ॥ तव श्याकः स्वतः कृष्टनाम योको लोयूमलायूधक संदेह मदः ॥ ॥ ॐ निनिदानाकः ॥

पवित्रमं कृष्णनिदानविक्रिसाधिकारः॥ ॥ अथगीतपिरुउदरकाधनिदानविक्रिसा॥ ॥

भीतमानुसंस्थान्मुद्रैः करुमानुगो। पिरुनसहसं स्यवहिनकविस्पर्षिताः॥ ॥ रघु ५ ६ ७ ८ ९

नात (सुष्माको पलयावधू कि सुविरुनक्लाक। विरुनपतडाव। विवनेन इवनेन व्यापनयू॥ ॥ विषा सा

॥ धिया सा

२५५

नूविहलासदहसादांग। गेनवं। नक। आवनतातिषांपूर्वनूपस्यलकुलां॥ ॥यासुवाव। नूविमइ। नू
(मउधेयु। स्याक। अया। उ। मिखा। अउ। धन। पूर्वनूप। थाया॥ ॥बलगादं। सुसुहानः। (मथः। सुजा
यनवहि। सक। उ। सु। दव। रु। लं। क। दि। क। न। वि। दा। ह। वा। न॥ ॥खवलि। य। द। पू। न। का। थं। व। रु। म। नि। व। म। उ। गु। पि
यावं। व। यी। य। वा। सु। स्याक। अया। उ। का। न। पू। वा। न। व। मा। नं। झा। क। हि। य॥ ॥उददं। मि। ति। तं। वि। या। की। त। पि। रु। म। थ
पत्र। वा। ता। धि। कं। नी। त। पि। रु। उददं। दु। क। ला। धि। कं॥ ॥उददं। क्ष। य। सु। रु। नि। थ। नं। लि। नी। त। पि। रु। सु। रु। ने॥ वा। ता। धि
क। क्ष। य। नी। त। पि। रु। क्ष। य। (हो। उ। रु। सु। रु। ले। जा। य। न। यू। (ल। या। धि। क। न। जा। य। न। यू। उददं। क्ष। य॥ ॥मि। ति। तं। क। रु
जा। या। धि। नूददं। य। नि। की। र्ति। तः॥ ॥वि। क। ला। न। (ल। या। न। जा। य। न। यू। गु। उददं। क्ष। य॥ ॥अ। सं। न्या। व। म
नादी। र्नुः। पि। रु। (ल। या। न। नि। ग्र। हे॥ ॥पि। रु। (ल। या। न। य। ल्य। ले। अ। सु। रु। न। थ। व। ले। जा। य। न। यू। गु। म॥ ॥मउ।

लानिसकलुनिनागवनिवदुनिव।न ॥ वाकरवव वासु नागवपु।तवमाना ॥ ॥ उकाठः सानूवभकु
 को० ०० ह्यहिधीयन ॥ ॥ थवाला २ रुकवया थमवयीव। थका० क्षय ॥ ॥ यमोनिगुउसंयकं
 मूददलीतपिरुहा ॥ ॥ ०० मंवाकु नापेनसं उददको० नीतपिरुभाक ॥ ॥ वज्रमदकवीजाति
 निमसिद्धार्थकं तिला नीतपिरु विनामयदय मूदहनं पवं ॥ ॥ ०० रिप् मीक सिक् ०० का हामत
 थनवृष्ट्या उं सवयक। नीतपिरु नान ॥ ॥ नाजवृकं वदवाव पुपं ना उकु ०० लका। कागमदक
 सिभूक्त विठिन रजनी दयं। पिष्ठा उ वरुनं। प्रष्ठः कउददक नाननं ॥ ॥ नाजवृकादि ॥ ॥
 नीतपिरु या ॥ ॥ गुगुनू श्री ज्ञाय ह नान थपकुवके ॥ नीतपिरु नान ॥ ॥ वन्दनं मूक्तकं
 ववासकं ववाकी कृथा। विरुलानिसमवृष्टं नीतपिरु विनन्यति ॥ ॥ वकवदन कसु जाल

२५६

आक्रीयाव। उदला। थत नि सं च सव्य॥ ॥ नीतपीरुया॥ ॥ इर्वानिभ व्याधियान सर्वप
रहधूमयाः कलंजसतवा मूल अग्निगभेपली द्वयं॥ मासी कुषन गुर्गुव सूर्ज व सं व स भवः पुपूना उका
न मर्दवीजं मे ले विषा वयन्। कदुवाग रुतं का० क उदद नाननं॥ ॥ गुं उ कं वि रुवदि दि रुले
ॐ का कयति पा स विहा कलंज सि अग्निगभे सालपली पृष्ठयली जटा मासि तिकद् गुगुव ग्री।
जाय सधुवि ॐ त्रिपू काय व सिपू थत वूर्ण विकन वृ स्यं वृ स्यं कदुवाग का० उदद नानन॥ ॥ इर्वी
दिते ल॥ ॥ नीतपिरुया॥ ॥ आडक स्य व स्य यं वृ नान गु उ मि मि तं नीतपिरु रुतं दे व व क्रि मा
शु वि ना ननं॥ ॥ या नू या व स स पू नान वा कू मि ल ल पं न स्यं नीतपिरु ना न या क॥ ॥ नीतपिरु
या॥ ॥ ॐ ति नि दाना कू प त्रि ज भ नीतपिरु उदद का थ नि दान वि कि सा धि का वः॥ ॥

अथ विरुपक्ष विविक्त

अथ अस्त्रपिरु निदान विविक्ता ॥ ॥ अथ अस्त्रपिरु पवय रवय नव दामित । जिह्वा स्वाद समावि
 ष्टः सत तं या निमवत ॥ ॥ विविक्त मपि कल्पेन समतः पाप वायसः । नेर्न सायामथवेव या निपुथि न्य
 कर्मत्त ॥ ॥ **कर्म विपाक ॥** ॥ निरुपकर्मवर्ष हि सुतु रक्षा रक्षा कर्म सुदर्म तिः सतः किमिपथं प्राप्य
 पुष्क काशाय जीवकः ॥ वायसुत्त मति प्राप्य गृध्र कृष्ण कर्म । तत्त्वावमानुषं जन्म । अथ पिरु सदा रवेण
 ॥ ॥ **विबुध इच्छा** अविदा हि पिरु उकापमाना ननु या विदग्धं । पिरु स्पृह तपस्वितं पूनाय रुद स पिरु
 पुवद कि तद्वा ॥ ॥ **धि धि मलाव मनिंगु पाउ पातू पिरु दवव सु** अत्र पान नया सु मवूक व सु
कव सु नयाव आया श्वरु नयं या उगु म् गव अस्त्र पिरु वयीव ॥ ॥ **अविपाक** कृपा ह्ने दनिका जा
 न (गेववेः) कृत् ४ दा हा नू वि हि अस्त्र पिरु वद रिषक् ॥ ॥ **पाक मवंगु मन सस्व सु मइ** बाला

२५१

रनहुं वयीव. धका न पाड संवयीव. रवायु संवयीव. ज्यातु नू. गमउ. कथु हियू. स्थाक. नू विमद्. धन ल कडा.
रुव गाव अरु स्रियिह सिय॥ ॥ रुवा रुमू ऊ मनाग कानी। उपात्य (धवा विविध उकात्रं। रुवा सको अनल
साद रुवः स्यदांग पीत लवक वं क दावित्॥ ॥ नू. गमउ हियू. ठूकू. अरु वृष्टा। नाना विधिन क दयं रुवा। धवू. अरु
वाक रुवयीव। वासु संवयीव। अग्नि मन्द रुयीव। विमिकं क दिवयीव। वन निवयीव। अरु स्रियू। गुलि किं यो धन।
ल कडा रुवना स्रियिह धय॥ ॥ अरु स्रियिह याल कडा॥ ॥ वातं रुविन पीत नील क क्रातं। साव कवन का
रुम तीव वासु। मा न्नाद कारं लवि विक्लि तातं। अरु नू पीतं विविधं न सन॥ ॥ वात अरु स्रियिह यो धन वयीव
उमउ. अरु स्रियू. ववू. हाकू. रुहन धव. ला सिला तिथं धन वात नत डया॥ ॥ धन रुयू. यवू. अरु स्रियिह स्रियू. अरु नन तं गु
या॥ ॥ रुकू विदय धय धवा यरु कू कनाति तिका स्रियू वमिक दावित्। उकात्र मव विध मव क उः रुवा।

किं दाहं निवसा नू जंवा ॥

॥ मवानवाक नयधूनडाववेनूरनछाया अथवानयधूनडावरवायूसंवयू

पाउमंमवादवयू ॥ गुलिच्छियां थंनवयी । कश्चू नू (ग) द पत हियू माद स्या क ॥

॥ कनववननसहमूत्र

महती मन्विक्तनैव । करु पिरुं जनयतिक उक उल पितिकानतनिहिगम्भउवागवयं ॥

॥ इलाइ०

हियू काक नवमानं नू विमद कानयूवा पिरु (स) म सुकछू जायवयू वासूयू कसुवाकरवमीव गुत्रिच्छि

यां ॥ ना (ग) यम म्नु पिलाख्यायत्तासंसाधन ॥

॥ ध्यानामजस्त्रपिरुक्षयनकसुजायवयूवल

सलायके अलपू ॥

॥ विनात्किता एववेवकछुसाधः सुकस्यवित् ॥

॥ ताकालयतडावलायके

धक नवकछुन गुत्रिच्छियां लायके जीव ॥

॥ करुनिष्ठीवन (ग) ववेज दता मन्विं । नीतसादवमिले ।

पाः दहनवलसादक उः निंदा विं कछानूगते ॥

॥ खयिलवाक लनवव कश्चाशु नू विमद ००

२५८

कुरुतावत्खाउः क्कसाकाधनववः क्ककवः रक्षवः अग्निमन्दः बलहीनः वासुकावः ऊउववः ॥
(॥) ध्यानतंगुयालकदा ॥ ॥ ध्यानीतावली कोडं दुस्येन कर्तव्यामरुः नीततायानूयानेन पयसाथने
नवा। अस्तपितुं निहत्या गुवली पलितनामने ॥ वक्ष्यमायुनमंगंतुः मुममूदाहृतं ॥ ॥ जंवले अहिर
साषवः कलिथते स्म तागयास्येन संलिथेत्वा उलं खनश्वसां दृइदास्येत्वा उकावश्वसां त्वनकं अस्तपितुव
लिपलितः ध्यानमाकः मिखायातजदयः आयुद्वितीयव ॥ ॥ वसुमुमलह ॥ ॥ कक्षवर्षस्य कुरुव
खद्वैलं हवृषास्तथा। नतावली वसस्याक्षेपवानयपुदापयन् ॥ खउ उल्लसमादाय जीवयुक्तद्वयं पथन् ॥
ति जागमूक्तक्षान्याकः गुणी वाल्मीकिजीवकं अरुयासलकावेव वृष्ट्वा दममासिकं। तद्वर्द्धमविवंतागं सावे
खदिनमवव। मधूनतिपलं वेवपु क्रिया उचया जयन् ॥ हलासुत्रावकं कर्दिठक्रादाहास्तपितुनून् ॥

स्य

अग्निं सदीयनं रुद्रं पिप्पलीखं उनामकं ॥ ॥ पिपीबूकं दण्डं उस्तां पुष्पं मतिहायानसं पुरसाखलं रुद्रं
इन्द्रं रुद्रं धत्ते पाकयाय ॥ धृक् सिं मसुना द्यूयगु ॥ पातकं नवं त्वं व. सूकम्या. कसू. गमस्य रुद्रं. गुं धिवं सभावन
जी. रुजी. हलउ. अम्वल. धत्ते मं १२५५ नवू. गुयाय ॥ मन्ववमं ध्व विखयल मं ५५ धत्ते द्यू. द्यू. पु३ कलि. रु
य ॥ धत्ते नसं तवमानं धं नवव. हियू. अम्व. पिरुमाक. अग्निदृष्टियाक. रुद्रागसं पथ ॥ ॥ पिप्पली
खं ॥ अम्व. बिं. कदि. या ॥ ॥ अम्व. पिरुवमसं पठाला विष्ठवा सकेः ॥ कावयत्नमदनं जोडं सिंभूयूकं न
गाहिषक ॥ ॥ धालोदवतिहा. निम्व. जान. धत्ते मदनयासं कलि. सुधू. वितसं त्वनकं अम्व. पिरु.
यावमनेयावक ॥ ॥ अम्व. पिरुया. लाक. उमसल ॥ ॥ र्वयू. धालपू. कालवास. विनि. खाउलं
खसु. लासं त्वनकं ॥ ॥ अम्व. पिरुया. लाक ॥ ॥ उ. कद. उ. रुला. दकि. विउं गं नागक. नलं. पला

नवीज लृष्टला हवेषा जीवक द्वयं । ताली सुपत्र क्षान्ता वलांग वल शाननं । उतानि समस्त गमनि रूक्ष
वृक्ष नि का वयम् ॥ नर्क नादि गुणं वनने मृद्वग्नि नापयन् । खाद दग्नि वलाप जी । अमृ पितृ नया य
हं ॥ पा पुत्रा ग प्र हृथर्मा कि मि पा र्व व ल नूत् ॥ का ल क्ष स रु यः ॥ म थ आ म ल ल वि ना न नं ॥ ॥

त्रिकटु त्रिरुला दन्ति विविदि नृपकल ल पलावी तिलवं पृउ स्वां जी ह जी तालि स्वां ॥ म सा
० हं ववे वं न वा वन सम हा ग वृक्ष थ या नि हा ग सा वन पा क या स न स अग्नि वृद्धि या क अमृ पि
रु ना न या क पा पुत्रा ग प्र हृथी अर्ज कि मि व का सा क का ल क्ष स रु यः ॥ म थ आ म ल ल ॥
ने ना न या क ॥ ॥ या सा दि ख उ ॥ ॥ ह न उ ग उ ग म १ वा क म १ वृ ड न क नू ग ल हि य अ

मृ पितृ ना न ॥

॥ जी म र ना य स व न म र थ न वृक्ष कृक्ष नि या ला ल स क्र स पा व रु ट वि स्यं

वेसर्पनिदानविकिसा॥

॥ गमउविस्मंनकं । अस्त्रपिरुनाम ॥ ॥ सितखावइइताग १ मत्रवताग १ विखयत्रताग २ ल
नाव । निये । कयनुलि । पुमान् । गमउविनावनकं । अस्त्रपिनाम ॥ ॥ वृत्तिनिदानाकूपविक
मअस्त्रपिरुनिदानविकि । साधिकावः ॥ ॥ अथवेसर्पनिदानविकिसा ॥ वेसर्पयातकूडयाग
धाय ॥ ॥ कर्मविपाक ॥ ॥ गृह्यपूनादृकं कथयामितवायदः कं पितृनामनगत्रयुधुम
नयनः सुगः सुगत्वा नामतस्तनवा अलस्य जलाप्रय । कृतं स्नानं जलं पातं तत्कर्मवसता ॥ १ ॥ आयुः ४
॥ धिष्टता इति गृहीतस्य माह्वया । वरुमाधून संयुक्ता क्रियकूपनिलाप्रय ॥ ॥ हृत्कान्तमहत्कृष्टरसा
कं विकृतं नयः कनदाहयुगात्तत्वा विस्फोटिकगदादिनः । लवणमस्रकदस्त्रादि संसदादायकापनः स
र्वपस्रकमाह्वया सर्वतः पविस्सर्पजात ॥ ॥ सि । पालू । पाड । धति आदि सुववपाव कसता विस्सर्प ।

कच्छुजायनपवं नवीनस॥

तारसंनिपातकृत्तुलिंदं दृजसुता॥

कुत्तसकधकुयः॥

सूर्यताकज्ञाउंज्ञाय। दृदृजसुताया॥

ध्यानः सपिरुकरुसुसुवः॥

नृसूयाकजायनपवं धपिरुल्लभनववसिय॥

नांससूर्यहिविरुयासकधतरवः॥

सताविधिविसूर्यकच्छुवयीव॥

॥यधकुयतिहिल्लेकाविसूर्यदृदृजाकुयः॥

॥वातिकः पिरिकलेवकरुजासुनिपातिकः। तत्यानसुविसूर्यवा। व

॥वातयापिरुया। ल्लभयासुनिपातयाविसूर्यलृकववसिय॥

॥आ। नयावातपिरुया। ग्रन्थि। कुरुवातजाः यलृकदमका

॥अग्निवि विसूर्यवातपिरुया। ग्रन्थि विसूर्यवात। ल्लभया। कदमविसूर्य

॥नकंनसीकात्तमांसं हृष्यक्षामि। यामलाविसूर्य

॥हीसु। वसुसु। लासु। धासुतायामलन। सुउलासुहृदवपावक्र।

॥तउवातजवेसूर्यवातकवसुसंयध। ल्लभसुनननिसादहृद

या सौ लोम हर्षवान् ॥ ^{कन} ॥ अथवा तन इव वि सूर्य या वा तं या थं न्ध कः ^{कन} हान गम सं मंगु वि मि कं क दि व व ॥
 पिला द्रुत गतिः पिरु कलु सिं गमि ला हितः ॥ कला क उ यूनः सिन्धः क रु क न समान नृ क ॥ ॥ पिरु
 या के न जाय न पू या पिरु क न या ल क ल थं ड नि व अ ति क्का उ य ॥ ॥ ^{कन} अथ या के न जाय न पू या वा सून त नि व ॥
 ये क न लायी व ॥ ^{कन} अथ क न या थं न्ध क ॥ ॥ सन्निपात स मू क्तु सर्व लिंग सम चितः ॥ वात पिरु क न रु दि मू की
 ति सा न रु रु हेः ॥ ॥ सन्निपात न व व या स्व ता ल क लं दयी व वात पिरु क न व व या क्का क क न द व का द व नृ ग म द
 म किं व्या स वा व रु कू य ॥ ॥ अष्टि त दानि स द न त म स्का वा व ने र्ग तं ॥ क या ति सर्व ग उ व दी कां ग म व वि की र्ण
 व न ॥ ॥ ^{कन} का व स न्ध क अग्नि म न्द मि वा रि उ अ वा व क न त ड गु ली वी व द कं क्का व मि क्का व थं ड न गु ॥ ॥
 य ये द न वि सूर्य कि वि सूर्य तु त वे ल स ॥ न न्द ने वा ति ता नी ला व का वा गु व वा ध न ॥ ॥ गु गु थ म सु क

कृवन् उगु धम स सा उ य । उ नि व नू गो य स थ श न ह क उ म उ क उ थ श न ॥ ॥ अग्नि दग्ध ०० व
 कृतेः नी घुं ग ला कृतं स व । म र्मा हि सा नी वे स र्प्यः सा द्वा ता वि व ल कृतः ॥ ॥ मी न दू क थं य ल ग क ।
 न नानं पट मा य । म र्म स र्जा य न य वि स र्प्य यां स त्रि पा त अ ति व ल ला क ॥ ॥ य धि ता मा ह वं स र्हा त्रि डां व
 क स मी ल य त् । हि क्तां व स ग ता व क्ता मी द नी ल र ग न न सः ॥ ॥ क स्या क व त ना म द् क उ उ थं व व ॥
 थ सा व ह न य । मि ख म क ॥ अ व य व स हि क स हि त न पी उ न य म्या व के म जी व ॥ ॥ क वि कु मा र ति प्र क
 ह म्पा न र्था म ना दि षू अ स र्प्य न स ता कि श्वा म ना दे ह य म्हा वः ॥ ॥ गु लि क्ति यां धा व न ला सा स ।
 धा न स नां दः र त ता व म न नं दे ह नं र्हा न वा द ॥ ॥ इ ष्य वा धं व त नि डां सा नि वि स र्प्य उ य ग ॥ ॥
 धा त ल क ग र व क्क उ द व क्क ला य के धा क ॥ ॥ अग्नि वे स र्प्य धा य ॥ ॥ क र्हा न नृ द्र य व

[illegible]

२५२

क्रिया क. क. न. क. न. ह. यी. व. क्रि. उ. स. क. न. ह. न. यो. ड. गु. भा. द. स्या. क. ॥ ॥ अंग. भ. व. सा. द. वि. के. प. पु. ला. या. ना. व. क. उ.
मा. न. क. नि. हा. नि. ह. दा. स्का. पि. पा. स. डि. य. (मे. व. वं. ॥ ॥ क्रिया क. ता. क. तु. कं. ना. क. न. वि. म. इ. ००. क. न. (ग. भ. द. म. दि.
अ. मि. म. उ. का. ग. स. क. या. थो. स्या. क. पा. स. या. व. पं. वे. दि. या. त. ज. ही. न. ह. यी. व. ॥ ॥ आ. मा. प. वे. ग. नं. से. प. (ग. भ. त. सा. तु.
वि. स. र्प. त. : प्रा. य. ना. मा. प्र. यं. ग. क. म. क. द. गं. न. वा. हि. न. क. ॥ ॥ आ. म. न. ग. बी. न. या. इ. वा. न. क. सं. ले. प. न. कं. व. नि. वे.
वा. क. स्ये. न. आ. मा. प्र. य. ग. ह. न. या. श. नं. क. थ. य. स. तु. न. व. वे. द. ना. म. खू. ॥ ॥ पि. तु. के. न. व. की. (ही. ति. पी. त. ला. हि. त. या. तु.
ले. : हि. ग. म. सि. ता. नी. ल. का. रा. मा. ले. न. : (ग. भ. थ. वा. न. गु. न. : ॥ ॥ क. कू. या. त. ज. थ. धिं. गु. ह. य. क. स. का. उ. ला. य. व. क.
न. ला. क. ला. य. म. इ. व. क. म. ल. थं. हा. क. य. खि. ति. न. य. उ. ज. या. तु. य. ॥ ॥ ग. की. न. पा. क. : प्रा. का. या. स. य. के. न. वा.
ही. य. ति. ॥ पं. क. व. की. गु. मा. स. य. स. सं. त्रा. य. नि. ना. ग. ले. ना. ॥ ॥ क्रि. न. ग. व. न. द. का. क. क. वा. क. लं. का. क. का. न. प. व.

धत्तसंवव॥ नालथं लायागा रहासंवयीव। नव. हिनूलि छाता हांनधानिव॥ ॥ सुवगभीवेसुर्वः क
र्दमाख्यमूलकितं॥ ॥ कच्छूननवासंविहाववगु. नधव. पिरु. तभनजायनपुगुसिय। विसुर्वकच्छूक
र्दमाख्यधाय॥ ॥ बाछरुगां कताच्छूः सुवकंपिरुमीलयत्। विसुर्वमानूतक्षूर्यत्कूलकः सुद. भय
ते॥ ॥ व्यावक्राधश्याव. हिवपिरुवमीललपाववेसुर्वकच्छूयातरुसुनडनिकालगथं॥ ॥ स्फुटेः॥
॥ मरु कवनूजादाहाद्यं नधव. भसितं॥ ॥ यलगभक. मनित. कवननपुव. नधक. हियू. डनिहाक. काड। २५३
॥ ॥ रुनिचवासाकट्टकापटालरुलपिकंवटननिचसिडं। विसुर्वदाहकवन. नधक. विसुर्वक
श्रावमिन्नूकषायः॥ ॥ खालू. आदग. कट्टक. पालादवति. पिरुला. कृमिवं. धतकाधदासंत्वनकंवि
सुर्वकच्छूहियू. कवन. मंगु. यलगभक. पालासुवाव. धवव. धतमाक॥ ॥ कवागीसागार्वमधूकृ. कोत्मानस

विष्णुः सत्त्वः सत्त्वः सत्त्वः

दशकुमाः अनावकविद्याकोवदेसूर्याभमूपडवाः॥ ॥ कवनपूव. कदयू. क्काक. प्यासबाव. लाउवव
मनससूरवमदू. नूविमदू. नयाजीर्णमवंगु. धतविसूर्ययाउपडवसिय॥ ॥ सिञ्चनिवातकरुपिरुह
ताविसूर्याः सूर्वात्मकः कृतकृत. वरवेदमधः कुरु. धमर्मसूतवकिहि सर्वमव॥ ॥ विरुनजायन
पूयाकनापंहाकसंवलसाभ्रसाधालायकमजीव. मर्मसुबलसातववदनाशयीव॥ ॥ वृत्तिनिदाना
कपत्रिकमविसूर्यविकिसानिदानाधिकारः॥ ॥ अथविस्तराटविकिसानिदानः॥ ॥ कदमूनीका
कविदाहूजाकारेवजीर्णधसनातपे. धातदर्थदाधनविपर्ययन. कृष्यकिदाषाः पवनायनस्तु॥ ॥ पा
नू. पाउ. खनवस्तु. क्काक. जीर्णमदिमवंगु. रूटवस्तु. कानवस्तु. धतनयाव. निगनस. ताउतितापहले. दाष.
विपनीगश्याव. दाषदक. कायनयाव. वातादिनागशयीव॥ ॥ अग्निदग्धनितांस्तुतासूक्तानावकपिरु

कविस्सर्वज्ञ वादहसविस्लोटकं निस्सुतां॥

हिनवव. संनायवयं रुव। थनविस्लोटकधाय॥

लहयिष्ठकनरुष्यचते दनं। सुकृष्णवर्णताचतिवागविस्लोटलज्जलं॥

सुवव. वाहस्यनक्षत्रवव। व्यासवाव. अथिआथिस्याकवागनववरुडिहाकडनि॥

लज्जल॥ ॥ कनयाहनुजाप्रवपाकठक्रातिवनिर्ग। पीतनाहितवर्णवचिरुविस्लोटलज्जलं॥

कनदव. हियू. ग्धाक अंतिहाव. ननानं। किनिव। व्यास १. क्मास. काउ. पिरुडुडियालेकल॥

विमर्षपिरु॥

॥ कुर्यभावकक शानिक उकाठिन्यापुता। अहदनविनात्याकीसविस्लोटः क

हात्मकः॥

॥ थनवव. नृदिमह. तंनंभव. वासु. स्वथलवीक. लठिगधक. तायूव. तातनुकिनिव।

॥ मीनपूकथं उनगुरुदि. कननतंगु. वकपि

॥ विस्लोटकवेसुर्षककृया॥ ॥ लिनाह

॥ मोदस. नू. ग. उ. स. ल. ल.

॥ वातरुडिया

२५४

॥ ५५ ॥ **श्री गुरु उद्याल कृष्ण ॥** ॥ क **उदाहा** क **न** क **दि** वि **ते** सु **क** रु **पि** ल **कः** वा **न** पि **ल** क **ता** य **सु** क **न** ती **व** वे **द** ना ॥ ॥ वा **सू** हि **यू** क **न** इ **ध** न **व** व **न** व **व** द **ना** ॥ ॥ ५५ वा **न** पि **ल** न **व** व **रू** दि **या** ल **कृ** ण ॥
॥ ॥ क **उ** ते **मि** ल **गु** न **ता** जा **नी** या **क** रु **वा** ति **कं** ॥ ॥ वा **सू** क **व** र **ध** व **ज्या** नु ॥ ॥ वा **न** **श्री** ग **या** ।
रू **ति** ॥ ॥ म **ध** नि **श्र** न **त** न **व** क **धि** ना **य** पु **या** क **व** । दा **ह** श **म** न **षा** मा **ह** क **दि** न **रू** क **न** न **जः** ॥
पु **ला** था **व** य **धू** त **आ** सा **ध** सा **ध** सि **दा** म **जाः** ॥ ॥ द **धू** म **उ** व **उ** गु **दा** हा **न** जा **व** ता **कू** रु **टि** २ **कि** नि **व** ।
हि **यू** ना **ग** न **यू** या **स** द **व** व **का** म **इ** ध **न** व **व** नू **म** उ **म** कि **ध** क **न** इ **ता** क **उ** क **न** या **क** क **न** ह **न** वा **नि** ।
व **५५** उ **दा** म **न** व **रू** उ **ज** सा **ध** ॥ ॥ उ **दा** म **वे** स **र्ष** ॥ ॥ न **का** न **क** स **मू** क **नां** गुं **जा** रु **ल** नि **ता** ।
रू **ध** व **दि** न **या** ल **न** क **न** पे **लि** क **न** उ **ह** उ **ना** ॥ ॥ त **सि** हि **सु** मा **या** ति **सि** हि **ये** ग **ि** ग **ने** व **पि** ॥ ॥ ५५

उद्दीनजायनयूरवयमृगध्वनकपिरुनवव. हियूरुडिउयकेथक. नतदितापुथागयातसांश्रसाध
पटालनिम्बहनिम्बवासकानिखपर्यटेः खदिनादयूतकाथंविस्फोटकननासनं॥ ॥पालदवति॥
निम्बहल.खाल.आदल.खल.खयल.कसू.धतकाथदासंखनकंविस्फोटकडिउव॥ ॥विस्फ
टविस्फुर्षया॥ ॥पद्यकगलपूनागन्नावीनंमधूयदिका।जलपिक्कपुलयायंविषविस्फोटनागन
॥ ॥पलकगल.तालिस्यां.ळुळमी.धतलंखसनिस्पंलपनयासंविषविस्फोटकटिनाग॥ ॥
पटाल.सुककदनिम्बवास.रुलठिकंकिन्नरहाविषकं।तत्यंवतिकंलमयस्फदीर्घ।जिदाषविस्फ
टविस्फुर्षकपुं॥ ॥पालाउवति.कृतिव.आदल.जिरुला.गुडगुं.धतयंवतिक.धलसखडंनकं.जि
दाषविस्फोटविस्फुर्षनासयाक॥ ॥जिदाषविस्फोटया॥ ॥अकदाषःस्मिन्तःसाधःकुरुसाध

२६५

मस्तुत्रिका निदान वि कि सा ॥

द्विदाषजः सर्वरूपाविताया नस्तु सा रूपा नूयुप डवः ॥ ॥ कृता दाष शवता ल साध नि का दाष शवता
व अ साध ॥ स्तुता दाष शवता व लया न क डि दाष न व व रु दि अ साधः उप डव न त ड गु ॥ ॥ छति निदाना
क प वि ज म वि स्फा ट नि दान वि कि सा धि का वः ॥ ॥ अथ मस्तुत्रिका निदान वि कि सा ॥ ॥ क व सु ल व
व का न वि नू डा ध स ना ल नेः इ षा नि स्था व का य सु स इ ष प व ना द केः ॥ ॥ यालू पा उ वि का न व रु थ ध
म जा क व रु न या व सि मी पू आ दि न न या स वि ष रु स हा श व व रु स रु ल म हिं गु लं ख ल ल ॥ ॥ कृ ड गु
ह क व म द्या वि द न दा षाः समू ड ताः जन य कि न ग्री व सि न्द्र व क न सं ग ताः ॥ ॥ ध नू गाली सु वे गु ल ने व न
अं ग म ल आ दि न कृ ड गु ह न द ल ना ल या तं ॥ थ गु ह न दे न या दा ष न ह न या स न या स म हिं गु ग्र ह न द ल दा
ष न ग्री व स ही न मित न व न ॥ ॥ मस्तुत्रा कृति सं स्का नां पी डि का सूर्य मस्तुत्रिकाः ॥ आ सां पर्व क नः क

तुर्गा उहं गमन निष्क्रमः ॥ ॥ मसूत्र गम उथां वव कच्छू मसूत्रिका धिया थया पूर्ववृषः कवययी
 क्वा सुयः ॥ क्वा रयाना थां गम कः ॥ न विमदः क्वा कः ॥ ॥ त्ववि गम थः सवे वरुनी ने उथा गम थि व
 व ॥ ॥ सु उ ला म निव उ नि म ति निवः मिखा का उयः ॥ ॥ ह्वा टाः क्वा क्वा न गम उ क्वा ती वव द
 न यान्ति ताः कधि ना विन पा का थ व रु नि ल स म् रु वा ॥ ॥ कच्छू न व गम उ क्वा क्वा क्वा उ द वः न व व
 थः ता क्वा न नानं क्रि म द वः थ वा न न व व कच्छू ॥ ॥ मन्थ ह्वा पर्व तं रु दः का ग क म्पा न नि प्र माः ॥
 गम म्पा ला व जि कानां क्वा वा न वि सं यु ताः ॥ ॥ अथि य तिं हा क र्वा डा थं गम कः मा सा व वः क
 तु यः सु ख म दः क्वा क्वा थ क्वा क्वा उ सिः मः म नि वः प्पा स वा यः ॥ ॥ न क्वाः पी ताः नि ताः ह्वा टा म्पा हा
 ती वव द ना ॥ विह्वां ग म म्पा क्वा न व न ति रु थ ॥ ॥ क्वा उ क्वा सु ता यः कच्छू पि वा न डा वः हि

२६५

यः स्यात् न नानं म जीवः पिरु न व वया ॥ पिरु म स्र त्रिकाया ॥ विहं ग म धे न क क्रा न् य
नति स्र थ ॥ मुख पा का कि पा क प कान ती वा ति दा न् सः ॥ वा हि वि का म द व ॥ क हि यू न वि म द् ॥ प्या स द
वः न ति म द् ॥ मिखा स ॥ कृ उ स ॥ क र्ध व व ॥ क न व व क्का ॥ न का यो यं व व न् स न वि का नाः पिरु ल क्काः क
रु उ स क स्रे मि र्ण नि ना न् ग न् स (मे व वः ॥ ही न जा य न दू क क्कू या ॥ पिरु या वि का न थं ॥ ख यि न व व ॥ क
क व र्ध य ॥ मा उ थ य ॥ क्कू या उ ॥ स्र ताः स्त्रि न्ध ह नं स्त्रि लाः क उ र्वा म उ व द नाः म स्र त्रि का क र्का ॥
का च वि न पा कः उ की र्ति ता ॥ मा य ॥ वि क न ला क ना य ॥ त व (म उ ॥ वा स ॥ य थ न व म र्वा ॥ (म य या ता न
कु नि क्रि नि व ॥ ॥ थ म स्र त्रि का थ य ॥ नी ला वि पि ति वे स्ती र्ध म थ नि म्ना म स्र त्रि जाः वि न पा का
दृ टि प्र वाः उ र्ता स र्व द म जाः ॥ वं दू ॥ पि व न ला खि अ ॥ द थ र्क ता क ॥ त व मा न न थ क ॥ त व मा न न

क्रिदवडिदाघनववया॥ ॥ उदिघमसुनिकाया॥ ॥ कठनाधनूचिगन्डापलायावतिपुंगताः।
 इष्टिकित्तासुमृदिष्टापिटिकाधर्मसंहिताः॥ ॥ हाकून. सुसुधशत्रु. स्वात्रसुधशत्रुव्याकणु॥॥
 नीलिकाधय॥ ॥ मर्दनपीठनावापितथेवाप्यथद्यावतःमदुवर्मयथावायुःरुजनेसर्वत. वन
 ॥ ॥ मर्दनयाउंथशत्रु. क्रिवलंथशत्रु. दयाद्यान. अतिद्यातनथशत्रु. लिंगयासुडसु. वागनसुकतिने
 पनवपनं॥ ॥ तदावागीयसुसुखाधर्मगत्यनिवर्तन. मधनधत्वाकोषस्तुग्रन्थिभूयसुलुङ्गन॥ ॥
 थलकटासुवातनसुधियागव. सुडसु. लिंगयाहोसनकावने. कधूवयाव. यानिव. वाकडुसं॥ ॥
 पत्रिवर्हिकाकांविशांसुनूजांवातसुसुवान्।सुकपुकठिनावापिसेव।सुभ्रसुमृहवा॥ ॥
 हिंकासिय।वातनववगु. थनाय. वासू. कवरधावहनसा. सुभ्रनगायनयूसिय॥ ॥

॥ थनायपत्रिव
 ॥ पत्रिवर्हिकाध

२६१

य॥ ॥ जूलीयसां यदा हर्षाद्वलागच्छति यन्नवः हस्तारिष्याता दशता चर्मन्तु दूरितवलात॥ यस्या
वपायनचर्मतां विद्यादवपातिकां॥ ॥ गतपूवून विदुतिद्यात्रयानि स न सतासं कुवपुसंगयायू
लाहातनदासं थश्वः सुउथहासं लिङ्ग इहावलं सुउवाकतुयू॥ ॥ १४॥ यानामज्वपाटिकधाय॥ ॥
वाताय सुखमदुःखवर्मसं प्रयतं मलि। मलि चर्मापनदुरु मूयनभुनूगद्विन्॥ ॥ वातनउपसुद्धिया
शवलिङ्गमलिधाय लिङ्गया हावस सुउतताकपूसं थानिव मनिव सुउतताकपूननास थाहायवान
द्विकययायीव॥ ॥ निवृद्धगस्मादधनं मन्दधनप्रवदने। मूयप्रवहतजनामर्मा निविधीयगनरुनि
नूद्धप्रकाशं विद्यात्सवृजं वातमरुवं॥ ॥ थुकिनद्यावद्विकययानाव विदिधानरुयावदः खरुनं। म
उपिहावयिवलस जनुया थवातनवं नोयसिया॥ ॥ १५॥ निवृद्धप्रकाशधाय॥ ॥ विगसं थानग

द्युविहतागुडसंश्रितः निवृद्धिमहद्विभुतः नृश्रद्धावकवातिव ॥ ॥ वांरुयमरुसुंदगपठावा
 वाततमवायाव आया मया वायूनादिन मरुमार्गसुद्विस्वोवातं ॥ ॥ धधधनवयवठाव नृश्रद्धाव
 यिव ॥ ॥ मार्गसुद्विस्वोवातं ॥ ॥ धधधनवयवठाव नृश्रद्धाव
 विष्टावयवलेसुसुश्रद्धावशननासुतवकसनकु विष्टाव विहांवयवठ ॥ ॥ धगुडवावयवठाव
 यकधकसुद्विस्वोवातं ॥ ॥ सुकनृयसमायुक्तैरेपा लसि ललवत ॥ ॥ सिनेवास्वापमानेवाकधु
 नकाकलुहवत ॥ ॥ विष्टाव मरुयवकाकलुखनसिचकले नानकले वालखयापादमरुयक
 तयासु लखनमसिकंतयासु स्थितिनकाकककुद्रिले वासुयु धनदिव ॥ ॥ धधधनवयवठाव
 ककुसिय ॥ ॥ ककुयनारुतः क्रियुस्त्रुटाः नृश्रद्धाव जायत ॥ ॥ कीरुतवुलंधावतं विष्टावदिव

२६२

तिकं ॥ ॥ धूक्ति सुवा सुन तन डाव यन्नि हायी वा धूक्ति सु क च्छु द कं ना प ना त डाव त व द्या न रु य
 ॥ ॥ धू गो य । अ । हि । पू । ति । क्ष । य ॥ ॥ त्वा ना त्सा द न ही न स म ल्भ व ष ण सं त्रितः य दा प्रा क्ति य त
 स्य दा त्क उं न न य ति त दा ॥ ॥ बाल ख भो उ हू य क ल स व व य का व खिति न च न ति न द्या प न या
 व क च्छु व ल क न स । द ग र क्ष न वा सू जा य ल प न ॥ ॥ क पु य ना रु तः कि पुं स्फु टाः प्र व ष्च जा य त
 प्रा क्च व ल क च्छु ना ल्भ व क पु का प जां ॥ ॥ वा सु न त डा व श्री पु न क च्छु व या व क्रि सं य नि हा
 य । धू क च्छु या ना म ॥ ॥ दृ ष ण क्षा य ॥ ॥ ल्भ व दि व न व व ॥ ॥ पु वा रु ना ति सा ना र्था नि
 र्ज च्छु ति गु दा व दि । नू क इ र्व ल द रु स्य गु द उं ग त मा दि ल न ॥ ॥ कृ सा हा न य न क द ल थ र व
 त आ पा म पि नू सं व व नू क इ र्व ल न वी व या धू ना ग गु द उं ग क्षा य ॥ ॥ धू गु द उं ग ॥ ॥

यांगनी काल दध्ना म्नागवकाव संयुता । घृतमृत्तु चितं धयं गुज्जुं न नृजा पदं ॥ ॥ पनूय
 वयाति वयल सिध विनि गुधि उम सुखा थन धेल सुखु न सं गुद जं नाना ॥ ॥ सुदाहा
 न कृपय कं च सा का ती ववेदना ॥ क उमान कन का नी व सव गृक न ड डुकः ॥ ॥ हि यन सुहि
 त दुि पर्य कं सु उ पा क र सं व व न व मान न स्या क क न व व वा सून त ड गु ॥ ॥ थ ना य नृ क न ड
 क कुक्षय ॥ ॥ वालि मा वा या क मंग थं ड न गु क चू व व गु ॥ ॥ मज गलि का धाय ॥ ॥ न चू थं व
 व व गु क चू ॥ ॥ य व प रू धाय ॥ ॥ ला त लू सें वो ड गु वा क ले नी क क चू ॥ ॥ अ भू जी धाय ॥ ॥
 इ म्मी न सि डि ड गु थं क चू व व ॥ ॥ थ वि वृ का धाय ॥ ॥ का प ल थं ला त लू व गु ॥ ॥ थ क चू पि का धा
 य ॥ ॥ अ नृ क चू या ना म ॥ ॥ वा ल्मी क धाय ॥ ॥ म लं पृ थं व व क चू ॥ ॥ ॐ छी वृ डा धाय ॥ ॥ वा क ल

रद्वे

ॐ
बीक. लोतलूव. दधूझाउ॥ थडलिकाभाय॥ ॥ कंधूस. मिक्कावथां हिमगु॥ थजग्निनाहिणी
भाय॥ ॥ लूसियालासजिनगु॥ थविषयभाय॥ ॥ लूसिरुतदुतसाक। थकूनखभाय॥ ॥
पातलिस. डीनविदाविथांवव. क्रिउगु। थविदाविकाभाय॥ ॥ थाउथाउविसंवव. पतमूयाव. क।
सि. धेल. दाक थं पिहांवयीव॥ थनर्कनार्वदभाय॥ ॥ गलिझाक. नलवाव. थपाददानीभाय॥
कठनकयाव. कंधा थडंवांनगु। थकरभभाय॥ ॥ वाकेदननवगुयात। दननभाय॥ ॥ लोतलू
वगुयात॥ खालीयभाय॥ ॥ माउसुवां डलेयात॥ जवूभाय॥ ॥ हायूजवावयात॥ अकाले
यलितभाय॥ ॥ खालसववस्पलक कूयात. मुखइःखकभाय॥ ॥ मासुथां हाकू संववक कूया
त॥ लालीतंभाय॥ नीलामाषंभाय॥ ॥ तीलुयानाम॥ तिलकभाय॥ ॥ पलरुववगुयात। वां

गङ्गाधरय ॥ ॥ हाकूरुटि २ वव नु या नाम ॥ नीलि काक्षय ॥ ॥ भ्राया मशाय या नाम ॥ गु ६ उं ग
 धय ॥ ॥ धन कच्छु नाग या न ॥ कु द्र नाग धय ॥ ॥ नाग पूष्यं व मधूकं पद्मा त्यल सचन्दनं ॥ ॥
 तल्लेपः पु दात व म मित्रे सूर्य नाग नं ॥ ॥ नाग पूष्यादि ॥ ॥ नृप के न ल ॥ ०० छमी ॥ पले स्वां ॥ ३
 काल स्वां ॥ ग्री ख उ ॥ धन तल्लेप न या स्पं भ्र मित्रे सूर्य नाग या क ॥ ॥ निली ख य स्त्री न ट व ने ला मा सी २१०
 ह त्रि डा द्वय कृष्ण बाल के ले पा द नं गः ॥ स कृ त पु या ग म दि सूर्य नाग नं क व दा ह हा नी ॥ ॥ वि सूर्य या
 नि त्री ष पूष्यादि ॥ लेप न ॥ ॥ जालि ना स्वां ॥ ०० छमी ॥ न कि ॥ ग्री ख उ ॥ ७ ला ॥ ज टा मा सि ॥ कं वि ह न
 हा कूरु नू ॥ कृ द ॥ भाले ॥ धन न पा य ॥ ॥ वि सूर्य कच्छु ना स ॥ ॥ उत्पलं चन्दनं ला धु म नी लं ग ॥
 लि वा ध यं ॥ जल न पि पू ल पा च स्फु ट दा हा क नाग नं ॥ ॥ उत्पला दि ॥ ॥ उहा स्वां ग्री ख उ

गुल्वाउ. कुमहा. इइकाकासि. स्वानउम. धनलंखसुनिस्पंयाय व्यानगनग. अरुहोहनाना॥ ॥ घालग
नया॥ ॥ कलंजसुफकदलांगलीकसुहाक ईधनवहंगवाजे: निमवमूजसुपिवद्विपकं. विस
र्यविस्फाटविवर्धिकासुं॥ ॥ कलंजाशनेल॥ ॥ कलंजसि. सुफकद. पगूयाव. सिखाइइ. अर्कइ
इ. हिंवाय. कंविहनु. गमसूज. धनपाकयासंत्वनकं विसूर्यककू. विस्फाटककू. वासुककूनामयाक॥
॥ ॥ कविहलउ. रायल. कंविहनु. निर्वासि. द्वावापू. धननिस्पंयाय। गमलमूनकेशवसा. कविला
तस्पंयाय. सूचकेशवसा. कविलातयमइ. दंडववया॥ ॥ दंडववया॥ ॥ मउधकया॥ ॥ वव
स्पंयाउविखुनि. मिसयाहनपाव. सीध. सिधन. सु. विकनखूडंपाय॥ ॥ हीनजावककूया॥ ॥
ऊठमासि. हुनधव. निम्वह. इयिविकनसूखस्पंयाय। सिखासुधने॥ ॥ सिखाहिमूयाककूया

गजि. लप. गन्धक. म्वाहा. खयल. पत्रतयू. इयि वि कन सुखु संपाय ॥ ॥ **द्याद्यल क कूया ॥**
द्या विक कूया ॥ ना क कूया उरु मरतव ॥ ॥ के वि हनू. ताग इत ज पात ३ पा उम सन कर्व सि कू २ रखा
 सिंखा ला ज धत नि सं पाय गु वि वि उं नय ॥ ॥ **पाल रवा वा सु. दंड वव सु. पाय उरु म. सम सु म ड**
या ॥ ॥ **कू. ६. ६. ६. मी. लव. न क व न न. अज म. सध. धत सम राग. च क न व डं पाय ॥** ॥
 या त लया डं म डया ॥ ॥ **मा ह व डि. ६. ६. लियू हा. कली ल लं ख सु नि सं पाय ॥** ॥ **मा उ क कूया**
 ॥ ॥ **म्वाहा. ६. ६. वप ल व हा. व क वि. वि हा. गुं. ६. ६. धत. गम मू. ६. ६. सु नि सं पाय ॥** ॥ **६. ६. का थं वा**
वा सु. स. व व क कू. यं ति हा. सं ति ड ॥ ॥ **अपा मार्ग हा. लं टा कि मि सि. ग्री. ६. ६. ह कू. धत सम रा.**
ग. ६. ६. मू. ६. सु नि सं पाय ॥ ॥ **क कूया ॥** ॥ **ह व उ. पा वा सु. खयल. साट सु नि सं पाय ॥**

कच्छुं संहिङ्गु रवाखि दड्यां हिङ्गु ॥ गन्धक कृत्तुकि सारु कंविहनु वकवि ग्वथ पलख हा
विहा धत इयिविकन सुखस्य पाय ॥ इयिकच्छुया ॥ गन्धक वकवि विहा कंविहनु हु
जी जी उदयू गम मू उ सति सं पाय ॥ इयिकच्छुया ॥ हिं गुक सि स्यधू कं व ह न दि जी ॥ ६०
मं जा धनि वृस्य धालि पलका समराग निसं पाय ॥ ॥ घात लया उं व व नान ॥ कंविहनु
लीलाय जम्बल उदयू साके धत गम मू उ सति सं ह्यया क माय दिन न ह नं निसं पाय ॥ ॥ का
उसं वा क्क रया उं व लं ह्यम गु ल व ल नान या क ॥ ॥ लं का सारु का उ ख माल देव दा वृ ध ग्व दा
धत समराग इयिविकन सुखस्य पाय ॥ वासू कच्छुया हियूया रुसूया गल हलया मान कच्छुया
न क वात या हिङ्गु ॥ ॥ हं स पाल या दा वकं सिवा गजि धत वृषू या उं रुट न के खा उ ल ख स न सं ख
न

कुमुद

नकंदव॥ ॥ दूटकी दावया॥ ॥ पाउधने खना छा २ या संचूक सुनि संपाय॥ ॥ पाउ हल
स० पाउ कृपि सुवा किलने वया॥ ॥ सिनू न० गुगुं न० वसां जन० सीध० विलाथु निधत समताग० वि
कनषु संरुय॥ ॥ वासूक कृआ दिन दया ववा का ककू नानया क॥ ॥ सिनू नादिने ल॥ ॥ गज
विषी० विखया० समताग० कृव्या उंयाय० पुनसिलं खनसिल० हुनं पाय० हुनं सिल दिन २१ इदनय॥ २१२
दिन २२ तामला संयो उंया वया॥ ॥ तातां मला संयो उंया वया॥ ॥ पाला हात स० पाउ सुवा
लग उंया॥ ॥ नले २ हि वयां पाय हि उ॥ ॥ छूमो० सीध० ग्रीलाय० गुलाउ० मनू० ग्रीखउ० विक
नखू संलेपनयाय॥ ॥ मिनरूकया॥ काकनरूकया॥ ॥ द्यावया० ककूया॥ ॥ मलिखा
न० नकझा नाभिसुया इइ सुनि संपाय॥ ॥ छासिनकाकया॥ ॥ थति नाना ककू द्याव

ॐ हा दिया ॥ ॥ अथ मस्तु वि वि कि स्ता ॥ ॥ बंगल क सुनहा ला का क र्पा सा स्ति म य ल कं ।
यव पि षं वि षं स र्पि व वा वु ष सु व र्च ला ॥ धूप ना र्थ य थ ला रं धूपे म न पु या ज य त् । आ दा वे व पु या क र्पे न ।
न्य न्या नु म स्तु वि का ॥ न गृ ङ्ग वि वि क वि य थ ला रं प्र तं ह व त् ॥ ॥ पं थ रो ला इ गु ष्ठा ला हा ष्ठा
पू ष स र वा या त क्क वं ७ सु य त वु ष त वृ सि सु ला छ ल थ त वृ र्ध धूप क व के म स्तु वि का ना न ॥ ॥
बंगल क म दि धूप ॥ ॥ म स्तु वि का या ॥ ॥ नि म्ब प र्प ट कं पा थ प टा ल क दू ना हि र्णा वा सा दू ला न हा धी
मू णी नं व न्द न द्र यं ॥ ७ क नि म्बा दि कं र वा ना या गं न र्क न या न्ति तः ॥ म स्तु वि स र्व जा ह नि क व वि स र्प म स्तु वं ॥ ७
स्ति ना ष वि ल या नु पु न स्ता व क्क ना न यः ॥ ॥ नि म्बा दि ॥ ॥ नी ह ख खं वा हा ष्ठा पा ला द वे ति क
कु कि आ ले इ ना ल त् अ म्ब ल क न हा ग्री ख पु न क व न्द न वि नि थ त वृ र्ध न स्यं म स्तु वि क क्क ना न ॥

लवंगमस्तुलकवन्दनं यच्छी मृदा जाक त्रिकलं वली सुसुवर्षं नितया सुको डमस्तु निकाशाग ठिदा
 षहकि॥ ॥ लवंगम दिलेह॥ ॥ लवंगं सुकम्पा ग्रीखतु ॐ ह्रीं मी मी सि नृपकमल ॥ धनं नृप साध
 न कस्तु वृत्तावनस्यं मस्तु त्रिनाय ठिदा षनाग याक॥ ॥ लवंगं ला मिठिकं यद्विलवंग वन नावनं ग
 र्कना मधुसंयुक्तं मस्तु त्रिनाय वल्लभ कथत्॥ ॥ सुखं ला दिलेह॥ ॥ सुकम्पा मिठि सि ॐ ह्रीं मी ल
 वंगं वन नावन विनि ॥ धनं कस्तु सुवृत्तावनस्यं मस्तु त्रिनाय नाग॥ ॥ जानीयत समं जिह्वा दावी पूग रुले
 समा ॥ धनी रुले समधु कं काथितं मधुसंयुक्तं ॥ सुखतुल्य कष्टनाग मस्तु त्रिनाय नाग कथत्॥ ॥ जानीयत
 दिलेह॥ ॥ जाययति मनू मीरु सि ग्वय अम्ब ॐ ह्रीं मी ॥ धनं पाक यास्यं कस्तु कस्यं तेन कं
 ३ यात्राय कंठ नाग मस्तु त्रिनाय नाग॥ ॥ पादं हं पुकू नूत पितका पाद जा रुतं ॥ तज्जलं कं पुकू र्वी
 दा

उनिदयकथा नक्षत्रमसि॥

निवद्रुग सुखला म्बुना॥

दिकं ववककु नाग॥

॥ श्वेतउभसुलजा किती सुतयाव-च्छात्रयाय पा० सु-पाददाह-पा० सु-
॥ **जातिपत्रादि॥** ॥ **महत्रिनायका॥** ॥ **थुतिमहत्रिनायका॥** ॥

नक्षत्रं नमसि जित्वा कुरु सोधु प्रियंगव। वतां कुरु मन्त्रनाथं गङ्गा मुखका निदा॥ ॥ वक्रवन्द॥

न। मन्त्रं कुरु गुह्योऽपि यगु उरुसिवा मन्त्रं थनन कालन वसुं रखा नयाते जदव॥ ॥ उनिद

यकअमस॥ ॥ हविद्रा हय यथा कुरु कालीयक मन्त्रवन्दनः पुद्गुलीक मन्त्रि अथ पञ्चपञ्चक मन्त्रं।

कपिलवित्तक मन्त्रवन्दनः पञ्चाविनेः लपयत्कलिते नहिस्ते लनाथं जनं पवत्॥ पिबनं नीलिका

यंग तिलकान् मुख इः खकान् नित्यं मुविजय किं पुं मुखं कुरु यात्मना हुनं॥ अहीन नीलिका यंगल

धर्मयन मन्त्रिने॥ ॥ **हविद्रा यगेल॥** ॥ **कं विहृ हाकुरु ॐ ह्रीं कालीयक ग्रीखु॥**

कवि उक्ति

नकि मनु पलस्यो पथ कुं म कपिन्क बाल पिला वरुन उव सिह व थन लंख सुनि स्यं ल पनया
यं दव थन वूर्ण विकन वृस्यं वृस्यं हा कूट्टि रवव पल ह वव नील वव स्वा नया शय नाग क्रि थं रया
पमा व ॥ तत्का वन म ना ह न स्वा न शयी व ॥ ॥ स्वा नया उनि विकं ॥ ॥ मजि स्वा वन्दन ला का मा तुल
गस्य य छिकं कर्ष प्रमा विन ते सुते लस्य कू उवं पथ न ॥ अज पय सु द्वि गु लं सुने म्द व नि ना पथ न ॥ नीलि
का पि उ का र्थ ग न स्यं ग द व ना ग थ न ॥ मुखं प स का प चितं वली प त्रि त व र्जितं ॥ सुफ ना व पु थो ग न रु व
रु न क स त्रि नं ॥ ॥ मं जि स्वा य ते ल ॥ ॥ मनु न क चन्दन ला हा त व सि य वा ॥ ६६ ॥ मी त्व
पु मान थन वूर्ण कू उ प विकन वृस्यं विकन या द्वि गु लं बाल सु द र थन वूर्ण न पा क या स्यं वृस्यं
हा कूट्टि रवव पल ह वव थन ना ग या क ॥ स्वा न वडा क नि व ला यूल म द या व व नि व दि न ॥ रु क ॥

२१४

यानानं सुवर्णयावर्णखाल इयीव ॥ नूपस्यानरुनजथया कनल गवपल बहा सुधू सा
धिसुनिनावलयनयाय पत्रतना ॥ तिलववगुनाना ॥ ॥ धत हा कूटि २ पत्रत खान सुवव
या ॥ ॥ सिद्धार्थकवया लाधुं सुधवंच पुलपनं ॥ तना ॥ गमवावनायूकं मनि वं मुखलपनं ॥ ॥
सिद्धार्थदि ॥ सुवक कूया ॥ ॥ ॐ का विहा गुवाड सुधू ॥ गमेवावन ॥ धत निनाव खान सुलपन ॥
॥ ॥ सुवक कूया ॥ ॥ विउकंद निमूलं व ॥ गमध ॥ तकि सुमवितं ॥ कल्कि पिछा पवले लंकन ग कवि
नासनं ॥ ॥ विउका दिनेल ॥ नाक कूया ॥ ॥ कूया ला रया नाव ॥ सुधू वीन उम स्य का पल सुधा
ल वि स्यं विकन सका नाव का कन डने ॥ ॥ आया म नूकया ॥ ॥ कवि ह नू गुं ॥ निनाव याय क कू
या ॥ खिगान ज कया ॥ ॥ खिगान ज कया ॥ ॥ नीह व नू सिया कू ॥ खूपात्र न सु सितखा इ इ

धनं निनावयाय॥ ॥ आकया॥ ॥ सूर्यलग्नं हंसपालं खलपत्न्या च धनं संखसु निनावयाय॥
 ॥ ॥ आकया॥ ॥ काष्ठसु सियासु मन्त्रव्यपिषी धानधनया हा निसंलयनयासु॥ ॥
 आकनाश॥ ॥ वृत्तिनिदाना कपविजमद्रुद्रागनिदानविकिसाधिकानः॥ ॥ अथ स्त्रीसु
 नागविकिसा॥ ॥ स्त्रीसु क्षयः या कनववगुः कनववगुः॥ ॥ निलाजउपुनयाषविठिंगिह
 लासुता। समतामनिवृत्तिनिमधूना स्त्रीसु नागनं॥ ॥ निलाजत्यायः॥ ॥ निलाजी कर्पव
 त्रिकद्रुः त्रिकुला गुडगुः धनसमतागवृत्ति कस्मिन् निस्पयाय॥ ॥ या कनया कनया॥ ॥
 अलं वषा हववृत्तिपीनकाजिक संयुतः। दोर्गमनागयस्या गुडमन हववृत्ति॥ ॥ अलमु
 खादि॥ ॥ स्त्रीसु या॥ ॥ गमसु यपिष्ठं विनिहनि कृष्टवृत्तिरुनं। गपयसावयूकं कजादिदो

गर्भे रुद्रं यथा हिः लसुं वली रुद्रजनी द्वयन ॥ ॥ रुद्र सावा सुनिनावपाय साइइ सुनिनावपा
यं इ या क न व व ना ॥ हा क रु न कं वि रु न रुद्र लेख सुनिनावपाय ॥ वृय ॥ या क न या ॥ क न व व या
त्रि रु ला नि वि वा म र्वा रु वृ वि ज क वा स केः नि म्वा न ग व ध रु क्ता सु क प र्णी नि ल द्र यं ॥ गु डू वी नु य वा ड
कु स र्घ प ना ग नेः सु हा ने ल म तिः सु मा य कं सु न सा दि न सा झू तं ॥ या ना ल्यं ज न म म्कुं च न्य स्य व लि वू या जि तं
सु ले ता ल स्य क उ दी न् ज य त्क रु रु ना ग दा न् ॥ ॥ त्रि रु ला दि ने ल ॥ या क न या ॥ ॥ व न्द नं कं रु
मा नी लं त्रि यं गु रु दि वा व ना रु न्का गु न्क रु र्थः क र्थ ना जा नि य वि का जा नि क क र्ति रु ग्म नां ल वं ग स्य
रु ला नि व न लि का न ल दं क रु म न गु न ग लं सु वः न खं वा पु न खं वृ क्ता का ला द म द नं त थ ॥ ॥ को ले य कं
वा न कं व ले ल यं वा ल कं सु मं ॥ सु न ले सु क प र्णी रु ला का शा म ल की त थ ॥ ॥ ला शा म र्क क प र्म व धा न काः रु

पूवभागादिदानविक्रिस्ता॥

सुमानिवा॥ पुपुली क कर्चनं समणेः खानमाजकेः महासुगन्धमिहपतलेन पुष्कनसाधयत्। पु
दमलेदोर्गल्लेककुसुमं पत्रं॥ अनेनात्यकगजकुवृद्धः पतनिकापिवान्। मूवाहवनिष्ठे का
मुष्मसत्यकवत्तं। सुहगदर्गनीयधगच्छेयमदागतं। वन्धयित्वा हनगर्हं स्व। अविपूव
यत्। अयः पूषमात्रातिजीवचसुवदागतं॥ स्व॥ महासुगन्धनेल॥ स्त्रील्यया॥ ॥ ६०
ति स्त्रील्यविक्रिस्ता॥ ॥ ॥ अथ मूवागनिदानं विक्रिस्ताधिकारः॥ ॥ अथ मूवे
वागनिदानविक्रिस्ता॥ ॥ आरूपयिसितजीवदक्षिमाघनिषवनात्। मूखमधगदाकुर्यः कु
दाषाः कदाहनाः॥ ॥ कर्मविपाक॥ ॥ पितृदवगुना निन्दासुदोमिथ्यतियल्यतः अह
हकथकार्यं तवेमूखगदादिताः हवन्निनवकस्याकमानूष। त्वस्य निष्कुनिष्ठवश्चासिरुपा

लदानं विस्तृतमम॥

श्रीमान्नकोपनः॥

गीसुनिगुविंवातकोपलपीव॥

निकीपीतालासोवविरुक्तः॥

आसूयथपिरुनववसिय॥

विद्धिलोनीतलो गुनु॥

टिककृथानु. र्वाड. थ. (स) नववगु॥

सन्निपातनविरुजावनकपिटिकान्विभो॥

॥ कर्क

॥ छाक

॥ वीयगा

॥ कर्क

॥ सुव

॥ म्

॥ सुक

॥ सु

लोपनूषोतश्चोसंयाफानिलवदनो॥ दाल्यनयविपाद्यनं अ

विकनलाकतश्च वागनरुववदनासु. नउभायीव. तय आभू

वीयगापिटिकाहिच सनूजाहिः समकनः सदाहृपाकोपि

कर्कसुखावगु. स्याकनगउगु. हियु. क्रिडिव. म्. सुसिसक

सुवर्गहिमूवीयनः पिटिकाहिनवदनेः हवनकुकरादाभू

म्. सुसिनिगुलिमंधवयिथं डनगु. कर्कसुखावगु. गमकर

सुककृको सुकसीतो सुककृको तथेवव।

सुसिसिखयहाकू. गाय. आसू. थथकथ

कुरुसि स क कुरु स कुरु वगु अदिकं दव ॥ ५५ सनि पात न व व सिय ॥
 : पिटिका हि निर्वीति नो । न का प स सु नू धि वं प्रवतः ॥ ५६ गित पु री ॥
 इंगु क कुरु न पी उ न पू कुरु सि नि गु लि सं ही न दा व या डा सु हि हा व क कुरु का उ उ नि र यी व ॥ ॥
 ॥ ॥ गु नू कुरु मो मा स इ सु मा स पि उ व द र्म नो । उ क व य य मूर्ध कि न व स्या र व ना सु खं ॥ ॥
 ध्या उ न व ला स इ सु र न डा व ला पा य थं य ल ग म य ग्व क या स्या थं स्या क डा क या नू ॥ ५७ म ॥
 कि नि व कुरु सि नि गु लि थ थ र न डा व उ र य ना सु खि धाय ॥ ॥ सु र्पि म उ ल सं का ॥ ५८ म द
 सा क उ लो गु नू : अ सो प र्य व दी र्थ न सु ट क स्या हि द्या न तः ॥ ॥ ध ल न ॥ ला थं क वा क लं कुरु सि
 स क कुरु व यी व वा स जा उ टा टा या क न द मा य अ हि द्या न न ध दा क न व व या ॥ ॥ स्व र्धं सु टि क

२११

संकाशं सांभवं प्रवर्तते लो। तयावर्धनं संपदं सृष्टं सवगच्छति॥ ॥ श्रीं उ निःसृष्टि क थं उ न मुं
तवमानन तसु कावः सु सु सि नि गु लिं उ थं उ न मुं नयः संपदं सव॥ ॥ सफ क दाली लयदा लमू
हरी तकी ति क क श हि ली तिः य स्या द य ह क स व द न व का थं यि व त्या क ह नं मू र व स्य ॥ ॥ ॐ
ति वं कृ ग हा पा ला उ व ति क सु खालू क द क ॐ ह मी इ मी न सि गी ख उ थं क का थ दा स्यं त्वे न कं सु
उ सि स क दू व व गु मा क ॥ ॥ मा क्रि कं मा तु लं ग म या प शुं व सु म रा ग कं । त क य द क सो रा गं मू र व ग
भ वि ना ग नं ॥ ॥ क रि व त व सि रु ल व स म रा ग या उं न स ॥ सु उ सो रा ग य या नं सु उ या इ र्ग भ ना ।
म या गं ॥ ॥ द को ष्टा यां ल भ ति रं व य स्या त्क र्मा नु व र्त्त त इ र्ग भ नि स कृ क्रा नि । उ र्त्त या नि ॥
मृ दू नि व ॥ ॥ द क मा सो नि गी र्थ कं प व ना नि व प न स्य वं ॥ ॥ उ म या हा नं सु उ सि नं त व मा ।

नहिवव. नाहिक हाकू उनिदगरक्षव नाय्. अयालादकं किनिव. नवयीव॥ ॥ अयातलसचाउ
ला. वानंरहास्यं वयीव॥ ॥ गीतादानामसुखाधिः वाग. अहितसमुवः॥ ॥ गीतादानामभय
थप्रायवातवहिवनजायनयूसिय॥ ॥ स्वयथूदकमूलकुनूजावान् करुवकजः। लालाअवीसुवि
हूयः। अहितानामनामनः॥ ॥ अयाहासधंतिमउगु. अकतव. थ। अयावहिवनरुवसिय
लालहाव॥ ॥ थप्रागयानाम. अहितभय॥ ॥ दनावत्रकिविकुमुतालुवाणवदीयतः॥
यस्मिन्नासर्वजोवाधिर्महालेनिलसंहिता॥ ॥ अदकंमउगु हासंमव. थकनापंस्याक. सया
कंरुनमानं जिदाघनरुवसिय। थमहालेनिरभय॥ ॥ दकमानानिनीयंकयस्मिन् नही
व। निवाप्यसुक् पिष्टासूजावाधिरूयापविदवाहिसु. विकृतसहपाकश्चस्वताएवदेव।

क्रिवायस्मिन्सा पकृन्नामजीर्णदन्तकृतागदः ॥ ॥ वंक्षी कयाला दका हास्यं वयाव
खयिलसदिवव। थयिरुवदिव। एतववन। जयनयूनायसिम ॥ ॥ थयययानामपनिद
वधाय ॥ ॥ थुकि संवक्षी कयाला दकं क्रिनिव। हियु। थ निगानवक्रमडगु। यिरुवदिवनवव
थयययानामउपकृन्नाय ॥ ॥ दन्तवृद्धमाससुसंनका जायनेमहान्। एवक्रिदका
एवलासर्वस्मादहिष्यातजः ॥ ॥ उमसंवां गुभं उलियाला दकं संतवमाननस्याकजायनप
न जवउमदकं सुनिव। हाडाहि जाशयंरुव ॥ ॥ थयानामसर्वदरुधाय ॥ ॥ मवृत्तना।
धिकादका जायनेनावुवदना। खलिवईनसंहासे जागानूकयुग्मम्यति ॥ ॥ वातनदन्त।
यात्रायजदिकं जायनपंवयीव। तववदनाशयीव। उमवावजवथ कलनिव ॥ ॥ थयगया

नामखलिबर्द्धनक्षाय॥

लानां च न सिद्ध्यति॥

शुक्रयागं॥१५ शुक्रशुक्रया। लनकेउमल्लेमइ॥

हानूजः । लालाश्रीवी कुरुक्षेत्राविहृत्यः साधिमा-सकः ॥

उं व व ड व कू कू त व मानं न्धे क त व मानं लो ल हायी व (ह) धन जाय व पू सिय ॥ ॥ १५ नायमाना

मञ्जुधिमासकक्षय ॥ ॥ ठिकट्टुसजिखान ७मसखा नायुवित्रिसि कल्लितस्यंदकसबूस्यंदक

॥ दन्तिलुगनाशायं वरुणाय धादिताः । दार्यमानाश्चिवन्जायस्य दन्ताय जाय

॥ विद्वत्तत्त्वनामसुव्याधिः सदागतिनिर्मितलुङ्गः ॥ ॥ दक्ष्याहासवनगुनाडितासियवा

[illegible]

यंतव ॥ धनं न किमिदं कलुषं लना ॥ ॥ किमिदं कलुषं लया ॥ ॥ वकुवकुं लवयस्य दनं लं
गय जायते । कुरुवा न कुरुवा विधिः सतं जनक संदिनः ॥ ॥ कुरुवु रूट सायु ग्वयसा कुरुवा न
न क्षाना वजाय न यथाय ॥ ॥ धनं यथा नाम लं जनक धाय ॥ ॥ गीत नूत पुवाता मयुस्य
नात्समना द्विजः । पिरुसा नूत कापन दन हर्ष सुता मतः ॥ ॥ बाउप दार्थ नल रूट य दार्थ न
लं रूसन लं खन उभ स धि न जाव तव व द नान उभ स दीक पिरुवरु सव कापल याव शव सिया
॥ ॥ धनं यथा नाम दन हर्ष धाय ॥ ॥ मला दन गगाय मु कुरु सा नूत स मरुवः । सुर्क न
वरु व स्य गहि द्या सा दन सुर्क नाः ॥ ॥ उभ या रवी न उभ स या पल पंता लं ग्वयसा शन व
क्षया लं धाव वा न वन जाय न याव हि । गभा उधां उत्प लि श सं वा निव साय का वूय ॥ ॥

॥ थयानाम। दकसुर्क वक्षय ॥

॥ कपालधवदीर्घसूदनानां सेवसुर्कना। कपालिकतिपति

नासदादनाविनासिनी ॥

॥ कपालसहि (गुठवव अमया मलनहि (गुठउआथो ववगु ॥

॥ कपालिकक्षय। सुकोउथां अमया क ॥

॥ अरुमि (ग्रनपिरुनद (गुठदकसुसषतः। गधम।

तां नीलगां वापिगतः सन्धमदकः ॥

॥ हितपिरुवमि ववपं अम सुदहवपवगव अमदकं व

व्यू ॥ ॥ थयानाम सन्धमदक कक्षय ॥

॥ दूर्ध्वकृत्वा गुठुवीववमुव (धनधनयगु। दकगु

लहनं वक मोषधं पत्रमारुमं ॥

॥ गुठगु दूर्ध्वया गव। कापलसधात्र विगव अमनगनावतस्यं

अमया कना ॥

॥ अमया कया ॥

॥ मदकसुदनं कृष्णकृष्णधितकवनंहितं प्रियं गुठिहो

लालां सुकोउपुति साननं ॥

॥ दाकनयवपूदकगु लहनसास्यनपाय। काकनहितर

व॥ ॐ यं गु० त्रिंशत् कृत्वा कस्मिन्संज्ञा सुवृत्तः दक्षगुलनाग ॥ ॥ दक्षगुलनाग ॥ ॥
 जिह्वा निलेन स्फुटगी प्रसूफा एव च्छन्म कच्छ दन युका ग्म ॥ पिला मदाहे नृपवीयत वदीर्घः स्रक्केन
 पिक ४ के ॥ ॥ तात नम तव द्वाक स्वध लवीक तव मानन स्याक क ४ न स्याथं चो २ न मि
 निव ॥ पिल नम तव द्वाक या हि य्भूय्याव ॥ द्वा उक ४ न स्याथं स्याक ॥ ॥ क ४ न गुर्विवहला
 विगाय ॥ मा सा कुयेः ग्म लिक ४ का रिः ॥ अ ॥ भगतायः न्वयधुः युगारः माला स संहः क ४ न वक्र
 मूर्ति ॥ ॥ ॥ नम नम ज्ञा यु ॥ ला पाय द्या प वं थ डं त या थं ॥ निमल क ४ न स्याथं स्यायीव ॥
 भयातल सम निव ॥ थ ॥ नम व हि व न व व सिय ॥ ॥ थ या ना म ड ॥ ला स ध य ॥ ॥ जिह्वा म व
 सुं रय ति उ वृक्षा मूल नि जिह्वा क्ता ह ग म ति पाकं ॥ जिह्वा ग्रवृत्तः न्वयधुः स जिह्वा मूर्त्त म्म जातः

करुनकमूलः॥ ॥ मच्छास्यं छावृत्त्यजाय नयूः पयाहासतवमानं कच्छवयीवः मच्छाकासनिव
कच्छक्रिनिवः मच्छाकासश्चाकः॥ लब्धवहिवनववसियः॥ ॥ लालाकनः कउपूनः सुखासं स
हृदयजिह्वः पथितालिषगिः॥ ॥ लालहावचासूयूमीनयूकथं इनगु। हृदयजिह्वकवेशमन
धया॥ ॥ ध्यानामहृदयजिह्वधया॥ ॥ नवगंवन्दनं कृष्णं जागीरुलसमन्वितं। गूंगुदीरुल
मऊनमिप्रितं लयथरुतः॥ ॥ लवं ग्रीखउकृदः जिह्वाकाषयुसियास्यनः धर्ममीललपंसं
वनयायः मकृच्छनाग॥ ॥ जिह्वायायया॥ ॥ अथतालूनागः॥ ॥ लब्धवहिवनववसियः॥
लंउवृद्धं दीर्घं। अगोवागवसिप्रकाशं। हृदयकाशं। अमृदुलिवदन्ति। व्याधिर्वेशः सलगुतिनाम
॥ ॥ लब्धवहिवनः धर्मायाहासः रुसनयापलदजवः मातोतिकाथं उनिवनसामनयूवः व्यासवा

यू. धसावहनपयू. ॥ धनाययानामसालगुधकनामतलंवेयलाकन ॥ ॥ लभधः नूतः ॥
ह्लाददाहपुपाकी. प्रागुकाह्यां तुकुकेलीमतातु ॥ ॥ मउगुसूयाथं स्याक. हियू. किनिव. थ. ॥
॥ लभधः नूतः ॥ ॥ धयानामसुतुकलीधाय ॥ ॥ मउः लभ. ध. लाहिनालाहिनाह्ला
ह्लायाकुषः सहनस्तीवृक ॥ ॥ धकमंगुनायू. कउहीनजायनयू. काननसहित. तववेदना. ॥
॥ धयानामकुषधाय ॥ ॥ कूर्मान्नगावेदनगीयुजन्मा ना. लभहयः कऊप. लाधनातु ॥ ॥
कापलयाजं धू. थं दाहानजाव. तववेदना. गीयुनजायनयू. लभधनववगु. धनाययानाम ॥ ॥
कऊपधाय ॥ ॥ पद्याकालंतालुमूलतु. लभधं विशाडकादर्वदं पाकलिंगः इष्टमानसं निरू
जं तालुम. ध. ॥ लभधयाका मानसयातसुगुषः ॥ ॥ पलयात्राकालं थं धकयाहासमंगु

२८२

[illegible]

तनववसिय ॥ ॥ अतानिवाधन्यतत्रात्रावस्थितः कृत्वा पाकसमूहवाचागम्भीरपाकिन्य
 निवाध्यावीर्यादिदावलिङ्गतिनयास्तितान्त्रे ॥ ॥ हिवहनयगृह्णीतया उंवा उगु क्रिसंववगु. तव
 मानं। क्रिवव. थयावल. निवात्रलयायमजिव ॥ ॥ थुतिदावसन्निपातनववसिय ॥ ॥ ह्नुटेः वि
 ताविरुसमानलिङ्गसाध्यायुदिष्टानूधिवान्मेकस्तु ॥ ॥ ह्नुटाश्नरुसहवगु. दकयाविक्रदवगु
 थुअसाधाधसंज्ञाना। थहीनववसिय ॥ ॥ थयानाममान्साह्वनधाय ॥ ॥ पिरुं कृष्णस्याकम
 लर्थल्लभं तालून्यवगालूपाकंवदन्ति ॥ ॥ पिरुनशत्रुसा. क्रिनिव. तवमानंमनिव ॥ ॥ थतालू
 पाकधय ॥ ॥ खदिवस्य बुलासम्यजलडा. विपावयगु। सप्रबुलान्तरुयेवयावत्याकं प्रदय
 यगु ॥ ॥ जाति कर्षनयगु। नि ककालकरुलानिव। ह्नु ह्नुप्रांगुठिकां कार्यामुखसोलाग्यवर्द्धनं ॥

२८३

दन्ताष्टगलनागमृजिह्वागाल्वा मयसूत्र॥ ॥ खयल^{या}त्पादेरलंखत्पाव. वृवा सुक्किवा शयकं खय
लदायक. थुकि सु. जिह्वा. कर्पूत्र. गमव. कका लाच्छूय॥ ॥ थत्त खय लंगुदि विडावनसं। दन्तनाग. मृजु
मिनाग. गलनाग. जिह्वा नाग. थक्का नाग थत्त नाग॥ ॥ स्वन्य खदिनादि॥ ॥ गले निलो विरुक्ते
वमूर्च्छि गोपुद्गमा संवतथेव गमनितं। गनाप संवाधकने स्तथा हूले निर्दि स्तून व्याधिवियं हिना
हिनी॥ ॥ गलसुवातन विरुन. स्तथा नमूर्च्छाया डाव. लासदः ख विद्याव. गलसुपी उ वपाव. लात्वाय
लेवयाव पुषा मव करे॥ ॥ थत्ता हिनी नायक्षय॥ ॥ काला मिमात्रः करु संतवा मग्रन्किर्गल
कठक पृष्टुगूकः॥ ॥ कालसिपाय थड. गलसु लात्वाय ककुवपीव. व्यायल दडं ववगु॥ ॥ थत्ता
स्तथा नाहिनी क्षय॥ ॥ खनः स्तिन। गमुनियान साधः स्तंक स्तसा लूक मिनि दुवकि॥ ॥ छक

स्तिलः गानुन धनानु साधु ॥ ॥ थ कठमालूक धाय ॥ ॥ जिक्ताग्रनूपस्य यथः करुणुजि
 कापनिष्ठादयस्सुकमिभ्रान् । ह्यापि जिक्ताखिल उमनागः विवर्ज्य दगता कमेने ॥ ॥ मया
 बाकासम उसा लोष्येसिय । मया दवने मनसा लोष्येव हिवनः शवसिय । थ जिक्तागमसमसिद्धिदवसा
 सियीव ॥ ॥ वलागयवातमननं वनागं लोष्ये कनास्य कगतिं निवार्य । तं सर्वं ये वा पुनि वार्यवीर्यी ।
 विवर्जनीयं वलयं वदन्ति ॥ ॥ तवमानं थ जासं मनसा थ जन्मगतिरुचीव थ उपायमड । गानतमा
 न ॥ ॥ थ यानामवलयधाय ॥ ॥ गलेव लोष्ये कवृत्तयुष्ट्या लोष्यानि लोष्ये सनूजापपन्नं । मम
 किंदं सुनभवमादूर्वलास संस्तु विपूनाविकानं ॥ ॥ गलसमडगुला लोतलूवगु लोष्ये नववसिय
 मालरपनिवः स्याकः नूग उगा कधना थं ठनगु ॥ ॥ थ यानामवलासुध कवेयलोकनेलाडा ॥ ॥

वृत्तान्तानः स्वयंभूः सदाहः सकलुलापाकमृदुनूचानाम्नेकवृन्दः पत्रिकीर्त्यगो व्याधिर्वला
सः कृतजः पुस्तकः ॥ गङ्गाजीक दाहानजाव मार्गहियू वासू किंवदं हटि ज्योतु थनाय।
यानामवृन्दधय। ॥ अथवलासुधय ॥ याननकिंवदीव ॥ ॥ समन्तं वृत्तममउदाहं तीव्रक
नं वृन्दमदाहवकी। तंवापिपिलैकृतजयकापा। ह्यं सुतादं पवननामजकु ॥ ॥ वाजास्यं गङ्गाजीक ॥
हियूतव कृतजव थवृन्दनायपिलुनयानरुलकायवपुसुय ॥ तववधशवसा वातवहिवसिय ॥
॥ ॥ वरुहियनाक कविनाधिनय। विगानिमाणं घृष्टगुनाहेऽनकनूकपादहनीतिदाधाहे
यागतश्रीवसुतप्रिनुपा ॥ ॥ गङ्गाजीक अतिनाक कष्टविनाधयाक। लातापजाव अतिस्वाक
तिदाघनववसिय। पातभावकीव ॥ ॥ थयानामनगप्रिधय ॥ ॥ प्रकिंगलत्वामलकाधि।

दावा ४

स्तिमां जं नि लायू नृपः कुरुयिरु मूर्तिः यालुङ्गं सकृमिवासनं च । सगमुसाधु नि लायू सं ह ॥ ॥
गलं सगृन्तिः जं न्येन पृथं चो डगु । गायो डगु । थयानि लायू धय । वधरुटि स्या क । ग्लयि रुरुन वव ।
वा (ग) न सा कथना थं चो डगु । लमु न ना क धनान कुसाधु ॥ ॥ थयानि लायू धय ॥ ॥ सर्व
गलं व्याप्य समुक्ति गायः (ग) (थ) नृजः सन्निवयनं सर्व । सर्व वंगल विडधि सुग (थे) वगु ल्यं खलु सर्व
यस्य ॥ ॥ गल व्यापन पं वव । मड । स्या क । थ सर्व उ । सर्व दा वन जाय न पृ । थ गल विडधि ना म । स ।
त्रिपात विडधि उल्ल ॥ ॥ (ग) (थ) मदान नृजला वनाधी नीवु क ना वायू गन नि रुना । कुरु न जा
गा नृधि ना त्रिगन । गल गलो य ह्य रिधी यन तु ॥ ॥ मड तव धड । जल वरु नयू । नादी सर्व डगु । नीवु
रुन । वायू वरु न पन डो व । माव कन ॥ ग्लयि न जाय न पृ । हीन त डो व । ॥ थो या नाम गलो यना

२८५

यधाय ॥ ॥ यस्मात्प्रतिनिःस्थितिपुनकाहिन्नस्वनः शुष्कविमूककणः कदापदि (गंधश्च नि
लामयवृक्षयः सतादः स्वसनास्वलस्यः ॥ ॥ नगलमस्किं धसावरुनपू स्वनथमथ कलुगडः
स्वाधीनमद्र कलुस (स्योन लिफनपू थवायूनादि सिय थथदव वातयाकेन स्वनमावकू ॥ ॥
थयानामस्वनसुधाय ॥ ॥ पुतान्वायः स्थपथः सूकठः गलायनाधं कू नूतजमन। समासनाव
निविवर्तुसंस्तु। पाद्युमू सर्वकृता विकारः ॥ ॥ गलध्यागु संमडगु गलसुतवयि ॥ थमान
तालं धाय ॥ विवर्तु धाय ॥ ॥ थानपाद्यमाकिय ॥ ॥ उद्याघनववसिय ॥ ॥ सदाहतादवय
थूः सुतासुमकर्मलपूटिविनीर्णमान्। पिरुनविशाददनाविकारी। पा (ववि। मषासुगुयन (गन
॥ ॥ हियूनगं गु। स्याक मड। कड उनि गलनक्रिवव लासवरुनपू थपिरुनइवसिय ॥ ॥

तु तं विकारया क॥ गलया ऊअ खव कुलनन चूया थं इ निव॥ थनायननागीसिधू॥ ॥ थनायमाना
 सुविकारी भय॥ ॥ स्फोटः सगादेर्वदनं समनाय स्यावितं सर्वसुखवागात्॥ नरैः सदाहैः पि
 टिकैः सुपीतेर्यस्यावितं वापि सुपिरुकायात्॥ ॥ **लाटाक कुन चू गुसह सुहाव गु** स्याकनत उ
 गु॥ सुकतिनं स्वालनायं स्याक॥ **थवागनववसिय॥** **काड॥ का सु थ रन॥** थनयायल दगव वरसा पि
 रुकायनयसिय॥ ॥ **अखयकायावयास्यः** मानसक पुकायजा ४ दक मूलं उव अर्ध ५ त्रिलिंगमति
 सोषितः॥ ॥ **चू गु सी स कायल पं वव॥** गुदिता नत माना ला॥ **ही स॥ कायल पं वव॥** डिदावन जाय
 नय॥ **थनायनमाध॥** ॥ **थयानाममहासोषितभय॥** ॥ **दकं वृचन सिद्धिनि स्यावदा सुहनं**
 जडाः॥ जिजासतवला सुगालून्य पर्वदक थ॥ ॥ **म॥ मया वाका नयथा क॥** थनायमाना मजिजा

२८५

श्रुतं । सकोटं धनयदग्नं ललागविनाशनं । कावकं नाम वृद्धं यंदनास्य मुखनागनूत ॥
 कयतिपासु यवाखानवाहाय । तिकद्वं नसाजनं भजमति । तिरुला । गुल्लोड । चितक । धेतवृद्धं क
 सि सुवलावेनस्यंगलनागनाग । दकनागमुखनाग । भूयनागनागनाग ॥ ॥ कालकवृद्धं
 ॥ ॥ नास्त्रासुसौवर्चं नहृदमृक्तं अंगलधूमकद्वं तिकं व । कायायवानां लथिवत्समंगलनागसे
 मावृद्धं विधेया ॥ क । अष्टनागध्वजधंगलाय विध्वं चकासावृषीनसाय । हलाय । ललाय ।
 द्विकरुननायक । अष्टकानां प्रवदकिवृद्धं ॥ ॥ नास्त्रादिवृद्धं ॥ ॥ इगुका । साताक । देव
 दाकीव । कसू । कयतिपासु । तिकद्वं । यवाखानवा । गपि । सैमंगल । समवृद्धं नस्यंगलनाग । भूयसिना
 ग । पीनागनाग । करुनाग । धेतमाक ॥ ॥ व्यानयाहा । सीसुक्तं संअनकपतिस्मंगय ॥ ॥

सन् २

दन्तलया ॥ ॥ कूटं दार्वीलाधुमय समंग पाठति कौका । तज नीधीनिका वा । रूर्तुग संघर्ष हं
तद्विजानां न कृष्णवः कृत्तिक ४ न जानां ॥ ॥ कूटमीकृत्ति गुत्वा उ मूक्त मन्वा हा य कृत्तु कि
तजमति । हन उ थन समराग रूर्तुया उं उम सुवय ॥ दन्तया विना ॥ ॥ दन्तलया ॥ ॥
कृष्णादि रूर्तु ॥ ॥ गुत्तु रूर्तु का पन सथा न वि से स धल स का नाव उमन का व कं ग य ॥ ॥ दन्त
लया ॥ ॥ हिं वि वि सि गुं थि स ध वि रूर्तु या उं उमन का व कं ग य की ल न न व य ॥ ॥ दन्त
या ॥ ॥ दन्ती त की व वा कूट हं ग ना ज न्य ता गु जी ॥ अजा जी वा ज मा दा य ॥ य छि म धू क स भवः अष्ट र्
षित थ व क्रि गं र व यू धी ग ना व ली ॥ गु ना नि स म रा ग म नि ॥ रूर्तु रूर्तु वि का न य न ॥ ह ज य गु ना न रू का य ह ज य
स धू स र्पि षां ॥ स क ना जी र व स भ द न ना जी स र्का र व ॥ ७ क वि न नि म ज नि नि व म भ स र वि र वि न ॥ अ न

सामं वृत्तं गुरुं निरुपगुं सुरुमुखा मयूला नां स्वयं वेवका किलानां स्वयं तथा । एवं सत्र स्वगी वूर्ध्द देवाना
मपि इत्तरं ॥ **॥ सत्र स्वगी वूर्ध्द ॥** **॥ ह२३ विहा कृ६ हिमनाज वकसि हंकं जी जी अजमं ॥**
॥ ६०००० वयं कृ० यी व ॥ **॥ सखाया स्वयं ॥** का किलया स्वयं स्वयं हयिव ॥ **॥ गु० योपा**
जायां न संपातिता रयी व ॥ **॥ २१ न संपा** जात महादवधं पातिता रयिव । दिन पुतिं ॥ **॥ २८८**
पू० व ॥ **॥ १०००० वयं कृ० यी व ॥** **॥ सखाया स्वयं ॥** का किलया स्वयं स्वयं हयिव ॥ **॥ गु० योपा**
मार्ग विउंग सखनी । ववा हया गुं चिना वली समा । घन नली रा पुक ना निमान वन्ति हि दिनेः ॥ **॥ २८८**
सुरुमुखा व ॥ **॥ सत्र स्वगी वूर्ध्द ॥** **॥ गु० गु० अ० मार्ग हा । विवि सि । नं खयूषी । विहा । हल ३ गुं थ**
॥ अति हा । सहाग वूर्ध्द घन सवला वनय ॥ **॥ हानि मनूष्य न कृ० या हि त व सु ॥ १००००० क्षा व ॥**

॥ ११ ॥

नरुयीव ॥ ॥ जागी यजु समं जिष्टा दावी पूग हलं समा ॥ धात्री हल मधू कं वक्त्र चितं मधू र्विष्ठा
खखवु (क ४) ना (ध) गलना (ग) पुन स्यत ॥ ॥ जागी यजु दिल ह ॥ ॥ जिह्वा मनु मी कृ सि ।
म्वव ज्म्व ॥ ६६ ॥ मी । सम लग दूर्ध्व्युत कृ सि तस्यं पाक या स्यं नय ॥ ॥ ऊउ । स्व न व न्ध गलना ग थान
माक ॥ ॥ अति विष क हू कूट वीज दव दानू पा ला उ व ति पा ला उ व ति धाय खा यू पा ला मा हा ॥
कृ रु कि । थत का थ दा स्यं कृ सि कृ स्यं तन कं गलना ग ना ग ॥ ॥ दावी गुडू वी सु मनां कृ लावे डा जा
य वा सु ति रु ला क वा यः । ओ ड ड य कं क व उ गु हा य म्ख वा क स्य सम य त्य दी र्धू ॥ ॥ मी कृ सि ।
गु उ गु । जि वि स्वा न्वा ल मि ति सि । ह ला ल ह ति रु ला थत वूर्ध्व या उं का थ दा स्यं खा उ कां ज कृ सि
तस्यं कृ रु सु थ डं न य ॥ ॥ कृ रु सु व व क कृ या ॥ ॥ बाल हा नि नि माल हा वान वि उ क हा

गंला विहा. पातु लिहा. दाक ॐ नमो विहा. विकल गि विहा. सात्रय विहा. अल उहा. यष्टय श्री
हा. धन काथ दास्यंतिका यावक १ साइइ १ खल लली क हा क र्ष १ धन खडं ज्ञा म सुथ न्यं इ
पायं इ. नं ना पं वं यं इ. त्वन कं इ. धु. तु भावनी कया ॥ ॥ नमो मति रु सियो इइ सुव लाव रु

य ॥ ॥ भसक कू ववया ॥ ॥ ॐ ह्रीं. ॐ मूं. सुधु वि. धति स्म राग धल कस्ति न वा वं सुथ

२ नय क्र स क्र न व सा स्व न ति निव. नी य क्रु के न व सा. तव पतिु न शयी व ॥ ॥ जिलि स्थान

ह वी ल. सुक म्पाल. पिपी. नमो. तडा सि हल. सम राग कस्ति न वा ला व न कं ॥ ॥ भसव ति न

के ॥ ॥ नमो मति ॐ ह्रीं. क र्ष व. स्वयल. सा घन. धन स्म राग दूर का यन सु धाल वि सं न.

के ॥ ॥ भसक कू ववया ॥ ॥ उरु ला. म विव. पिपी. उम सुखा. नमो मति. गु लो उ. मू

२८२

कर्णभागनिदानविकिसा॥

पालवाहायः थनस्यलगवूर्कस्मिन्वावावनकं। वममंगुः श्रुत्यासमस्तनायनागया
क॥ ॥ नूतिनिदानाकपत्रिकमसूखनागनिदानविकिसाधिकारः॥ ॥ अथकर्णभाग
निदानविकिसा॥ ॥ सुमीवः (६४) (६५) तमगानाधवचनन्समस्तः ग्लुमगीवकर्णियाः कना
तिदावेयथसमाकृतः। सुकर्णमूलः पुतिहावितागदः॥ ॥ वायुः क्रसपनयालसुवहनपंश
यिवः विधाकसुवडाजः क्रसपननिष्पसुकरुनंजुतिग्लुनयागं। थादावनः मगाशुस्यंथवरलुङ्गान
वागवापलपंहीसः आदिनजुतिग्लुनयागं॥ ॥ कर्णः (६५) तः स्मिन्वागणः (६५) निविधिविधास्वना
न। हेनीमृदंगमंखानोकर्णनादसुडयंग॥ ॥ क्रसपनयाइवनरुसवाडावनातापनिनगदता
यू॥ हेनीसुनः खिसुनः पक्षिमासुनः गखसुनः। थनतावडावः कर्णनादधाय॥ ॥ यदागदव

मि०

हंवायुः (म) तमा वृत्त्यनिष्ठमि० उच्चं (म) आनितावापिवाधिर्यकनजायत॥ ॥ गुगु कालस॥
नदनाडीस० वायु व्यापनमाडं (म) आनसहितयाडं वा निव० थथरुननास० क्रसपननमताव॥ ॥ रवा
सुश्रुतं॥ ॥ वायुः पित्तादिहिर्यकावेषुधाषागमंगुहं॥ कनातिकर्ष्याः जीरं सकर्षुजादउच्चात
॥ ॥ नदवहवपूनाडीस० वायुपित्तसहितयाडाववां कालुवंतपूयाथं स्रवयू० क्रसपननिगु
लिंविक्तनमलाक॥ ॥ ध्यानामकर्षुकादध्याय॥ ॥ विनाहियातादथवानिमरुताजलपु
याकादथवाविदधुः प्रवदिययंगुव० (म) निलादिनः सकर्षुसंग्रवठ्ठुनियुकीहितः॥ ॥ ॥ माउम
दायाथं० धनाथं० लंखसदायकाथं० क्रसपनसककूवयाव० क्रिवयाव० क्रसपनस० रुसनमदनयो
नाथं० इतिव॥ थनायमानाम॥ ॥ कर्षुअवध०॥ क्रसेनक्रिववगु॥ ॥ दवदानूववागुंथिनता॥

२२०

काकुष्ठसेधवैलेलसिद्धं वस्तुमूर्जं कर्तुं न निवारणं ॥ ॥ देवदत्तविहा. तुं धि. गतप्रध्या. कृष्ट
सध्वि. चालस. वासुनिस्पेवं क न वृस्येहाय ॥ ॥ कर्तुं न निवारणं ॥ ॥ न स पठं व मालसो सुक्रीड
कनयकृतः ॥ ॥ प्रवर्णं पृष्ठिना ग वृ कर्तुं न निवारणं ॥ ॥ जितिस्वानया हल. चाल. कर्तुं. निवार
कस्यनसुथशव. कसुद्वनककूवव. कसुनक्रिजाव. कर्तुं न निवारणं ॥ ॥ मान्नः
करुसंयुक्तककर्तुं कथा निव. विहा मा न्ना धितः ॥ ॥ आयायन कर्तुं न निवारणं ॥ ॥ वातस. ॥ ॥
धनतनसा. कसुधातइवन. वासुकन. विहननसा. हिमकन. ॥ ॥ धनतनसा. कर्तुं पृष्ठिका।
जायवपत्रं ॥ ॥ सुकर्तुं न निवारणं ॥ ॥ उवतां म दगता विहा विता द्वाधमुखं उपयते. तदा सुकर्तुं न
निरु संक्रि ता. तवदिकानः निवसा इह दवतु ॥ ॥ ॥ धकर्तुं न निवारणं ॥ ॥ कसुधातशवगु. ककर्तुं

वयीव नि (गमउ गमउ मूना व. ऊ (गम द रु स्पं खाल ग निव ॥ ॥ थ शाय यानाम। कर्तुं पुति ना ह ध
य ॥ ॥ थ या विकार न वा (गमउ माउ स्या य ॥ ॥ य दा वि मूर्क न्य थ वा पि न क वः सृज न्य य स्या।
न्य थ वा पि म क्कि का। उ द न्ज उ स्या कु व (गम वि नू धा न। हि स क्कि ना धेः जि मि क र्ण का म नः ॥ ॥
क्र स पा न स्या न स. के द. उ। इ वि स्पं पि हा व य म रु स्पं ना गी मू क्कि नि वा उ. इ व न वा थ क न सां ता
जि नि आ दि न थ था वा न ग व. वा थ इ सि य ॥ ता य म इ ॥ ॥ थ श ग जि मि क र्ण ध य ॥ ॥
प तं ग म ग न प य म्ब क र्ण (गम ग पु ति न्ध हि। अ न तिं व्या कू ल त्वं व रु गं क र्द क्रि व द नां। क र्ण नि उ
य न न स्य न थ रु ल रु लो य नः ॥ ॥ के उ वा ना आ दि न. क्र स पा न स्या न स. इ वि स्पं व न ग व
ऊ रु रु न स नं प्री ति म इ। वि रु या सू वि म इ। अ ति स्या क. क्र स प न स्या न स. हि टि र न स नि व ॥ ॥

२८९

कीटवमतिवृकीवा निस्यर्द्धमन्दवदना ॥ ॥ किंदचलनपंशनजवः तव व्यथमशयिवः केउम
सनजवः व्यथमसामान्यथां नीतिव ॥ ॥ ऊताविद्यातापुतवविदः धुर्द्विद्वत्तथादावः कृतापनः
पूनः ॥ सुत्रकृषीतावृणमनुग्रहः पुनोदधूमायननाष दाहवान् ॥ ॥ **क्रसुपातयात्रइवेनदा**
याथां यात्राथां स्यायुः रुसुदतजवः व्यथावेगनः कच्छुवेनोवः नोगदयुः वातादिदावनतडगुः क
च्छुः क्राउः क्रासुः क्राउः संयतिहावः स्याकः तवकूनः कावथां उनिशयिवः मीनपूकथां हिमू ॥ ॥
कर्णुयाकमुपिलनकाथविक्रदविहवत् ॥ कर्णुविडधियाकाहाजायतवास्यपूनक्षत ॥ ॥
क्रसुइवनक्रिववकच्छुपिलनशनसाः यमरक्षायुः कर्णुविडधिककूनक्रिववः क्रसुइवेनलेख
व्यापलदनसां कच्छुवलसां थ कर्णुविडधियायनपरुव ॥ ॥ **॥ सिन्धुप्रवतिवायूतिं सु**

वातयाकेन ॥

हयः कर्तृपूटिकं । कर्तृ (म) धर्मवर्दानं सिजानीयाडकलकुलोः ॥ ॥ विकनया पियाथं
 क्रिवनसो ॥ पूटिकर्तृधाय ॥ कर्तृ (म) धर्म ॥ कर्तृवर्दानं कर्तृधर्मवर्दानं कर्तृधर्मवर्दानं
 उंसिय ॥ ॥ नादातिवृत्तं कर्तृमलस्य (म) धर्मः बाधिर्यमनं प्रवर्तय वातात ॥ (म) धर्मः सुत्रा (म)
 दननं विदाहः सुपूटिपीतप्रवर्तय विरुतानु ॥ ॥ सदाष्टिनिनीनलदेववर्जितस्योक्तः क
 सपुनच्छास्यं ॥ तिहायिवः क्रसनतायमद् ॥ इवनेमनिवः नागवयू । तवयाकः दियुः क्रास
 स्यं क्रिहावः विरुयाकेन शवसिय ॥ ॥ वेप्रत्यकपुनिनसो गुरुत्वं सिध्दः प्रकृतिः ॥ प्रकृतिः
 वक्रियुक्तासुर्वीतिनपाविशुसनिपागा छावस्यनगधिवः दाशवलोः ॥ ॥ क्रसनतायमद्
 दासुः माउअपुः ॥ प्रकृतिः शवया ॥ ॥ ध्याकः समस्तनूपदगसाः सुनिपागशवसि

२६२

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ ताराशतकः ॥

यः शिवाय नमः तव मानं हि यः ॥ ॥ श्री कृष्णाय विना त्वं न ह्यहं हि पुनर्द्विजः । कर्तुं ॥ अथ
ः हवेद्या त्वां स नृजः पतिपातवान् ॥ ॥ क्रमपुनः नार्यक विक्रमं धनं आदिन ता कालं तव गत
कर्तुं न लक्षयेत् ॥ क्रमपुनः श्वनं विक्रमं श्वनं न वधे वधं शयिवः तव मानं स्थाकः ॥ ॥ १५ क
र्तुं ॥ अथ ध्याय ॥ ॥ ॥ कृष्णं नृपतिं तव हस्तं वागस्य विपातिकः । पुनर्द्विजं संयाग्य ला दनाद्यं
नादयि ॥ ॥ हा कृष्णं क्राउ सं ववगुः रुद्रं भावगुः आहुः आह वतन तियाथं चोडगुः वागनयकसि
यः ॥ ॥ अथः पात्यां हवेच्छावादा हया का नृजा निगः । नृकावा नृकपि लात्यां उत्पानः सगदा मगः ॥
पतिवः हा कृष्णं हि यः कर्तुं वयं क्राउयः नृकपि रुद्रं वसिय ॥ ॥ तं वा विदं ॥ अथ हवे विकावं व
या नृगी स्याय समानलिंगं । दाष विदं गल गल मूलं संमूर्च्छि गायस्य समीप नरु ॥ ॥ अथ गवत

नारायण गतिदान वि किं सा ॥

अतः विकारश्च न सापीनासवशुल्यः रुदश्च मिनिवः पिरुः अहीनश्च न साहियूनगनिवः गलसंथ
 कसं वातननू (गम) मच्छिनिवः ॥ निग्रनियुतं मुखनासिका ल्यां तं पूटिगन्धं पुवदक्रिनागं। आ
 धमिगितं पिरुमवृद्धि कुर्याद्यस्मिं विपाकवलवांश्च पाकः ॥ **॥ क्रासनं क्रासनं हि। क्रिववः क्रास**
स्वानसपिरुनः प्यात्रदयकः ॥ ध्यावननः गवमाननः क्रिदयीव ॥ ॥ पूटिगन्धनागनायधाय ॥ ॥
 तन्नासिकापाकमिति यवस्य द्विकेन गवामथवापिययः। दाधेर्विदग्धे नथवापिजनाललाटदं गति
 हतस्यते ॥ **॥ पीजं शसं लि। क्रिववः नागिया कपालहियः स्याकनः स्वविधिवः ॥ ॥ ध्यानाग**
पाकधाय ॥ ॥ नागमवृत्तं पूतिमसु विमिश्रं तं नकपूर्य पुवदक्रिनागं। आधमिगितं मर्मदि संपुदस
 यस्यानिलानासिकया विनिति ॥ **॥ क्रासनः क्रि। हि। द्याउसं वव ॥ ॥ नकपूर्यधाय ॥ ॥**

२२३

कहानूजागावह (म) निगदं तं गमाहः कुवथं विधिह ॥ ॥ थयालीव (म) वनसावाहल्य क्रामया
मददयी ॥ थयाय ॥ ॥ कुवथुधाय ॥ ॥ कहलं गवे लं व पिपलीम विवानिवा पाथपुष्पमूलं वला
नीमधूवसाववा ॥ अल्या कृष्णवसं गं गमनिक कर्कटस्य व ॥ उतसूधुं वने धा कं का (म) वामधूमिनिगं ॥ योनसं ॥
स्वनेहदं वतमकसहलीमक ॥ सन्निपातनिलकट्टे का (म) वामधूमिनिगं ॥ ॥ कदवसिक्क ॥ गुंथि ॥ पिपी ॥ म
नव ॥ पुष्पनामूल ॥ लानिहा ॥ हनउ ॥ साहाकस ॥ कर्कटसि ॥ थनचूर्णकसि नवायंतव ॥ काथदामं रवाडकंतय
कसिक्क उंत्वनकं ॥ यीनागनाग ॥ स्वनेहद ॥ तमक ॥ रुवीमकसन्निपात ॥ वात ॥ थया ॥ काल ॥ थमा ॥ थोरपउ ॥ थनस
उसक्त ॥ ॥ कहलादिलह ॥ ॥ वायुदनिववासिग्रसूनसुखासमेधवं ॥ पावननेलवाद्यीधं प
टिनासागदं हन ॥ ॥ दाकठनिवि ॥ दनि ॥ विहा ॥ साहाजन ॥ थनयावस ॥ मनव ॥ पिपी ॥ गुंथि ॥ स्पधू ॥ थ
त कल्कया उं वित नवू सं क्रामसथ उं ना मपूटिनागनाग शत्रं ॥ ॥ ना मपूटिया ॥ ॥ नीकोप

यागम दधजि युगावाला वाक दन क निनी कलम द्या ॥ ॥ पल को ती न स्व कान ॥ ॥ मूलादि हिर्वा त
 वृक्ष छिम म्मी जि युगति ता वा के व थं निना क्षा त् पुन स्य न ना नि क व य म् । सा द्या वि द ल्प ल व द्वा क रु
 सु ॥ ॥ जति ता उती न वा लो क्रो स या धा ह ल को ग हा के का न व ले पिल स्य व य गु अ दि कं वि द म्
 व ले ॥ ॥ अ स्म न क्रि व य ॥ ॥ जा क्खं वि ता मू द्ध नि सूर्य ग क सं लं ग कं ना ग म् दा ह न नि । आ लो ह लो दा ह
 सम चित्त हं तु वि नि च न दू म मि वे ह वा यः ॥ ॥ ऊँ उ म् उं वा न गु पी ज को प न वा व सूर्य या न ज न म
 ल क म् । सं गा य मा त ज व ध रोग लं ग क भ य । क्रो स स्था न म् अ नि हि यू थू कि स कू या ला व थं वा न न व न
 प नं ॥ ॥ ध रं ग क रा य भ य ॥ ॥ ना भ पु दी क व व य स ज ना बा धि रु तं दी क म् दा ह न नि । उ क्ता स
 पार्ग रु क रुः सु वा ना । नृ भ्य उ ती ना ह न नि ना म् ॥ ॥ क्रो स वा उ स्य मि क्ता उ थं क न रं भ स्य व यी

४५
व. ग्वञ्जकुयाश्व. वञ्जया ॥ ॥ नागदीक्षाय ॥ ॥ क्राम्यासावकृत्तपं. श्लेषाववातवध्वनय
काले धनय ॥ ॥ पुनीनाह्वय ॥ ॥ पुण्यघनः पीतनिगलनूर्वादिषु प्रवेष्टुं वमूदाह्वनं ॥ ॥
क्राम्यावताकृत्त. सिलाय २ क्रिववसा ॥ ॥ ध्यागप्रवधाय ॥ ॥ म्यालिंगि. श्लेषातिमान्नन
गहृपुनफयनि. श्लेषितव. ककुाकुसुहृदमधश्चजकुः यस्मिन्नागपवि. श्लेषमूकं ॥ ॥ क्राम्या
वस. श्लेषानाग्रयया उंवाले वातविरुनताकपूयाव. श्लेषरुत्रं कष्टनकु इसापिसा. याय रुतं ॥ ॥
ध्यानामनाग. श्लेषधकुकुनध्वनं ॥ ॥ गिनागुनूत्वमविनानागप्रवतनूत्वव. क्राम्यासीवव
ध्यातीकुमामपीनसुलकधं ॥ ॥ माउज्याकु. नूविमइ. क्राम्यानक्रिहास्यवव. श्लाहाहनवावं २ श्लाविव
व. लीलेवव ॥ ॥ आमपिरुयालकदाध ॥ ॥ आमलिंगनिवितः. श्लेषान्नघनरुषूनिमरुति ॥

स्वनवर्णविगुह्यपत्रिषाकस्यलकुटां॥ ॥ अम्वनयूथ्यवि क्रनगडगुल्लषा स्यावज्राकानसवा
उगुल्ले कवी कथं। स्वनमदयू॥ स्वनयां उनियां विगुह्याडं वरसा। ॥ अषापाकवडगुल्लकुटासिये॥
पाथादिनरुनीमूर्वापिप्यलीजातिपत्त्रवेः॥ दस्यावनेलसंसिद्धनस्यपककुपानस॥ ॥ पाथादिनेल
नामनागया॥ ॥ वाहापा। कंदिहवति। हाकुरुवति। मूर्वा। पिपी। जिह्वा। दन्ति। थनविकनवसंनस
थनेस्वन॥ नामनागनाग॥ ॥ नककनवीनयूथ्यंजात्यापनिवमल्लिका। उनेःसमेसुतेलं वना
ननागनंयने॥ ॥ नककनवीननेल॥ ॥ कलिंगहिंगुमत्रिवंलाजासूनसकदुलं। कद्वं वसि
ग्रजं शुभ्रमवपयीपुनस्यने॥ नेल। मसूयसयूकं कद्वेलेविषाचयत। आयीनसयूटीनससमनेवि
क्रिंतंयने॥ ॥ कलिंगदिनेलनामनागया॥ ॥ वासानिम्बपठेलपर्वतरुलेलीववदार्वा।

रत्ने

श्री गणेशाय नमः

मृति। त्रिकोणीय इन्द्राक्षिक कटुकं जय रुकावन्दनः। सूर्यः सिद्धमध्याह्निकं विक्रमिष्याम
किं गूलादिषु। स्वप्नाप्रकाशविषयीषु वानुजासूके मध्ये ववक्षते॥ ॥ श्रावणं निम्बं घालादवति
व्ययनं मदनरुलं सिपिः श्रीकृष्णं वाव सप्तगणवर्णकाथदास्यं दाय॥ कृत्तुकिं कृत्तुता इन्द्रालक्ष्मि
कटुकं तस्मात् नरकवन्दनं धनं। सलक्ष्मं त्वनकं दालसं वृद्धं न वं। क्रामयाथाधिनामयाक॥ ॥
वासिदि॥ ॥ गंगीक कृत्तुनि विरुलाव वि कृत्तुकारी। तर्गी सूर्योष्क वज्रदालवन्धनियं च। वृद्धं विवस्व
निलिलन जलनहि का। असाहिवातकरुजा नूविपीनसं वृ॥ ॥ गंगमदि॥ ॥ कर्कटसि कृत्तु
किं विरुला। वि कृत्तुकारि। तर्गी सूर्योष्क वज्रदालवन्धनियं च। वृद्धं विवस्व
लंखसुतसं त्वनकं क्रामहिदि रमिनया॥ ॥ नाशनायय॥ ॥ अथपीनानागः॥ ॥

रवा ३

संस्कारवशाजिर्धनजातिहाव्यः काष्ठेन्दुवेष्टस्य निवातितायेः पुजागनातिस्वपनास्यूनीभेवती वया मेधून
वायुः (भक्तः) ॥ श्री. खि. वल. अजीर्धुशय. धूत्ररुले. तव सत्रं चाले. तम वात्र. वक्रला. गच्छा लाया।
अ. रुया निरावस मोदस तापरुले. ऊ. उनं वल. किन संवा क्रसं देताम. खा. उलं खलताम. मेधून कर्म
सज्जतिगमटश्यास. तव रुस रुयास. अतिस्त्रयास ॥ ॥ संस्कारनदाष निवसि पुष्टा वायुः पुनी स्याय
मूदी वय दु। स्वयंगम मूर्धनि मारुदियः। यथा कृतमस्तु तथेव (भक्तिः) ॥ ॥ दाष सहि न या उं वा ठ।
गु. मा. उ. स. वा. ध. न. पु. वा. न. पी. न. स. ध. य. ॥ धू. गु. व. ल. स. मू. उं. व. व. गु. मा. उ. स. वा. न. आ. दि. न. पी. उ. न. पु. गु. वा. न. पि. रु.
नं. (भक्तः) नं. व्या. ग. ल. र. ध. न. रु. न. सा. ॥ उ. क. दा. ष. नि. ता. न. रु. न. सा. दि. दा. ष. स्व. ता. न. रु. न. सा. स. नि. पा. न. दा. ष. मा. द.
स. हि. मू. उं. वा. उ. गु. ॥ ॥ प्र. कृ. ष. मा. ना. वि. वि. धेः. पु. का. ये. त. नः. पु. नी. स्या. य. क. ला. रु. व. कि. ॥ ॥ थ. थ. दा. ष.

दक्षकापलपाव नानाअपथ्यसुववपाव पीजवाधनपनं पीनसुत्राययार्तं ॥ ॥ कुवः पुदुहिः नि
रसाविचूर्णगासमंगमर्द्धः पविदुष्टनामना उपडवा अयपनेयथविधा नृसंपुगिस्था ययेवसु
नाः स्मृताः ॥ ॥ ॐ हो कालवयु माउहियु गनीनमर्द्धनपाथ्ये उ निव विचिकें कटिवयीव मनू
ष्या पीनसुया उपडव वागले २ भवता पूर्ववृपज्ञाना ॥ ॥ भानजाविहिता नानागनूग्रवपु।
अनिकं। गलतालोष्ठ अथविनिस्तदः संखयास्तु ॥ ॥ ॥ क्रामवपूरुयावगाकयून क्रामन
वितायशकक्रिववा क्रामनहाववा गल थक चूदुसिमनिवा संखनिहिनं स्याक ॥ ॥ ॥ हवेत्सुना
पद्यातयुगिस्थाथानिलात्मके उक्रः सुपीननासाच अवाकुवकिपेलिक ॥ ॥ ॥ सुनसुयीव धन
रुस्यलि पीनसुनागवागसुताव काक क्रामनसहिगया उ क्रामनपिहास्यं वनसा पिरुयासुताव ॥ ॥

क्रो (म) ति पा ७: संग फा रु वे रु फ्रा नि पी ठि नः स धू म म ग्नि नि न सा व म नी व च मा न वः ॥ ॥ अ
मि गा यू व स को पं श व य्या स न पी उ न यू क न स हि त मी न हा या थं मा नू ष या न नी वी व ॥ ॥
पु षा म क रुः क रु क रं स्व ता पी ना बु जं च रुः उ क्ता व ग सः उ क्ता आ रु वे रु नू नि ला न वः ॥ ॥
स प्पा व स (म) षा न या ना रु वे सा गा यू उ नि या उं अ या न व यी व उ नि गा यू मि खा गा यू मा उ या उ मा
नू ष या ॥ ॥ ग ल ता लो वू नि व सां क उ ति न ति पी ठि नः । रु त्वा रु त्वा पु नि स्था या ने क स्मा त्स त्रि
व रु त्ते ॥ ॥ ग ल थ क्क मू रु सि मा उ वा स न अ ति पी उ न यू वा न रं थ प न स ध्वा या ना ग रु पा न
रु स्यं लि लि हा म व उ ॥ ॥ मू प का वा ष य का वा सर्व पु रु नि व स्म नः । पु क्रि य न पु न वी सा प
न च प नि उ ध्वा नि ॥ ॥ कि न सां म कि न सां सर्व दा ष रु व सि य । का स व द र ध्वा व । का स स गं ग रु न

२२०

गवः॥ ॥ पुनः नाना कृत्यापि पुनः नाना धियततथा॥ ॥ वा नं वा न द्या ह्ये न द्या थं वा धे न द्या वा
 नं वा न आ धा न द्या वा न द्या न गु॥ ॥ निः स्व स स्व नि दुर्न (भान नाना गंधं न वति वा) ७ वं इष्ट मति स्या॥
 यं जानीया छे कु सा धनं॥ ॥ कुरु न सा पिता गु अति न धा व कृताना पं क्रा सन न मता व थ थ र
 न ना सु अ सा धा॥ ॥ न का जे रु प्र ति स्या य न कृ भवः पु व रु न ता मा का व रु व जा नु नू ना घा तः पु
 व रु न॥ ॥ ही न जा य न पू पी न स रा य या हि हा स्यं व यी व मि र वा का उ य थ ज नु या नू (म द स्या क
 द यि व॥ ॥ दुर्न (भान स्व व दना ग भान वि न व ति स ४) सर्वा ७ वं पु ती स्या य न व स्या पु ति का वि दः॥
 इष्ट ता या नि का ले न न द सा धा रु व नि हि॥ ॥ थ सा कुरु न अ ति व रु न पू न कृ तां म सि व थ न
 पी ना सु रु न ग व ति क्ष ष न रु व सि य॥ ॥ थ क्र मा नू ष या पु ति का ल म द का व रु इष्ट रु न ग व थ

य क वा रु य ज व

मनुष्य असाध्यः ॥ ॥ मूर्च्छा निजमयः स्वगात्रिन्धुः सुखानवः किमिहादलिनात्रागमस्तुल्य
 नैनाप्रलङ्घनं ॥ ॥ अथासद्वनः किमिदं कर्मकुर्यादिति विनीतमिदं कर्म ॥ मायूरविभू
 तिधडः किमिदं स्यादकर्म ॥ निनात्रागयाथां क्रामादकाकमीनकथं हियकर्म ॥ ॥ बुधा
 वत्सगात्रीसजीलकंवकट्टिकं ॥ किं न भिवक्रियुर्गंसमवूर्ध्वका नयः ॥ चीनसंकुजं येव
 दाहात्रविपुनागनं ॥ ॥ सिपिगंसिः कृद्वीजनाली स्वां जीः कुरुकिः खातुः खातुः लेवं चव
 नुकम्पाः तेजोगात्रः विनहाथनसमतागद्वर्णकाथदास्यं क्रामासुधनत्वनं ॥ अथ अत्रविपीन
 सत्रायनागयाक ॥ ॥ ॐ निनिदानाकपत्रिकुधनाभनागनिदानं विदित्साधिकारः ॥ ॥
 अथ नउनागनिदानं विदित्सा ॥ ॥ वागात्पिलात्कहाडकादहिषादचतुर्विधः प्रायनजा
 ॐ तिपीनागः अथ वक्रनागनिदानं विदित्सा ॥ ॥

ॐ ति पी ना मः अथ वरू ना ग नि द न वि दि ता ॥ ॥

यतश्चान्सर्वत्र जामया कनः॥

॥ वातपितृ (श्व) धि. थननमिखायागमजृतिष्यन्ध्यागाविधि

वाङ्मूलनआयनयूवदना. समस्तमिखायागमाखानि॥ ॥ निस्तदनस्तुननामहर्ष. संहर्षयान्

कलिनातिपातात्। विगुच्छतावंलिलिलात्युपतंवागमतिपन्ननयनरवनि॥ ॥ मिखास्याक. कन

मरु. विच्छिक्कंकादिवव. मिखागालकड. ल्वया२मिनिव. मादसुदिस्येष्टाक. ॥ मषनयू. रघाड. वागन

पीउनयू. मिखास॥ ॥ दाहपुपाका लिलिलातिनदीधूपायनंवाव्यसमूकुयन्व। उक्राफ्रगापी

नकनजगाव. पितृतिपन्ननयनरवनि॥ ॥ दियू. ककूनक्रिवव. रघाडपुवानजानन्दरव. कून

काआथंठन. खाविहाव. खाविकोक. मिखावलू. कासू. पितृनपीउनयूमिखासथनचिद्र॥ ॥

उक्रातिनन्दगुनगाडि। मथः कडूपदहादतिनीतगावा। आवावरुः पिच्छिलववापि। कलातिपन्न

नयनेरुक्तिः॥ ॥ कौकन उने जा नन्द मिखा मंगु ज्या सु या सु उ न कृत या य रु मा त्रिव अतिरखा
उय् खा विजृति हाव ॥ ५५ ॥ मिखा स थन श्रवना स ॥ ५६ ॥ अनयी उ न प सिय ॥ ॥ ता मा ध्रु गा ला हि
न न उ ता व बा मः स म का द ति ना हि ता व । पिरु स्य लिंग नि द या नि ता नि । न का हि य न्न न य ने रु व कि ॥
॥ ॥ खा उ खा वि हा व मिखा झा उ मिखा कू लान झा उ पिरु या ल रु द थं दि न पी अ या ना व थ
ने रु व ॥ ॥ रु डे ने ने ति स्यन्दे न नानां च क्रिया वतां । ता व रु स्य धि मा जा स्यः न य न ती व व द ना ॥ ॥
वा ध न प न्ति स्यन्द अ क्रि या या ता स म न्ध या थ न न अ धि मा जा रु स्यं त व व द ना रु व ॥ ॥ उ त्या य
न रु वा स थं न श नि र्म थ न न थ । नि व सा र्धं व तं वि द्या द धि म रु स्य ल रु द ॥ ॥ मिखा झा या थं
म र्द न या ता थं स्या क । थ न ल रु द अ धि म रु या ल रु द सिय ॥ ॥ रु न्या दृ द्वि र्द्वि कः स फ ना ज

२२२

दधिमन्त्रकृजः षडांशसुफनाजघातिकासो निरुन्मान्मिध्मवानास्यैहिकः सुयुवः ॥
मित्रासावकनः ॥ अथ हविर्गुणस्य क्रमवान् ॥ अथ अधिमन्त्रनायनः वक्रनजायवपूनः वृणान
सावकनं वागनश्रवसाः क्रियामजियकं अथ वनवपनशास्त्रं पिरुननत्कृदसंमिखाभावेक
नं ॥ ॥ धवत्यकिरुलाग्नमातिल्वेकेर्मधूकनवाग्रीपशीनजनीमिलेजीनंदनगुर्दोपवेत् ॥
नेलं कालापयूकं कुनसंस्थादनयाहिनं ॥ ॥ खयलः लवत्खवः उरुलाः पिपीः कासः ॥ ५००
धर्माः श्रीपशीः मिहसिः ॥ अथ वृष्विक्कनयाजिदसाइइ ॥ अथ वृष्वं काससुधसं क्रिमिआदिन
समसुपीनसेः नासात्रायः नित्रत्रायः ॥ अथ तायां हिनयाकश्रवः ॥ ॥ वाधिर्यमानसकउत्वं
धानाचनयनामयान् ॥ ॥ अथ मिहादकासानां वृद्धाश्वकिपीनसा ॥ ॥ पीनसत्रायया

वक्रागनिदानविधिः॥

उपडवक्रसुनमगायुः क्रासुननमगायुः गवमाननमिखास्यायुः सनिवः अग्निमन्दः पास्त
वयीवः पीनसत्रायनधनधननयनासुअसाधाः॥ ॥ अर्वदं सुकधा ॥ ॥ अथ च त्वागार्गवतु
विधिः॥ वगुविधिं वक्रपिरुसूकं गुणैः नितद्वेदः॥ ॥ अर्वदशायसुथदकसुदने॥ ॥
॥ तिनिताना कपत्रिकमना सागानिदानविकित्साधिकारः॥ ॥ अथ च त्वागनिदा
नविकित्सा॥ ॥ उपरातिनफसुजलपुवेगमद्वेदकसुविविपर्ययावः स्वदाडजाधू
मनिधवनाच्च॥ कर्दिविषीयातावमनातिशोगत्॥ इवाकथं नानिनिमुवनाच्च॥ विन्मूकवा
गाकुमनिग्रहाच्चपुनकसंस्वदन् ॥ ॥ ककोपाकिनाहियादतिमययानात॥ गथाअनूना
वविपर्ययन॥ कुनहियातादतिमेथूनाच्च॥ वाघाग्रहास्तुमनिनीकुलवेनेगविकाना
ता २

जनयनिदावा॥

॥ काकरपदार्थनमिरवा सु० ला सु० ता उती नुंख सु इविज सु० ता उती
न सुया सु० ते जवक सु० सुया सु० नाडि सु० उम इ सु० तव नाय सु० सुया सु० तव कुरु या सु० तव धू न
रु या सु० धन वव पिना सु० अति वा नं २ थ वव पिना सु० प्या के व सु० न या सु० नाडि सु० प्या के व सु० न
या सु० लु ज सु० खि० को० का रु य० पिना सु० मिखा सु० का क प दार्थ न उ ज सु० अति रवा या सु० तम
वा या सु० भा उ सु० हा ज सु० अति० धन काय के य या सु० अ उ का न विपत्री त श्रव सु० अति न व इ० ख
क रु श्र व सु० मे धू न अति श्र व सु० रवा वि पि ज सु० अदि सु० वि कृ ति य दार्थ सु० या सु० धन सु० न मि०
खा ना य उत्य हि या क थ व २ अ नू नू य न ॥ ॥ उ दी र्घ वि द नं न र्ध मा सु दा ष स म न्द्रि तं । दा षे :

॥ ला व पा न च यू क ना मा न्द्रि तं वि दूः ॥

॥ त व मा नं व ध न मिखा सु ना द व० म उ गु० थ ल क ल

मिखा

यायुमात्रं। (म) रक्षाव. स्याथं स्याक. खाविहाव. धनशुभात्. कविति नि॥ ॥ मन्दवदनता
कषुः संनम्राग्र. पुती शूता। उस्नेवमतावाक्षाः संयूकं दासमादिनत्॥ ॥ वधतवमद. वा
सू. मंगु. खाविहाव. मिखायतिल. उस्नेश्वरसां दाषदवनि॥ ॥ कषुपदहास्त्रयूतः पकड
ननसंयंत्रिहः। सनकीपयगयलुनउपाकः स। (म) धजः॥ ॥ वासू. यलकूलयायुमा
ल. खाविहाव. मिखा (म) दवित्रिसिथं डनगु. मंगुतव. पाकनपू. नगुयापाकजायनपू॥ ॥
॥ ॥ उपकृष्टादक्रियदाधिमन्कावातात्मिकः सूदयतिउसअ. नूजातिनूग्रारिवसाधु
षुमुगाधिमन्कः खलनामनागः॥ ॥ ॥ पुवानमयासंमिखा खवलसंभ्राधिमन्कनायउध
जायातनाव. वातस्वहावन. (म) धनपयकं खनडाव. मिखा अर्थनधनायउग्रहनडाव. असा

धृशत्रुहाय प्रमुक्तधर्मधिमन्त्रनामनाय॥ ॥ वाचं वा नं प्रसूयति कुर्वे न जं च मानृतः नृजा
स्ववि विधाती वासुदेवा वागप्यया॥ ॥ वाचं रयर्ष्याय वाधनयन डाव. मिय नि सुं मिखा संवा
नन ती वयात शवध वागप्यय य धाय॥ ॥ यत्कृतं दा नृव नृजवत्स संद श्रुत वा निल दर्शनं य
त्। सुश नृवं य नृनि वाधमव नृजा नि पाका परुतं तद कि॥ ॥ मिखा कन मरु. मिय नि क धिन
मिखा हिय. नृज. मिय नि मिखा कन थ क. नृजा नि पा कन हाय स्यं मिखा भाव कन॥ ॥ यस्याव
इ कर्षु निना हनृत्का मन्या गता वा प्यनिला न्यता वा। कूर्या इजं वा कु विनाय नन। त मन्यता वा त मू पर
वन्ति॥ ॥ यत्कृतं वासुदेवा निगु या ज नृवत्स. क स यन स. भाउ स. क स स. नाडि स. थ त स वा य
न त द व यनं। मले र श व सां. मिय नि सु. मिखा सि सु. मले र स्या व क ल सां थ वाग या दा वन नि ध य नं सि

य॥ ॥ अथवा हि तपस्य कं सर्वे वा कि पुपयन। सदा ह (म) थ सा अ वा म स्या ध विन म मृ ता।
हृदिव नू. आ उ पा नि द कां. मिखा (म) उ न पं का उ थ थ उ ले हि यू न त उ गु. मं गु. स्वा वि हा व. पा उ न
या सु पि रु या दा म॥ ॥ अवे द ना वा पि स वे द ना वा य स्या कि ना या हि त व कि ना प्राः मू रू वि न ज्य
कि व या सु ता द व्या धिः नि ना स्या न ०० ति पु वि द्याः॥ ॥ स्या क म इ सां स्या क द न सां ग व स्या मि
खा या ना डि द क आ उ सां त व. वा न र आ उ स्यं वि क र व रू श व. ग व स रू न व स थ थिं गु ना य नि ना।
त्या न धा सं क्षा ना॥ ॥ म हा छि ना स्या न उ प कि न व य जा य न ना ग स नि ना पु रू र्धः ता प्रा स म थं
ह व नि पु न रं। त थ न न का ल्य हि वी कि पुं व॥ ॥ मा ह न थ नि ना स्या न ना य. त्या ख म या सां उ
य का या क का ले. जा य न पु ना य. मि खा या ना डि रू र्ध म इ. थू कि स र वा वि ह रू र्ध सां व यी व. अ ति न व

पञ्चसुलि लादि २

छानशुनशवः कूपदार्थस्य समरुतं ॥

नि ॥

॥ बालसुखासुखयमूगयाहावास्यं धस्यं मिखायागजयनयनं मिखाखिउ. हियू ॥

॥ मृदीकयस्त्रीवसुर्कवावमदमहामदतथेवसिग्रः रुलज्यंलाधुषपुलीकभगानि ॥
स्या निममानिपंवा नका हिमस्कावतथेवपिरु सर्ववृदावत्मगते पुसकं ॥ ॥ मिदिदि. ००० ॥

मी. सावल. मद. महामद. साहाजन. उरुला. उला. नाकि. समलागलंखसुनिस्यं लपनयाय ।

अधिमच्छुवाय. नका हिमच्छु. आदिगदेन. पिलासु. निनात्यात. सर्वाहि स्यन्द. थदकभावक
वं. अर्वद. मिखासुजांगुशनसांभावक रुव. पुसकं रुवं ॥ ॥ डाकादिगदी ॥ ॥ विममनूप

कुलवदिकृकृत्वाव विद्धं उतिहातियडेः आर्वमुवइष्ट मगीवयत्रे तस्यवदं पुसुमदाहन

कि॥ ॥ मिखाइसू संवंगु. विकानसू मूनसू याथं डनगु. खाविहाव. भृगिष्ठाक. मिखा
 स्यान्नलाक॥ थपूटिगु कृष्णसं उदाहानयाडा॥ ॥ दृष्टेः समीपनतवकुजकुनवावगभटन।
 वसंपवेच। अददनंवा नवयुग्मकतुः तत्सिद्धिमायातिकदावनेव॥ ॥ मिआत्रियासमीयस
 मशवकाल. मिखाइमसाक काल. खाविमहावकाल थगुक्रनाय. वृटिनिगुडिमशवकालथ
 नाय. अ। सलगुगुबेलसं उयकमजिव॥ ॥ स्यात्सकंकृष्णगंतसुवाषः संखन्दकन्दपुतिमा
 तवसं. विहायसाउपतनूपकाग। मथावगंसाधतेसंवदकि॥ ॥ अहिसान्दनिमिरुहाकृष्टल
 सुवडगु. मीनपूक थं डनगु. लेखथं वन्दुमाथं. नायू. आकानसबाठसूपावथं. वि
 कृटिधनखनइ. द्यानमदनिशव काल सुखसाधन उयकजिव॥ ॥ गम्हीनजानवहलं वगुजं

विनाकिं वावदकिं साधं। विद्धि नमधं पिसिगा दंतं वा-वलं निनाक्षम दद्विष्टवे॥ ॥

निपासुपासिउ सजायनपू. विकुटि सुपावववधं खनगु धागु कयाय तादव काले उयक मजिव

दधि सुषुटि सुच्छि ददव. ला पिचलनगा कपूव. विकुटि नाडिन व्यापनपूना सु. मिखा हलं न

खनम दयकनं॥ ॥ धागु कयाय भाय॥ ॥ द्वित्यन्तं लाहित मकन च विनाकिं।

वापि विवर्जनीयात्॥ ॥ पटल निगुलिं सिउ सवडगु. उनिदक काउयू. नाप्या सुमद॥

धाषुटि तादत डावे येन ना नन मान॥ ॥ उक्रा प्रपातः पिटिका वनं यस्मिन् नृवं संगः।

निहं वगुक्क. तदप्य साधं प्रवद किं विद न्यय निहित पञ्च गुल्यं॥ ॥ कोक रवा वि हा

व. मिखा सुपिटिका ककु. संग धां ववगु. हाक धाले सुषुटि असा धवे यजन न धाया। भवगु गुनि

किं हा कृ शाले सत ल्हा थं गायुषु टि शव काले थुषु टि असाधु ॥ ॥ एवमं समाजामनि सर्व
 नादि दाधन मस्या निगम उलेव तम किका पायन मजि नागं । सर्वात्मकं वरु यित वय मादुः ॥
 ॥ ॥ हा कृ शाले सक निने गायुषु वव काले दाधन मवा स्य हा कृ गुम उले नापं गायुषु थुषु
 कि पाक न जि दाधन यन यून यवे यलोक न ना नग मान ॥ ॥ अजा पूनी य पु नि मानू जावा स
 नाहि गालो हित पि किला रु विरु कृ कृ पू प्रव या त्य पति । नञाज का जानि मि नि वे व स्यत
 ॥ ॥ बाल स्या खि गु डि थं बा ठ गु वव स्या कन ग ड का ड नि थं थुषु स्यं वव हा कृ शालि
 सता य ड नि ॥ थुषु नाय ॥ ॥ अज का जानि धाय ॥ ॥ दा क सव ड स्यन सव ड कृ कृ जा धाय
 हा कृ शाले कृ कृ टि नू ॥ ॥ किं गु कन सप नि ता विन कलं ज न नू वी ज विन विता व किं । अपर

नतिदीर्घकालजमपिकुसुमं सुयुक्ताजी॥ ॥ किंलुकवृजयानसः पञ्चरुल्लवक्थवसुक्क
तायानसुथशनकलजसियापुक्तास्यं वलिनिदयकं थवलिनि किंलुयानससुक्तास्यं मिखामथ
उं ता कालनजायलपंथाडगुष्टि तिति कभादिन हाकृष्टलसुतायुवनयास्यं वव हाकृष्टलसुखुष्टि
नूवगु थनायदकां मावनश्रवं॥ ॥ थयानामपूष्यपूकनं जधाय॥ ॥ पुथमपटल्लां दार्ध
यस्यादौ धौ दकुवावस्तिता। अथ कानि सुनूयानि कदाचिदथ पत्थनि॥ ॥ वि(थपटलसुदाष
दातडग्गयौ दष्टि मिखाष्टलसुथाड वधन नूवनं डवानं वकनस्ययमरुतं। कदाचिद्व्यकृया
उं स्वनद॥ ॥ दष्टिष्टलं विकनति द्वितीयपटलंगत। मद्धिकामसुकाप्यपिजलो कानिचपत्थनि
द्विवात्रश्रवं वानं वपं स्वस्यनं शिनकं स्वनमदतं। निपटलसुदाषडानडाव हजिनि थं पति थं सु

नृप्या श्वथं खनिव ॥

वर्षं उमकमानि सः ॥

विन उ नि थ श्वः ॥ अग्न क सू न ता क प उ थं थ श्वः ॥

नृप्या नि म ल क च समी प नः ॥

थ सि प ट ल थ उ उ ख निव ॥

न जा व ॥

वल व न श्व सां म नृ प्या न म खं गु ॥

गु व ल स ॥

॥ म उ ला नि प ना का नि म नी वि कृ उ ला नि व ॥ प नि स्र वा च वि वि धां नृ

॥ वा क र थ श्वः प ना क थं थ श्वः ॥ किल न कृ उ ति या थं थ श्वः ॥ ना ना प

वि न उ नि थ श्वः ॥ अग्न क सू न ता क प उ थं थ श्वः ॥ खि उ म् थ उ ख निव ॥

॥ इ न स्त्रा नि ल

॥ इ न स थ उ प दा

॥ व ल वान पि वा ल थं थ श्वः ॥ वी पा न न प न्प ति ॥ उ र्ध्व प न्प ति ना ध स्ता कृ ती यं प ट लं ग न ॥

॥ व ल व न श्व सां म नृ प्या न म खं गु ॥ थ स्य सां गु ख उ गु ॥ क स्य स्य कृ नृ म ख उ ॥ स्व गु प ट ल स दा घ उं

॥ म हा न्य पि व नृ प्या नि च्छा दि ता नी व वां व ले ॥ क र्शु ना न्म उ ही ना नि वि कृ ता

३०५

निवमन्यते ॥ ॥ तव २५ वा नूपरुन सां वलुनयू सं गया थं खन क्रसपनमइ थं क्रसमइ थं
मिरवामइ थं विकृताकाल थं तुलानेयू ॥ ॥ यथा दाषं वन कर्तव्ये दाषवलीयसि अथ स्कुलस
मीयस्कुलं इनस्कुलं वापनिस्किने ॥ ॥ दाषनश्चाडः क्रासुः नायुः शक्यं उनिया नाग इ मिष्टलं सदा
षवलला उचानजवः सपती करवनिवः नापाक मखनिवः दाषन इनसा इनस्वाडगुखनिवः ॥ ॥
पार्थस्किने तथा दाषपार्थस्किनेव दध्यतः समकृतास्किने दाषसंकृतानीव पण्यति ॥ ॥ मिष्टलं ।
या जव खव सदाषन चानसा वापनयूसा नानावर्णखनिवः ॥ ॥ दृष्टिमथ स्किने दाषमरुदुस्वंच
पण्यति । द्विधा स्किने विधाय । न्यद्वद्वधावानवस्किने ॥ ॥ दाषमिष्टलयादथूसवानसा तवधउ
वस्तु विवावमुखनिवः निगवानसा स्वगाखनिवः ॥ ॥ दाषदृष्टिस्किनेति म्येन कंदे मन्यते दि

॥ निमिलित्वा सर्वदा धेनुं पठत्संगतः ॥ ॥ दासमिष्टं स रुट्पू नं चानसा स्वतां यं निव ॥
कृतास्वयाननिताखनिव नितापुता नपंधाता निमिलित्वा धेनुं ॥ ३५ ॥ काकु रयीव ॥ ॥ नृप
द्वि सर्वता दृष्टि लिंगनाग सुदयत ॥ अस्मिन् पितृमा रूते नाति नूटमहागद ॥ ॥ मिष्टं स सुकतिने
पठंतल अथंका नवाधनपं स्वया २ वस्तुक व्याकृया यमरु ॥ ॥ ध्यानाम लिंगनाग धाय ॥ ॥
वन्दादि लोमन कुंवाव कनी कुं व विद्रुता ॥ निर्मलानी वत गां सि ज्ञा जिष्कृतवप न्यति ॥ ॥ वन्तु ३०६
र्यं न गुति दका ॥ आकाश सु निर्मल या उंचा उ सां ध च न म ख ड ॥ ॥ उवंदिगु लिंगनाग रुनी लि
का काव संहितं ॥ ॥ प्रथम द्वि पटल सुवा ड तां ले सुख सा धा ॥ प्रियतल सुवं गुया कुरु सा धा ॥ सु
उ सुवन शव थ अ सा धा ॥ ॥ ध्यानाम लिंगनाग सा य धाय ॥ ॥ वातन वा विनूपा नि ॥

उमकीवचपत्निति। अ। विलान्मनूषा। तानि व्याविशान्नीवमानवः॥ ॥ वातनश्नसा नूपविशान्
शंयुः। रुटिखनीवः। वूलूयुः। झाडयुः। कटिलगुक्कः। अ। थ। व्यापनपूखनदयुः॥ ॥ विरुनादिसखशातन
कुवापतडिहुमन॥ नृत्तनः। लिखितः। सर्वनीलमवंचपत्निति॥ ॥ विरुनश्नसा। सूर्यः। पूलूरकिला
लंखसात्रगुः। पल्यसातावगुः। थ। तयानिजउमडवर्षा। तत्रपयुः। झा। सुखायाखूनक्याथे। ह्य। सुखायावन्निथं
नीलवर्षुखनिव॥ ॥ कहुननूपासंज्ञकस्त्रिया निवसिगानिवा। न। लिले। प्राविगानीव। पालिजाआनिमा
नवः॥ ॥ ल। शनश्नसा नूपडवदकागायुगुखनिव। लंखजाकथं। लंखनदकं। ताकपूर्वथं। खनिव।
मनूष्यन॥ ॥ पय्यडकननका नितमा। सिविविधनिव। रुनिगाम्यथे। कृकानिपी। तान्यपिचमानवः
हीनश्नसा। झाडखनिव। हाकूखनिव। झा। सुखनिव। मनूष्यन॥ ॥ सन्निपातनविजनिविपूगानीवप

न्यति ॥ वदुःखविद्विधापि सर्वरूपवसुमनः ॥ ॥ सन्निपातशून्यमानानाविजविजविजविजनीतता
वखनिव ॥ अनेकनानाप्रकारनसमस्तनूयखनिवसुकरनं ॥ ॥ पिरुं कुर्यापिनिनायीसूक्तिं सूर्य
नजसा। पीनादिगत। अशकसादितमवपन्यति ॥ ॥ पिरुनयाडाथं कुरुसाधनगलमच्छिदसूर्य
नजनकासु। उखजस। सूर्याउदयशवगुखनेमरुतं ॥ ॥ संकीर्णमानखशानेवृजानातिवव ॥ ॥ ३०१
कल्पवृक्षसिमा। पूलूरकिलाथनिगायानजथंखनिव। सूर्यतजआकादवपंतयान ॥ ॥ वअमिष
द्विधंन। गेलिगनासः मतः पत्रं ॥ ॥ वृताविधिनागज्ञाना। थलिंगनागनायधाय ॥ ॥ नागमनूषा
मावृगजः। पुदिष्टासायीवनीलध्वत। थेवपिलान्। कस्तूरकितः सानिगजः सनकं समस्तदायः पुरवावि
विजः ॥ ॥ ॥ हंसरमिनगुशरसा। कातनजायवपू। न्नायीधायपूलपूलकिला ॥ ॥ उधनूधायपत्रसा

सखा प्याखन थं नीलमयखनिव। पिरुन जायन पूया ॥ **प्लव्यानायूनागः** हीन जायन पूरुन साका उ
नागादि दाषन शन सा विज विवि उनाग खनिव ॥ ॥ **अनूनाम** उलं दद्या स्कूल कावा नूना वेहं। पत्रिना।
यीनिना। गखा म्नायी नीलवम उलं ॥ ॥ **काउवाक** रमिह लिम शव काले नवधं गुखाव शनं। **काउनेज** प
निम्यायीनाग शव काले म्नायी पिरुल रुध नीलम उलखनिव ॥ ॥ **पिरुताम** उलं नीलं काह्या हं पीत
भवव ॥ **प्लव्याना** वरु संहिग्धं लेख कन्द दूपा उलं ॥ ॥ **प्लव्याना** शन सा विजन लाके नं ख थं नायूना
न थं व दूमा थं नायू वरु न दयीव ॥ ॥ **वलत्य** धप लास रु उरु विन्द निवा रुसः मूकमान उनयनम
उल नू द्वि सूर्यति ॥ ॥ **रुसन** वन न पंथा उगु पल लास वा हलं ख दूटि थं नायूगु मिखा नखन म दलम
उल वाक र ला उं मिखा। गउ पिलु स्पं वयीव ॥ ॥ **उवा** लप धप जातं म उलं **प्लविता** त्मकं। दष्टिना। ग

रुवच्चिजालिंगनामप्रिदाप्रज॥ ॥ **आद्यपक्षमिथ्यावाक्यललाकमगुलथांजायत्रयूसिय॥**
मिष्टलेयागानानाविष्टविबिष्टखनशवप्रिदाप्रनजायत्रय॥ ॥ **ध्यानामलिंगनासुधीय॥** ॥
 यथास्वलिंगदाप्रलिंगनि सर्वध्वस्तवन्निव॥ ॥ **धिधिधेवधवदाप्रयाविद्रुमसुदाप्रनंधर**
नधुगुकधंसिय॥ ॥ **विरुमद्रुस्तनगतनद्विंयीतातवशस्यननस्यदक्षी। पीतानिनूणानिवमन्यतय**
: सर्वननः विरुविदग्धद्विः॥ ॥ **विरुकापलपंद्रुस्तनशवः आसुसंवत्समनूषयाद्विधे**
द्विनः प्रयुगुखनिवः कूटयंशत्रसां विरुनदहनपावः पटलसुव्यापलपावः क्रिनसुशत्रशवः मखनः ध्वस्त
ननाप्रिसुशकखनरुवः नाप्रिसुगीतद्वल॥ ॥ **द्विश्त्रशवविरुयातावः नाप्रिसुगुखन॥** ॥ **तथा**
ननः प्रयुविदग्धद्विस्तानिवन्तुक्तानि समन्यतः प्रिष्कृतितात्यः पटलवूदावाः नकत्वमायाद

यतिपुसः॥ ॥थथमनूष्यपिरुहवः॥थथमनदहनपूदद्विश्वकालेचूडवश्वनसनांतायुगुता
वपनं॥पटलसज्जलदाववाठकाले॥सुनिवलेसमिखानखनमदतं॥ ॥दिवाससूर्यनिगृहीतद्वि
पथकुनूयानिकरुहल्यतावात्॥ ॥लभककन्यासगितागितेनलाहतायस्यनवस्यद्विः॥ ॥
दिनसूर्यनननूग्रह्याक॥द्विश्वनशवनूपदकाखनरुव॥सूर्ययातजदगाले॥थथमनूष्यश्वनसा॥
लभकन॥कनन॥माउस॥तापशुवाव॥गवमनूष्ययाजगितापश्वनमनूष्ययाद्विहतेश्व॥ ॥धूमाक
थपथनि सर्वगावासधूमदलीवननः॥पुद्विः॥ ॥समसुश्ववथंशुखनिव॥समसुतावनाश्वनसां
थमनूष्यधूमदलीधाय॥ ॥थथपटलयादावः॥ ॥यावस्यजातादिवसुषुकुचुस्वानिन्
पादिवतनप॥थनू॥विशगतयस्यनवस्यद्विहतेजीयमौन॥वीदाघारिपन्नंनकलस्ययद्वत्॥ ॥ग्य॥

क्रमनूयान् ध्याय्य जातिन. दिनसंज्ञं राव. कथनं कु. चिकुटि रूप उवाच निवाग्ब्रूयादृष्टिं तज्जायमान
 शून्यसंज्ञां ध्याय्य नृति पत्रे या हं यो गु. वयामिखाया दृष्टि ध्या इत गु. पटले ससंवन पंशु राव जसा ध्याः ॥ ॥
 विज्ञानि नूपा निदिवा सप न्म सर्वविकारा न कलान संज्ञा दृष्टि वि नूपा सप नाय म. स्था। संज्ञा एते एतव
 वस्तुयानि ॥ ॥ विज्ञवि विज्ञाना विध नूपा दिन सख निव. सर्वदा वविका नो ध्या कला न्ध संज्ञा न दृष्टि वि नू
 पया तं। उपसु सप या क ध्या विकृति न माय के संज्ञा वना या तं। ध्या ऊरु या तं ॥ ॥ नूजा वग मध्या वग म कि नो
 नं न म्ही न क ति पु व द कि त स्थाः ॥ ॥ **स्या क ध्याय्य ग म्ही न क ध्याय ॥** ॥ वाक्पू न व विरु संपु विष्ठा नि
 मि रू त वा या हि मि रू त ग्या नि मि रू त स्रु ग म ना हि गा पा हू या स्रु रि स्रु द नि द र्श नै न्ब ॥ ॥ **पि व न नि**
ता दा ष डू व ल. नि मि रू श व न ध्या ज ति स्रु द नि द र्श न ध्याय ॥ ॥ **सू न वि ग न्ध र्व म हा व ग नां स्रु द र्श न।**
 ना वि व हा स्रु न स्रु। ह न्य त दृ ष्टि र्म नू य स्रु त स्रु स्रु लि ग ना न स्रु नि मि रू संज्ञ ॥ ॥ **द व ज वि. ना ग. ग**

३०२

श्वेदं दर्शनं शत्रुशत्रुः सूर्यादिसूर्यान्तः ग्वक्षया मिमात्रं ॥ ॥ अलिङ्गनासजनिमिरुसंहाधाय ॥ ॥
तज्जकिविस्मयमिवावतातिः वेदूर्यवर्धुविलाविलाति। विदीर्यनसीदतिहीयनवा। नृक्षमहीयात
हृतावदृष्टिः ॥ ॥ थूकिसमिखाविमिषरस्यवउगुः वेदानुनिववुः मिष्टसुथथशत्रुनासः घटसूय
रुव ॥ अतिस्माकदवः हीनशस्यं भाकंदव। ग्वक्षमनूयया अहियातधायः दायाः धनासूयाः पात्राथ द
ष्टिशत्रुशत्रु ॥ ॥ मूलं यकालवत्यावेधज्वमूषनयधयत्। तदसंयुक्तयश्चकोवाधपटलनासनं ॥
॥ ॥ मयूत निखाया हाः सूर्यायासनिस्संमिखासुथउं समस्तुर्ध्वपतलदकभाचकनं ॥ ॥
दृष्टिजाधायमिजलेसजायवपूनाय ॥ ॥ पुस्तार्थमितद्विस्तीर्णस्यावत्रकनितंतिग। सुस्वतंमदृष्ट
आमिउक्तेतद्वद्वनविनात् ॥ ॥ ॥ पुस्तपंचवत्रपूगुथनविसुत्रनहटिववुः हटिहृदयधायः नाय

इलसा। धसुनमानसधाय॥ लुक्कार्मनाशायधाय॥ ताम्पुमिखावाधनपंवय॥ ॥ पद्यातं मद्रका
 मयत्मानं वीयतसिन्। एधुमद्रुतिमांसासर्ववरुनंपकसन्निहं॥ ॥ काउपलेपतिथं उनिनाय
 नकार्ममा। ग्वेधेयांनसशय॥ ताम्पुलसविस्तननाय॥ धमासाम्पस्फुलनव॥ तिगुधं वाउगु॥ ॥
 स्फुनंपुसाविमानाशं लुक्कार्मपेवकं॥ धवासूः पिसितनित्तासूः विन्दवां लुक्कार्माः नितनिय
 ताः सगुकि संरुः उकायः ललनृभिनावधवविन्दः लुक्कार्मएवतितदर्शनं वदकि॥ ॥ कधि
 नपुमत्रपूनापावतायूस्त्रायूज्जर्मललसशवज्जर्मतादव॥ खाविमहाव॥ सन्निपातशव॥ धूत्रमि
 खासुवउंरुव॥ ताम्पुववुउनि॥ रुटिशविकृतिखुमि॥ मूटिरुमाधं॥ उनिताय॥ धनायलुकि संरुभा
 य॥ ललयादिवउधं लुटितायूरुलसवाउकाल॥ धनायज्जर्जनधाय॥ ॥ एतममात्रकायन

३९०

[illegible]

नृसजायनयूनाय॥ ॥यकः॥मथःसुभिजःपुसवेयःसान्द्रंयूयंरटिंयूयानसःगुक्तिर्ह्यादृष्टिसंधं
 तयाकी॥कडुपाकीनीनृजयूयनाह॥ ॥पाकनयू-मंगु-हाकूर-लेगासुभिसुजायनयू-क्रितवक्कानहा॥
 स्पवंमीव॥धनाययूयानसुभय॥ ॥कडूस्याडंवी-मिष्टल्यासुभिसुहृदिहिय-वासु-क्रिववहति
 स्याक-॥प्रभानधनयूया॥ ॥गत्वासुधीनसुमा-ग्ननहिनाःकुर्युः-आवालज्जघःस्वयूपनान्-गंहि
 आवीनृगनाडीतिवेकतस्यालिंगकरुयिष्यवरुध॥ ॥वगसंधिसुखाविलनहदवपंदाप्रयातद
 कस्पेहायकलधवश्चलज्जघन-उपयूकयाडं॥ ॥धनायप्रवधय॥ ॥भृगुनाडीकगुत्रिसुयना
 उकावहास्पेहय॥ ॥पाकसु-संग्रवयसु-स्यंयूय-भवःसगदसर्वजकुःस्वतंसिन्धंविद्वितं-
 यःउवकु-॥प्रभानधनयूया॥ ॥पाकनयू-कथिनशव-क्रिताव-ग्व-प्रयाशनववधय॥

[illegible]

नेत्रोत्पत्तिः

किं मिषतिगाम्भिस् वासु थिदाघनथथयानं। सुभिस् जायत्रयू किं मिदकस्यं नाना नूपद्रुत्रं ॥
तायू द्रुलव मिषतिवसुभिस् वनत्रयं द्रुवने मिखासुद्रः विने ॥ ॥ थसुभिजाधय ॥ ॥ हनीतकी
वयाकृष्टं खनाति मनसि ना। विहीतकस्य मज्जा निषिद्यली मलिवानिव ॥ सर्वमतस्तमं द्रुत्वा च्छा
गच्छीत्रनपषयत्। नागयकिं मिलंकडुपटला नर्वदानिवागुकिं सुभिजमात्मानियस्य नागेन प
थति। अयि वषणं पथं मासुने केन नागयत्। वह्निवत्तादयं नाम नृणां दक्षिणसादनं ॥ ॥
ह्रतउ विहा कृद नाति संख मनसि न विह्रतउ मनि पिपलि मनव थन सुमराग योलसुद्र
सुनि संवर्हि निदयक थवर्हि न मिखासु थसं मिखा वासु अश्वपटल अर्वद लाप्यावलन नाक
पूवगु सुनिकान नाद्रिकान गनक्किवर्षन ऊडाया वूटि ८ नवहाव थवर्हि नक्कि नशक थजन

३५२

मनुष्ययामिरुलसुशवशेषपुसाकयाक॥ ॥ **थयानामवन्दोदयवर्हिधया॥** ॥ **अत्यन्त**
मूर्खीताम्रावाकगोवर्मनधया। सासंगपिटिकात्रकानिउत्कुलात्रककुलाध॥ ॥ **इवन्कुरु**
थंदव. पियनकाउ. मियगिककुयात्वाडंवाउगु. हीन. जायत्रपूशनसातवधनिव. वासूय॥ ॥ व
र्मस्तुपिटिकाध्यावाहियनवन्दुवर्हिच। कुम्हीकवीजपुगिमाकुम्हीकासन्निपातजा॥ ॥ **मिककु**
वायनदउगु. यनमूननास. यन्निहायीव. धययापूथंडनगु. मिककुशनसाकुम्हीकाधय। सन्निपातन
शवसिय॥ ॥ **गविस्वः ककुलागु. चानकसर्मपसन्निताः नृजावत्यप्रपिटिकापाथक००गिसं॥**
हिता॥ ॥ **यन्निहाव. वासू. काउपनका। गउपायध. स्वाकनव. मिककुमियगिसं. वूर्णयाननाव।**
थयानामपाथकीधय॥ ॥ **पिटिकायाखलोस्तुमातिनहिसंवृता। वर्मस्तुगर्जनानामसना। गव**
स्त्रिना१

मर्मलक्षणः॥ ॥ **ध** क कृ कर्क म त व धं गु विकृटि र न व व मिपति स्या उ क कृ ध या ना म न कृ ना ध
 य ॥ र वा वि पि व ल या वि क्र ॥ ॥ **वृ** र्वा नू वी ज उ ति मा पि टि का म न्द व द ना । स र य ना व व र्म स्त्वा त
 द सो व र्म की र्पि त ॥ ॥ **उ** सि या पु धं क कृ या वा न त टि स्या क वि कृ ति ध उ क कृ ग मि प ति स्या उ
 गु मि क कृ **अ** न य र्म ध य ॥ ॥ दी र्घा कृ लः ख न स्रु द्वा द नू ध स्रु क ना हु वः व्या धि ना धा ति वि र व्वा तिः
 उ क्ता र्ग ना म सं ह्रि तः ॥ ॥ **अ** कृ ल ध य वा का ता हा स्यं व व क थि न य ध इ व न जा य न पं व व ॥ ३९३
ध ना य या ना म र वा ति ध य ॥ ॥ **उ** क्ता र्ग ना म ध य ॥ ॥ दा ह ना द व ती ता प्रा पि टि का व र्म या व
 या । नृ दी म न्द नू जा स्रु मा रू या सां ज न ना मि का ॥ ॥ **हि** यू स्या क **का** उ **उ** नि **क** कृ मि प ति स ।
 जा य न य् व ध ना य् न व म र व वि कृ टि ध उ क कृ सि य ॥ **ध** ना य या ना म अं ज न ध य ॥ ॥ व र्मा प वि

[illegible]

त्यक्तव्यं न च जायते । तदा ह्यव्ययवर्त्मनि । त्वमगविसानदा ॥ ॥ मिपति इव न त्रां पि
वनेनं वचूयुः वा ताधिकनमनिव । पिलाधिकन । मीनयूकथां उनिव ॥ ॥ अत्रागव्यवर्त्मधाय ॥ ॥
अनूजं वा कृतः । तलं वर्मयस्य न न स्य नि । पुक्लिन्नवर्मतदिशा । किन्नमत्यर्थमकृतः ॥ ॥ यिवन
यथा मरुः इव न स्या कृतव । न्वक्रमनू ध्या मिपति सुधृतिव्यथ शस्यं वि । वक्रयात्राय । पुक्लिन्नवर्म
धाय ॥ ॥ अत्रागव्यवर्त्मधाय ॥ ॥ यस्य वेतानि । धौतानि । उक्लिन्नकः पुनः पुनः व
म्यन्यपनिपक्वानि । अयनि । किन्नवर्मतत ॥ ॥ ॥ मलथां पिलाथां वव ककु मकीव । थमिककु
पनि । किन्नवर्मधाय ॥ ॥ ॥ विमृक्लिन्नधिनि । त्वं वर्मयस्य निवस्यत । नृगवागहनं वर्मजानी मा
दकृतिरुक् ॥ ॥ ॥ अत्र न तादताव । संधिया विद्यामरु । नयमरु । वागनहननया क मिपति सिय

॥ ॥ वम्पान्नसं विस्मंगकिं हतमवदनं । आवर्जतावृद्धमिति सत्रकमवित्रं विव ॥ ॥ मियति
याञ्जनसुखाङ्गु । गण्डवीकग्रन्थि नूपनवाङ्गु । बध्नातवशवमिखात्राय । हटिष्काड । लीयुनजायत्रय
ध्यायमानामञ्जुर्वदधाय ॥ ॥ निमेषनिनिनावायुपुनित्कः सन्धिसंग्रयः । वात्रयस्यधवम्पानिनि
मषष्पितितदिदः ॥ ॥ निवकिनक्कालेताव । नाजीसवातद्विस्मसंधिससवत्रपंवाङ्गु । उथंरमितकि
नकुक्कासं सनगु । ध्यायानामनिमेषधाय ॥ ॥ यस्मिन्नावर्मम । ध्यायानाहितामृद्वं कुलः । तडकनकजं ग
तितार्गकिन्नं प्रवर्तते ॥ ॥ ग्वक्रयामियतियादधूसकाडनायुञ्जुल । ध्यायानामनिमेषधाय ॥ ॥ अयाकीकधिनसूलाग्रन्थिवर्मरुवानृजः सकदः
पिच्छिलः कालः सत्त्वानावातनामगः ॥ ॥ मन्नीव । कधिन । मंगुतव । मियतिसग्रन्थिजायत्रय । वासून

नडगु. थमगु कालसि थं डनगु. वागनशवसिथ ॥ ॥ क्रमना नाम सव्याधिः लिंगवस्य त्रिं वत. उया दावा वा.
 हिः. (मथ कर्म्यु. डगि वर्मना ॥ ॥ क्रमधायानामशोय. लिंग थं थदवा संवयु. जिदा घन विवने मंगु. मिथ
 निया दू वनेय्या न थप्या न. लंख विहाव व. पल हा थं थो डगु. ॥ ॥ पुस व. रु नू द कं विष व द्विष व मर्म त त. वा
 ताया वर्म संका व जन य कि म लान्य दा ॥ ॥ य कि हा सं व व दू वने न. लंख व व. पल हा थं थो डगु. थ विष वे मर्म
 धय. वागनश व सा. मिथ नि कूं व न प य क न. थ जाय न प न मा स. व पि व उ हा यू. ॥ ॥ तदा ड कूं न ग क्रो नि कूं व
 नं नाम त द्वि इः ॥ ॥ थ कूं न स मिखा न ख न म रु त ॥ ॥ थ नाय या नाम कूं व न धय ॥ ॥ पु या नि ता नि वा न
 न प का न्य पि वि स कि व. य धा न्य कि मू रु क्ता नि सं लं र जन य कि व ॥ ॥ मि व कि न. वा लं र हा यू. वागन मिथ
 नि स. मिखा स. दू हा यू. थ मिथ नि सं. मिखा सं किं पु मू ग व व यी ॥ ॥ अ सि त सि त ता ग व मू ल का वा त्य त.

३९५

नृपि। पञ्चकाषः सुविहयः व्याधिः पत्रमदावृणं॥ ॥ हाकृष्टं सथशत्रुतायूरुलसथशत्रुमिपतिम।
हाकृष्टपदत्रपनं। तवेरुयानकथा॥ ॥ थनायपञ्चकाषधाय॥ ॥ वर्मपञ्चागयगतं पिरुनामानिसा
दयत्। कपुदाहं चकृन्तपञ्चसाकृन्तमादि। गत॥ ॥ मिपतिमायावसुपिरुद्विस्वं वाडकासु। मिप।
तिसुदकहायकवं। चासुहियू॥ ॥ थनायपञ्चकाषधाय॥ ॥ वर्मपञ्चागयमिपतिसुजायवपू॥ ॥
तिरुलायावसुपुस्तुलंगनाजनसुस्तु॥ ॥ वृषस्यवनसुपुस्तुलगावर्थावतसुमं। जजाकीवगुड्वीवशा
मनकावसुस्तु॥ ॥ पुस्तुपुस्तुसुमादत्यसर्ववतिवृत्तं पयत्॥ ॥ कल्कः कलानिगोडाकातिरुलानीलमृत्युल
मधुकंकीवकाकालीमधूपूर्णनिदिधिका। गत्साधुसिद्धविहयैः पुडुला॥ ॥ ३ निक्षययत्॥ ॥ उर्ध्वपानम। क्षपान।
मध्वपानं वसुथत। यावत्तनं उजात्रागमकांपानादयकषति॥ ॥ सुनकपूष्टनकवनकवापिग्रहापिव। नका॥ ॥

निमिलकालमीलिकापटलार्द्ध। अरिस्तन्याग्निमन्त्रनपश्चात्कापवदान्। वाग्निप्रवा। गषुसर्वप्रवागपिल
 करुष्व। अदृष्टिमन्ददृष्टिं कर्तुं वागुदृष्ट्यन॥ प्रवर्तवागपिल्लायां सकलसन्निहृत्क। गृधृदृष्टिकनं स
 यावत्तुवन्निवर्द्धनं सर्वत्रजामयंहन्यादिरुलादिमहाद्यनं॥ ॥ त्रिरुलायागिरुं१ हीमनाजयागिरुं१
 आदरायागिरुं१ अरिस्तयागिरुं१ वालसुदृष्टं१ धलरुं१ घनं॥ अमलथ्यपिपी। सावमीसि। त्रिरुला॥ उद
 लम्बान॥ ४४४मी॥ शीतकाकालि॥ मधूनस्थान॥ लिक्कगिनि॥ धनवृक्ष्याशव॥ धलसिद्धशत्रुशव॥ कूलहनु॥
 सुतय॥ पुष्पंतयमान॥ ४४४धल॥ उद्विधान॥ अक्षिपान॥ मधुपान॥ याशनं॥ मिखासजायनपुत्रायदकां॥ ४४४धल
 स्वजन॥ नकायाक॥ मिखा॥ ४४४धल॥ नरुदृष्टन॥ नागिसन्धिसमखंगुया॥ हियूया॥ पटलनपुवया॥ खनमद्र
 या॥ अर्वदया॥ अरिस्तन्ददकया॥ अग्निमन्दस॥ शीतनायनमिखानखनमद्रया॥ ४४४काकमिखावायस॥

३१६

वागपिरुल्लस्यसंविदासंल्लस्यवागपिरुनयिववव. वासूनगठ. सयतिकुखड. गायालेमखड. थ
निडनयनागसतिड. गधुयादष्टियागजथंनजदगं. वलवधयहव. सुमेसुमिखावायडयकनं. थडिरुल
दिमहायुतन॥ ॥ **तिरुलादियुतनउनागया॥** ॥ तिलीततिरुलायसीगर्कनाहडमूकः. पि।
हः. गीताम्युनायूकात्रकशिष्यन्दनामनं॥ ॥ **तिलीतादि॥** ॥ **हंगनाजवसुपुंयसीमधूपलन**
वागेलंयकूदयंपकंसुयदष्टिपुमकयगूनस्यार्वल्लिंपवित्तुंमासूनतत्रसंगय॥ ॥ **हंगनाजनेला**
हंगनाजवसुपुं१६६६६मीयावसुपु११विकंकूड११थनेपाकमासूनतत्रसुधनहायनउनागया॥ ॥ **नजनी।**
नित्यपणविपियलीमतिवानिव. विडिंगहडमूकंवजहयाथेयसुकमः. अजापूणगपिष्यववन्दुपण
वनामगः॥ ॥ **कंविहवडि. नीह. पिपी. मत्रिव. विलिसि. वूदकसू. हनड. थनेवालेसुइइसनिनावरु**

स्यं न उ नाग नागयाक ॥ ॥ त्रिरुला त्रिषर्ग डा का मधुकं क दूना हिनी । प्रपुली क सुश्रला विडिग ।
 नाग के ग लं नी ला त्र्य लं ग म लि व द व न्द न न र नी द्यं ॥ का वि केः प य सा उ ल्यं त्रि गु ण त्रिरुला न सः पृत
 प्रसं प य द न त्स र्व न उ नू जा प दं । ति मि लं च त्रि द ष व श्रा वं च का म ला व दं ॥ वि सृ ष्य प ट ली क पु स्ता द नं ग्व
 प धू न थ । र वा लि त्र्य पिं ज ल त्वं च क ग्म ना प र त न क थ ॥ अ न्य च व ह वा ना ग म न र क्का मा सु का न य तं । वा वि र्वा
 ति मि लं ह कि । ग म मू ण नु वि ष्ट ना । म धू ना पी व य त् ह कि ना रि कं व त्स जा ष यः ॥ ना स र्वा न्ना ग ये त्या सु ।
 ल स्त न ति मि लं य थ । न वे वा त्मा प रं । किं वि त्ते ष र्जं का न्य पा दि तिः । द द्धि उ सा द नं द द्ध य थ स्या दु रु
 लं च तं ॥ ॥ म ध त्रिरुला दि द्य त ॥ ॥ त्रिरुला त्रि क द्मी सि ॥ ०० सुमी कृ णु कि न कि सु क
 म्पा वि दि सि नृ प के ग ल उ हा स्यां इ इ का का सि न क च न्द न जी ख उ हा कृ ह न क वि ह न् थ न चू र्ण

३१०

पुण्यकं त्वना १ लग्न १ इदं लग्न १ त्रिरुत्तानसु लग्न ३ चतुर्दश १ थन पाकयासं नस्यं मिखाया नाय दकां ना
 नया क ॥ मिखां मखंगु ॥ त्रिदश न मिखास्या कगु ॥ खाविवव ॥ खूटिवव ॥ विसृष्य ॥ नाप्या नलवव ॥ कक्
 वव ॥ स्याक ॥ क्क ॥ क्क ॥ खालीत्य ॥ न ॥ हाव ॥ थन नागया क ॥ ॥ ॥ नास्त्रा कल्ययं काथ द
 नमूलनसंयुतं ॥ कल्लेन जीवनीयानां युतं तिमि ॥ लनागनं ॥ ॥ इगुक्का ॥ त्रिरुत्ता ॥ थन काथ ॥
 दनमूलनसंयुतं तयाव ॥ जीवनीयावसंयुतं तयाव ॥ नस्यं मिखां मखंगु नागया क ॥ ॥
 नास्त्रा युत ॥ ॥ भस्त्रव ॥ मूलं खसनिनाव ॥ थलकस्तिनवा नाव ॥ कापनस ॥ थय ॥ वरुनीमि
 खासं थस्यं मिखातिनक ॥ समस्तसुखनिव ॥ ॥ कर्कटासि ॥ कस्तिव नोपच्छा ॥ उं मिखा ॥
 सउत्र ॥ मिखास्या कनाग ॥ ॥ दार्दीपयटनि मव त्स ककवा इत्यर्गयशी दृषः ॥ जयानी ॥

तिरुलायल कडक हनिमन कां वृदा ॥ उषा कल्क कषाय साधित मिदं सर्पि पुन सं दनः ॥
 पिरुलाय कुरुव वृद्ध कृति मिलं सर्वेषु च व्याभिषू ॥ ॥ मी कृत्ति खाखं । त्रिप्य कृद्वीज पि
 पी इला नरा ॥ ०० ॥ श्री । आदग । एमाल हा । तिरुला पा ला उ वनि कृद्वि खाख कं क म क म
 थन स लग का थ या ती स थल वृद्धं न स्यं सम स मिखा या व्याधि नाग या क ॥ ॥ ३९८ ॥
 मूलं च न त पृथ्वा ग्रग भेकं । वृहती न ग लं ये व ते ल दूग्धं स मं य वे ॥ ॥ ३९९ ॥
 नाग पु ना ग नं ॥ ॥ गाय जल हा । विहा । साय सा । दा क ॥ ३९९ ॥ त ग नाय । थन स म लग
 त्रि स्यं वि क न इ इ स म लग वृ स्यं का स स थ स्यं मिखा या व्याधि नाग या क ॥ ॥ ४०० ॥
 मं ३ वे ह न उ मं । मं २ अ म्ब न मं । मं १ थ स ता या मं नि ना व गु डि द य कं वा ला व मिखा स र्वा य र वा

विहाव. मिखा स्या क नाग ॥ ॥ सध्वि. गुत्वा उ. वृर्ग्या उं स्वउ सनि नाव ध्यल स वा ला व. ता युका
पत स. थाल विना व मिखा स नि कि नं के क्का र या य. दि यू. मिखा स्या क नाग ॥ ॥ हन्त्या र्हे न स क्का र
या स रु नं. न का न्ध ता. गभ स क्का र व क्का र. न स जि न था ष यु गं पिलि गा. म पि स मू कं म धू ना व गु क्का र ॥ ॥
सा ष न. समू ड रु न. थ न न मिखा स उ ला व. स नि का न ना व. मिखा क्का उ ख टि नू व ना ग ॥ ॥ पि पी. सा
स पि या ती स वू ना व मिखा स उ न. स नि का न या ना व ॥ ॥ न सां जन. उि क द. नि स्यं मिखा स उ न पि व ल व
व ना ग ॥ ॥ स्वर्ग मा कि. क सि स नि स्यं मिखा स उ न. पि नी न वू व या ॥ ॥ वृ टि नू व या ॥ ॥ ॥ ॥ पृ ष्ठा
ऊ मा र्ज ग सि ता द मि रु न नं ख. मि नू ल (गे नि क जि ना म नि ये: स मां से: पि ष्ठे लु मा कि जि क न स न डि य
च हं न्या कं वू क व लि मि ला र्हे न व ना ग न् ॥ ॥ ॥ पृ ष्ठा का नी स. न सां जन. सा ष न. समू ड रु न. ना रि स

खः सुधुविः उप नू म न गी ल म वि व थ त स म ल ग नि स्यं क स्ति स क्रा स्यं मिखा सु उ ल स म ख वि नू व या ति
 मि ले न ग ना न ॥ ॥ मू का गी ल न ग व वा स म वि व सि नू क वं क रु लं । दा वी तु नू क सं ख रु ने न ल उ का ।
 ला नू सो र्य ज नं । तु ल्य वू र्ति न मा कि क वि नि हि ग न न ज नं न स्य नः क तु म म्म नि न क ना ज ति मि ले पि न्ना
 प द रु ष व ॥ ॥ क सु उ ग हा या दू र् वि हा । म न व स नू क व सि क् वि ला धू मि ना हि नं ख स म् उ
 रु न ज य मा सि अं गु सि थ न स म ल ग क स्ति न वा ना व लं दा स न स्यं मि खा सु उ स्यं स म क मि खा या वा धि
 ना व ॥ ॥ मू का दि ॥ ॥ मं जि ष्ठा म धू का त्य ला द धि रु न ल व क्ती ला । ग न वा व न । मा सि व न न नं ख
 पू उ नि वि नू ला लि न पू ष्यां ज नः स भि न व व लं स मं ज न मि दं ग लं स दा व रु ष । स नू क द म ला पु सा नि ग
 नू जा पि ला म गु क्रा प हं ॥ ॥ म नू धि ॥ ॥ ॐ ह्रीं उ ह्रा स्वां स म् उ रु न ल व न व कृ ग हा । ग न वा व न ज

दामासि न कृत्त न न नाति सं ख न ज या न क । ग न्वा । गाली स । पृथ कानी स । न सा जन । धन स म हा ग नि हं
मि खा स रू स्य मि खा या वा धि स म क ला व ॥ ॥ म जि ह्वा दि ॥ ॥ जि लि ह्वा न रू ल १०० पृ उ म कि जा
कि । ग म उ १०० पि यी । ग म ६९५ म न व । ग म ६९५ धन लं ख स नि ना व गु दि वि ठं का य मी या या इ इ स वा ला व
मि खा स रू य मि खा वा उ स । वा स स । ख स न ह इ धं वा उ गु ला व ॥ ॥ ल व ड क र्पू न ख य ल न म
स खा न सा व । धन स म हा ग र ना ॥ सि ज ल रू दा स जं जन रु य म न क्का य का व । ध नि या ल उ नि न म र्द न या
य कं ग र उ स जं जन न य उ म स ल व कि जं जन । व कि कं ग र उ स न या व म र्द न या ना व मि खा स उ न ।
स म क मि खा स्या क ना म ॥ ॥ ज पा मा र्ग या हा जा कि ती स वू ला व नि ना व सि ज ल रू उ स न या व म र्द
न या य ध उ म स व न जं न उ न मि खा या न ग ना ग या क ॥ ॥ ह न उ वू रू स ध वि न सां जन स म हा

निर्वाणनिदानविधिः

गयाइं निनावमिखासथसंमस्तु निमिलनागनागयाक ॥ ॥ हनउ निम्वयउ मवव पिपी मुधि
विहा विहनउ नाहि संख विदिसि कृद कसु स्पधवि विगत क लाउ समुदरेन थन स्मलग बालस
वांननि नावमिखासुउरे ॥ बालखयामिखासाले हियु आउ लाव तवसितीसुवाले पटलनताकपुव
या ॥ कलिसुवा नावथनसुतांमडुया ॥ हीमनाजतीसुवाले मिखाआउसे बालुतीसुवाले समखदि
नूवया ॥ कलीलतीसुवाले मिखाहियुया ॥ कलीललंखसुवाले मिखावासुस स्वधिसंगव गमसुसुवा
नखविदवया ॥ ॥ थनउकपमिखागया ॥ ॥ वृत्तिनिदानाकपनिजमनउनागनिदान
विकि साधिकावः ॥ ॥ अथनिर्वाणनिदानविकिसा ॥ ॥ निनागमस्तुजायने वानपिल
करुहिरिः ॥ सन्निपाणनवकन कयनवजिमिलथा ॥ ॥ माउयागोयजायनपन वानपिल ॥ ॥

सन्निपातनः हीनः कृयनः क्षिमिनः थानन जायनयनं ॥ ॥ सूर्याविरुद्धिहदा स्यां नं खकनन (थेवचा
य स्यान्निमिरुं निवसा नूजं वरुव किगी गुनि निवाति माजं ॥ ॥ सूर्याविरुद्धिधायवा (गम माउ स्याक
गुः नं खन थं थं स्याक गुः कृनिमिहीन थ रन माउ सविकार श याव व तव मानं चाक्र स स्याक वा नया
पिरुयामीन दहन पृथो उनिवः (प्लषया धा लुयू मिखा हा मनिवः जिदाघयानाना नूज नन स्याय ॥
हीन जायन पूया पिरुया स्याक थं उ थं खवः कृयया इर्वलु या कृयानानं मलाव ॥ क्षिमिया चा रन स
या थं स्यायः लंख थं हि थं ज्ञासन वयीव ॥ नितागान शव लटि स्याय ॥ मिखा कृमि सग थं सूर्यायान
जवधय रनः ज थं स्याक वधय रयिवः सूर्याविगना सः उ सा स दयीव ॥ जिदाघन जायन पू सि द्रुनि ॥
थयाना म सूर्याविरुद्धिधाय ॥ ॥ कृवि सनिकं स्यायः न मुन रुा या थं थं अ ई ह द धाय वा (गम उ मा

मिलादि ॥२॥

[illegible]

उलङ्घने ल। ३।

वदरी कनाति। सूर्यर्षि दृष्टि पुनिमय वशुवा शर्वल व्याधि कनंदुदाति॥ ॥ घट्टि दनेल
अल हा। त कनाय। अति हा। लेली क। इगु छा। सुधु वि। ति मनाज। वि डि मि। ०० दूमी। गुं चि। वि
पी। हा म विकं। बाल स इइ। थन स लग। ति मनाज न स लग ४ थन वि कन व स्यं पाउ स व स्यं॥
माउ या वि का न द का त काल नं ना ग या क। के ग। हा स्यं व व गु। उम हा व गु। द द श यिव। मिखाया
त ज व ध य श यिव। व ल व ध य श यिव। व्याधि ना ग या क॥ ॥ जीव क र्ष र को जा ज्ञा म धू कं म
धू कं व ला। नीला स लं च नं च वि दा मि न क्क ना ग थ। ने ल पु कं प व द रि स नेः प य सि घ द्दु (६)॥
जा ग ल स र मा ने स्य गु ला र्ध स्य न भ न गु। सि ध म न ह व त्र स्य ने ल म द्वा र वा द क॥ वा धि य क र्ष गू लं
व मि मि ले ग ल गु डि कां। वा ति कं पे लि कं वे व ती र्ष ना ग त्रि य क्क ति। द के चान नि र थ लं म दि तं वा

पकषति॥ ॥ जीवकषरुकादिनेल॥ ॥ सावन-रुलकुंक्रम-थगतलसकालाव-क्रासस
 थउं-वातन-हीन-मिदुस्यक-क्रमपनस्यक-वा(ग)भादस्यक-दिनवृद्धिथंस्याकनाग॥ ॥
 पिपी-ज्यपनादिगहा-लंखसुनिनावभाउसपाय॥ भादस्यकनाग॥ ॥ हंगनाज्याहा-स्यधिस
 निनावपाय॥ ॥ भाउस्यकवा(ग)स्यकनास॥ ॥ १३ धिवाकुनिनावपाय॥ वातनभादस्यकना
 ग॥ ॥ खरुजसि-मीसि-खलललीक-मिजाहा-वयाहा-बूछमी-उरुस्यं-ग्रीखउ-भीनविद्यानि ३२२
 साखन-थतसमगाग-तिगललोक१७२११ विकन-साइइक२थतखसं वसंलित्रागनाग॥ ॥
 जीवकषरुकाद्यनेल॥ ॥ वासजउगुल्लकया॥ ॥ १४ वतज्यपनादिगहा-हवद-लंखसनि।
 नावपाय॥ १५ अमलकायलसथनावतिरुक्क्राससथउंवा(ग)भादस्यकनायूव॥ ॥ नि

असुन्दरनिदानविक्रिया
मपवात

लाथुनि कमलासियाखात्रा कागतिवत् लंखसुनितावपाय ॥ ॥ मादस्याकनाम ॥ ॥ वल
सियामुनि धलसकालावनकं मूकलुलनाम ॥ ॥ कर्तुवीत्रलंखसुनिसं पाय ॥ ॥ मादस्या
कनाम ॥ ॥ नसंविदध्म कुउनागलंवा ससेधवं मागधिका मधवा ॥ घ्राणस्यमन्या हनूवा कृष्टया
निनाजितंखप्रवक्षमयषु ॥ ॥ याकृं उधि निसं सध्म पीपी क्काउं क्रासस थउं क्रासयात्रा
यस मुखनायस हनूस्फुस लाहातयात्रायस जलधूयात्रायस निवनायस मिखात्रायस ॥
क्रसयनस्याकस गलपतनथयात्रायस मफनामयाक ॥ ॥ ॐ निनिदानाकपविग्रमनिवना
गुनिदानविक्रियाधिकावः ॥ ॥ अथ असुन्दलनिदानविक्रिया ॥ ॥ तं सष्यपिरुनितसं
त्रिपानेचुषुकारं पुदवंवदकि आसं सपिक्कं पुतिमं सपाधुः पूनाकताय पुतिमं कदाच ॥ ॥ १५ ॥

नायल्लेननववक्क वाः पिल्लनिवाः वागस्ववाः च्वातनृप्यता पुका नश्रयिवा उदव नौग धासं ज्ञाना आ
 मशत्रसाथम उः हायूः कृया उ निथ्य हाकृ क्का उ लेख उ निः प्रसन्न नशत्रसा ॥ मधूकं पि कुला ला
 धुं। मूल सौवाजिका मधूः। मधेः स्त्रिः ग्धिर्गुनूचा रूक रूजा सुन्दल हितां ॥ ॥ ति कृमीः उरु लाः गु
 ल्वा उः कसूः सुता च्चलेः कस्ति तयंत वः गुउ गुया ती नवानेव सु नापान सु कायेत वः त्वस्यं प्रसन्न वक्
 तिसात्रना सया क निः च्यय ॥ ॥ सपीतनीला सि तत्र क मू प्र पिल्ला हियू कं रुग मव पिला ॥ ॥ ययू
 ववः हाकृः पिल्लनपी उत्रपूया ॥ ॥ अतिवेगने का दय पिल्लया केन ॥ ॥ वासक सूत्र संवा पि गुडूया
 सूत्र सर्ववा गता वलीनां सूत्र संथा जय त्वर्व कल्पे वर ॥ ॥ आद स्याति गुउ गुयाति अति हायाति थ
 तयाती सुः कस्ति का उं त्वनकं त्रका तिसात्रना ग शत्रं ॥ ॥ नूजानिल रुनिल मल्य मल्यं वागारि वा

हि का क ॥ ३ ॥

सुश्रिता नन जाय नयू

नात्यसि तादकाहं॥ ॥ हाय थययु विहाय शुरुवयू वातनगी उन्नयूया॥ ॥ वाग्याकनला॥
सिलोनि थं वव वातया विकिसा रुजा ज्ञाना गु॥ ॥ मऊ उ मयि ह विना लव वूं मऊ पुकारां रुवा
पंशिदा वागु। तं वाया साधं पुवद किन ह्ला। नरु रुव कि लि व कि नि त्सा॥ ॥ थल कलि नवाला
थं ह विना ले थं मल को दव थय साध धय। उ दा घन व वा सय॥ अ मल याय म म्मात्र॥ ॥ सुग
पुव लि का अ वा रु क्रा रा ह सम नितां जी वन कां इ व लां व ता म साधं वि व रु थि य न॥ ॥ हाय सव व
प्या सा दि वा न इ जी व इ व ल थ थिं च ना गी व रु न य मात्र॥ ॥ मा सा लि पि के दा हा लि यं व ना ज
नू व भि नः ने वा लि व रु ना त्य ल्पं मा रु वं नु च मा दि (ग न॥ ॥ व डि न डि स रु व धा रु म रु व हि य व
द ना म इ डा वा गा अ नू व थ या डं चो डा वा रु ल्प न म रु व थ थ रु व अ रु उ च ध य॥ ॥ ना म रु कु गि मं

मा निस्तुभं म कापतवायानवनसा हिनायधाय ॥ ३ ॥

यच्चयवालाज्ञापमापमं। तदाहं वं पुनं गंति यवा मूनविनकृत ॥ ॥ तानयाहिथं अथवाला हा ति
थं अनततिथं ॥ अतु शव पु मं सायानं। हीन कोक कापल लंख सहियानं मवठ नक नजि संधो ॥
॥ अतु शव यं धाय ॥ ॥ ॥ जू। म क वल्क लं पुस्ते गा या ट क वि पा वि नं। चतु र्गम व। म क क षा य म व
गात्रयत् ॥ तपु ला न्य त्या जी तं यत् तपु ल्यं पु दा य यत् जी त क स्य न सं वा पि वा म ना जी ह व स थ ॥ जी व
नी या पि सा नं व रु त्वे धेः स न सा ज नेः य शो का। म क मूलं व म दिका व री ता व ली। तपु ली य क मूलं
व क ल्ये न रिः प ला धि केः। म क ना या प ला न्य शो ग हं द त्वा स मूर्च्छितं। पृ ष्ठा या ग न ग त्से र्पिः स न म
व पि ना प यत् ॥ पी त म त त द्य तं ह न्या स र्व क्ष म स म ह वं ॥ ॥ अत नी ल न थ क कं पु द लं ह कि द
सु नं। कृ त्ति मूलं क टि मूलं। छे दि मूलं वि ना ग यत् ॥ म न्दा मि म न वि पा पु क र ती न्ध म का लि नी ॥

३२३
३२४

आयुःपृथिव्यं वलुवर्गं उसादनं। दयमत्तद्वत्सर्वविष्णुना पत्रिकीर्तितं॥ ॥ अथ कथं
 न॥ ॥ वन्धनं वानं विद्या विष्णुना नववन्दनानां पतिपुत्रो हवर्षे वगम्य धर्मं वगुह्यते॥ ॥
 नववन्दनं शिवगणपतिनिश्चयीव। वानं विष्णुना शिवगणपतिना मद्सुकलहिनं वानं पतिपुत्रमात्रं
 व। पुत्रं व। पुत्रं गणपतिगणेशं व। नवमानं स्याददमीव॥ ॥ वानं लोककर्मसु ध्यातुं निष्ठादयीति
 गा। वानं हवर्षे विद्यायाः हवर्षे निलवेव सा॥ ॥ वानं लयायानिककर्म ध्यातुं तिष्ठत न स्या
 ध्यातुं स्यात्। वानं दशवत्सु पुत्रं वानं वन्दनं शिवीव॥ ॥ सदा हं जीयते न कं यस्या मानाहिता जया
 सवानं मन्त्रिष्वदीयं वमनी नृजसायुगः॥ ॥ हियूनत ननु हि जदि कं ध्यातुं वानं वगनी न स वकं ज
 य शिवीव यथानं थ हिमहि। नकं नय शवया रु सन न जना स हीनयाक॥ ॥ ७५५ सीयन

वेवकाहिताइष्युजायिनी॥स्किंस्किंरुकिगईयूग्वीनकसंकुयात्॥ ॥^थइनययाथवथ
 ननदीजसत्रनयंमायव॥मदनयाशसईःखजायनयसुखमई॥थनेमावामइचाकगईमास्य
 वने॥^थयोनामयूग्वीक्षय॥वागनककुययानाव॥ ॥अथर्थपिरुलायानिर्दाहपाककनात्रि
 तःवतसुषपिवायाउपिरुतिंगमकुयाएवत्॥ ॥पिरुधिकयोनिशुनसाहियूककुवसंदि
 निवकननननिवयगासमादिनपिरुविकउकुयशसंवतसा॥ ॥आत्मानन्दानसुकोषांश
 मधर्मनगकुमि।कर्तुन्याकर्तुकाथानो।सुषातृकांयुजायने॥ ॥आनन्दपुनषवज्जनिभे।
 धूनयागसानसुकोषसमइला।मउआकालग्रन्थानिसदयीव।सुषवहिवनजायनय
 सिय॥ ॥क्रापाहिकदयीव।लिपातसुमवाकदयीव।यनस्यायीव॥ ॥^थयोनामगई।

३३४
 ३२५

पानधाय॥ ॥ रुसनयानियालं स. हपति संवाडाव. यानि स्यायीव. व्यान स्यायीव. रुसनमा
वायो गथाय स. गोदेनयकं. पिषिडं हयाव. थयायत स. नाना पुकावन इ. खवि याव. यानि सध्य
दनपाव. मावाकदय मरु संवाडाव. कुआ मावानि सियुव. लिपन स. माम सियुव. ॥ **॥ थया**
नाम मूरग वृक्षाय॥ ॥ वायुः पुक पिगं कय्यात्सं नाध नूधि नं वन न. यो रुद्वस्ति निवः गूलं म क
गूलं व संहि नं॥ ॥ रुस कापन पावयाग. रुसन यडाव. थव थ स ना उताव. वव हि. मवाव
वक्रया नू. (मउ. माउ. व स. स्या यिव. ॥ **॥ थया नाम मर्क गूल धाय॥** ॥ पृथिव्यां पतिग व
त्सयानी पीउ न मि प्यन. अय स स्य थवायूला ल्य सं न क न छिया॥ ॥ व स गोद हासं वल गव
मावाव वस्तु नूथानि कपयन कं मरया स. यानि न रुस इ हाव डाव. द डि दे न उं मरया स. थ रु स

नविकात्रयासंनयजायनपनरुसइहायमरुयाउपायचक्रतिखलायदतिग्रतउंगयान
थानिसरुसइहायमरुतं॥ ॥रुत्तुकिवसिगुलंउपुविसुतयजायनअंगमर्दाकवकंप
पिपासागुनुगभजता॥ ॥नूगभउपनवसस्यायीवप्याथलमरक्षायीवथानियालंसरु
सइविशवथथजायनपनं।स्रच्छा२यानाथस्यायीवकानपूयीवस्रत्तकपासवायीवस्र
प्रातुयीव॥ ॥दध्रासोवत्रलाजाजीमधुकंनीलमूलं।पिवत्तुओउयुतंनानीतातासुन्द
नयीतिता॥ ॥धोसूताकुलजी००००मी०उरुसां०थतेचूर्णकेसितसंवनकंसिहाया
हिनायनासयाक॥ ॥खदिवमधुकयष्टीतपुलीयकनाथसमधनजतिसिनायादृष्टसा
लादकन।पिवतिसुजदिनानीसन्निपातामताग्नी।असुन्दननिहकिगंगमनिवनिशध॥ ॥

खदिनादि ॥ ॥ पाश्चात्तया उमधां च निराहृदं संजनं । अं पय श्रीमाचन सं । समं गमय द्रव्यं लं ।
वाह्नि कागि विषामस्तं विल्लाधं स गेविकं । केहू लं मनि वं गुलि मुदिका न क्वच न्दुनं । क द्रगवत्स
कानका भागकी मधुका र्शनं । पूषा नो हृत्पुल्यानि । गू म्बू धूर्निका न यत् । तानि औदन संयुक्तं ।
पापयत्तु ला म्बूना । अर्गि लो तिसा न म्बू न कं यथा पवि त्थते ॥ द्वाघागनु कृता यव या ना वाच वि ।
नाम यत् । यो नि दोषं । अत नील । कालं वेव सपी न कं ॥ स्त्री धं स्था घा नू धी यत्तु स स्र नि यव हं यत् ।
वूर्ध्व पूषा नू गं नाम हि गं या य य पू जि तं ॥ ॥ पूषा नू ग वूर्ध्व ॥ ॥ अथ क वत्तु ल यत्तु नू ली
यक पि यत्तु । न क्वच न्दुन स्र म्बू ला का ला त्थ खदिना त्थ लं । न सां जन गत्तु ला म्बू पि वत्तु औदन संयुक्तं ।
अस न्द न नि हृत्पुल्या गु चि न का ला नू व भिनी ॥ ॥ अ । गम क हू ल । ०० हू मी । च व कं । पिपी । न क्वच न्दुन

शानिदाषविक्रिया

सूकम्यालः कोलत खया उरुसा नसांजन जाकितिसुतसंक सिद्धा उं त्वनकं मिसायाहिनाय
ताकालदवगुनागयाक ॥ ॥ अरुमकपल्लवादि ॥ ॥ मंगमाषनियरेयनासाविजकनागनेः
सिद्धं सूर्यपलीविश्वः सूर्यः प्रथमसुगदने ॥ ॥ मंगमदिद्युत ॥ ॥ कुलवीजः पूजमकितीसनि
संत्वनकं हि कदवनास ॥ ॥ वशावीसा पूजमकितीसनि संत्वनकं वगसात्रया ॥ ॥ ॐ ति नि
दनाकपत्रिजमअसुगदने धूनावनन विकित्साधिकारः ॥ ॥ अथयानिदाषविकित्सा ॥ ॥
नदवार्त्ताकिनीकु खं सेधवा मलदावृत्तिः तेलानुसाधितं वायि विवृथानि नृजापहं ॥ ॥ नकि वा
र्त्ताकी कुदः सुधुवि अम्वत्र सिधुत विकनषुंडं रुसांथानि गले नाल ॥ ॥ नतादिनेल ॥ ॥
थानि गलेया ॥ ॥ मूलकुरु विडद पिपलीक दूनाहिनी काकाली जीरका काली विजंगंति

३२७

रुलाववा। मेदा नात्रा विष्म रात्रिदवदात्र प्रियंगुका। द्वल्लिवं गता द्वावदकी मधुक मत्तलं। अज
भाजमहा मेदा चन्द्रनं कचन्द्रनं। जातिपूषा पुष्पमी त्रिभक्तो दिगुक्त द्रुलं। अनेत्रु सुमेही। नेष्ट
तपुस्तं विषाचयन्। वरुगु। एतपयसा विषेचनं। ममया मिना। नऊपूषा संपन्नता। उगातु मय दृष्ट
कल। एवापी कल्याण कृतकोशुक मंगला। सपित्रेन ननः पीत्वा सुनिहं वषायन। उगद्वन्ध्या विवन्ना
पावा कन्या युजा यिनी। यापिवा हिलगर्हं स्थाया वासूचा पुनः स्तिता। नादगं जनयत्पुं वदवदांगया
नूप नावथ संपन्ना मजयं वगगायुषं। नाम्ना रुलद्युगं अत हात्र दाऊन लापितं॥ ॥ रुलद्युगं॥ ॥

कसु कृद हाकृदू कं विहू पिपी कृपुकि ककाला कीरका कोलि वित्रिसि प्रिरुला विहा द्वाकं हा
इगुका कोषपुसि दवदात्र प्रियंगु कालसि इरकालसि अरिहा दन्ति ०० वमी ५ हा स्वां अजमं

सर्व

[illegible]

अनिना निदान विधिः ॥

[illegible]

सुनि का पि य दि

त्रिदाससुनिका नागया क उदाय उ प ड व नागया क ॐ नु या व ज म न क थं पु ल व द व ॥ ॥ पि य
ल्या दि व र्ण ॥ सुनि का या ॥ ॥ शि क द्रु जि जा त धा न्या कं पु ना न गु ज मि मि तं ॥ पी न व सु नि का ना गी या
का सु र्क र सं य मं ॥ ॥ शि क द्रु का दि व र्ण ॥ ॥ पि य ली द व द न व ना ग न ग ज पि य ली ॥ वि उ कं स
ध व र्ण व पि य ल्या मूल म व व ॥ कृ त ना क ॐ का ली व द रु गी वि ल्व प सि का ॥ अ ज मा ज व धा न्या कं त था न
वन पं व कं ॥ सर्वा न्य गा नि ग उ न कां जि के न नि गा नि व ॥ सु ख का नि रु य या नि सु नि का ना ग न क य ग
वा नि कां पे रि कां वे व ॥ शि मि कां स नि पा नि का न ॥ सु नि का य ड वा न सर्वा ह न्य पी त्वा न सं ग य ॥ ॥ पि
पी ॥ द व द न ॥ ॐ धि ॥ ग ज पि यी ॥ वि न क ॥ सु न्धु वि ॥ पि य ल्या मूल ॥ तिल वं ॥ क ॐ का लि ॥ लि क ॐ ॥ व्या ल ॥ अ ज मं
॥ ग म सा हं ॥ पं व न व न ॥ ध व र्ण ॥ धो नि स न व ॥ पू उ म कि नी सं क उ ॥ त स्यं त व न कं सु नि का ना ग ना ग जि

३२२

नि सो ध २

~~त म सा हं~~

दशसुनिकाया उपड वनागयाक ॥ ॥ पिपलादिचूर्ण ॥ ॥ उलाहकशायमानीच. साजाजीका
लवीनथा. नाजाकालमजा. सन्धुः समलग्ननिचूर्णयत्. पुराणगुजमिग्राहिसुनिकावमथपहं ॥ ॥
उला. पिपी. उं. मं. जी. हजी. तायवजि. कालसिमं. थतसमलग्नचूर्ण. पुरानवाकसुवावावनकं सुनि
कावाय. चूर्णकनागयाक ॥ ॥ सुनिकाया ॥ ॥ उलादिसुह ॥ ॥ शिकदृष्यकनामूलं जिजीवी
सइनालला. अलाशं वपथमनां वसमलग्ननिचूर्णयत्. पुरानगुजमिग्राहिसुनिकाकाननागनं ॥ ॥
शिकदृष्यकनामूल. जिजीवी. इलासुह. लानिहा. हलज. थतसमलग्नचूर्ण. पुरानवाकसुवावावन
सं सुनिकावाय. मासा. नागयाक ॥ ॥ सुनिकाया ॥ ॥ शिकदृष्यकायचूर्ण ॥ ॥ वत्साविंगप
लाधिकंगुउपलगतंद्वयं. जलडागवियकथ्यपथ्यचूर्णनिजिपयत् ॥ अष्टादशपलंगुधिं उरुसत्त्व

चवर्जितः पलविंशतिपिप्यल्लामत्रियाष्टपलानिष। पिप्यलीमल्लतालीनववाधन्यकुसुमेभवांमन्ति
कृष्णकजीनानिचकुष्यपलं पृथक्। यावद्वैकोरवाजाजीयमानीवस्यलंतथा। त्वक्कलेलोपद्वद्वद्वदि
कांकावयतिषकु॥ वातिका नयेहि केांवेव। त्वष्टिका सुत्रिपातिकान। स्तुतिका पदवा सर्वान्गूलम
कूलसंरुक्। त्रिचिमन्तिकनं वल्यं स्त्रीलं वल्यं विवर्द्धनं॥ ७८ ॥ गुं ध्मेदिगुउ॥ ॥ पल २४० वा
कू. लंखरुं ४७९८ गुं धि ७२ हिंगुनअं त्वव मवचपिपी ७२० ७४ पिप्यलामल ७४ तासीस ७
४ सिपि ७४ लमस्वरुं ७४ सुधुवि ७४ जयमासि ७४ रुजी ७४ श्यावगुकोरुव ७५ जी ७
५०० मं ७२७ ला ७२० जप ७ थनपाक यासंगुटिका दयकं नसं वातस्तुतिका पिरुस्तुतिका
ल्लामस्तुतिका सुत्रिपातस्तुतिका स्तुतिका याडपदवदयावशक मकूलगूल थननागया

३३०

क॥ नृविदयकृ॥ अग्निद्विधाक॥ वलवधयशव॥ मितायावर्तवधयशव॥ ॥ स्रुतिकाया ॥

॥ मिश्रवा॥ चनखनि॥ ४॥ कृष्णगश्रुतसा॥ थवलखनि॥ धस्यनाव॥ धमस्यनकं॥ धामयू
स्यं॥ खियातश्रुत॥ हायाव॥ इलाश्रुतवाया॥ वलखनि॥ लंखनसिलाव॥ वलखनि॥ धपति॥ (ग॥ ७५)
जि॥ हल॥ इ॥ थ॥ जव॥ सुकानसूयाव॥ थवलखनि॥ माइइवलखनि॥ कृ॥ ७५॥ नयावखने॥ पाखवन
काव॥ थकायाव॥ पाय्य॥ लंखनसिल॥ थवलखनि॥ नंजिन॥ हलनं॥ वूर्ध्या॥ डं॥ वृकधल॥ अ॥ २५
नानवा॥ अ॥ २५॥ थ॥ वूर्ध्खडं॥ सुथं॥ व॥ ह॥ नि॥ न॥ क॥ ॥ (ग॥ ७५॥ नानसि॥ वा॥ प्र॥ मान॥ कृष्णगन॥ कं॥ स्रुतिका
या॥ अ॥ गि॥ हि॥ ड॥ ॥ ॥ स्रुतिकाया ॥ ॥ देवदान॥ अ॥ गु॥ लि॥ सि॥ पि॥ प॥ ला॥ मू॥ ल॥ वृ॥ दे॥ क॥ सु॥ क॥ र्व॥ सि॥ कृ॥

थ॥ न॥ वूर्ध्॥ या॥ के॥ गी॥ सु॥ हा॥ स्य॥ गान॥ कं॥ स्रुतिका॥ या॥ य॥ ना॥ ता॥ ॥ ॥ स्रुतिकाया ॥ ॥ सा॥ प॥ सा॥ जी॥ वि॥ स्रु॥

मि. वि. क. ६. ०० मं. रुजी. मीथ. सि. पि. वि. न. क. क. सु. जि. हा. ल. वं. ल. प. क. ल. ल. ग. म. सा. हं. व. श. वा. हा. थ.
न. पु. ल. क. ल. व. न. १. मृ. धि. पु. १. ध. ल. पु. १. इ. इ. रं. १. सा. म. न. क. न. १. थ. न. ख. ग. व. न. कं. सु. ति. का. या. आ. य. वृ. द्वि. या.
क. व. ल. अ. ग्नि. वृ. द्वि. या. क. आ. म. वा. न. अ. नृ. पि. ह. मृ. ल. क. न. सु. ति. का. या. उ. प. ड. व. थ. न. मा. व. क. ॥ ॥

॥ वृ. ह. सो. हा. ग. य. मृ. धि. ख. पु. ना. म. ॥ ॥ सु. ति. का. या. ॥ ॥ वा. ल. नि. म्ब. स. ह. व. ल. स्वा. न. या. हा. उ. म.

हा. न. कि. न. स्वा. क. कृ. द. जि. हा. क. र्प. न. मी. थ. अ. या. मा. र्ग. न. हा. वि. क. न. पु. १. मृ. उं. वृ. य. क्क. ना. पं. पि. य. या.
स्वा. क. या. हि. उ. ॥ ॥ सु. ति. का. या. ॥ ॥ ल. वं. मृ. क. म्पा. हि. ना. य. जि. जी. नि. ००. वृ. मी. ग. उ. म. म. ख.

वि. पु. ल. कं. मं. र. ग. य. वि. क. न. पु. २. क. लि. मा. या. इ. इ. पु. २. ल. ख. पु. २. थ. न. ख. उं. आ. से. स. थ. न. मि. ख. अ. नि.
न. ज. क. न. ॥ ॥ थ. या. ना. म. गु. ल. का. नी. दि. व. सु. क. मा. नी. ले. क्ष. य. ॥ ॥ ००. ति. नि. दा. ना. कृ. प. नि.

३३९

वालेनागलकुगविकिसा॥

ऊमस्तनिकानिदानविकिसाधिकानः॥ ॥ अथवाल्नागलकुगविकिसा॥ ॥ अगिसा
नक्षत्रकृत्तारिष्यकुन्दननादनं। ननिजावगधविग्नाग्रसुपूटनयानिगुः॥ ॥ अगिसावक
नयासु। असबासखायिव। ऊमद। पूटनाग्रहनक्षत्रया॥ ॥ कर्दिका। मक्षनसुक्राव
सागन्धतिनादनं। नस्यदाधातिसानय्यअन्धपूटनयाहवेत्॥ ॥ क्लोक। मसवव। क्षत्र। यासद
व। दाक्यानदयकंअगिनखायीव। इमत्वउ। अन्धपूटनग्रहनक्षत्रया॥ ॥ विपत्तिकागतकी
। मनेउना। मविवन्धगा। कर्षगिसानय्यकुचनीनपूटनयानिगुः॥ ॥ क्लोक। मासावयीव।
मगनिव। पिखायाभागदयीव। विगन्धनक्लोक। कदव। नीनपूटनग्रहयादाव॥ ॥ पुसन्नव
धूवदनः। निनातिनहिसंवृत्तः। मगन्धमूखाकुसी। मखमपुनिकाग्रह॥ ॥ उनि। खा

नहिडः नाडिश क नव वैध डः । थ सावहन पृथु मुखम पुनिका ग्रहन कडया ॥ ॥ कर्दि स्पन्द
नक ७ स्प । मषा मूर्च्छा विग भिता । उर्ध्व प । म्थ नृ यर्ष द क्राने ग मष ग्रहं वदत ॥ ॥ क्ला क । क्लृ
क । क ७ क्लृ ग ड नू । म उ म किं । थ नृ र सा क । उ म ड उ । ने ग मष ग्रहन कडया ॥ ॥ ववा क्लृ ग थ
डा क्ली सि ज्ञार्थ क म थ पि वा । सा लि वा से भ कं वै व पि प्य ली प्य त म रु कं । म प्पा क नं प्य तं सि डं पा न वं
मा स म व ड ॥ ६ री स्म ति कि प्र म थ कू मा रा वृ धि मा रु व न ॥ न पि म वा न्य न ज्ञा सि न रु गा न व मा
त नः । वा ध नं व कू मा रा नां वि व ता म ष्ट मं ग ल ॥ ॥ वि हो । क्लृ द्वा क ७ नि नि । ० ० ० का । इ र का त
सि । स ध वि । पि पी । ध ल । थ च्या ता । वृ धि व न क्लृ न प्य त पा क या य । थ प्य त । वाल ष ल क्लृ ता न क
थ त ना वृ धि नी पु न द य क नं द र श नं ॥ थ ध ल ल्य न कं वाल ष । ज ष्ट मं ग ल वृ धि व न श यी व । रु त

३३२

ला. ७८ लास ॥ ॥ कुर्यात्पिरुं च सवदि न स्या चानुवल कुरुः ॥ ॥ अश्विन काल स पिरु
कोप न पत्रे. लिप न स्वात. स्तुष्टान न निव. अश्विन कालिक स. ॥ ॥ ननु कुरु वि सुगी च न
प्रस्नान न नाहयं ॥ ॥ लिथं वदय कृति शाय स. अन्न मवन सां ह्यय म म्माव ॥ ॥ कुरु
वसुं न म पिरुं त पिरुं त वद नूः ॥ ॥ वसुं काल स. ॥ अश्व निर्वल. दधु सवात पिरु वयी ३३३
व. वगुला. वकोला काल ॥ ॥ कालय थ स सर्व बां पु वृ कि वृद्धि न वव. नि दाना कानुप न.
या विपरीता पसा पिता ॥ ॥ थवर काल स थवर वल ला उं वल सा. लायक जिव. थ उय स
मधाय ॥ थवर काल स वय मरु. विपरीत न न निव. थ अ नू प स मधाय. लायक थ कुरु ॥ ॥
थ न अ. वृ कृति शाय ॥ ॥ ग्रीष्म तुल्य गुजं वसे न वयु गां म धां नूरां वने. यू कां ग क न या स
व

अथान्नद्वयवत्तु

नयमलया ॐ श्रीगुरुवा नांगम। विष्णु ल्या नि नि लव सु रु समय कूड द सं या जितं। हं जा न स्य रु नी
न की मि व नू जा न स्य रु ने ग य वः॥ ॥ न कू ना दी ना स वा कू अनू पा न या स्यं न य। गु नि ना ७ द न
सु धू वि अनू पा न या स्यं न य॥ आ ग्नि न का र्ति क या ऊ उ स। सा ष न अनू पा न या स्यं न य॥ धिं ला।
पा स ला या ऊ उ स। अ म्ब न ७ धि अनू पा न या स्यं न य॥ सि ला। वि ला ऊ उ स। पि पी अनू पा न या स्यं
न य॥ व गु ला। व कू ला ऊ उ स। क लि अनू पा न या स्यं न य॥ रु न उ न या या गु न द व थं गु न द व।
ना ग ना ऊ द कं ना ग या क॥ ॥ अ रु र्वा हा धि क रू क्रा प ला यः स्व स नं य मः सं ध्या। लि गु ल म।
स्व दा दा ष व ध्व वि नि ग्र ह॥ अ रु र्वा ग स्य लिं ग ना नि रु व स्ये ना नि ल रु ये न॥ ॥ इ हि यू अ ने णा
सु द व। ना क रु क न ना क। न्ध सु द व। ॐ रु अ धि आ धि स्या क। च ल नि म हा व। वा हि लि क न म

ताम्रकवचकल

इ. धनं जर्जरतक्षत्रया लक्षणं ॥

लिङ्गमत्रिमुखमाधत्तमेव ॥

भूलय ॥

॥ लाला पुष्पा कल्ला सा रुदया लुञ्ज शव का । तद्भाल स्या विपाक सवेत्र सुगुनु
गम्यता ॥ इन्द्रो वरु मय नृती वता वलवान् शनः । आम्रकव सलिङ्गमनिनदया लुञ्ज रेषजं ।

॥ ॐ तिनि दाना कय त्रिभुमं अशुभान विक्लिप्ता धिका व ॥

व विक्लिप्ता ॥

नागमपकल्प ॥

इ. खया ना व. लास. हि स. इ. इ. आय जाय व पत्रं ॥

सुननागत्रकल विक्लिप्ता ॥

॥ संग का का धिकं वा अरु का दीनां व मा र्दवं वहि वेग स्या ।

॥ वाक्क स कव त व. व्या सुभ नि म इ. वाक्क स वा उ. कान लन के ।

॥ अथ सुन नाग ले क.

३३४

॥ सजी ना वा प्य इ. ग्नी वा दधिः प्राप्य सुभो कियः पृथु सामा सुभु धि वं न न

॥ इ. इ. दयं रुव. इ. इ. म दयं रुव. नाग न वि का व या ना व. पि सा या इ. इ. या स

॥ वन कर्पा सुमूल न न नाग वि ना गने । ज

श्रीनववर्द्धविधिः॥

लापिष्ठेर्वनयते नृवरुयकं लपयन्॥

पुनः पातनं सननागनागयाक॥

सिन्धुहावालावपाय इदं व्यामनया॥

वर्द्धनविधिः॥

॥ पिप्पली पिप्पला मूल च वृंथियवानिका जीवक हृदिद्वविजसोवर्द्धनं
गथा॥ पुनः नृपापधेः पिष्टं नासनात्रे विपाचयन् आमवागहनं वृष्यं करुषुं वक्रिदीपनं वेजकं
कांजिकं नामं लीलां मग्निविवर्द्धनं मर्कटमूलसमनं पत्रं जीवाहिवर्द्धनं॥

॥ मिसाया इदं वधययाय अमल॥

चिकित्सा॥

॥ घनकृष्णानृगं लंगी वृक्षोडनया जितं लिङ्गकनामित्रं घनं कागलसवमी

वालनागचिकित्सा॥ पिपी पिप्पला मृत्पिष्टं वृंथिः ०० मं जी हजी हल वचि सिद्धिः दुदुवधेया ३

॥ वनकयासयाहा लख सवा लाव अथ वा वनूमासिय

॥ गुग्गु कूकू खरु सनि संपाया इदं व्यामलया॥ काषण्ठ

॥ ०० गिस्तननागचिकित्साधिकावः॥ ॥ अथ जीववि

॥ वज्रकांजिकनाम

॥ अथ बालनाग

३

हवं॥ ॥ कसू पिपी अत्रुम कर्कटासि धतवूर्ध कस्मिन् वृत्तावनकं वा लघयावन कागश्च
 स॥ ३॥ काले धतवर्तनागयाक॥ ॥ बालनागया॥ ॥ लंगी सुकृष्ण निविषा विवृद्धं लहं विदध्याम
 धूना निगुना॥ कागदना कर्कटिहिन दिगानां समाजिका अतिविषा र्थकानां॥ ॥ कर्कटासि।
 पिपी अतिउस कस्मिन् वा नावनकं बालखयामासावन बाल सुख रुट साकया रिड अतिवसु।
 कस्मिन् बालावनकं कागश्च सनाग॥ ॥ अतिविषादि वूर्ध॥ ॥ बालघया॥ ॥ मधुसूयि
 तंवूर्ध जिह्वा लाघा घलवनं। लीलाति बाल लैयं सागुगाग। मधुका मापदं॥ ॥ मधूनादिलह॥
 बालनागया॥ ॥ लवंगपूष्पं कर्कटायां सनावनं। लीला मात्रिक संयुक्तं सनाग कागदना हं॥
 लवंगपूष्पनामूल पिपी कर्कटासि। लोनावनं धतवूर्ध कस्मिन् वृत्तावनकं सनाग कागदना हं॥

३३५

ताय ५

जा २

लवंगमदिलह ॥ बालनागया ॥ ॥ कदलें पृष्कनं गंगी कृष्ण च मधुना सह ॥ अमृतामृतवहनं ।
(प्रबलहाकला कदल ॥ ॥ कर्वसिक्क पृष्कनामल कर्कटासि पिपी धनचूर्ण कलि सुवलाव ।
नकं थसा मासा कर धननाग ॥ ॥ बाबुराडलह ॥ ॥ धनकी विल्वधन्याकंला धुदुयवा न
केः लहः ओडव वाला नां कनागि सावनागजित् ॥ ॥ (धेखां बाल गमाहं गुल्वा उ ०० तुम क
स धनचूर्ण कलि सुवलावन सं बाल वया के नाति सावनागयाक ॥ ॥ धनकादि ॥ ॥ जीव
लासर्कना ओडापीनः नलुलवा त्रिभं । नि । नवकाति सावसुं न कुदि करनागनं ॥ ॥ जीवना
दि ॥ बावनागया ॥ ॥ अजा कीरसुमं सविध्या गली चन साटक । समंगम धनकी भाव कवि । अ
त्यलसे भवं । सुखा भवा विविधा दधिष्ठेः प्रह्ला मिता नं ॥ हकिग्रह धानी सावान् । पथ्य पथ्य र

अः निः ॥ ॥ बालवां गरी प्यत ॥ ॥ यवा कृष्टं तथा वाक्सी सिद्धार्थकमथापि वा ॥ अलि वासे
 वं वेव पिपली प्यत मष्टम ॥ यथा प्यतं सिद्धमिदं पातयं मासमवव ॥ ॥ दृष्टमितिः क्रियमथाः क
 मावा वृद्धिमान् रुवेत् ॥ अविद्यमानं न जानि न हतानवमानं ॥ बाधके वक्रमा ना नो पी वता सै मष्टम
 मलं ॥ ॥ विहा कृष्टमिला वा कृष्टा व ॥ का इका का सिः सुधु विः पिपी ॥ यत दूर्य प्यत स वृत्ता व
 न स्यं न जि न स्यं वृद्धि का रुय न नानं पति न शयी व वृद्धि व न कृमा न रुयिव ॥ कृत न मा न कान क
 न मरु ॥ ॥ अष्टमंगल ल्यत ॥ ॥ अष्टमंगल ल्यत ॥ ॥ चन्दनं पर्वटं मृत् रुग्ण डा का सजी
 न कं ॥ कृष्टि रुयाः मृत् सता गं ॥ लहय सधु ना स ह ॥ पलाय म्हा सहि का व न क्रा दा ह उ मा नू विः ॥ मृ
 कृष्टि दि पिदाषं व विषम कृत् न ना ग नं ॥ ॥ श्री ख पु ख खं क ह वं न ना व न मी सि जी ह न

धनसमलगावर्धकसि सुवलावनस्पं ताकुकनन्वाक थसा. हिक्. प्यास. दाह. ठूक्. अत्रुचि
मूर्च्छा. धनवव. जिदाघ. विषमकन धनतासयाक॥ ॥ बालनागया॥ ॥ वन्दनादिलेह॥ ॥
लाजावतसमंसिद्धते लमसुवगुणः नास्त्रावन्दनकृषाद्यवाजिगन्धानिभयूतं॥ गताकदा नू
षव्याकसूर्यागिका रुनेर्गतिः बालानां कनवक्रास्रमल्यं गदलवर्धकम्॥ ॥ लाजातेल॥ ॥
लाहातिकृवा. विकंनिवा. धीतिनिवा. इगुक्का. ग्रीखपु. कृद. कस्र. अश्वगन्ध. कंविहृत्. अहिहा
मीकृति. हनति. खाल. हनत्. धनवर्धकनमू. संप्र. संप्र. बालसया कननागयाक. वलवधयया
क॥ ॥ बालनागया॥ ॥ दावीरुविडा कृदजस्यवीजं सिंहावयसीमधूकं वगुल्यं। काथं नि। ल
सुन्यकनगुदाघः सूर्यागि मानव्वसूर्यपीतं॥ ॥ मीकृति. हनति. कृदवीज. आदग. ठूक्. मी

धनस्य लग्नकाथदास्यं मामत्यनकं बालखयाइइनालइइखावके॥ ॥ बालानि सावयांति॥
 विलंबवपुष्यानि वधनकीनां जलं सलाधुंगजपिपलीनां। काथं बलहिमधूना। विमिश्रं बालेषु
 याश्च मति सावनाते॥ ॥ कं विद्यालं धनिस्वानं गुलाडं गजपिपी। धनस्य लग्नना कं काथ
 दायाव कस्मिन् नृस्यं तनकं खडाडलनकं नकं बालानि सावयाति॥ ॥ विलादिकाथ बालं।
 नागया॥ ॥ पालं सधूचिनिनावत्यनकं तितानकं बालष्याजिमिजजीर्ण्या॥ ॥ वि
 लिसि० ०००० कस्मिन् वलावनकं बालष्याजिमिनान॥ ॥ गमसाहं नउं जिह्वां काकलं
 खसुखां स्यं तनकं काथस्याकनान॥ ॥ जिह्वावर्तकस्मिन् वलावनकं विद्वद्वना
 न॥ ॥ जिमिमठयायधन२९ मठुथ॥ ॥ जिमिद्वटं जिमिनानि२३ जिमिद्व
 उ

३३१

विषयग निदानवि किंसा॥

दिगजा हाइं रुद्र स्वाहा ॥ कृष्णका तु २९ गधित चिना व. कखाय कं डिमिना गया क ॥ ॥
ॐ निवाल श्रुग वि किंसा ॥ ० ॥ ॐ ॥ अथ विषयग निदान वि किंसा ॥ ॥
स्वा व नं जंग मं व व दि विध वि प्र उ च न । मूला यात्म क मा या सा प न म णा दि स म्भ वः ॥ ॥
स्वा व न वी जंग म व नि गाय कान विषया ख ज्ञाय ॥ रुमी सु हा कृ प ना थ विष व डा स्य रु व सूर्या दि
व ॥ ॥ पिष्ठा ग धूल नाय न मं जिष्ठा मूल म व व । पी त्या ल प क नां वा पि सर्व सूर्य विषं रु न नू ॥
म नू या हा । पू ज म कि ती सु नि स्य पाय त न के । सूर्य न डा क विष रु न न या क ॥ ॥ वि न डा क या ॥ ॥
ग धु ली य क मूल न ग रु धू म न वे के ते ॥ जी न व व च तं सि डं स म रु विष या ग नू नू ॥ ॥ व व क न हा
क य ति पा स । इ इ च त । थ त नि स्य पाय । त न के । स म रु विष या ग ना न या के ॥ ॥ त ड्डी ॥
चितक

यकाशयुत ॥ ॥ सामवल्लभकर्तृवाग्मजिह्वाहन्सपादिका । नजलीगेनिकंलपान्नख
दकविषायहं ॥ ॥ अलमा अश्वकर्तृव्यवपलख हन्सपात मीकृसि । मन्वा १५० तनिस्य
पाय ॥ लसिद्यानविष अमनडाकविष १५० तनागयाक ॥ ॥ शक्यालसिद्यानया ॥ ॥ अल
तुल्यसुनिस्यपाय ॥ ॥ लटिनडाकया ॥ ॥ कूनडाकया ॥ ॥ मलिस्यान नक जानामस
याइइसुनिस्यपाय ॥ ॥ कूसिनकाकया ॥ ॥ वद्यावा मन्व निस्यपाय नागनडाकया ॥ ॥ अल
विनडाकया ॥ ॥ निलीप्रयुष्यंस्वमसुनलाविनंमरुमुकृत्यामनिवंगताका । प्रयाजयदंज
नयानराव । विभाहिनानामपि सूर्यदंनिता ॥ ॥ शालवाकृतसियामीस । मलांजनयापू ॥
१५० तीसुधून । दालकिपांलंनव । क्रसपालंनव ॥ मन्ववर्गनकिपांलधून । धनिताअमसुल । को

सुसुधनं न व. मिखा सुजं जनं उ न व ॥ त्वनकं न ॥ सुखा व न विष जंगम विष न दी क या ॥ अ व द्या
न वा ड या ॥ वे द्या द यी व ॥ ॥ मयल पिरु न नु न तुली य कं का क ७ यू कं ७ पिव द न ल्यं विषानि
सुखा व न जंगम नि। सा प ड वा ना य वि न न ह कि ॥ ॥ को सुखा या हि यू च व क न हा हा क सि
मि य ॥ थ न स म ल ग न स्यं त्व न क ७ सु अ दि न विष न या या वि न ग क या ॥ सुखा व न जंगम विष या
अ नि हि ड ॥ ॥ ने लं ति ला नां प ल वं गु डं व जी नं त थ क स म म व यी तं ॥ अ न क मू उ विष मा गुरु
हि। सु धा ह वं वा य त्रि वा उ द न्द ॥ ॥ हा म ल वि क न हा म ल नि ना व वा क अ क इ ह थ न स
म ल ग नि स्यं त्व न क ॥ सुखा व न जंगम विष न दी क ७ प ड व न न ड थ न ना ग या क ॥ ॥ ति ल न
ला दि ॥ ॥ अ ग म ल धू मा म हि षा क यू कं ॥ सु वा जि ग न्ध घृ त त तु री य कं ॥ ग मू उ पि षा पि व

ननि हन्ति। विषानि सुखाव न जंगमानि॥ ॥ कयनि वासु गुगुलु अश्वगन्ध यल चवक
 न हा थन (गमू उ सनि स्यं त्यन के कू व सु क न डा त स नं वि च न ना ग ल य म रु ॥ सुखाव न जंगम
 विष नाग ॥ ॥ अगल लधू मा दित ह ॥ ॥ मा सी सुवा ल का कि जल जल द तिला नाव नाय घ
 कली। यका व अ ह त्रि जा ग द सि ग प लि ग म ल नाय घ के ला। गु ल्या (ने ना कृ त ग म च गु त्रि त क
 सु मा प उ यः सर्व हा ग म। कृ त्वा ल श्री विषा व क न विष म ग दा घृ नि वे द्या द या र्वा ॥ ॥ ज टा
 मा सि कृ ग हा ह न धा व सि त म त्रि व वा न क सु मन शिल (ने ना व न रु सि थ का दा न कि ॥
 ह न डि कृ द शि त र वा न प थ कृ क म म नू थि गु ला प यं गु नू प के ग ल थ त स म ता ग नि स्यं गु दि
 वि स्यं अं ज नं उ लं इ कृ स वू यं इ क्रा स स थ नं त व थ वि ह्वा न वू र्ण ॥ दे व हा या अ कि नी न दा न व

३३२

विष सायके मां बां

व्या. विषम कनया ॥ थग नाग याक ॥ ॥ विज्ञान वूर्ण ॥ ॥ अलां वूवी जं कद्र कं सूवी जं न
स्य वगाय वद्र ॥ थया निनिकं ॥ पिष्ठं वपिलु न गल्ल हि पीतं ॥ विषानि हन्या दपित क (नन) ॥
खायूजवसियायू ॥ खायूपा लायायू ॥ गमनावन थग निस्संत्वनकं ॥ कासु सथन ॥ माधिगु विषशन
सां नागनयमद्र ॥ ॥ खायूजवसियू ॥ सोविनाजं ॥ नंख स निस्सं ॥ गोशोवन क्कासंत्वनकं ॥ कासु
सुथसं ॥ तववीन डाकया ॥ ॥ तववीन डाकया ॥ अलां वूवी जादि ॥ ॥ निलि ॥ गमर सिपू ॥
पिपी ॥ अर्क ३३ ॥ थग निस्सं ॥ गमद विडं चाना वणाय ॥ ॥ विन डाकया ॥ ॥ हुनेउ ॥ अर्क पात
निस्सं सिजलरु अस ॥ तस्यं ॥ हीमनाजया नितस्यं ॥ कालसियाय धनकं ॥ गमउ विन ॥ गनकं तय
हुने हीमनाजया ॥ तीस ॥ चोला वत्वनकं ॥ कासु सथनकं ॥ सर्वविषनाग ॥ ॥ सर्वविषया

॥ ॐ धिः मन्त्रिवः पालादवतिः ॐ नुमवः स्वायल्लगलाः अतिवसः थानिनावपायः सर्व
विषनामः ॥ ॥ सर्वविषयाः ॥ ॥ ॐ तिनिदिनाकपत्रिकुमविषविकिसाधिकानः ॥ ॥
अथ नूपवर्णविकिसाः ॥ ॥ क्षणीवूर्णस्यकागं सूत्र सपविगनं क्रोड सूर्यः समासः कृष्णमा
सीतिताष्टसुसुतसमयूगस्त्रापिनं तस्यनासोः वर्षाकृतसमग्रं तवतिविषविगा नूपवर्णव
तयाः निर्व्याधिवृद्धिमक्षस्त्रनिवचनवलस्त्र्यसुतेव नूपेः ॥ ॥ अम्बनवूर्णरुं ४ अम्बन
मीनरुं ६ विष्णुं दायकः कृष्णालगानिगात्रसपापायनः लिपनसः थानासुत्ररुं ५ कस्तिरुं २
धलरुं २ पिपीकुरदरसाषत्ररुं १ गदाः मासिकुरदर थानासुत्ररुं ५ लावः सिंगुतं दासुनयाव
रुं १ गभउतं दानताकपूयावः गभउसुधूसं नयः पिलातां नयः दकितां नयः धूसं नयः थका

३४०

गुणोक्त्या विविचि किं नृणां

यावत्तु अमृतं न कश्चिदप्युपैत नृपवर्गं हि निवर्तयति विविधं हि नृपवर्गं ॥ नृपवर्गं
न ॥ ॥ यद्विदुर्गमस्यैव विषयलीतिः स स र्कनातिरुल्लसं प्रयुक्ता । आयुः प्रवृत्ता स्मृतिर्धर्मधयुक्ता
तदेव ज्ञानाद्याधिविभावनीया ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं वंशं वा वनं मधुविषिणी साधनं तिरुल्ला धर्मस्मृता
गवर्ग्या उन्नतं कश्चाद्युवाधनयु वृद्धिवाधनयु जनाद्याधिविभावक ॥ ॥ जनाद्याधिया ॥ ॥ यथा ॥
दि ॥ ॥ वृष्ट्युत्पन्नं कुमलकामगानां लिख्यं सप्तमि मधुना प्रयुक्ता । वृद्धिस्तु नः नम्रविवा न ३
खं । सुमातं जीवति कृष्णकेशं ॥ ॥ ॥ गमयान् अमृतं गुडगु धर्मवर्ग्या गवः यलकस्ति
नवा वा वनस्यंता म्मायुव ६ः खद्याधिमम्वाना हायुग हायुयु ॥ ॥ निम्बस्ये लपकति वृ
भव न न्य निहिंक विनाय अवता मा सुनत लीन वृत्तं प्रयायं जनाग्रहं यत्रिं निहकि ॥

वाजीकवृक्षयपिसाउसंज्ञागयाविधि

निम्बविकनः काससुथंडं शयनहाक्यू जानयइइवधलवकुतव॥ ॥**जनायाधिया॥** ॥
नकचन्दनः ॐ ह्रीं श्रीं क्लवतः प्रिरुला उरुलां प्रियंगु वउसिक् गुउगु गुंथि नचूर्णं अं
रुत्रि मंस्रगगगस्यकूद इ हिमनाजमिहं ९ लंख हं ९ थगपाकयासं माउसतेलान हायुगम
हायू हाक्यू हावग महाव निनागशयीव॥ ॥**नकचन्दनादिहेल॥** ॥**नसायनवि॥**
किंसा॥ ॥ ॐ निनि दनाकूपत्रिकमनूपवर्णविकित्सा॥ ॥**अथवाजीकवृक्षविधिः॥**
॥**महेश्वरः** इवकगगमूलीवाननी नागवलाव चूर्णमिदं पयसानिमिग्रियं यस्य गृहप्रमदा
वगनमु॥ ॥**॥मघावकायलिकस्नानपू** अरिहा पूसमिपू वयावाहा थनचूर्णइइस
हासंवनक गतमुवयसंगजिव॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं चूर्णं काथदायातीस सधूवि ॐ नुयवपि

पी. मदनरु ल. थनचूर्णधनकस्तिन क्काडं त्यनकं भा. गुजयमरुव. गतसीवउसंगरुयीव
॥ ॥ मधुकादिलह ॥ ॥ सुसमियाहा. शमवातसुयावासनिनावलनयाय। ॐ न्दिना।
हृदउरुयीव॥ ॥ अश्वगन्धहा. विहा. कट. दाकठनित्रियासि. कर्षवतय. समरागवर्ण॥
स्वकृद१इइरुं१लंखरुं१पाकयासं. थसुयागुण. सुनहीनयातनवाधनपू. नेश्रीवाधनपीव
॥ ॥ अश्वगन्धदि॥ ॥ सालक्या. वालाउ. मसावक्या. नकचन्दन. दाकठनित्रिहि।
पतका. गजपिपी. थसनिनाव. मसुयालवनीनउभलंलनयाय. अश्वगन्धव. मसुयाखिउ
थनतानवसंथनलनयाय॥ क्रसकृगा. गउथं शयहयिववंगन॥ ॥ वालाहादि
॥ ॥ पुनानरुतसि. कृनरुधलउ२हामलविकनउ१कस्तिउ१पुनानचाकृउ१गोय

वसनविक्रिस्ता ॥

ताम्रपुत्रलवंतचकषीपागकः ॥ गमसाहं ॥ छिकद्र जी ॥ सुक म्या ॥ अयकमल ॥ पियला मूल ॥ पुल
कंगल ॥ सिपि ॥ जिह्वा ॥ लवं ॥ तालिस्तो ॥ सिघात ॥ वृद्धक सु ॥ उहोस्तो ॥ तालमूल ॥ धन ॥ उहोस्तो ॥ कर्ष
वूर्ण ॥ वूर्ण ॥ नसंवाजी ॥ कनकायाहि ॥ ॥ ॐ निनिदानाकपत्रिकुमवाजी ॥ कनकायाहि ॥ ॥
अथ वसनविक्रिस्ता ॥ ॥ यही कषायलवणययूकं कलिंगकक्रा ॥ रुलकल्लमिष्टं ॥ सुकौड
मतद्वमनं पुयायं द्याप्तक ॥ अथ वसनमययू ॥ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं ॥ काथ दयाती ॥ सुधु विविहा
ॐ न्यय ॥ पिपी ॥ मदनरुल ॥ धन ॥ वूर्णलंख ॥ सुहोस्तो ॥ लनकं ॥ धन ॥ वयीव ॥ ॥ छिकद्र ॥ पाधन ॥
गन्धक ॥ अजयपा ॥ क्रापा ॥ गन्धकनिय ॥ हनं पाधनतयावनिय ॥ हनं छिकद्रतयावनिय ॥ हनं
अजयपातयावनिय ॥ अजनयावर्णम ॥ रुदनालनिय ॥ ॥ ॐ ययावल ॥ सुयावनक ॥ बालरवया
नी

३४२

तत्रति वात्रति न के यो वनया तत्रति १ त्रति २ न के. अथ या तत्रति १ स्वा उलं ख स न या व त्वेन
 के। स्वा उलं ख न क वय ॥ **॥ कथय विधि ॥** **॥ धो व जा व न के. का क लं ख श क मान के दे व**
ध म य या य श ना ॥ **॥ ह नी त की तिः क थि तं. सु वि तं ह न्य मि कृ कृ वि उ नू र्णू य कं। वि त्र व नं नू**
वू क ते ल मि त्रं। वि त्र न्य यं या य म ध म य यं ॥ **॥ ह न उ नू र्णू का थ दा या ती स. स्व ट. द कि. वि त्र**
क हा. पि पी. व द वि. अ ल वि कं न सा रु। स त्व न कं क न्न का य वि धि ॥ **॥ वृ त्ति नि दा ना क य नि**
ज म व म न. वि त्र व न वि कि ल्पा धि का नः ॥ **॥ अ थ वा त म ल व न्ध वि कि ल्पा ॥** **॥ ना म्ना म**
द ना छि रु ला य नं वा। की डा ल व द म य न वि ल्प कृ षं। कृ ष्णा रु लि नी. गु ड स पि त्त लं. इ न्धं स म नं व य
पृ ष्य कां जी वा ना म य लो हि त त्रि न्धै यं वा ॥ **॥ इ गु ष्ठा हा. म द न रु ल. छि रु ला. व द वि।**

मा सु प कं

वि त्र व न वि धि ॥ वा त म नू व न्ध वि कि
 ल्पा ॥

कसू. व्याल. इह. विषी. प्रियंगु. विहा. सायसा. कस्मिन्. हामविकं. वाकू. इह. साया. ला
ति. ॥ धातनाप. छा. नाव. काथदासं. छा. लकं. यन. यान. सइ. थन. दुकि. छा. लाव. का. नुक. वि. य
दुकि. कपति. स्यंत. य. मल. क. म. द. व. या. क. द. यी. व. वा. त. न. य. इ. त. व. या. ॥ ॥ वा. त. म. ल. व. भ. या. ॥
नै. लं. व. ला. का. थित. क. ल्. स. ग. भि. ग. र्. सि. ड्. प. या. द. धि. तु. धा. द. क. म. लु. वू. के. ॥ त. द. स. ह. व. न. स. न. ला.
स. गा. व. ली. ति. पु. ल्. क. प. क. म. न. वा. स. मी. व. ल. भ. य. ॥ ॥ व. या. सा. हा. का. थ. दा. स. ल. व. इ. त्. व. या. त. क. ॥
पा. त. क. स. क. म्. ॥ ला. इ. इ. ध. रि. त. कु. स. य. ट. चू. क. थ. त. स. ग. ग. हा. म. वि. क. न. स. ष. स. थ. वि. क. न. य. न.
धा. त. स. त. या. व. दु. कि. क. स. का. नुक. चि. ना. व. य. न. स. इ. छा. य. क. प. ति. स्य. त. य. य. न. म. ग. व. या. थ. प.
इ. चा. उ. या. ॥ ॥ वा. हि. न. म. इ. या. ॥ ॥ ॐ. ति. नि. वा. ना. क. प. ति. क. म. म. ल. व. भ. वि. कि. ला. ॥ ॥

वसि कर्म वि कि सा ॥

५५५३॥

अथ वसि कर्म वि कि सा विधिः ॥ ॥ नमो विदध्या सु उनाग नमो से च वंच नाग धि काम (ध) वा
 पुन स्य म न्या ह नू वा दू य छ निना जि नं ख भु व ल म थ मू ॥ ॥ वा कृ सं धि नि स्यं स धू पी पी क्री
 इं क्रा स स थ स्यं क्रा स या नाग मुख नाग ह नू सु क् वा दू य छ क्रा स प न नि न थ ना नाग भा च क
 ग ल न थ या नाग ना क्ष ॥ ॥ ॐ ति व सि क र्म वि धिः ॥ ॥ अथ उ व गु धः ॥ ॥ म ल च न क
 क न स न व स मा व ख मा ल मं ग का ल न ग ल म म्वा हा ९ त टा कि मि पा ला उ आ दि न नी त
 स व सु श क त व मि र वा ना य स अ स द ल स मि हिं ना य स वि ड धि ना य स पा न स मं ग थ
 ने व मू सू नि म न ज ध न ना य स गृ ह णी ना य स अ र्ज स थ न ना य स नी त न क षा य उ चान
 के व क्रा का स च स द व स क न ध नि स्नान मूल सि म न स न मूल क ल न मूल गृ ह णी स

पतनायसु धनतव ॥ मितानायसु नकवातसु उमादसु कृष्टसु धनसु विरुद्धनसु वाकाप
वाततव ॥

॥ ककुया वातया गुगुशने उगुतव ॥ दन्धनायसु विदायसु सन्निपातसु रत्ना उ
लंखमनव ॥ दायकाया वासुसुवकावत्वनकतव ॥ वागल्लभ्यसु वातया नायसु ननसु धि का
लान्धसुला गुंथिमूल धविवाकृ धननकतडा ॥ विरुद्धनसु लीनल पुवा ननव ॥ विरुद्ध
नसु कृवध कानव ॥ वाग विरुद्धा लीनल पुवा ननव ॥ वातया पुवा नल्लभ्यसु ननव ॥ वागल्लभ्य
सु ननव ॥ नक विरुद्धसु पापु कामलसु कृष्टसु इइतव ॥ कृष्टसु वातसु पतनायसु सन्नि
पातसु ग्रहणीसु अर्गसु चालसु इइतव ॥ नक विरुद्धसु पापु कामलसु कृष्टसु अयस्मानसु
नक धरु कानव ॥ चालला वलाला तिललला वउखनिलाने क विरुद्धसु ननव ॥ व्याडलो वृकृ
सु

३४४

ला। कय की ला। पतनायसु ग्रही सुतेव॥

॥ वागमा भु सुमाव प्रथम उपवा सत

व॥ कस कृता नय मतेव॥

॥ ॐ निनिदिना कपत्रिक म डवा निरुय वि कि सा धिका॥

नः॥

॥ ॐ निमा धव कृता वि कि सा कर्म समा फ॥

॥ ॐ ॥

॥ निपाल वत्सने॥

मान युग साग न व भुक्त। मधुमास रूनि पकृ द्वादस्यां न विवा सने॥ नूयान नन्दन नाम्रा च विजान

न्या सजे नवे। कष्टन लिखितं म सुमा धवा रव्य निदान कं॥ ललिता रव्य पूत्रे स्त्रिया मयूल व

र्त्तना मक। यदि पुत्र म पुत्रं वा। मधनीयं म हृदये॥ नाजादि नत्र सिंहाय नि काय स्य प

जायव। गच्छा सुं ह्ययन व दित कं सं पाप्यते न नः॥ ॥ निपाल संस्वतु ले ४४ वे व पुदि

१२ ना १ थूखू न्न वाय धून काहन॥ गच्छ मर्नि न उरं हया सर्वदा॥ ॥ ॐ ॥ ॥

३४५

५

५४१ ३४५

आशा मरुवाथि

५३०

ASHA ARCHIVES



